ॐ

श्रीमद् राजचन्द्र

माथी सकलित

तत्त्वविज्ञान

प्रकाशक

मोहनलाल चीमनलाल शाह,
श्रीमद् राजचद्र ज्ञान प्रचारक ट्रस्ट,
राजभुवन दिल्ही दरवाजा बहार,
अमदावाद

प्रथमावृत्ति प्रत २,०००

मूल्य रूपिया ३ ००

वीर नि सवत	वि० सवत	सन
२४८९	२०१९	१९६३

मुद्रक

जीवणजी डाह्याभाई देसाई,
नवजीवन मुद्रणालय,
अमदावाद–१४

अहो! सर्वोत्कृष्ट शातरसमय सन्मार्ग—
अहो! ते सर्वोत्कृष्ट शातरसप्रधान मार्गना मूळ सर्वज्ञ देव —
अहो! ते सर्वोत्कृष्ट शातरस सुप्रतीत कराव्यो
एवा परमकृपाळु सद्‌गुरुदेव —
आ विश्वमा सर्वकाळ तमे जयवत वर्तो, जयवत वर्तो

—श्रीमद् राजचन्द्र

ॐ

दृश्यने अदृश्य कर्यु अने अदृश्यने दृश्य कर्यु एवु ज्ञानी-पुरुषोनु आश्चर्यकारक अनत ऐश्वर्यवीर्य वाणीथी कही शकावु योग्य नथी

—श्रीमद् राजचन्द्र

स्वरूपदर्शन श्लाध्य पररूपेक्षण वृथा ।
एतावदेव विज्ञानं पर ज्योति प्रकाशकम् ॥

—श्री अध्यात्मसार

निज शुद्ध सहजात्मस्वरूपनु दर्शन एज एक प्रशसवा योग्य कार्य छे, ते सिवाय सर्व अन्य रूप जोवु ते वृथा छे पर ज्योति, केवळ ज्ञानस्वरूप निज सहजात्मपदने प्रगट करवा आटलु ज विज्ञान समर्थ छे

हे मुमुक्षु! एक आत्माने जाणता समस्त लोकालोकने जाणीश, अने सर्व जाणवानु फळ पण एक आत्मप्राप्ति छे, माटे आत्मार्थी जुदा एवा बीजा भावो जाणवानी वारवारनी इच्छाथी तु निवर्त अने एक निज स्वरूपने विषे ज दृष्टि दे, के जे दृष्टिथी समस्त सृष्टि ज्ञेयपणे तारे विषे देखाशे

तत्त्वस्वरूप एवा सत्शास्त्रमा कहेला मार्गनु पण आ तत्त्व छे, एम तत्त्वज्ञानीओए कह्यु छे

—श्रीमद् राजचन्द्र

प्रबोधाय विवेकाय हिताय प्रशमाय च ।
सम्यक् तत्त्वोपदेशाय सता सूक्ति प्रवर्तते ॥

—श्री ज्ञानार्णव

सत्पुरुषोनी उत्तम वाणी जीवोने प्रकृष्ट ज्ञान, विवेक, हित, प्रशमता अने सम्यक् प्रकारे तत्त्वोनो उपदेश थवा माटे प्रवर्ते छे

तच्छ्रुत तच्च विज्ञान तद्ध्यान तत्पर तप ।
अयमात्मा यदासाद्य स्वस्वरूपे लय व्रजेत् ॥

—श्री ज्ञानार्णव

एज सत्श्रुत छे, एज विज्ञान छे, एज ध्यान छे, अने एज उत्तम तप छे, के जेने पामीने आ जीव निज शुद्ध सहजात्मस्वरूपमा लय पामे, स्वरूपनिष्ठ थाय

मुक्तिस्त्रीवक्त्रशीताशु द्रष्टुमुत्कण्ठिताशयै ।
मुनिभिर्मथ्यते साक्षाद्विज्ञानमकरालय ॥

मुक्तिरूपी स्त्रीना मुखचद्रने देखवा उत्सुक एवा मुनि — मुमुक्षु जनो — साक्षात् विज्ञानरूपी समुद्रनु मथन करे छे

दु खज्वलनतप्ताना ससारोग्रमरुस्थले ।
विज्ञानमेव जन्तूना सुधाम्बुप्रीणनक्षम ॥

—श्री ज्ञानार्णव

आ ससाररूप उग्र रणभूमिकामा दुखरूप अग्नियी तपायमान जीवोने एक विज्ञान, सत्यार्थ ज्ञान ज अमृतरूप जळथी तृप्त करवा समर्थ छे

निशात विद्धि निस्त्रिश भवारातिनिपातने ।
तृतीयमथवा नेत्र विश्वतत्त्वप्रकाशने ॥

—श्री ज्ञानार्णव

विज्ञान ज एक ससारूप शत्रुनो नाश करवा माटे तीक्ष्ण खड्ग छे अथवा ज्ञान ज विश्व तत्त्वोनो प्रकाश करवा माटे तृतीय नेत्र छे

यज्जन्मकोटिभि पाप जयत्यज्ञस्तपो बलात् ।
तद्विज्ञानी क्षणार्ध्देन दहत्यतुलविक्रम ॥

—श्री ज्ञानार्णव

करोडो जन्मोमा तपना बळथी अज्ञानी जे पापो क्षय करे छे ते अतुल पराक्रमवाळा भेदविज्ञानी अर्ध क्षणमा भस्म करी दे छे

यथा यथा हृषीकाणि स्ववशं यान्ति देहिनाम् ।
तथा तथा स्फुरत्युच्चैर्हृदि विज्ञानभास्कर ॥

जीवोने जेम जेम इन्द्रियो वश थाय छे तेम तेम हृदयमा विज्ञानरूपी सूर्य उज्ज्वळताथी प्रकाशे छे.

विषयेषु यथा चित्त जन्तोर्मग्नमनाकुलम् ।
तथा यद्यात्मनस्तत्त्वे सद्य को न शिवीभवेत् ॥

जे प्रकारे जीवोना चित्त विषयसेवनमा आकुळता रहित तल्लीन थाय छे ते ज प्रकारे जो ते सहज आत्मतत्त्वमा लीन

थई जाय तो तेने मोक्षसुख शीघ्र केम प्राप्त न थाय ? अर्थात् ते शीघ्र मुक्तिसुखे विराजित थई परमात्मपदने पामे ज पामे

> दृश्यन्ते भुवि किं न ते कृतधिय सख्याव्यतीताश्चिरम्
> ये लीला परमेष्ठिन प्रतिदिन तन्वन्ति वाग्भि परम् ।
> त साक्षादनुभूय नित्यपरमानन्दाम्बुराशि पुन-
> र्ये जन्मभ्रममुत्सृजन्ति पुरुपा धन्यास्तु ते दुर्लभा ॥
>
> — श्री ज्ञानार्णव

आ जगतमा नित्यप्रति केवळ वचनोथी बहुकाळ पर्यंत परमेष्ठिलीला—स्तवनने विस्तारनारा कृतबुद्धि जनो शु अगणित जोवामा आवता नथी ? अर्थात् असख्य जोवामा आवे छे परतु नित्य परमानदरूप अमृतना सागर एवा ए सहजात्म-स्वरूपरूप परमेष्ठीने साक्षात् अनुभवगोचर करीने जे ससारना भ्रमने दूर करी दे छे एवा पुरुपो तो दुर्लभ ज छे. अने एवा पुरुपो ज धन्य छे, कृतार्थ छे, जयवत वर्ते छे तेवा सत्पुरुषोनु योगबळ जगतनु कल्याण करवा समर्थ छे तेमणे निष्कारण करुणाथी प्रकाशेलो वाणीयोग सत्साधकवृदने सिद्धि साधना माटे परमोत्कृष्ट अमूल्य अवलबनरूप जाणी, मुमुक्षुओ ए एमणे प्रकाशेला अमूल्य तत्त्वविज्ञानने परम आदरथी उपासी कृतार्थ थाय छे तथाऽस्तु

प्रकाशकनु निवेदन

'श्रीमद् राजचद्र' वचनामृत ग्रथमाथी, मुमुक्षु वधुओने मोक्षरूप सत्साधनामा अनेक प्रकारे उपयोगी थाय तेवी रीते सकलना करी तैयार करेल आ ग्रथ आजे मुमुक्षुओना कर-कमळमा मूकता मने अति आनद थाय छे

परमकृपाळु श्रीमद् राजचद्रने ओळखावनार, तेमनी साची प्रतीति करावनार अने सन्मार्गनो निर्देश करावनार स्व श्री पोपटलालभाई महोकमचद (पूज्य भाईश्री) नो हु खूब खूब ऋणी छु. तेओश्रीना सस्कार सिंचनथी मारु मस्तक पूज्यभावे तेमना पादपकजमा झूके छे तेओश्री श्रीमद् राजचद्रना एक-निष्ठ अनन्य अनुगामी हता. तेमना थकी स्थपायेला तीर्थक्षेत्र वडवा (मु खभात) मा आजे केटलाय वर्षोथी सत्सग-भक्तिनो लाभ मळी रह्यो छे ते सत्सगना शुभ योगे आवु एकाद मोटु पुस्तक बहार पाडवानी इच्छा उद्भवेली

ते इच्छाने मूर्त स्वरूप मळवानु होय तेम पू. सहजानंद-घनजी (श्री भद्रमुनि) नो अमदावाद मुकामे सहयोग थयो अने तेओश्री पासेथी जाणवा मळ्यु के आवा एक पुस्तकनी सकलना तैयार करेली छे 'श्रीमद् राजचद्र' ग्रथमाथी छूटक छूटक वचनामृतो, पदो, काव्यो वगेरे सकलित करी घणा पुस्तको गुजरातीमा बहार पडेला छे जेनो लाभ फक्त गुजराती जाणकार भाईओ लई शक्या छे परतु गुजराती भाषा नही

जाणनार मुमुक्षुभाईओ माटे आवु एकाद पुस्तक हिंदीमा छापवानो स्फूरणा जागो पू श्री भद्रमुनिए ते माटे आवु, बिकानेर वगेरे स्थळोए फरी घणो परिश्रम लई शुद्ध हिन्दीनी हिमायत करी, परतु शुद्ध हिन्दी तरजूमो करावता कृपाळु देवना असल वचनामृतोनो भाव नही सचवाता आ पुस्तकने देवनागरी लिपिमा छापवानी फरज पडी छता पण आत्मसतोष जरूर वेदाय छे के राजस्थान तथा दक्षिण भारतना अन्य मुमुक्षुबधुओ आ पुस्तकनो लाभ जरूर लई शकशे

श्रीमद् राजचद्र आश्रम, हपीस्थित श्री सहजानदघन (श्री भद्रमुनि) तथा श्रीमद् राजचंद्र आश्रम, अगासस्थ सत्सगनिष्ठ मुमुक्षुबधु श्री. रावजीभाई देसाईनी उत्तम भावना अने सयुक्त प्रयासथी आवा प्रकारनी अति उपयोगी सकलना तेमणे तैयार करी सारो परिश्रम लई आ ग्रन्थ आपणने आप्यो छे ते माटे तेओश्रीने हार्दिक अभिनदन घटे छे

आ ग्रथनी प्रसिद्धि माटेनी मारी मागणी स्वीकारी ते माटे हु तेमनो अत्यत आभार मानु छु अने आ पुस्तकनो सदुपयोग सर्वने श्रेयस्कर थाओ एम इच्छु छु

राजभुवन,
दिल्ही दरवाजा बहार, — मोहनलाल चीमनलाल शाह
अमदावाद
ता १२-६-१९६३

प्रस्तावना

श्रीमद् राजचन्द्र एटले मात्र भारतनी ज नहि पण विश्वनी एक विरल विभूति शास्त्रना ज्ञाता अने उपदेशक तो आपणने अनेक मळे पण जेमनु जीवन ज सत्शास्त्रनु प्रतीक बनी रहे एवी विभूति आपणने मळवी विरल छे श्रीमद् राजचन्द्रनो पासे तो जळहळता आत्मज्ञानमय जीवननो अतरग प्रकाश हतो, एटले ज अद्भुत अमृतवाणीनी सहज स्फुरणा हती

भारतनी विश्वविख्यात विभूति महात्मा गाधोजी लखे छे

" मारा जीवनमा श्रीमद् राजचन्द्रनो छाप मुख्यपणे छे महात्मा टॉल्स्टॉय तथा रस्किन करता पण श्रीमदे मारा उपर ऊडी असर करी छे घणी वार कहीने लखो गयो छु के में घणाना जीवनमाथी घणु लीधु छे पण सौथी वधारे कोईना जीवनमाथी मे ग्रहण कर्यु होय तो ते कविश्री (श्रीमद् राजचन्द्र)ना जीवनमाथी छे रागोने काढवानो प्रयत्न करनार जाणे छे के रागरहित थवु केवु कठिन छे ए रागरहित (वीतराग) दशा कवि (श्रीमद् राजचद्र) ने स्वाभाविक हती. एम मारी उपर छाप पडो हती

तेमना लखाणोनी एक असाधारणता ए छे के पोते जे अनुभव्यु ते ज लख्यु छे तेमा क्याये कृत्रिमता नथी बीजानी उपर

छाप पाडवा सारु एक लोटी सरखो पण लखो होय एम में जोयु नथी तेमना लखाणोमा सत् नीतरी रह्यु छे, एवो मने हमेशा भास आव्यो छे जेने आत्मक्लेश टाळवो छे, जे पोतानु कर्त्तव्य जाणवा उत्सुक छे, तेने श्रीमद्‌ना लखाणोमाथी वहु मळी रहेशे एवो मने विश्वास छे, पछी भले ते हिन्दु हो के अन्यधर्मी खाता, वेसता, सूता, प्रत्येक क्रिया करता तेमनामा वैराग्य तो होय ज कोई वखत आ जगतना कोई पण वैभवने विपे तेमने मोह थयो होय एम में नथी जोयु

आ वर्णन सयमीने विपे सभवे वाह्याडवरथी मनुष्य वीतराग नथी थई शकतो वीतरागता ए आत्मानो प्रसादी छे अनेक जन्मना प्रयासे मळी शके छे ए रागरहित दशा श्रीमद् राजचन्द्रने स्वाभाविक हती एम मारा उपर छाप पडी हती "

अपार दु खनो दरियो एवो आ असार ससार, तेमा चारेय गतिमा चोरासी लाख योनिमा प्राये सर्व जीवो जन्म, जरा, मरण, आधि, व्याधि, उपाधि आदि त्रिविध तापमय दु खदावानलथी सदाय भडभड वळी रह्या छे तेमाथी बचेला परम शातिना धामरूप मात्र एक आर्पद्रष्टा तत्त्वज्ञानी स्वरूपस्थ महापुरुषो ज महाभाग्यवत छे तेमनु ज शरण, तेमनी वाणीनु अवलबन ए ज त्रण लोकने ते त्रिविध ताप-अग्निथी बचाववा समर्थ उपकारक छे

" मायामय अग्निथी चौदे राजलोक प्रज्वलित छे ते मायामा जीवनी बुद्धि राची रही छे अने तेथी जीव पण ते

त्रिविध ताप अग्निथी बळ्या करे छे तेने परम कारुण्यमूर्तिनो बोध ए ज परम शीतळ जळ छे तथापि चारे बाजुथी अपूर्ण पुण्यने लीधे तेनी प्राप्ति होवी दुर्लभ थई पडी छे "

—श्रीमद् राजचन्द्र

"तत्त्वज्ञाननी ऊंडी गुफानु दर्शन करवा जईए तो, त्या नेपथ्यमाथी एवो ध्वनि ज नीकळशे के, तमे कोण छो? क्याथी आव्या छो? केम आव्या छो? तमारी समीप आ सघळु शु छे? तमारी तमने प्रतीति छे? तमे विनाशी, अविनाशी वा कोई त्रिराशी छो? एवा अनेक प्रश्नो हृदयमा ते ध्वनिथी प्रवेश करशे अने ए प्रश्नोथी ज्या आत्मा घेरायो त्या पछी बीजा विचारोने बहु ज थोडो अवकाश रहेशे यदि ए विचारोथी ज छेवटे सिद्धि छे एज विचारोना मननथी अनत काळनु मुझन टळवानु छे घणा आर्य सत्पुरुषो ते माटे विचार करी गया छे, तेओए ते पर अधिकाधिक मनन कर्यु छे आत्माने शोधी तेना अपार मार्गमाथी थयेली प्राप्तिना घणाने भाग्यशाळी थवाने माटे अनेक क्रम बाध्या छे ते महात्मा जयवान हो! अने तेने त्रिकाळ नमस्कार हो!"

—श्रीमद् राजचन्द्र

आम आवा समर्थ तत्त्वविज्ञानी महापुरुषनी वाणीनु अवलबन कोई महाभाग्य योगे ज प्राप्त थवा योग्य छे

श्रीमद् राजचन्द्र तत्त्व जिज्ञासुओनी ज्ञानपिपासाने परितृप्त करे अने आत्मार्थीओना हृदयमा आत्मज्योति प्रगटावे एवा एक समर्थ तत्त्ववेत्ता आ काळमा आपणा अहोभाग्ये थई गया छे. तेमनी अमृततुल्य अमूल्य वाणी आपणा हाथमा आवे छे एज

आपणा महाभाग्य छे तेमनु जे काई साहित्य लब्ध छे ते सर्व 'श्रीमद् राजचन्द्र' ग्रन्थमा प्रसिद्धि पाम्यु छे आ साहित्य तत्त्वज्ञान वा आध्यात्मिक क्षेत्रमा अत्युत्तम कक्षानु अमूल्य साहित्य छे तत्त्वरसिक जनोने तत्त्वपिपासा सतोपवा माटे गूर्जरभाषामा आ एक अपूर्व साहित्य छे मोक्षार्थीओने निज शुद्ध सहज आत्मतत्त्वनी उपासनाथी परमानदमय मोक्ष महेलमा सुगमताथी चढी जवा माटे आ एक दुपमकाळमा अनोखु ज अवलम्बनरूप सोपान समान उपकारक थाय तेम छे एमा विविध पारमार्थिक विपयोने स्पर्शतु, मुख्यपणे मोक्ष-मार्गने स्पष्टपणे दर्शावतु, अमूल्य छूटा वेरायेला वचनरत्नोना प्रकाशथी सर्वत्र चमकतु, रत्नाकर समान अगाध, उच्चतम आध्यात्मिक साहित्य भर्यु पड्यु छे ते खोजकने अमूल्य रत्नत्रयनी प्राप्तिथी परम श्रेयने प्राप्त करावे तेवा निधान समान छे

एमाथी अमुक एक विषयने लगतु मोटा भागनु लखाण एक साथे एकत्र करेलु होय तो, ते सत्साधकने साधनाना क्रममा अति उपयोगी नीवडे एवा आशयथी, ए श्रीमद् राजचद्र ग्रन्थमाथी नवनीतरूपे तारवीने एक दोहनरूप ग्रन्थ प्रसिद्धिमा आणवा, पाचेक वर्ष पहेला आत्मार्थी आर्य श्री सहजानदनघन (श्री भद्रमुनि) ने सहज स्फुरणा थई आवी तदनुसार श्रीमद् राजचन्द्र ग्रथमाथी एक संकलना तैयार करवा तेमणे सारो प्रयास कर्यो अने तेमा मारा सहयोगने आवश्यक गणी ते माटे ते एकाद मास अही अगास आश्रममा आवी रह्या अने अमारा सयुक्त प्रयासथी एक सकलना तैयार थई ते

आजे आ 'तत्त्वविज्ञानरूपे' प्रकाश पामे छे, ते तत्त्वसाधकोने परमानदनी साधनामा सहायरूप वनी परम श्रेयनु कारण थाओ! अथवा विदग्धमुखमडन भवतु ।

आ तत्त्वविज्ञान ग्रथने ९ विभागमा वहेची नाखवामा आव्यो छे

(१) पहेला विभागमा 'परमार्थ प्रेरणा' ए शीर्षक नीचे, परमार्थ जिज्ञासुओने परमार्थ साधवा प्रेरणा मळे, आतुरता जागे, जागृति वधे तेवा केटलाक लखाणो श्रीमद् राजचन्द्र वचनामृतमाथी एकत्र करी लेवामा आव्या छे

(२) बीजामा 'भक्तिकर्तव्य' ए शीर्षक नीचे परमार्थनी जिज्ञासा जागी छे एवा मुमुक्षुने भक्ति कर्तव्य माटेनो क्रम वचनामृतमाथी सक्षेपमा मूक्यो छे

(३) त्रीजामा 'परमार्थ पद्यावलि' ए शीर्षक नीचे परमार्थ साधनामा अति उपयोगी एवा वचनामृतमाना केटलाक पद्योनो सग्रह मूकवामा आव्यो छे

(४) चोथामा 'आत्मचिंतन' ए शीर्षक नीचे सत् साधकने आत्मचिंतनना अभ्यासमा अति उपयोगी एवा वचनामृतमाना केटलाक पत्रोनो सग्रह मूकवामा आव्यो छे

(५) पाचमामा 'समाधि भावना' ए शीर्षक नीचे समाधि मरण माटे समाधिभावनामा अति उपयोगी एवा वचनामृतमाना केटलाक पत्रो मूकवामा आव्या छे

(६) छठ्ठामा 'आत्मसिद्धि' शीर्षक नीचे, आत्मा छे, ते नित्य छे, ते कर्ता छे, भोक्ता छे, मोक्ष छे, मोक्षना उपाय रूप सद्धर्म छे, ए छ पदथी आत्मानी सिद्धि अने मोक्ष मार्गने

स्पष्ट अने सुगमताथी प्रकाशतु आत्मसिद्धि शास्त्र तेना सक्षिप्त अर्थ सहित मूकवामा आव्यु छे

(७) सातमामा 'पारमार्थिक पत्रावलि' ए शीर्षक नीचे मुमुक्षुने सत् साधनामा निरतर उपयोगी, मुखपाठे करी चिंतन करवा योग्य वचनामृतमाना केटलाक अत्युत्तम पत्रो मूकवामा आव्या छे

(८) आठमामा 'विचार रत्नावली' ए शीर्षक नीचे वचनामृतमाथी केटलाक छूटा छूटा वचनरत्नोने वीणी लई मूकवामा आव्या छे

(९) नवमा छेल्ला विभागमा 'आत्मचर्या' ए शीर्षक नीचे श्रीमद्नी अतरग जीवन चर्यानो स्पष्ट ख्याल आवे एवा तेमना अतरग चर्या अने दशाने दर्शावता वचनामृतमाथी केटलाक लखाणोनो सग्रह मूकवामा आव्यो छे

अज्ञानवशात् बाह्य दृष्टिथी के तेवा कोई आग्रहथी श्रीमद्ने मात्र झवेरी, गृहस्थ के कविरूपे ओळखी बेसवामा जो कवचित् भूल थती होय तो जरा गुणानुराग के प्रमोद-भावनाथी सत्यने शोधवानी अने स्वीकारवानी दृष्टि राखी निराग्रहपणे आ 'आत्मचर्या' आदि विभागनु अवलोकन करवामा आवशे तो गुणज्ञ जनोने अवश्य एटलु दृष्टिगोचर थवा योग्य ज छे के श्रीमद् ए कोई सामान्य कोटिना मनुष्य नहि पण ईश्वर कोटिना मनुष्य अथवा मनुष्य देहे परमात्मा, परम ज्ञानावतार, प्रगट धर्ममूर्तिरूपे ज भारतने विभूषित करी गया छे

"अमे देहधारी छीए के केम ? ते सभारीए त्यारे माड जाणीए छीए " — " अमे के जेनु मन प्राये

क्रोधथी, मानथी, मायाथी, लोभथी, हास्यथी, रतिथी, अरतिथी, भयथी, शोकथी, जुगुप्साथी के शब्दादिक विषयोथी अप्रतिबद्ध जेवु छे, कुटुम्बथी, धनथी, पुत्रथी, वैभवथी, स्त्रीथी के देहथी मुक्त जेवु छे, ते मनने पण सत्सगने विषे बधन राखवु वहु बहु रह्या करे छे"

—श्रीमद् राजचन्द्र

आवा अनेक वचनोथी तेमनी अतरग, असग, अप्रतिबद्ध, जीवन्मुक्त, वैराग्यपूर्ण, विदेही, वीतराग, बोधिसमाधिप्रपूर्ण, अद्भुत, अलौकिक, अचित्य, आत्ममग्न, परम शात, शुद्ध, सच्चिदानदमय सहजात्मदशानी झाखी थया विना रहे तेम नथी ज सद्गुणानुरागीने तो पोतानु मान गळी जई आवी उच्चतम दशा प्रत्ये सहेजे शीर्ष झूक्या विना रहे तेम नथी अने ते अलौकिक असंगदशा प्रत्ये प्रेम, प्रतीति, भक्ति प्रगटी तेमना शुद्ध चैतन्यस्वरूप, परमार्थस्वरूप, साचा स्वरूपनी ओळखाण थई तेमनामा प्रगटेला शुद्ध आत्मदर्शन, आत्मज्ञान, आत्मरमणतारूप रत्नत्रयादिक आत्मगुणो—प्रगट मोक्षमार्ग प्रत्ये अत्यत प्रमोद, प्रेम, उल्लास आववा योग्य छे प्रान्ते पोतामा पण तेवो ज परमात्म स्वभाव जे अनादिथी अप्रगट छे ते प्रगट करवानो लक्ष अने पुरुषार्थ जागता आत्मा परमात्मा थई परम श्रेयने प्राप्त करी शाश्वतपदे विराजमान थवा भाग्यशाळी बने त्या सुधीनो सन्मार्ग अने सत्साधना सप्राप्त थवा योग्य छे. श्रीमद् लघुराज स्वामी, श्री सोभागभाई, श्री जूठाभाई, श्री अंबालालभाई आदि उज्ज्वल आत्माओ आ सद्गुणानुरागथी मुमुक्षुना नेत्रो के अलौकिक दृष्टि पामी श्रीमद्नी साची ओळखाण

करवा भाग्यशाळी वन्या अने तेथी आत्मज्ञानादि गुणोथी विभूपित थई स्वपरश्रेयस्कर वनी गया, ए प्रत्यक्ष दृप्टातरूप छे

आ ग्रन्थमा जे अनुक्रमाक मूकवामा आव्या छे तेनी डावी वाजुए [ ] आवा कौसमा जे आक मूकवामा आव्या छे ते आक श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगासद्वारा प्रकाशित 'श्रीमद् राजचन्द्र' ग्रन्थ (स २००७)नी छेल्ली आवृत्ति अनुसार छे अने ते तेमाना पृष्ठ तथा पत्राक सूचवे छे जेथी तेमाथी शोधी लेवामा सुगमता थवा योग्य छे

मुमुक्षु बधु श्री मोहनलाल चीमनलाल शाहनी एवी उल्लासभरी भावना हती के आ ग्रन्थनी प्रसिद्धनु श्रेय तेमने प्राप्त थाय ते तेमनी प्रशसनीय भावना फळी छे अने तेमना द्वारा आ ग्रन्थ प्रकाशित थयो छे ते माटे तेमने अभिनदन घटे छे

सत्पदाभिलापी सज्जनोने सत्पदनी साधनामा आ ग्रन्थनो विनय अने विवेकपूर्वक सदुपयोग आत्मश्रेय साधवा प्रवळ उपकारी बनो ए ज अभ्यर्थना.

श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम,
पो बोरीआ, स्टेशन अगास,
वाया आणद (W Rly)
जेठ वद ५ ता १२–६–१९६३

सत सेवक,
रावजीभाई छगनभाई देसाई

पीठिका

जुदा जुदा धर्ममतनु कारण

[५७६/७५५]

शारीरिक, मानसिक अनन्त प्रकारना दुःखोए आकुल-व्याकुल जीवोने ते दुःखोथी छूटवानी बहु प्रकारे इच्छा छता तेमाथी तेओ मुक्त थई शकता नथी तेनु शु कारण? एवु प्रश्न अनेक जीवोने उत्पन्न थया करे छे, पण तेनु यथार्थ समाधान कोई विरल जीवने ज प्राप्त थाय छे ज्यासुधी दुःखनु मूळकारण यथार्थपणे जाणवामा न आव्यु होय, त्यासुधी ते टाळवा माटे गमे तेवु प्रयत्न करवामा आवे तोपण दुःखनो क्षय थई शके नहि, अने गमे तेटली अरुचि, अप्रियता, अभाव ते दुःख प्रत्ये होय छता, तेने अनुभव्या ज करवु पडे। अवास्तविक उपायथी ते दुःख मटाडवानु प्रयत्न करवामा आवे, अने ते प्रयत्न पण सहन न थई शके तेटला परिश्रम पूर्वक कर्युं होय, छता ते दुःख न मटवाथी, दुःख मटाडवा इच्छता मुमुक्षुने अत्यत व्यामोह थई आवे छे, अथवा थया करे छे, के आनु शु कारण? आ दुःख टळतु केम नथी? कोई पण प्रकारे मारे ते दुःखनी प्राप्ति इच्छित नही छता, स्वप्नेय पण तेना प्रत्ये कई पण वृत्ति नही छता, तेनी प्राप्ति थया करे छे, अने हुं जे जे प्रयत्नो करु छु ते ते बधा निष्फळ जई दुःख अनुभव्या ज करु छु एनु शु कारण? शु ए दुःख कोईने मटतु ज नही होय? दुःखी थवु ए ज जीवनो स्वभाव

हशे ? शु कोई एक जगतकर्त्ता ईश्वर हशे तेणे आम ज करवु योग्य गण्यु हशे ? शु भवितव्यताने आधीन ए वात हशे ? अथवा कोईक मारा करेला आगला अपराधोनु फल हशे ?— ए वगेरे अनेक प्रकारना विकल्पो जे जीवो मन सहित देहधारी छे ते कर्या करे छे, अने जे जीवो मनरहित छे ते अव्यक्तपणे दु खनो अनुभव करे छे, अने अव्यक्तपणे ते दु ख मटे एवी इच्छा राख्या करे छे

आ जगतने विषे प्राणीमात्रनी व्यक्त अथवा अव्यक्त इच्छा पण एज छे के, कोई पण प्रकारे मने दु ख न हो, अने सर्वथा सुख हो प्रयत्न पण एज अर्थे छता ते दु ख शा माटे मटतु नथी ? एवो प्रश्न घणा घणा विचारवानोने भूतकाळे पण उत्पन्न थयो हतो, वर्तमानकाळे पण थाय छे, अने भविष्यकाळे पण थशे ते अनन्त अनन्त विचारवानोमाथी अनन्त विचारवानो तेना यथार्थ समाधानने पाम्या अने दु खथी मुक्त थया वर्तमानकाळे पण जे जे विचारवानो यथार्थ समाधान पामे छे, ते पण तथारूप फळने पामे छे अने भविष्यकाळे पण जे जे विचारवानो यथार्थ समाधान पामशे, ते ते तथारूप फळने पामशे एमा सशय नथी

शरीरनु दु ख मात्र औषध करवाथी मटी जतु होत, मननु दु ख धनादि मळवाथी मटी जतु होत, अने बाह्य ससर्ग सम्बन्धनु दु ख मनने कई असर उपजावी शकतु न होत, तो दु ख मटाडवा माटे जे जे प्रयत्न करवामा आवे छे ते ते सर्व प्रयत्न, जीवोने सफळ थात, परन्तु ज्यारे तेम बनतु जोवामा न आव्यु त्यारे ज विचारवानोने ए प्रश्न उत्पन्न

थयु के दुख मटाडवा माटे बीजो ज उपाय होवो जोईए, आ जे करवामा आवे छे ते उपाय अयथार्थ छे अने बधो श्रम वृथा छे, माटे ते दुखनु मूळ कारण जो यथार्थ जाणवामा आवे अने ते ज प्रमाणे उपाय करवामा आवे तो दुख मटे, नही तो नही ज मटे

जे विचारवानो दुखनु यथार्थ मूळ कारण विचारवा ऊठ्या, तेमाथी पण कोईक ज तेनु यथार्थ समाधान पाम्या, अने घणा तो यथार्थ समाधान नही पामवा छता मतिव्यामोहादि कारणथी 'यथार्थ समाधान पाम्या छीए' एम मानवा लाग्या, तथा ते प्रमाणे उपदेश करवा लाग्या, तेम ज घणा लोको तेने अनुसरवा पण लाग्या। जगतमा जुदा जुदा धर्ममत जोवामा आवे छे, तेनी उत्पत्तिनु मुख्य कारण ए ज छे।

'धर्मथी दुख मटे' एम घणाखरा विचारवानोनी मान्यता थई, परन्तु धर्मनु स्वरूप समजवामा एक बीजामा घणो तफावत पड्यो। घणा तो पोतानो मूळ विषय चूकी गया, तेम घणा तो ते विषयमा मति थाकवाथी अनेक प्रकारे नास्तिकादि परिणामोने पाम्या।

षट्-दर्शन अने तेमना अभिप्राय

[५२०/७११]

बौद्ध, नैयायिक, साख्य, जैन अने मीमासा ए पाच आस्तिक दर्शनो एटले बन्ध-मोक्षादि भावने स्वीकारनारा दर्शनो छे नैयायिकना अभिप्राय जेवो ज वैशेषिकनो अभिप्राय छे, साख्य

जेवो ज योगनो अभिप्राय छे, सहज भेद छे तेथी ते दर्शन जुदा गवेष्या नथी । पूर्व अने उत्तर एम मीमासादर्शनना वे भेद छे, पूर्वमीमासा अने उत्तरमीमासामा विचारनो भेद विशेप छे, तथापि मीमासा शब्दथी वेयनु ओळखाण थाय छे, तेथी अत्रे ते शब्दथी वेय समजवा पूर्वमीमासानु 'जैमीनी' अने उत्तरमीमासानु 'वेदात' एम नाम पण प्रसिद्ध छे

वौध अने जैन सिवायना बाकीना दर्शनो वेदने मुख्य राखी प्रवर्ते छे, माटे वेदाश्रित दर्शन छे, अने वेदार्थ प्रकाशी पोतानु दर्शन स्थापवानो प्रयत्न करे छे। वौध अने जैन वेदाश्रित नथी, स्वतत्र दर्शन छे ।

आत्मादि पदार्थने नही स्वीकारतु एवु चार्वाक नामे छट्ठु दर्शन छे ।

वौधदर्शनना मुख्य चार भेद छे — १ सौतान्त्रिक, २ माध्यमिक, ३ शून्यवादी अने ४ विज्ञानवादी ते जुदे जुदे प्रकारे भावोनी व्यवस्था माने छे

जैनदर्शनना सहज प्रकारान्तरथी वे भेद छे, दिगम्बर अने श्वेताम्बर

पाचे आस्तिक दर्शनने जगत् अनादि अभिमत छे ।

वौध, साख्य, जैन अने पूर्वमीमासाने अभिप्राये सृष्टिकर्ता एवो कोई ईश्वर नथी

नैयायिकने अभिप्राये तटस्थपणे ईश्वर कर्ता छे. वेदातने अभिप्राये आत्माने विषे जगत विवर्तरूप एटले कल्पितपणे भासे छे अने ते रीते ईश्वरने कल्पितपणे कर्ता स्वीकार्यो छे.

योगने अभिप्राये नियतापणे ईश्वर पुरुषविशेष छे

बौद्धने अभिप्राये त्रिकाळ (टकवावाळो) अने वस्तुस्वरूप आत्मा नथी, क्षणिक छे। शून्यवादी बौद्धने अभिप्राये विज्ञानमात्र छे, अने विज्ञानवादी बौद्धने अभिप्राये दुःखादि तत्त्व छे, तेमा विज्ञानस्कध क्षणिकपणे आत्मा छे

नैयायिकने अभिप्राये सर्वव्यापक एवा असख्य जीव छे, अने ईश्वर पण सर्वव्यापक छे. आत्माने मनना सान्निध्यथी ज्ञान ऊपजे छे

साख्यने अभिप्राये सर्वव्यापक एवा असख्य आत्मा छे ते नित्य, अपरिणामी अने चिन्मात्र स्वरूप छे

जैनने अभिप्राये अनन्त द्रव्य आत्मा छे, प्रत्येक जुदा छे ज्ञानदर्शनादि चेतना स्वरूप, नित्य अने परिणामी छे प्रत्येक आत्माने असख्यात प्रदेशी स्वशरीरावगाह वर्ती मान्यो छे

पूर्वमीमासाने अभिप्राये जीव असख्य छे, चेतन छे

उत्तरमीमासाने अभिप्राये एक ज आत्मा सर्वव्यापक अने सच्चिदानंदमय त्रिकाळाबाध्य छे

दार्शनिक तुलना अने सत्यासत्य विवेक

[४७४/६१७]

एकबीजा दर्शननो मोटो भेद जोवामा आवे छे, ते सर्वनी तुलना करी अमुक दर्शन साचु छे एवो निर्धार बधा मुमुक्षुथी थवो दुष्कर छे, केम के ते तुलना करवानी क्षयोपशम शक्ति कोईक जीवने होय छे वळी एक दर्शन सर्वांशे सत्य अने बीजा दर्शन सर्वांशे असत्य एम विचारमा सिद्ध थाय, तो बीजा दर्शननी प्रवृत्ति करनारनी दशा आदि विचारवा

योग्य छे, केमके वैराग्य-उपशम जेना वळवान छे तेणे, केवळ असत्यनु निरूपण केम कर्युं होय ?—ए आदि विचारवा योग्य छे, पण सर्व जीवथी आ विचार थवो दुर्लभ छे अने ते विचार कार्यकारी पण छे—करवा योग्य छे, पण ते कोई माहात्म्यवानने थवा योग्य छे, त्यारे बाकी जे मोक्षना इच्छुक जीवो छे, तेओए ते सम्बधी शु करवु घटे ? ते पण विचारवा योग्य छे

सर्व प्रकारना सर्वांग समाधान विना सर्व कर्मथी मुक्त थवु अशक्य छे—एवो विचार अमारा चित्तमा रहे छे, अने सर्व प्रकारनु समाधान थवा माटे अनन्तकाळ सुधी पुरुपार्थ करवो पडतो होय तो घणु करी कोई जीव मुक्त थई शके नही, तेथी एम जणाय छे के अल्पकाळमा ते सर्व प्रकारना समाधानना उपाय होवा योग्य छे, जेथी मुमुक्षु जीवने निराशानु कारण पण नथी

दार्शनिक मथन

[८०९/६२]

प्रत्यक्ष अनेक प्रकारना दुखने तथा दुखी प्राणीओने जोईने, तेम ज जगतनी विचित्र रचना जाणीने, तेम थवानो हेतु शो छे ? तथा ते दुखनु मूळ स्वरूप शु छे ? अने तेनी निवृत्ति क्या प्रकारे थई शकवा योग्य छे ? तेम ज जगतनी विचित्र रचनानु अतर्स्वरूप शु छे ?—ए आदि प्रकारने विषे विचारदशा उत्पन्न थई छे जेने एवा मुमुक्षुपुरुष तेमणे, पूर्व-पुरुषोए उपर कह्या ते विचारो विषे जे कई समाधान आण्यु

हतु अथवा मान्यु हतु — ते विचारना समाधान प्रत्ये पण यथाशक्ति (अमे) आलोचना करी ते आलोचना करता विविध प्रकारना मतमतान्तर तथा अभिप्राय सम्बन्धी यथाशक्ति विशेष विचार कर्यो तेम ज नाना प्रकारना रामानुजादि सप्रदायोनो विचार कर्यो, तथा वेदान्तादि दर्शनोनो विचार कर्यो ते आलोचना विषे अनेक प्रकारे ते ते दर्शनना स्वरूपनु मथन कर्युं, अने प्रसगे प्रसगे मथननी योग्यताने प्राप्त थयेलु एवु जैनदर्शन ते सम्बन्धी घणा प्रकारे नथन थयु .

जिनागमनी प्रामाणिकता

[४६३/५९५]

वेदातादिमा आत्मस्वरूपनी जे विचारणा कही छे, ते विचारणा करता श्री जिनागममा जे आत्मस्वरूपनी विचारणा कही छे, तेमा भेद पडे छे. सर्व विचारणानु फळ आत्मानुं सहजस्वभावे परिणाम थवु एज छे सम्पूर्ण रागद्वेषना क्षय विना सम्पूर्ण आत्मज्ञान प्रगटे नही — एवो निश्चय श्री जिने कह्यो छे ते, वेदान्तादि करता बळवान प्रमाणभूत छे.

[४६३/५९६]

सर्व करता वीतरागना वचनने सम्पूर्ण प्रतीतिनु स्थान कहेवु घटे छे, केमके ज्या रागादि दोषनो सम्पूर्ण क्षय होय त्या सम्पूर्ण ज्ञानस्वभाव प्रगटवा योग्य नियम घटे छे.

श्री जिनने सर्व करता उत्कृष्ट वीतरागता सभवे छे, प्रत्यक्ष तेमना वचननु प्रमाण छे माटे. जे कोई पुरुषने जेटले अशे वीतरागता सभवे छे, तेटले अशे ते पुरुषनु वाक्य मान्यता

योग्य छे साख्यादि दर्शने नन्त्र-मोक्षनी जे जे व्याख्या उपदेशी छे, तेथी बळवान प्रमाणसिद्ध व्याख्या श्री जिनवीतरागे कही छे--एम जाणु छु

अनुभवप्रमाणथी जिनागम-अविरोधता

[४६३/१९७]

अमारा चित्तने विषे वारवार एम आवे छे अने एम परिणाम स्थिर रह्या करे छे के जेवो आत्मकल्याणनो निर्धार श्री वर्द्धमानस्वामीए के श्री ऋषभादिए कर्यो छे, तेवो निर्धार बीजा सप्रदायने विषे नथी

वेदान्तादि दर्शनो लक्ष आत्मज्ञान भणी अने सपूर्ण मोक्ष प्रत्ये जतो जोवामा आवे छे, पण तेनो यथायोग्य निर्धार सपूर्णपणे तेमा जणातो नथी, अशे जणाय छे अने कई कई ते पण पर्याय फेर देखाय छे जो के वेदान्तने विषे ठाम ठाम आत्मचर्या ज विवेची छे, तथापि ते चर्या स्पष्टपणे अविरुद्ध छे—एम हजुसुधी लागी शकतु नथी एम पण बने के वखते विचारना कोई उदयभेदथी वेदान्तनो आशय बीजे स्वरूपे समजवामा आवतो होय अने तेथी विरोध भासतो होय—एवी आशका पण फरी फरी चित्तमा करवामा आवी छे, विशेष विशेष आत्मवीर्य परिणमावीने तेने अविरोध जोवा माटे विचार कर्या करेल छे, तथापि एम जणाय छे के वेदान्त जे प्रकारे आत्मस्वरूप कहे छे, ते प्रकारे सर्वथा वेदान्त अविरोधपणु पामी शकतु नथी, केमके ते कहे छे ते ज प्रमाणे आत्म-स्वरूप नथी; कोई तेमा मोटो भेद जोवामा आवे छे, अने ते ते प्रकारे साख्यादि दर्शनोने विषे पण भेद जोवामा

आवे छे एकमात्र श्री जिने कह्यु छे ते आत्मस्वरूप विशेष विशेष अविरोधी जोवामा आवे छे अने ते प्रकारे वेदवामा आवे छे; सपूर्णपणे अविरोधी जिननु कहेलु आत्म-स्वरूप होवा योग्य छे—एम भासे छे सपूर्णपणे अविरोधी ज छे, एम कहेवामा नथी आवतु तेनो हेतु मात्र एटलो ज छे के, सपूर्णपणे आत्मावस्था प्रगटी नथी, जेथी जे अवस्था अप्रगट छे, ते अवस्थानु अनुमान वर्तमानमा करीए छीए जेथी ते अनुमान पर अत्यन्त भार न देवा योग्य गणी विशेष विशेष अविरोधी छे, एम जणाव्यु छे, सपूर्ण अविरोधी होवा योग्य छे—एम लागे छे

सपूर्ण आत्मस्वरूप कोई पण पुरुषने विषे प्रगटवु जोईए—एवो आत्माने विषे निश्चय प्रतीतिभाव आवे छे, अने ते केवा पुरुषने विषे प्रगटवु जोईए? एम विचार करता जिन जेवा पुरुषने प्रगटवु जोईए एम स्पष्ट लागे छे कोईने पण आ सृष्टिमडळने विषे आत्मस्वरूप सपूर्ण प्रगटवा योग्य होय तो श्री वर्द्धमानस्वामीने विषे प्रथम प्रगटवा योग्य लागे छे अथवा ते दशाना पुरुषोने विषे सौथी प्रथम सपूर्ण आत्मस्वरूप प्रगटवा योग्य लागे छे.

प्रकाश भुवन (माँ आकाशवाणी)

[७९७/१७]

खचीत ए सत्य छे एम ज स्थिति छे तमे आ भणी वळो—

तेओए रूपकथी कह्यु छे भिन्न-भिन्न प्रकारे तेथी बोध थयो छे, अने थाय छे; परन्तु ते विभगरूप छे

आ बोध सम्यक् छे तथापि घणो ज सूक्ष्म छे अने मोह टळ्ये ग्राह्य थाय तेवो छे

सम्यक्बोध छे, पण पूर्ण स्थितिमा रह्यो नथी ।

तोपण जे छे, ते योग्य छे — ए समजीने हवे घटतो मार्ग ल्यो

कारण शोधो मा, ना कहो मा, कल्पना करो मा, एम ज छे

ए पुरुष यथार्थवक्ता हतो, अयथार्थ कहेवानु तेमने कोई निमित्त नहोतु

[७९५/१०]

एज स्थिति, एज भाव अने एज स्वरूप ।

गमे तो कल्पना करी बीजी वाट ल्यो, यथार्थ जोईतो होय तो आ . लो

विभगज्ञान दर्शन अन्य दर्शनमा मानवामा आव्यु छे, एमा मुख्य प्रवर्तकोए जे धर्ममार्ग बोध्यो छे ते सम्यक् थवा 'स्यात्' मुद्रा जोईए

स्यात्-मुद्रा ते स्वरूपस्थित आत्मा छे. श्रुतज्ञाननी अपेक्षाए स्वरूपस्थित आत्माए कहेली शिक्षा छे

नाना प्रकारना नय, नाना प्रकारना प्रमाण, नाना प्रकारनी भगजाल, नाना प्रकारना अनुयोग — ए सघळा लक्षणारूप छे, लक्ष एक सच्चिदानन्द छे

दृष्टिविष गया पछी गमे ते शास्त्र, गमे ते अक्षर, गमे ते कथन, गमे ते वचन, गमे ते स्थल प्राये अहितनु कारण थतु नथी । .. ..

[७९६/११]

जिनमार्ग प्रत्ये दृढ़ निश्चय

एटलु ज शोधाय तो दधु पामशो, खचित एमा ज छे मने चोक्कस अनुभव छे सत्य कहु छु यथार्थ कहु छु नि शक मानो

ए स्वरूप माटे सहज सहज कोई स्थळे लखी वाळ्यु छे

श्री. तीर्थंकरदेवना खरेखरा अनुयायी

[३१४/३२२]

अमने जे निर्विकल्प नामनी समाधि छे, ते तो आत्मानी स्वरूपपरिणति वर्तती होवाने लीधे छे। आत्माना स्वरूप सबधी तो प्राये निर्विकल्पपणु ज रहेवानु अमने सभवित छे, कारण के अन्यभावने विषे मुख्यपणे अमारी प्रवृत्ति ज नथी

बन्ध-मोक्षनी यथार्थं व्यवस्था जे दर्शनने विषे यथार्थं-पणे कहेवामा आवी छे, ते दर्शन निकट मुक्तपणानु कारण छे, अने ए यथार्थ व्यवस्था कहेवाने जोग्य जो कोई अमे विशेषपणे मानता होईए तो ते श्री तीर्थंकरदेव छे।

अने ए जे श्री तीर्थंकरदेवनो अतर आशय, ते प्राये मुख्यपणे अत्यारे कोईने विषे आ क्षेत्रे होय, तो ते अमे होईशु—एम अमने दृढ करीने भासे छे कारण के जे अमारु अनुभवज्ञान छे तेनु फळ वीतरागपणु छे, अने वीतरागनु कहेलु जे श्रुतज्ञान छे ते पण तेज परिणामनु कारण लागे छे, माटे अमे तेना अनुयायी खरेखरा छीए, साचा छीए

जिनमार्गनी वर्तमान परिस्थिति

[८२२/१४]

स्वपर परमोपकारक परमार्थमय सत्यधर्म जयवन्त वर्तो

आश्चर्यकारक भेद पडी गया छे

खण्डित छे

सम्पूर्ण करवानु साधन दुर्गम्य देखाय छे

ते प्रभावने विषे महत् अतराय छे

देश-काळादि घणा प्रतिकूळ छे

वीतरागोनो मत लोकप्रतिकूळ थई पड्यो छे

रूढिथी जे लोको तेने माने छे तेना लक्षमा पण ते सुप्रतीत जणातो नथी, अथवा अन्यमत ते वीतरागोनो मत समजी प्रवर्त्ये जाय छे

यथार्थ वीतरागोनो मत समजवानो तेमनामा योग्यतानी घणी खामी छे,

दृष्टिरागनु प्रबळ राज्य वर्ते छे

वेषादि व्यवहारमा मोटी विटर्वना करी मोक्षमार्गनो अतराय करी बेठा छे

तुच्छ पामर पुरुषो विराधकवृत्तिना घणी अग्रभागे वर्ते छे

किञ्चित् सत्य बहार आवता पण तेमने प्राणघाततुल्य दु ख लागतु होय एम देखाय छे

जिनमार्गोद्धार-भावना

[१५]

त्यारे तमे शा माटे ते धर्मनो उद्धार इच्छो छो ?

परम कारुण्य स्वभावथी

ते सद्धर्म प्रत्येनी परम भक्तिथी

[८१३/७३]

जेनाथी मार्ग प्रवर्त्या छे, एवा मोटा पुरुपना विचार, बळ, निर्भयतादि गुणो पण मोटा हता

एक राज्य प्राप्त करवामा जे पराक्रम घटे छे, ते करता अपूर्व अभिप्राय सहित धर्मसतति प्रवर्तवामा विशेष पराक्रम घटे छे

दर्शननी रीते आ काळमा धर्म प्रवर्ते एथी जीवोनु कल्याण छे के सप्रदायनी रीतो प्रवर्ते तो जीवोनु कल्याण छे?—ते वात विचारवा योग्य छे

संप्रदायनी रीते घणा जीवोने ते मार्ग ग्रहण थवा योग्य थाय, दर्शननी रीते विरल जीवोने ग्रहण थाय

जो जिनने अभिमते मार्ग निरूपण करवा योग्य गणवामां आवे, तो ते सप्रदायना प्रकारे निरूपण थवो विशेष असभवित छे, केमके तेनी रचनानु साप्रदायिक-स्वरूप थवु कठण छे

दर्शननी अपेक्षाए कोईक जीवने उपकारी थाय एटलो विरोध आवे छे।

[५१७/७०८]

जैनदर्शननी रीतिए जोता सम्यग्दर्शन अने वेदान्तनी रीतिए जोता केवळज्ञान अमने सभवे छे

जैन प्रसगमा अमारो वधारे निवास थयो छे, तो कोई पण प्रकारे ते मार्गनो उद्धार अम जेवाने द्वारे विशेष करीने थई शके, केमके तेनु स्वरूप विशेष करीने समजायु होय ए आदि (योग्यता अत्र छे)

वर्तमानमा जैनदर्शन एटलु बधु अव्यवस्थित अथवा विपरीत स्थितिमा जोवामा आवे छे के, तेमाथी जाणे जिननो अतमार्ग भूसाई गयो छे, अने लोको मार्ग प्ररूपे छे तेमा बाह्य कुटारो बहु वधारी दीधो छे जेमा अन्तर्मार्गनु ज्ञान घणु करी विच्छेद जेवु थयु छे

वेदोक्त मार्गमा बसे-चारसे वर्षे कोई-कोई मोटा आचार्य थया देखाय छे के जेथी लाखो माणसने वेदोक्त रीति सचेत थई प्राप्त थई होय। वळी साधारण रीते कोई कोई आचार्य अथवा ते मार्गना जाण सारा पुरुषो एम ने एम थया करे छे, अने जैनमार्गमा घणा वर्ष थया तेवु बन्यु देखातु नथी जैनमार्गमा प्रजा पण घणी थोडी रही छे, अने तेमा सेंकडो भेद वर्ते छे एटलु ज नही, पण 'मूळमार्ग'नी सन्मुखनी वात पण तेमने काने नथी पडती, केमके उपदेशकोना लक्षमा नथी —एवी स्थिति वर्ते छे तेथी चित्तमा एम आव्या करे छे के ते मार्ग वधारे प्रचार पामे तो तेम करवु, नहि तो तेमा वर्तती प्रजाने मूळलक्षपणे दोरवी आ काम घणु विकट छे वळी जैनमार्ग पोते ज समजवो तथा समजाववो कठण छे, समजावता आडा कारणो आवीने घणा ऊभा रहे—एवी स्थिति छे एटले तेवी प्रवृत्ति करता डर लागे छे तेनी साथे एम पण रहे छे के जो आ कार्य आ काळमा अमाराथी कई पण बनें तो बनी शके, नही तो हाल ते मूळमार्ग सन्मुख थवा माटे बीजानु प्रयत्न काम आवे तेवु देखातु नथी । घणु करीने मूळमार्ग बीजाना लक्षमा नथी, तेम ते हेतु दृष्टाते उपदेशवामा परमश्रुत आदि गुणो जोईए छे, तेम ज अतरग केटलाक गुणो जोईए छे ते अत्र छे—एवु दृढ भासे छे

ए रीते जो मूळ मार्ग प्रगटतामा आणवो होय तो प्रगट करनारे सर्वसंगपरित्याग करवो योग्य छे, केमके तेथी खरेखरो समर्थ उपकार थवानो वखत आवे । वर्तमान दशा जोता — सत्ताना कर्मो पर दृष्टि देता केटलाक वखत पछी ते उदयमा आववो संभवे छे अमने सहजस्वरूप ज्ञान छे, जेथी योगसाधननी एटली अपेक्षा नहो होवाथी तेमा प्रवृत्ति करी नथी, तेम ते सर्वसंगपरित्यागमा अथवा विशुद्ध देशपरित्यागमा साधवा योग्य छे । एथी लोकोने घणो उपकार थाय छे, जोके वास्तविक उपकारनु कारण तो आत्मज्ञान विना बीजु कोई नथी ।

हाल बे वर्ष सुधी तो ते योगसाधन विशेष करी उदयमा आवे तेम देखातु नथी । तेथी त्यार पछीनी कल्पना कराय छे, अने ३थी ४ वर्ष ते मार्गमा गाळवामा आव्या होय तो ३६ मे वर्षे सर्वसंगपरित्यागी उपदेशकनो वखत आवे अने लोकोनु श्रेय थवु होय तो थाय ।

नानी वये मार्गनो उद्धार करवा सम्बन्धी जिज्ञासा वर्तती हती, त्यार पछी ज्ञानदशा आव्ये क्रमे करीने ते उपशम जेवी थई, पण कोई कोई लोको परिचयमा आवेला, तेमने केटलीक विशेषता भासवाथी कईक मूळमार्ग पर लक्ष आणेलो, अने आ बाजु तो सेंकडो अथवा हजारो माणसो प्रसंगमा आवेला, जेमाथी कईक समजणवाळा तथा उपदेशक प्रत्ये आस्थावाळा एवा सो-एक माणस नीकळे ए उपरथी एम जोवामा आव्यु के लोको तरवाना कामी विशेष छे, पण तेमने तेवो योग बाझतो नथी जो खरेखरा उपदेशक

वर्तमानमा जैनदर्शन एटलु वधु अव्यवस्थित अथवा विपरीत स्थितिमा जोवामा आवे छे के, तेमाथी जाणे जिननो अतर्मार्ग भूसाई गयो छे, अने लोको मार्ग प्ररूपे छे तेमा बाह्य कुटारो वहु वधारी दोधा छे जेमा अन्तर्मार्गनु ज्ञान घणु करी विच्छेद जेवु थयु छे

वेदोक्त मार्गमा त्रमे-चारसे वर्षे कोई-कोई मोटा आचार्य थया देखाय छे के जेथी लाखो माणसने वेदोक्त रीति सचेत थई प्राप्त थई होय। वळी साधारण रीते कोई कोई आचार्य अथवा ते मार्गना जाण सारा पुरुषो एम ने एम थया करे छे, अने जैनमार्गमा घणा वर्ष थया तेवु बन्यु देखातु नथी जैनमार्गमा प्रजा पण घणी थोडी रही छे, अने तेमा सेंकडो भेद वर्ते छे एटलु ज नही, पण 'मूळमार्ग'नी सन्मुखनी वात पण तेमने काने नथी पडती, केमके उपदेशकोना लक्षमा नथी —एवी स्थिति वर्ते छे तेथी चित्तमा एम आव्या करे छे के ते मार्ग वधारे प्रचार पामे तो तेम करवु, नहि तो तेमा वर्तती प्रजाने मूळलक्षपणे दोरवी आ काम घणु विकट छे वळी जैनमार्ग पोते ज समजवो तथा समजाववो कठण छे, समजावता आडा कारणो आवीने घणा ऊभा रहे—एवी स्थिति छे एटले तेवी प्रवृत्ति करता डर लागे छे तेनी साथे एम पण रहे छे के जो आ कार्य आ काळमा अमाराथी कई पण बने तो बनी शके, नही तो हाल ते मूळमार्ग सन्मुख थवा माटे बीजानु प्रयत्न काम आवे तेवु देखातु नथी । घणु करीने मूळमार्ग बीजाना लक्षमा नथी, तेम ते हेतु दृष्टाते उपदेशवामा परमश्रुत आदि गुणो जोईए छे, तेम ज अतरग केटलाक गुणो जोईए छे ते अत्र छे—एवु दृढ भासे छे

ए रीते जो मूळ मार्ग प्रगटतामा आणवो होय तो प्रगट करनारे सर्वसगपरित्याग करवो योग्य छे, केमके तेथी खरेखरो समर्थ उपकार थवानो वखत आवे । वर्तमान दशा जोता—सत्ताना कर्मो पर दृष्टि देता केटलाक वखत पछी ते उदयमा आववो सभवे छे अमने सहजस्वरूप ज्ञान छे, जेथी योगसाधननी एटली अपेक्षा नही होवाथी तेमा प्रवृत्ति करी नथी, तेम ते सर्वसगपरित्यागमा अथवा विशुद्ध देशपरित्यागमा साधवा योग्य छे । एथी लोकोने घणो उपकार थाय छे, जोके वास्तविक उपकारनु कारण तो आत्मज्ञान विना बीजु कोई नथी ।

हाल बे वर्ष सुधी तो ते योगसाधन विशेष करी उदयमा आवे तेम देखातु नथी । तेथी त्यार पछीनी कल्पना कराय छे, अने ३थी ४ वर्ष ते मार्गमा गाळवामा आव्या होय तो ३६ मे वर्षे सर्वसगपरित्यागी उपदेशकनो वखत आवे अने लोकोनु श्रेय थवु होय तो थाय ।

नानी वये मार्गनो उद्धार करवा सम्बन्धी जिज्ञासा वर्तती हती, त्यार पछी ज्ञानदशा आव्ये क्रमे करीने ते उपशम जेवी थई, पण कोई कोई लोको परिचयमा आवेला, तेमने केटलीक विशेषता भासवाथी कईक मूळमार्ग पर लक्ष आणेलो, अने आ बाजु तो सेंकडो अथवा हजारो माणसो प्रसगमा आवेला, जेमाथी कईक समजणवाळा तथा उपदेशक प्रत्ये आस्थावाळा एवा सो-एक माणस नीकळे ए उपरथी एम जोवामा आव्यु के लोको तरवाना कामी विशेष छे, पण तेमने तेवो योग बाझतो नथी जो खरेखरा उपदेशक

पुरुषनो जोग बने तो घणा जीव मूळमार्ग पामे तेवु छे, अने दया आदिनो विशेष उद्योत थाय एवु छे एम देखावाथी कईक चित्तमा आवे छे के आ कार्य कोई करे तो सारु, पण दृष्टि करता तेवो पुरुष ध्यानमा आवतो नथी, एटले कईक लखनार प्रत्ये ज दृष्टि आवे छे, पण लखनारनो जन्मथी लक्ष एवो छे के 'ए जेवु एक्के जोखमवाळु पद नथी, अने पोतानी ते कार्यनी यथायोग्यता ज्यासुधी न वर्ते त्यासुधी तेनी इच्छामात्र न करवी' अने घणु करीने हजु सुधी तेम वर्तवामा आव्यु छे । मार्गनु कई पण स्वरूप कईकने समजाव्यु छे, तथापि कोईने एक व्रत-पच्चखाण आप्यु नथी, अथवा तमे मारा शिष्य छो, अने अमे गुरु छीए — एवो प्रकार घणु करीने दर्शित थयो नथी कहेवानो हेतु एवो छे के सर्वसगपरित्याग थये ते कार्यनी प्रवृत्ति सहजस्वभावे उदयमा आवे तो करवी—एवी मात्र कल्पना छे तेनो खरेखरो आग्रह नथी, मात्र अनुकपादि तथा ज्ञानप्रभाव वर्ते छे तेथी क्यारेक ते वृत्ति उठे छे, अथवा अल्पाशे अगमा ते वृत्ति छे, तथापि ते स्ववश छे अमे धारीए छीए तेम सर्वसगपरित्यागादि जो थाय तो हजारो माणस मूळमार्गने पामे अने हजारो माणस ते सन्मार्गने आराधी सद्‌गतिने पामे एम अमाराथी थवु सभवे छे अमारा सगमा त्याग करवाने घणा जीवोने वृत्ति थाय—एवो अगमा त्याग छे धर्म स्थापवानु मान मोटु छे, तेनी स्पृहाथी पण वखते आवी वृत्ति रहे, पण आत्माने घणी वार तावी जोता ते सभव हवेनी दशामा ओछो ज देखाय छे,

अने कईक सत्तागत रह्यो हशे तो ते क्षीण थशे एम अवश्य भासे छे, केमके यथायोग्यता विना, देह छूटी जाय तेवी दृढ कल्पना होय तोपण, मार्ग उपदेशवो नही—एम आत्मनिश्चय नित्य वर्ते छे एक ए बळवान कारणथी परिग्रहादि त्याग करवानो विचार रह्या करे छे मारा मनमा एम रहे छे के 'वेदोक्त धर्म प्रकाशवो अथवा स्थापवो होय तो मारी दशा यथायोग्य छे पण जिनोक्त धर्म स्थापवो होय तो हजु तेटली योग्यता नथी, तोपण विशेष योग्यता छे'—एम लागे छे.

[५८१/७५७]

श्री ऋषभदेवथी श्री महावीर पर्यन्त भरतक्षेत्रना वर्तमान चोवीश तीर्थंकरोना परम उपकारने वारवार सभारु छु

श्रीमान् वर्द्धमानजिन वर्तमानकाळना चरम तीर्थंकरदेवनी शिक्षाथी हाल मोक्षमार्गनु अस्तित्व वर्ते छे ए तेमना उपकारने सुविहित पुरुषो वारवार आश्चर्यमय देखे छे

काळना दोषथी अपार श्रुतसागरनो घणो भाग विसर्जन थतो गयो, अने बिन्दुमात्र अथवा अल्पमात्र वर्तमानमा विद्यमान छे घणा स्थळो विसर्जन थवाथी, घणा स्थळोमा स्थूळ निरूपण रह्यु होवाथी निर्ग्रंथभगवानना ते श्रुतनो पूर्णलाभ वर्तमान मनुष्योने आ क्षेत्रे प्राप्त थतो नथी ।

घणा मतमतातरादि उत्पन्न थवानो हेतु पण एज छे, अने तेथी ज निर्मळ आत्मतत्त्वना अभ्यासी महात्माओनी अल्पता थई

श्रुत अल्प रह्या छता, मतमतांतर घणा छता, समाधानना केटलाक साधनो परोक्ष छता, महात्मा पुरुषोनु क्वचितत्व छता, हे आर्यजनो! सम्यग्दर्शन, श्रुतनु रहस्य एवो परमपदनो पथ, आत्मानुभवना हेतु, सम्यक्चारित्र अने विशुद्ध आत्मध्यान आजे पण विद्यमान छे — ए परम हर्षनु कारण छे

वर्तमानकाळनु नाम दुपमकाळ छे तेथी दु खे करीने,— घणा अतरायथी, प्रतिकूळताथी, साधननु दुर्लभपणु होवाथी,— मोक्षमार्गनी प्राप्ति थाय छे; पण वर्तमानमा मोक्षमार्गनो विच्छेद छे एम चितववु जोईतु नथी

पचमकाळमा थयेला महर्षिओए पण एम ज कह्यु छे, ते प्रमाणे पण अत्रे कहु छु

सूत्र अने तदनुसार बीजा प्राचीन आचार्योए रचेला घणा शास्त्रो विद्यमान छे सुविहित पुरुपोए तो हितकारी मतिथी ज रच्या छे। कोई मतवादी, हठवादी अने शिथिलताना पोषक पुरुषोए रचेला कोई पुस्तको सूत्रथी अथवा जिनाचारथी मळता न आवता होय अने प्रयोजननी मर्यादाथी बाह्य होय, ते पुस्तकोना उदाहरणथी प्राचीन सुविहित आचार्योना वचनोने उत्थापवानु प्रयत्न भवभीरु महात्माओ करता नथी, पण तेथी उपकार थाय छे—एम जाणी तेनु बहुमान करता छता यथायोग्य सदुपयोग करे छे

दिगबर अने श्वेताबर एवा बे भेद जैन दर्शनमा मुख्य छे मत दृष्टिथी तेमा मोटो अतर जोवामा आवे छे तत्त्व-दृष्टिथी तेवो विशेष भेद जिनदर्शनमा मुख्यपणे परोक्ष छे, जे प्रत्यक्ष कार्यभूत थई शके तेवा छे तेमा तेवो भेद नथी,

माटे बन्ने सप्रदायमा उत्पन्न थता गुणवान पुरुपो सम्यग्दृष्टिथी जुए छे, अने जेम तत्त्वप्रतीतिनो अतराय ओछो थाय तेम प्रवर्ते छे ।

जैनाभासथी प्रवर्तेला मतमतातरो घणा छे, तेनु स्वरूप निरूपण करता पण वृत्ति सकोचाय छे जेमा मूळ प्रयोजननु भान नथी एटलु ज नही, पण मूळ प्रयोजनथी विरुद्ध एवी पद्धतिनु अवलबन वर्ते छे, तेने मुनिपणानु स्वप्न पण क्याथी होय? केमके मूळ प्रयोजनने विसारी क्लेशमा पड्या छे, अने जीवोने, पोतानी पूज्यतादिने अर्थे परमार्थ मार्गना अतरायक छे ।

ते, मुनिनु लिंग पण धरावता नथी, केमके स्वकपोल-रचनाथी तेमनी सर्व प्रवृत्ति छे जिनागम अथवा आचार्यनी परपरानु नाममात्र तेमनी पासे छे, वस्तुत्वे तो ते तेथी पराङ्मुख ज छे

एक तूमडा जेवी, दोरा जेवी अल्पमा अल्प वस्तुना ग्रहण-त्यागना आग्रहथी जुदो मार्ग उपजावी काढी वर्ते छे, अने तीर्थनो भेद करे छे—एवा महामोहमूढ जीव लिंगा-भासपणे पण आजे वीतरागना दर्शनने घेरी बेठा छे —एज असयतिपूजा नामनु आश्चर्य लागे छे

महात्मापुरुषोनी अल्प पण प्रवृत्ति स्व-परने मोक्षमार्ग सन्मुख करवानी होय छे, ज्यारे आ लिंगाभासी जीवो तो भोळा जीवोने मोक्षमार्गथी पराङ्मुख करवामा पोतानु बळ प्रवर्ततु जाणी हर्षायमान थाय छे, अने ते सर्व कर्मप्रकृतिमा वधता अनुभाग अने स्थितिबधनु स्थानक छे—एम हु जाणु छु

[८२३/१८]

नेपथ्य–ध्वनि

परानुग्रह परम कारुण्यवृत्ति करता पण प्रथम चैतन्यजिन-प्रतिमा था, चैतन्यजिनप्रतिमा था।

तेवो काळ छे?
ते विषे निर्विकल्प था।
तेवो क्षेत्रयोग छे?
गवेष।
तेवु पराक्रम छे?
अप्रमत्त शूरवीर था।
तेटलु आयुषवळ छे?
शु लखवु? शु कहेवु?
अतर्मुख उपयोग करीने जो।

ॐ शान्ति. शान्ति शान्ति·

नमो मुज नमो मुज रे

[३३३/३७६]

अविषमपणे ज्या आत्मध्यान वर्ते छे, एवा जे 'श्री रायचद्र' ते प्रत्ये फरी फरी नमस्कार.

—श्रीमद् राजचन्द्र वचनामृतमायी सकलित

सकलयिता श्री सहजानदघन,
श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम,
हम्पी (S Rly)

अनुक्रमणिका

१ परमार्थ प्रेरणा

२ भक्ति कर्तव्य

३ परमार्थ पद्यावलि

४ आत्मचिन्तन

५ समाधि-भावना

६ आत्मसिद्धि

७. पारमार्थिक पत्रावलि

८ विचार रत्नावलि

९ आत्मचर्या

शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१	९	अन्यथा कामना	अन्यथा काम ना
३	१३	अधिरकार	अधिकार
५	४	शार्दुविलक्रीडित	शार्दुलविक्रीडित
१०	९	आशातावेदनी	अशातावेदनी
१२	६	विचार	विचारे
१५	६	राख	राख
२४	३	सगुज्झहा	सवुज्झहा
„	१५	पोतानो	पोतानो,
२९	९	योख्य	योग्य
„	१२	अभेदभाव	अभेदभावे
३४	८	ओळखावानी	ओळखवानी
३७	१२	रसगौरवादि	रसगारवादि
४७	५	आशयथी	आश्रयथी
६६	१९	प्रामाणे	प्रमाणे
७६	८	लह्यो	लह्यो
८५	१४	विभागपर्यायमा	विभावपर्यायमा
८६	२	मरणना .करवावाळा	मरणनो . करवाळो
९१	४	भावता	भावता

१०९	१३	थोगणी	योगथी
१११	१६	आत्मचितन	आत्मचिंतन
११२	१	हावु	होवु
१२५	१४	समर्य	समर्थ
१२७	२०	तोर्यंकरे	तीर्थंकरे
१३०	१२	परिणमे सम्यक्त्व	परिणमे ते सम्यक्त्व
१३६	२०	आत्मचरित्र	आत्मचारित्र
१३९	११	वृपदीसिरमोर	वृपसिरमोर
१४१	१८	निवारण	निरावरण
१४३	१३	तोर्यंकरे	तोर्थंकरे
१४४	४	तीर्यंकर	तीर्थंकर
,,	५	कल्याणनी	कल्याणनो
१४७	१७	नणी ?	नथी ?
१५७	१७	परमे	परम
१५९	२०	अग	अग
१६१	११	सत्यपुरुषोने	सत्पुरुषोने
१६८	६	आगोप्य	अगोप्य
,,	२६	,,	,,
१७३	१८	तिस्कारना	तिरस्कारना
,,	२२	शुश्कज्ञाननो	शुष्कज्ञाननो
१८०	२१	विचारवा	विचरवा
१८१	३	आत्मास्वरूपने	आत्मस्वरूपने
१८२	४	निशेध	निषेध
१९०	५	शुश्कमतनो	शुष्कमतनो

१९६	४	कह्यु	कह्यु
२०१	८	आत्म	आत्मा
२०२	११	यही	नही
२०५	११	नाश नही	नाश थाय नही
२५०	५	निश्चअर्थ	निश्चय अर्थ
२५१	१०	होय	हेय
२५६	१८	विशे	वशे
२६१	६	तो ते तेनी	तो तेनी
२७४	२१	२६४/४३१	३६४/४३१
२७५	५	बीजरुचिसम्यक्	बीजरुचिसम्यक्त्व
२८९	२०	आत्म	आत्मा
२९०	१०	जे जे कोई	जे कोई
२९१	१६	सत्पुषना	सत्पुरुषना
३०७	२२-२३	कर. आजना. करजे	कर
६२४	१	रहित एम कहेवु	सहित एम कहेवु
,,	१८	ज्ञनी थाय छे	ज्ञानी थाय छे
३३५	१०	एवा सप्राप्त	एवा योग सप्राप्त
,,	१३	चिंतन	चिंतित
३४३	२	धर्ममें	धर्म में
३४६	७	तेने उपरना रहे छे	आ लीटी बेवडाई छे माटे काढी नाखो
३४७	९	ध्वनि	ध्वनिथी
३५९	१६	ईश्व	ईश्वर
	१८	उलटु	दुख उलटु

३६०	९	सूवु गमतु नथो	सूवु गमतु के नथी
		जागवु गमतु के	जागवु गमतु,
३७०	१७	केवळज्ञानये	केवळज्ञानेय
३७३	४	सहस्त्रदळ	सहस्रदळ
३७७	१३	लागे छे	लागे छे
३७८	१०	करो छे,	करो छो,
३८४	१०	मृत्यु अधिक	मृत्युथी अधिक
३८८	६	नथी, आत्मभावे	नथी, आत्मा आत्मभावे
३९०	१६	वदेही	विदेही
३९५	७	उपयोग करी	उपयोग फरी
,,	१५	आश्चर्यकारण	आश्चर्यकारक
३९७	११	घणा	घणा
३९८	२	मुक्तपणे	मुक्तपणु
,,	११	ऊडवु	ऊठवु,
३९९	१४	थया योग्य	यथायोग्य
४००	६	थवाथी	थवाथी,
४०६	२३	साम्यक्ज्ञानी	सम्यक्ज्ञानी
४१०	२	बाधेला	बोधेला
	४	वाळ्या	वाळ्या

मगळाचरण

अहो श्री सत्पुरुषके वचनामृत जगहितकरम्,
मुद्रा अरू सत् समागम सुति चेतना जागृतकरम्,
गिरती वृत्ति स्थिर रखे दर्शन मात्रसें निर्दोष है,
अपूर्व स्वभावके प्रेरक सकल सद्गुण कोष है
स्वस्वरूपकी प्रतीति अप्रमत्त सयम धारणम्,
पूरणपणे वीतराग निर्विकल्पताके कारणम्,
अते अयोगि स्वभाव जो ताके प्रगट करतार है,
अनत अव्याबाध स्वरूपमे स्थिति करावनहार है
सहजात्म सहजानद आनदघन नाम अपार है,
सत् देव धर्म स्वरूप दर्शक सुगुरु पारावार है,
गुरु भक्तिसें लहो तीर्थपतिपद शास्त्रमें विस्तार है,
त्रिकाळ जयवत वर्तो श्री गुरुराजने नमस्कार है
एम प्रणमी श्री गुरुराजके पद आप–परहित कारणम्,
जयवत श्री जिनराज वाणी करू तास उच्चारणम्,
भवभीत भविक जे भणे भावे सुणे समजे सद्दहे,
श्री रत्नयत्रनी अैक्यता लही सही सो निज पद लहे

आ मगळाचरण आ ग्रथना पृष्ठ ७२ उपरना सद्गुरु महिमानु काव्य छे भक्तिनी शरुआतमा ज तेने बोली पछी पृष्ठ ७३ उपरना जिनवाणी, प्रभुप्रार्थना वगेरे शरू करवाना होय छे

पृ ७२ नी फूटनोट तरीके आने मूकवानु रही गयु छे तेथी पाछळथी अही मूकचु छे परतु तेने पृ ७२ नी फूटनोट तरीके गणी तेम सुधारी लेवानु छे

—x—

श्रीमद् राजचंद्र वचनामृतमांथी संकलित

तत्त्व-विज्ञान

१

परमार्थ प्रेरणा

१ मंगलकाव्य

[१/१]

शार्दूलविक्रीडित वृत्त

ग्रथारभ प्रसग रग भरवा, कोडे करुं कामना,
बोधु धर्मद मर्म भर्म हरवा, छे अन्यथा कामना,
भाखु मोक्ष सुबोध धर्म धनना, जोडे कथु कामना,
एमा तत्त्व विचार सत्त्व सुखदा, प्रेरो प्रभु कामना १

छप्पय

नाभिनदन नाथ, विश्ववदन विज्ञानी;
भव बधनना फद, करण खंडन सुखदानी;
ग्रंथ पथ आद्यत, खंत प्रेरक भगवता,
अखडित अरिहत, ततहारक जयवता;
श्री मरणहरण तारणतरण, विश्वोद्धारण अघ हरे,
ते ऋषभदेव परमेशपद, रायचद वदन करे. २

---

२. अमूल्य तत्त्वविचार

[१०७/६७]

हरिगीत छद

वहु पुण्यकेरा पुजयी शुभ देह मानवनो मळ्यो,
तोये अरे। भवचक्रनो आटो नहि एक्के टळ्यो,
सुख प्राप्त करता सुख टळे छे लेश ए लक्षे लहो,
क्षण क्षण भयकर भावमरणे का अहो राची रहो? १

लक्ष्मी अने अधिकार वधता, शु वध्यु ते तो कहो?
शु कुटुब के परिवारथी वधवापणु, ए नय ग्रहो,
वधवापणु ससारनु नर देहने हारी जवो,
एनो विचार नही अहोहो। एक पळ तमने हवो।।। २

निर्दोप सुख निर्दोप आनद, ल्यो गमे त्याथी भले,
ए दिव्य शक्तिमान जेथी जंजीरेथी नीकळे,
परवस्तुमा नहि मूझवो, एनी दया मुजने रही,
ए त्यागवा सिद्धात के पश्चात्दु ख ते सुख नही ३

हु कोण छु? कयाथी थयो? शु स्वरूप छे मारु खरु?
कोना सवधे वळगणा छे? राखु के ए परहरु?
एना विचार विवेकपूर्वक शात भावे जो कर्या,
तो सर्व आत्मिक ज्ञानना सिद्धाततत्त्व अनुभव्या ४

ते प्राप्त करवा वचन कोनु सत्य केवळ मानवु?
निर्दोप नरनु कथन मानो 'तेह' जेणे अनुभव्यु,
रे। आत्म तारो। आत्म तारो। शीघ्र एने ओळखो,
सर्वात्ममा समदृष्टि द्यो आ वचनने हृदये लखो ५

---

३. वैराग्य भावनाओ

प्रथम चित्र

[३६/प्र चि]

अनित्यभावना

उपजाति

विद्युत् लक्ष्मी प्रभुता पतग,
आयुष्य ते तो जळना तरग,
पुरदरी चाप अनग रग,
शु राचीए त्या क्षणनो प्रसग।

विशेषार्थ — लक्ष्मी वीजळी जेवी छे वीजळीनो झबकारो जेम थईने ओलवाई जाय छे, तेम लक्ष्मी आवीने चाली जाय छे अधिकार पतगना रग जेवो छे पतगनो रग जेम चार दिवसनो चटको छे, तेम अधिरकार मात्र थोडो काळ रही हाथमाथी जतो रहे छे आयुष्य पाणीना मोजा जेवु छे, पाणीनो हिलोळो आव्यो के गयो तेम जन्म पाम्या अने एक देहमा रह्या के न रह्या त्या वीजा देहमा पडवु पडे छे कामभोग आकाशमा उत्पन्न थता इन्द्रना धनुष्य जेवा छे जेम इन्द्रधनुष्य वर्षाकाळमा थईने क्षणवारमा लय थई जाय छे, तेम यौवनमा कामना विकार फळीभूत थई जरावयमा जता रहे छे, टूकामा हे जीव। ए सघळी वस्तुओनो सबध क्षणभर छे, एमा प्रेमबधननी साकळे वधाईने शु राचवु? तात्पर्य ए सघळा चपळ अने विनाशी छे, तु अखड अने अविनाशी छे, माटे तारा जेवी नित्य वस्तुने प्राप्त कर।

द्वितीय चित्र

[३७/द्वि चि]

अशरणभावना

उपजाति

सर्वज्ञनो धर्म सुशर्ण जाणी,
आराध्य आराध्य प्रभाव आणी,
अनाथ एकात सनाथ थाशे,
एना विना कोई न बाह्य स्हाशे

विशेषार्थ — सर्वज्ञ जिनेश्वर देवे नि स्पृहताथी बोधेलो धर्म उत्तम शरणरूप जाणीने मन, वचन अने कायाना प्रभाववडे हे चेतन! तेने तु आराध, आराध तु केवल अनाथरूप छो ते सनाथ थईश एना विना भवाटवी-भ्रमणमा तारी बाय कोई साहनार नथी

तृतीय चित्र

[४०/तृ चि.]

एकत्वभावना

उपजाति

शरीरमा व्याधि प्रत्यक्ष थाय,
ते कोई अन्ये लई ना शकाय,
ए भोगवे एक स्व आत्म पोते,
एकत्व एथी नयसुज्ञ गोते

विशेषार्थ — शरीरमा प्रत्यक्ष देखाता रोगादिक जे उपद्रव थाय छे ते स्नेही, कुटुंबी, जाया के पुत्र कोईथी लई शकाता नथी, ए मात्र एक पोतानो आत्मा पोते ज भोगवे छे एमा कोई पण भागीदार थतुं नथी तेम ज पाप पुण्यादि

सघळा विपाको आपणो आत्मा ज भोगवे छे ए एकलो आवे छे, एकलो जाय छे, एवु सिद्ध करीने विवेकने भलो रीते जाणवावाळा पुरुषो एकत्वने निरतर शोधे छे.

शार्दूलविक्रीडित

राणी सर्व मळी सुचदन घसी, ने चर्चवामा हतो,
 बूझयो त्या ककळाट ककणतणो, श्रोती नमि भूपति,
सवादे पण इन्द्रथी दृढ रह्यो, एकत्व साचु कर्युं,
 एवा ए मिथिलेशनु चरित आ सपूर्ण अत्रे थयु.

विशेषार्थ .— राणीओनो समुदाय चंदन घसीने विलेपन करवामा रोकायो हतो, तत्समयमा ककणना खळभळाटने साभळोने नमिराज बूझयो इन्द्रनो साथे सवादमा पण अचळ रह्यो, अने एकत्वने सिद्ध कर्युं

चतुर्थ चित्र

[४४/च चि]

अन्यत्वभावना

शार्दूलविक्रीडित

ना मारा तन रूप काति युवती, ना पुत्र के भ्रात ना,
 ना मारा भृत स्नेहीओ स्वजन के, ना गोत्र के ज्ञात ना,
ना मारा धन धाम यौवन धरा, ए मोह अज्ञात्वना,
 रे ! रे ! जीव विचार एम ज सदा, अन्यत्वदा भावना

विशेषार्थ —आ शरीर ते मारु नथी, आ रूप ते मारु नथी, आ काति ते मारी नथी, आ स्त्री ते मारी नथी, आ पुत्र ते मारा नथी, आ भाईओ ते मारा नथी, आ दास ते मारा नथी, आ स्नेहीओ ते मारा नथी, आ सबधीओ ते मारा नथी, आ गोत्र ते मारु नथी, आ ज्ञाति ते मारी नथी, आ

द्वितीय चित्र

[३७/द्वि चि]

अशरणभावना

उपजाति

सर्वज्ञनो धर्म सुशर्ण जाणी,
आराध्य आराध्य प्रभाव आणी,
अनाथ एकांत सनाथ थाशे,
एना विना कोई न बाह्य स्हाशे

विशेषार्थ — सर्वज्ञ जिनेश्वर देवे निःस्पृहताथी बोधेलो धर्म उत्तम शरणरूप जाणीने मन, वचन अने कायाना प्रभाववडे हे चेतन! तेने तु आराध, आराध तु केवल अनाथरूप छो ते सनाथ थईश एना विना भवाटवी-भ्रमणमा तारी बाय कोई साहनार नथी

तृतीय चित्र

[४०/तृ चि.]

एकत्वभावना

उपजाति

शरीरमा व्याधि प्रत्यक्ष थाय,
ते कोई अन्ये लई ना शकाय,
ए भोगवे एक स्व आत्म पोते,
एकत्व एथी नयसुज्ञ गोते

विशेषार्थ — शरीरमा प्रत्यक्ष देखाता रोगादिक जे उपद्रव थाय छे ते स्नेही, कुटुंबी, जाया के पुत्र कोईथी लई शकाता नथी, ए मात्र एक पोतानो आत्मा पोते ज भोगवे छे एमा कोई पण भागीदार थतु नथी तेम ज पाप पुण्यादि

सघळा विपाको आपणो आत्मा ज भोगवे छे ए एकलो आवे छे, एकलो जाय छे, एवु सिद्ध करीने विवेकने भलो रीते जाणवावाळा पुरुषो एकत्वने निरतर शोधे छे.

शार्दूविलक्रीडित

राणी सर्व मळी सुचदन घसी, ने चर्चवामा हतो,
बूझयो त्या ककळाट ककणतणो, श्रोती नमि भूपति,
सवादे पण इन्द्रथी दृढ रह्यो, एकत्व साचु कर्यु,
एवा ए मिथिलेशनु चरित आ सपूर्ण अत्रे थयु.

विशेषार्थ .— राणीओनो समुदाय चदन घसीने विलेपन करवामा रोकायो हतो, तत्समयमा ककणना खळभळाटने साभळोने नमिराज बूझयो इन्द्रनो साथे सवादमा पण अचळ रह्यो, अने एकत्वने सिद्ध कर्यु

चतुर्थ चित्र

[४४/च चि]

अन्यत्वभावना

शार्दूलविक्रीडित

ना मारा तन रूप काति युवती, ना पुत्र के भ्रात ना,
ना मारा भृत स्नेहीओ स्वजन के, ना गोत्र के ज्ञात ना,
ना मारा धन धाम यौवन धरा, ए मोह अज्ञात्वना,
रे! रे! जीव विचार एम ज सदा, अन्यत्वदा भावना

विशेषार्थ — आ शरीर ते मारु नथी, आ रूप ते मारु नथी, आ काति ते मारी नथी, आ स्त्री ते मारी नथी, आ पुत्र ते मारा नथी, आ भाईओ ते मारा नथी, आ दास ते मारा नथी, आ स्नेहीओ ते मारा नथी, आ सबंधीओ ते मारा नथी, आ गोत्र ते मारुं नथी, आ ज्ञाति ते मारी नथी, आ

लक्ष्मी ते मारी नथी, आ महालय ते मारा नथी, आ यौवन ते मारु नथी, अने आ भूमि ते मारी नथी, मात्र ए मोह अज्ञानपणानो छे सिद्धगति साधवा माटे हे जीव ! अन्यत्वनो बोध देनारी एवी ते अन्यत्वभावनानो विचार कर ! विचार कर !

शार्दूलविक्रीडित

देखी आगळी आप एक अडवी, वैराग्य वेगे गया,
छाडी राजसमाजने भरतजी, कैवल्यज्ञानी थया,
चोथु चित्र पवित्र ए ज चरिते, पाम्यु अही पूर्णता,
ज्ञानीना मन तेह रजन करो, वैराग्य भावे यथा

विशेषार्थ — पोतानी एक आगळी अडवी देखीने वैराग्यना प्रवाहमा जेणे प्रवेश कर्यो, राजसमाजने छोडीने जेणे कैवल्यज्ञान प्राप्त कर्यु, एवा ते भरतेश्वरनु चरित्र धारण करीने आ चोथु चित्र पूर्णता पाम्यु ते जेवो जोईए तेवो वैराग्यभाव दर्शावीने ज्ञानी पुरुषना मनने रजन करनार थाओ !

पचम चित्र

[४७/५ चि]

अशुचिभावना

गीतिवृत्त

खाण मूत्र ने मळनी, रोग जरानु निवासनु धाम,
काया एवी गणीने, मान त्यजीने कर सार्थक आम

विशेषार्थ — मळ अने मूत्रनी खाणरूप, रोग अने वृद्धताने रहेवाना धामना जेवी कायाने गणीने हे चैतन्य ! तेनु मिथ्या मान त्याग करीने सनत् कुमारनी पेठे तेने सफळ कर !

निवृत्तिबोध

नाराच छद

[४९/ष चि]

अनत सौख्य नाम दुख त्या रही न मित्रता।
अनत दुख नाम सौख्य प्रेम त्या, विचित्रता।।
उघाड न्याय–नेत्र ने निहाळ रे! निहाळ तु,
निवृत्ति शीघ्रमेव धारी ते प्रवृत्ति बाळ तु

विशेषार्थ :—जेमा एकात अने अनत सुखना तरग ऊछळे छे तेवा शील, ज्ञानने मात्र नामना दुखथी कटाळी जईने मित्ररूपे न मानता तेमा अभाव करे छे, अने केवळ अनत दुखमय एवा जे ससारना नाममात्र सुख तेमा तारो परिपूर्ण प्रेम छे ए केवो विचित्रता छे! अहो चेतन! हवे तु तारा न्यायरूपी नेत्रने उघाडीने निहाळ रे! निहाळ!!! निहाळीने शीघ्रमेव निवृत्ति एटले महा वैराग्यने धारण कर, अने मिथ्या कामभोगनी प्रवृत्तिने बाळी दे।

उपसंहार

[२१/१५]

ज्ञान, ध्यान, वैराग्यमय, उत्तम जहा विचार,
ए भावे शुभ भावना, ते ऊतरे भव पार

दोहरा

ज्ञानी के अज्ञानी जन, सुख दु ख रहित न कोय,
ज्ञानी वेदे धैर्यथी, अज्ञानी वेदे रोय

मन्त्र तन्त्र औषध नही, जेथी पाप पलाय,
वीतराग वाणी विना, अवर न कोई उपाय

वचनामृत वीतरागना, परम शातरस मूळ,
औषध जे भवरोगना कायरने प्रतिकूळ

जन्म, जरा ने मृत्यु, मुख्य दु खना हेतु;
कारण तेना बे कह्या, राग द्वेष अणहेतु

नथी धर्यो देह विषय वधारवा,
नथी धर्यो देह परिग्रह धारवा

ज्ञानीओए वैराग्य शा माटे बोध्यो ?

[९५/५२]

ससारना स्वरूप सवधी आगळ केटलुक कहेवामा आव्यु छे ते तमने लक्षमा हशे

ज्ञानीओए एने अनत खेदमय, अनत दु खमय, अव्यवस्थित, चळविचळ अने अनित्य कह्यो छे आ विशेषणो लगाडवा पहेला एमणे ससार सवधी सपूर्ण विचार करेलो जणाय छे अनत भवनु पर्यटन, अनतकाळनु अज्ञान, अनत जीवनना व्याघात, अनत मरण, अनत शोक ए वडे करीने ससारचक्रमा आत्मा भम्या करे छे ससारनी देखाती इन्द्रवारणा जेवी सुदर मोहिनीए आत्माने तटस्थ लीन करी नाख्यो छे ए जेवु सुख आत्माने क्याय भासतु नथी मोहिनीथी सत्यसुख अने एनु स्वरूप जोवानी एणे आकाक्षा पण करी नथी पतगनी जेम दीपक प्रत्ये मोहिनी छे तेम आत्मानी ससार सबधे मोहिनी छे ज्ञानीओ ए ससारने क्षणभर पण सुखरूप कहेता नथी तल जेटली जग्यो पण ए ससारनी झेर विना रही नथी एक भूडथी करीने एक चक्रवर्ती सुधी भावे करीने सरखापणु रह्यु छे, एटले चक्रवर्तीनी ससार सबधमा जेटली मोहिनी छे, तेटली ज वलके तेथी विशेष भूडने छे चक्रवर्ती जेम समग्र प्रजा पर अधिकार भोगवे छे, तेम तेनी उपाधि पण भोगवे छे भूडने एमानु कशुये भोगववु पडतु नथी अधिकार करता ऊलटी उपाधि विशेष छे चक्रवर्तीनो

पोतानी पत्नी प्रत्येनो प्रेम जेटलो छे, तेटलो ज वलके तेथी विशेष भूडनो पोतानी भूडणी प्रत्ये प्रेम रह्यो छे. चक्रवर्ती भोगथी जेटलो रस ले छे, तेटलो ज रस भूड पण मानी बेठु छे चक्रवर्तीनी जेटली वैभवनी वहोळता छे, तेटली ज उपाधि छे भूडने एना वैभवना प्रमाणमा छे बन्ने जन्म्या छे अने बन्ने मरवाना छे आम अति सूक्ष्म विचारे क्षणिकताथी, रोगथी, जराथी बन्ने ग्राहित छे द्रव्ये चक्रवर्ती समर्थ छे महा पुण्यशाळी छे शातावेदनी भोगवे छे, अने भूड बिचारु आशातावेदनी भोगवी रह्यु छे बन्नेने अशाता–शाता पण छे, परतु चक्रवर्ती महा समर्थ छे पण जो ए जीवनपर्यंत मोहाध रह्यो तो सघळी बाजी हारी जवा जेवु करे छे भूडने पण तेम ज छे चक्रवर्ती श्लाघापुरुष होवाथी भूडथी ए रूपे एनी तुलना ज नथी, परतु आ स्वरूपे छे भोग भोगववामा पण बन्ने तुच्छ छे, बन्नेना शरीर परु मासादिकना छे ससारनी आ उत्तमोत्तम पदवी आवी रही त्या आवु दु ख, क्षणिकता, तुच्छता, अधपणु ए रह्यु छे तो पछी बीजे सुख शा माटे गणवु जोईए? ए सुख नथी, छता सुख गणो तो जे सुख भयवाळा अने क्षणिक छे ते दु ख ज छे अनत ताप, अनत शोक, अनत दु ख जोईने ज्ञानीओए आ ससारने पूठ दीधी छे ते सत्य छे ए भणी पाछु वाळी जोवा जेवु नथी, त्या दु ख, दु ख ने दु ख ज छे दु खनो ए समुद्र छे

वैराग्य ए ज अनत सुखमा लई जनार उत्कृष्ट भोमियो छे

५

कर्मना चमत्कार

[५९/३]

हु तमने केटलीक सामान्य विचित्रताओ कही जउ छु, ए उपरथी विचार करशो तो तमने परभवनी श्रद्धा दृढ थशे

एक जीव सुदर पलगे पुष्पशय्यामा शयन करे छे, एकने फाटेल गोदडी पण मळती नथी एक भात भातना भोजनोथी तृप्त रहे छे, एकने काळी जारना पण सासा पडे छे एक अगणित लक्ष्मीनो उपभोग ले छे, एक फूटी बदाम माटे थईने घेर घेर भटके छे एक मधुरा वचनथी मनुष्यना मन हरे छे, एक अवाचक जेवो थईने रहे छे एक सुदर वस्त्रालकारथी विभूषित थई फरे छे, एकने खरा शियाळामा फाटेलु कपडु पण ओढवाने मळतु नथी एक रोगी छे, एक प्रबळ छे एक बुद्धिशाळी छे, एक जडभरत छे एक मनोहर नयनवाळो छे, एक अध छे एक लूलो छे, एक पागळो छे एक कीर्तिमान छे, एक अपयश भोगवे छे एक लाखो अनुचरो पर हुकम चलावे छे, एक तेटलाना ज टुबा सहन करे छे एकने जोईने आनद ऊपजे छे, एकने जोता वमन थाय छे एक सपूर्ण इद्रियोवाळो छे, एक अपूर्ण छे एकने दोन दुनियानु लेश भान नथी, एकना दु खनो किनारो पण नथी

एक गर्भाधानथी हराथो, एक जन्म्यो के मूओ, एक मूएलो अवतर्यो, एक सो वर्षनो वृद्ध थईने मरे छे

कोईना मुख, भाषा अने स्थिति सरखा नथी मूर्ख राजगादी पर खमा खमाथी वधावाय छे, समर्थ विद्वानो धक्का खाय छे।

आम आखा जगतनी विचित्रता भिन्नभिन्न प्रकारे तमे जुओ छो ए उपरथी तमने कई विचार आवे छे? में कह्यु छे, छता विचार आवतो होय तो कहो ते शा वडे थाय छे?

पोताना बाधेला शुभाशुभ कर्म वडे कर्म वडे आखो ससार भमवो पडे छे परभव नही माननार पोते ए विचार शा वडे करे छे? ए विचार तो आपणी आ वात ए पण मान्य राखे

६

कर्म ए जड वस्तु छे.

[१८३/५५]

निरागी महात्माओने नमस्कार

कर्म ए जड वस्तु छे जे जे आत्माने ए जडथी जेटलो जेटलो आत्मबुद्धिए समागम छे, तेटली तेटली जडतानी एटले अबोधतानी ते आत्माने प्राप्ति होय, एम अनुभव थाय छे आश्चर्यता छे, के पोते जड छता चेतनने अचेतन मनावी रह्या छे। चेतन चेतनभाव भूली जई तेने स्वस्वरूप ज माने छे जे पुरुषो ते कर्मसयोग अने तेना उदये उत्पन्न थयेला पर्यायोने स्वस्वरूप नथी मानता अने पूर्वसयोगो सत्तामा छे, तेने अबध परिणामे भोगवी रह्या छे, ते आत्माओ स्वभावनी उत्तरोत्तर ऊर्ध्वश्रेणी पामी शुद्ध चेतनभावने पामशे, आम कहेवु सप्रमाण छे कारण अतीत काळे तेम थयु छे, वर्तमान काळे तेम थाय छे, अनागत काळे तेम ज थशे

कोई पण आत्मा उदयी कर्मने भोगवता समत्वश्रेणीमा प्रवेश करी अबध परिणामे वर्तशे, तो खचीत चेतनशुद्धि पामशे

आत्मा विनयी थई, सरळ अने लघुत्वभाव पामी सदैव सत्पुरुषना चरणकमळ प्रति रह्यो, तो जे महात्माओने नमस्कार कर्यो छे ते महात्माओनी जे जातिनी रिद्धि छे, ते जातिनी रिद्धि सप्राप्य करी शकाय

अनत काळमा का तो सत्पात्रता थई नथी अने का तो सत्पुरुष (जेमा सद्‌गुरुत्व, सत्सग अने सत्कथा ए रह्या छे) मळ्या नथी, नही तो निश्चय छे, के मोक्ष हथेळीमा छे, इषत्प्राग्भारा एटले सिद्ध–पृथ्वी पर त्यार पछी छे एने सर्वशास्त्र पण समत छे, (मनन करशो) अने आ कथन त्रिकाळ सिद्ध छे

७

समयनी अमूल्यता

[४८६/६४९]

गयेली एक पळ पण पाछी मळती नथी, अने ते असूल्य छे, तो पछी आखी आयुष्यस्थिति!

एक पळनो हीन उपयोग ते एक अमूल्य कौस्तुभ खोवा करता पण विशेष हानिकारक छे, तो तेवी साठ पळनी एक घडीनो हीन उपयोग करवाथी केटली हानि थवी जोईए? एम ज एक दिन, एक पक्ष, एक मास, एक वर्ष अने अनुक्रमे आखी आयुष्य स्थितिनो हीन उपयोग ए केटली हानि अने केटलां अश्रेयनु कारण थाय ए विचार शुकल हृदयथी तरत आवी शकशे सुख अने आनद ए सर्व प्राणी, सर्व जीव,

आम आखा जगतनो विचित्रता भिन्नभिन्न प्रकारे तमे जुओ छो ए उपरथी तमने कई विचार आवे छे? में कह्यु छे, छता विचार आवतो होय तो कहो ते शा वडे थाय छे?

पोताना बाधेला शुभाशुभ कर्म वडे कर्म वडे आखो ससार भमवो पडे छे परभव नही माननार पोते ए विचार शा वडे करे छे? ए विचार नो आपणी आ वात ए पण मान्य राखे

६

कर्म ए जड वस्तु छे.

[१८३/५५]

निरागी महात्माओने नमस्कार

कर्म ए जड वस्तु छे जे जे आत्माने ए जडथी जेटलो जेटलो आत्मबुद्धिए समागम छे, तेटली तेटली जडतानो एटले अबोधतानी ते आत्माने प्राप्ति होय, एम अनुभव थाय छे आश्चर्यता छे, के पोते जड छता चेतनने अचेतन मनावी रह्या छे। चेतन चेतनभाव भूली जई तेने स्वस्वरूप ज माने छे जे पुरुषो ते कर्मसयोग अने तेना उदये उत्पन्न थयेला पर्यायोने स्वस्वरूप नथी मानता अने पूर्वसयोगो सत्तामा छे, तेने अबध परिणामे भोगवी रह्या छे, ते आत्माओ स्वभावनी उत्तरोत्तर ऊर्ध्वश्रेणी पामी शुद्ध चेतनभावने पामशे, आम कहेवु सप्रमाण छे कारण अतीत काळे तेम थयु छे, वर्तमान काळे तेम थाय छे, अनागत काळे तेम ज थशे

कोई पण आत्मा उदयी कर्मने भोगवता समत्वश्रेणीमा प्रवेश करी अबध परिणामे वर्तशे, तो खचीत चेतनशुद्धि पामशे

आत्मा विनयी थई, सरळ अने लघुत्वभाव पामी सदैव सत्पुरुषना चरणकमळ प्रति रह्यो, तो जे महात्माओने नमस्कार कर्यो छे ते महात्माओनी जे जातिनी रिद्धि छे, ते जातिनी रिद्धि सप्राप्य करी शकाय

अनत काळमा का ता सत्पात्रता थई नथी अने का तो सत्पुरुष (जेमा सद्गुरुत्व, सत्सग अने सत्कथा ए रह्या छे) मळ्या नथी, नही तो निश्चय छे, के मोक्ष हथेळीमा छे, इषत्प्राग्भारा एटले सिद्ध-पृथ्वी पर त्यार पछी छे एने सर्वशास्त्र पण समत छे, (मनन करशो) अने आ कथन त्रिकाळ सिद्ध छे

७

समयनी अमूल्यता

[४८६/६४९]

गयेली एक पळ पण पाछी मळती नथी, अने ते अमूल्य छे, तो पछी आखी आयुष्यस्थिति।

एक पळनो हीन उपयोग ते एक अमूल्य कौस्तुभ खोवा करता पण विशेष हानिकारक छे, तो तेवी साठ पळनी एक घडीनो हीन उपयोग करवाथी केटली हानि थवी जोईए? एम ज एक दिन, एक पक्ष, एक मास, एक वर्ष अने अनुक्रमे आखी आयुष्य स्थितिनो हीन उपयोग ए केटली हानि अने केटला अश्रेयनु कारण थाय ए विचार शुकल हृदयथी तरत आवी शकशे सुख अने आनद ए सर्व प्राणी, सर्व जीव,

सर्वं सत्त्व अने सर्वं जतुने निरतर प्रिय छे, छता दु ख अने आनद भोगवे छे एनु शु कारण होवु जोईए? अज्ञान अने ते वडे जिदगीनो होन उपयोग होन उपयोग थतो अटकाववाने प्रत्येक प्राणीनी इच्छा होवी जोईए, परतु कया साधन वडे?

८

अवश्य कर्तव्य

[२००/८४]

भाई, आटलु तारे अवश्य करवा जेवु छे —

१ देहमा विचार करनार बेठो छे ते देहथी भिन्न छे? ते सुखी छे के दु खी? ए सभारी ले

२ दु ख लागशे ज, अने दु खना कारणो पण तने दृष्टिगोचर थशे, तेम छता कदापि न थाय तो मारा ० कोई भागने वाची जा, एटले सिद्ध थशे ते टाळवा माटे जे उपाय छे ते एटलो ज के तेथी बाह्याभ्यतररहित थवु

३ रहित थवाय छे, ओर दशा अनुभवाय छे ए प्रतिज्ञापूर्वक कहु छु

४ ते साधन माटे सर्वंसगपरित्यागी थवानी आवश्यकता छे निर्ग्रंथ सद्गुरुना चरणमा जईने पडवु योग्य छे

५ जेवा भावथी पडाय तेवा भावथी सर्वकाळ रहेवा माटेनो विचारणा प्रथम करी ले जो तने पूर्वकर्म बळवान लागता होय तो अत्यागी, देशत्यागी रहीने पण ते वस्तुने विसारीश नही

६ प्रथम गमे तेम करो तु तारु जोवन जाण जाणवु शा माटे के भविष्यसमाधि थवा अत्यारे अप्रमादी थवु

७ ते आयुष्यनो मानसिक आत्मोपयोग तो निर्वेदमा राख

८ जोवन बहु टूकु छे, उपाधि बहु छे, अने त्याग थई शके तेम नथी तो, नीचेनी वात पुन पुन लक्षमा राख

१ जिज्ञासा ते वस्तुनी राखवी

२ ससारने बधन मानवु

३ पूर्वकर्म नथी एम गणी प्रत्येक धर्म सेव्या जवो तेम छता पूर्वकर्म नडे तो शोक करवो नही

४ देहनो जेटली चिंता राखे छे तेटली नही पण एथी अनत गणी चिंता आत्मानी राख, कारण अनत भव एक भवमा टाळवा छे

५ न चाले तो प्रतिश्रोती था

६ जेमाथी जेटलु थाय तेटलु कर

७ परिणामिक विचारवाळो था

८ अनुत्तरवासी थईने वर्त

९ छेवटनु समये समये चूकीश नही ए ज भलामण अने ए ज धर्म

९

काजळनी कोटडी

[२१०/१०३]

कुटुंबरूपी काजळनी कोटडीना वासथी संसार वधे छे गमे तेटली तेनी सुधारणा करशो तोपण एकालथी जेटलो संसारक्षय थवानो छे, तेनो सोमो हिस्सो पण ते काजळगृहमा रहेवाथी थवानो नथी कपायनु ते निमित्त छे, मोहने रहेवानो अनादिकाळनो पर्वत छे प्रत्येक अतरगुफामा ते जाज्वल्यमान छे सुधारणा करता वखते श्राद्धोत्पत्ति[1] थवी संभवे, माटे त्या अल्पभाषी थवु, अल्पहासी थवु, अल्पपरिचयी थवु अल्पआवकारी थवु, अल्पभावना दर्शाववी, अल्पसहचारी थवु, अल्पगुरु थवु, परिणाम विचारवु, ए ज श्रेयस्कर छे

१०

चार भावना

[१८३/५७]

चि०,

कर्मगति विचित्र छे निरतर मैत्री, प्रमोद, करुणा अने उपेक्षा भावना राखशो

मैत्री एटले सर्व जगतथी निर्वैरबुद्धि, प्रमोद एटले कोई पण आत्माना गुण जोई हर्ष पामवो, करुणा एटले संसारतापथी दुःखी आत्माना दुःखथी अनुकपा पामवी, अने उपेक्षा एटले निस्पृहभावे जगतना प्रतिबधने विसारी आत्महितमा आववु ए भावनाओ कल्याणमय अने पात्रता आपनारी छे

---

१ श्राद्ध एटले श्रावक धर्म अने उत्पत्ति एटले प्रगटता

११

सम्यक् दशाना पांच लक्षण

[२२५/१३५]

मुमुक्षुताना अंशोए ग्रहायलु तमारु हृदय परम सतोष आपे छे अनादिकाळनु परिभ्रमण हवे समाप्तताने पामे एवी जिज्ञासा, ए पण एक कल्याण ज छे कोई एवो यथायोग्य समय आवी रहेशे के ज्यारे इच्छित वस्तुनी प्राप्ति थई रहेशे

निरतर वृत्तिओ लखता रहेशो जिज्ञासाने उत्तेजन आपता रहेशो अने नीचेनी धर्मकथा श्रवण करी हशे तथापि फरी फरी तेनु स्मरण करशो.

सम्यक्दशाना पाच लक्षणो छे·

शम
सवेग
निर्वेद } अनुकपा
आस्था

क्रोधादिक कषायोनु शमाई जवु, उदय आवेला कपायोमा मदता थवी, वाळी लेवाय तेवी आत्मदशा थवी अथवा अनादिकाळनी वृत्तिओ शमाई जवी ते 'शम'.

मुक्त थवा सिवाय बीजी कोई पण प्रकारनी इच्छा नही, अभिलाषा नही ते 'सवेग'

ज्यारथी एम समजायु के भ्रातिमा ज परिभ्रण कर्यु; त्यारथी हवे घणी थई, अरे जीव! हवे थोभ, ए 'निर्वेद'.

९

काजळनी कोटडी

[२१०/१०३]

कुटुबरूपी काजळनी कोटडीना वासथी ससार वधे छे गमे तेटली तेनी सुधारणा करशो तोपण एकातथी जेटलो ससारक्षय थवानो छे, तेनो सोमो हिस्सो पण ते काजळगृहमा रहेवाथी थवानो नथी कपायनु ते निमित्त छे, मोहने रहेवानो अनादिकाळनो पर्वत छे प्रत्येक अतरगुफामा ते जाज्वल्यमान छे सुधारणा करता वखते श्राद्धोत्पत्ति[१] थवी सभवे, माटे त्या अल्पभाषी थवु, अल्पहासी थवु, अल्पपरिचयी थवु अल्पआवकारी थवु, अल्पभावना दर्शाववी, अल्पसहचारी थवु, अल्पगुरु थवु, परिणाम विचारवु, ए ज श्रेयस्कर छे

१०

चार भावना

[१८३/५७]

चि०,

कर्मगति विचित्र छे निरतर मैत्री, प्रमोद, करुणा अने उपेक्षा भावना राखशो

मैत्री एटले सर्व जगतथी निर्वैरबुद्धि, प्रमोद एटले कोई पण आत्माना गुण जोई हर्ष पामवो, करुणा एटले ससारतापथी दु खी आत्माना दु खथी अनुकपा पामवी, अने उपेक्षा एटले निस्पृहभावे जगतना प्रतिबधने विसारी आत्महितमा आववु. ए भावनाओ कल्याणमय अने पात्रता आपनारी छे

---

१ श्राद्ध एटले श्रावक धर्म अने उत्पत्ति एटले प्रगटता

११

सम्यक् दशाना पाच लक्षण

[२२५/१३५]

मुमुक्षुताना अंगोए ग्रहायलु तमारु हृदय परम सतोष आपे छे अनादिकाळनु परिभ्रमण हवे समाप्तताने पामे एवी जिज्ञासा, ए पण एक कल्याण ज छे कोई एवो यथायोग्य समय आवी रहेशे के ज्यारे इच्छित वस्तुनी प्राप्ति थई रहेशे

निरतर वृत्तिओ लखता रहेशो जिज्ञासाने उत्तेजन आपता रहेशो अने नीचेनी धर्मकथा श्रवण करी हशे तथापि फरी फरी तेनु स्मरण करशो.

सम्यक्दशाना पाच लक्षणो छे

शम
सवेग
निर्वेद
आस्था } अनुकपा

क्रोधादिक कषायोनु शमाई जवु, उदय आवेला कषायोमा मदता थवी, वाळी लेवाय तेवी आत्मदशा थवी अथवा अनादिकाळनी वृत्तिओ शमाई जवी ते 'शम'

मुक्त थवा सिवाय बीजी कोई पण प्रकारनी इच्छा नही, अभिलाषा नही ते 'सवेग'

ज्यारथी एम समजायु के भ्रातिमा ज परिभ्रमण कर्यु; त्यारथी हवे घणी थई, अरे जीव। हवे थोभ, ए 'निर्वेद',

माहात्म्य जेनु परम छे एवा निस्पृही पुरुषोना वचनमा ज तल्लीनता ते 'श्रद्धा'—'आस्था'

ए सवळा वडे जीवमा स्वात्मतुल्य वुद्धि ते 'अनुकपा'

आ लक्षणो अवश्य मनन करवा योग्य छे, स्मरवा योग्य छे, इच्छवा योग्य छे, अनुभववा योग्य छे, अधिक अन्य प्रसगे

१२

सम्यक्‌दशानो अभ्यास

[२२९/१४३]

नीचेनो अभ्यास तो राख्या ज रहो —

१ गमे ते प्रकारे पण उदय आवेला, अने उदय आववाना कषायोने शमावो.

२ सर्व प्रकारनी अभिलाषानी निवृत्ति कर्या रहो

३ आटला काळ सुधी जे कर्युं ते वधाथी निवृत्त थाओ, ए करता हवे अटको

४ तमे परिपूर्ण सुखी छो एम मानो, अने वाकीना प्राणीओनी अनुकपा कर्या करो

५. कोई एक सत्पुरुष शोधो, अने तेना गमे तेवा वचनमा पण श्रद्धा राखो

ए पाचे अभ्यास अवश्य योग्यताने आपे छे, पाचमामा वळी चारे समावेश पामे छे, एम अवश्य मानो अधिक शु

कहु? गमे ते काळे पण ए पाचमु प्राप्त थया विना आ पर्यटननो किनारो आववानो नथी बाकीना चार ए पाचमु मेळववाना सहायक छे पाचमा अभ्यास सिवायनो, तेनी प्राप्ति सिवायनो बीजो कोई निर्वाणमार्ग मने सूझतो नथी, अने बधाय महात्माओने पण एम ज सूझ्यु हशे-(सूझ्यु छे)

हवे जेम तमने योग्य लागे तेम करो ए वधानी तमारी इच्छा छे, तोपण अधिक इच्छो, उतावळ न करो जेटली उतावळ तेटली कचाश अने कचाश तेटली खटाश, आ अपेक्षित कथनन्नु स्मरण करो

१३

दासानुदास

[४३६/५३९]

सर्व जीव आत्मापणे समस्वभावी छे बीजा पदार्थमा जीव जो निजबुद्धि करे तो परिभ्रमण दशा पामे छे, अने निजने विषे निजबुद्धि थाय तो परिभ्रमणदशा टळे छे जेना चित्तमा एवो मार्ग विचारवो अवश्यनो छे, तेणे ते ज्ञान जेना आत्मामा प्रकाश पाम्यु छे, तेनी दासानुदासपणे अनन्य भक्ति करवी, ए परम श्रेय छे, अने ते दासानुदास भक्तिमाननी भक्ति प्राप्त थये जेमा कई विषमता आवती नथी, ते ज्ञानीने धन्य छे तेटली सर्वांशदशा ज्या सुधी प्रगटी न होय त्या सुधी आत्माने कोई गुरुपणे आराधे त्या प्रथम ते गुरुपणु छोडी ते शिष्य विषे पोतानु दासानुदासपणु करवु घटे छे.

१२

सम्यक्दर्शनो अभ्यास

[[illegible]]

नीचेनो अभ्यास तो राख्या ज रहो —

१ गमे ते प्रकारे पण उदय आवेला, अने उदय आवनारा कषायोने शमावो

२ सर्व प्रकारनी अभिलाषानी निवृत्ति कर्या रहो

३ आटला काळ सुधी जे कर्युं ते बधाथी निवृत्त थाओ, ए करता हवे अटको

४ तमे परिपूर्ण सुखी छो एम मानो, अने बाकीना प्राणीओनी अनुकंपा कर्या करो

५ कोई एक सत्पुरुष शोधो, अने तेना गमे तेवा वचनमा पण श्रद्धा राखो

ए पाचे अभ्यास अवश्य योग्यताने आपे छे, पाचमामा वळी चारे समावेश पामे छे, एम अवश्य मानो. अधिक शु

कहु ? गमे ते काळे पण ए पाचमु प्राप्त थया विना आ पर्यटननो किनारो आववानो नथी बाकीना चार ए पाचमु मेळववाना सहायक छे पाचमा अभ्यास सिवायनो, तेनी प्राप्ति सिवायनो बीजो कोई निर्वाणमार्ग मने सूझतो नथी, अने बधाय महात्माओने पण एम ज सूझयु हशे–(सूझयु छे)

हवे जेम तमने योग्य लागे तेम करो ए वधानी तमारी इच्छा छे, तोपण अधिक इच्छो, उतावळ न करो जेटली उतावळ तेटली कचाश अने कचाश तेटली खटाश, आ अपेक्षित कथननु स्मरण करो

१३

दासानुदास

[४३६/५३९]

सर्व जीव आत्मापणे समस्वभावी छें बीजा पदार्थमा जीव जो निजबुद्धि करे तो परिभ्रमण दशा पामे छे, अने निजने विषे निजबुद्धि थाय तो परिभ्रमणदशा टळे छे. जेना चित्तमा एवो मार्ग विचारवो अवश्यनो छे, तेणे ते ज्ञान जेना आत्मामा प्रकाश पाम्यु छे, तेनी दासानुदासपणे अनन्य भक्ति करवी, ए परम श्रेय छे, अने ते दासानुदास भक्तिमाननी भक्ति प्राप्त थये जेमा कई विषमता आवती नथी, ते ज्ञानीने धन्य छे तेटली सर्वांशदशा ज्या सुधी प्रगटी न होय त्या सुधी आत्माने कोई गुरुपणे आराधे त्या प्रथम ते गुरुपणु छोडी ते शिष्य विषे पोतानु दासानुदासपणुं करवु घटे छे.

माहात्म्य जेनु परम छे एवा निस्पृही पुरुषोना वचनमा ज तल्लीनता ते 'श्रद्धा'—'आस्था'

ए सवळा वडे जीवमा स्वात्मतुल्य बुद्धि ते 'अनुकपा'

आ लक्षणो अवश्य मनन करवा योग्य छे, स्मरवा योग्य छे, इच्छवा योग्य छे, अनुभववा योग्य छे, अधिक अन्य प्रसगे

१२

सम्यक्‌दशानो अभ्यास

[२२९/१८३]

नीचेनो अभ्यास तो राख्या ज रहो —

१ गमे ते प्रकारे पण उदय आवेला, अने उदय आववाना कषायोने शमावो.

२ सर्व प्रकारनी अभिलाषानी निवृत्ति कर्या रहो

३ आटला काळ सुधी जे कर्यु ते बधाथी निवृत्त थाओ, ए करता हवे अटको

४ तमे परिपूर्ण सुखी छो एम मानो, अने बाकीना प्राणीओनी अनुकपा कर्या करो

५ कोई एक सत्पुरुष शोधो, अने तेना गमे तेवा वचनमा पण श्रद्धा राखो

ए पाचे अभ्यास अवश्य योग्यताने आपे छे, पाचमामा वळी चारे समावेश पामे छे, एम अवश्य मानो अधिक शु

कहु ? गमे ते काळे पण ए पाचमु प्राप्त थया विना आ पर्यटननो किनारो आववानो नथी वाकीना चार ए पाचमु मेळववाना सहायक छे पाचमा अभ्यास सिवायनो, तेनी प्राप्ति सिवायनो बीजो कोई निर्वाणमार्ग मने सूझतो नथो, अने बधाय महात्माओने पण एम ज सूझ्यु हशे–(सूझ्यु छे)

हवे जेम तमने योग्य लागे तेम करो ए वधानी तमारी इच्छा छे, तोपण अधिक इच्छो, उतावळ न करो जेटली उतावळ तेटली कचाश अने कचाश तेटली खटाश, आ अपेक्षित कथननु स्मरण करो

१३

दासानुदास

[४३६/५३९]

सर्वं जीव आत्मापणे समस्वभावी छें बोजा पदार्थमा जीव जो निजबुद्धि करे तो परिभ्रमण दशा पामे छे, अने निजने विषे निजबुद्धि थाय तो परिभ्रमणदशा टळे छे जेना चित्तमा एवो मार्ग विचारवो अवश्यनो छे, तेणे ते ज्ञान जेना आत्मामा प्रकाश पाम्यु छे, तेनी दासानुदासपणे अनन्य भक्ति करवी, ए परम श्रेय छे, अने ते दासानुदास भक्तिमाननी भक्ति प्राप्त थये जेमा कई विपमता आवती नथी, ते ज्ञानीने धन्य छे तेटली सर्वांशदशा ज्या सुधी प्रगटी न होय त्या सुधी आत्माने कोई गुरुपणे आराधे त्या प्रथम ते गुरुपणु छोडी ते शिष्य विपे पोतानु दासानुदासपणु करवु घटे छे.

१४

सतना शरणमां जा

[१९४/७६]

बीजु काई शोध मा मात्र एक सत्पुरुपने शोधीने तेना चरणकमळमा सर्वभाव अर्पण करी दई वर्त्यो जा पछी जो मोक्ष न मळे तो मारी पासेथी लेजे

सत्पुरुप ए ज के निशदिन जेने आत्मानो उपयोग छे, शास्त्रमा नथी अने साभळ्यामा नथी, छता अनुभवमा आवे तेवु जेनु कथन छे, अतरग स्पृहा नथी एवी जेनी गुप्त आचरणा छे वाकी तो कई कह्यु जाय तेम नथी अने आम कर्या विना तारो कोई काळे छूटको थनार नथी, आ अनुभवप्रवचन प्रामाणिक गण

एक सत्पुरुपने राजी करवामा, तेनी सर्व इच्छाने प्रशसवामा, ते ज सत्य मानवामा आखी जिदगी गई तो उत्कृष्टमा उत्कृष्ट पदर भवे अवश्य मोक्षे जईश

१५

मनुष्य देहमां परमात्मा

[२२३/१३०]

केटलाक वर्प थया एक महान इच्छा अत करणमा प्रवर्ती रही छे, जे कोई स्थळे कही नथी, कही शकाई नथी, कही शकाती नथी; नही कहेवानु अवश्य छे महान परिश्रमथी

घणु करीने ते पार पाडी शकाय एवी छे, तथापि ते माटे जेवो जोईए तेवो परिश्रम थतो नथी, ए एक आश्चर्य अने प्रमत्तता छे ए इच्छा स्वाभाविक उत्पन्न थई हती ज्या सुधी ते यथायोग्य रीते पार नही कराय त्या सुधी आत्मा समाधिस्थ थवा इच्छतो नथी, अथवा थशे नही कोई वेळा अवसर हशे तो ते इच्छानी छाया जणावी देवानु प्रयत्न करीश ए इच्छाना कारणने लीधे जीव घणु करीने विटबनदशामा ज जीवन व्यतीत कर्यो जाय छे जो के ते विटंबनदशा पण कल्याणकारक ज छे, तथापि बीजा प्रत्ये तेवी कल्याणकारक थवामा कईक खामीवाळी छे

अत करणथी ऊगेलो अनेक ऊर्मिओ तमने घणी वार समागममा जणावी छे साभळीने केटलेक अशे तमने अवधारवानी इच्छा थती जोवामा आवी छे फरी भलामण छे के जे जे स्थळोए ते ते उर्मिओ जणावी होय ते ते स्थळे जता फरी फरी तेनु अधिक अवश्य स्मरण करशो

१ आत्मा छे

२ ते बधायो छे

३ ते कर्मनो कर्त्ता छे

४ ते कर्मनो भोक्ता छे

५ मोक्षनो उपाय छे

६ आत्मा साधी शके छे आ जे छ महा प्रवचनो तेनु निरतर सशोधन करजो

बीजानो विटवणानो अनुग्रह नही करता पोतानी अनुग्रहता इच्छनार जय पामतो नथी; एम प्राये थाय छे माटे इच्छु छु के तमे स्वात्माना अनुग्रहमा दृष्टि आपी छे तेनी वृद्धि करता रहेशो, अने तेथी परनी अनुग्रहता पण करी शकशो

धर्म ज जेना अस्थि अने धर्म ज जेनो मिजा छे, धर्म ज जेनु लोही छे, धर्म ज जेनु आमिप छे, धर्म ज जेनी त्वचा छे, धर्म ज जेनी इद्रियो छे, धर्म ज जेनु कर्म छे, धर्म ज जेनु चलन छे, धर्म ज जेनु वेसवु छे, धर्म ज जेनु ऊठवु छे, धर्म ज जेनु ऊभु रहेवु छे, धर्म ज जेनु शयन छे, धर्म ज जेनी जागृति छे, धर्म ज जेनो आहार छे, धर्म ज जेनो विहार छे, धर्म ज जेनो निहार [!] छे, धर्म ज जेनो विकल्प छे, धर्म ज जेनो सकल्प छे, धर्म ज जेनु सर्वस्व छे एवा पुरुपनी प्राप्ति दुर्लभ छे, अने ते मनुष्यदेहे परमात्मा छे ए दशाने शु आपणे नथी इच्छता ? इच्छीए छीए, तथापि प्रमाद अने असत्सग आडे तेमा दृष्टि नथी देता

आत्मभावनी वृद्धि करजो, अने देहभावने घटाडजो

वि० रायचदना यथोचित

१६

द्वादशांगीनु सळंग सूत्र

[३९३/४९१]

ॐ

तीर्थंकर वारवार नीचे कह्यो छे, ते उपदेश करता हता —

"हे जीवो! तमे वूझो, सम्यक्–प्रकारे वूझो मनुष्यपणु मळवु घणु दुर्लभ छे, अने चारे गतिने विषे भय छे, एम जाणो अज्ञानथी सद्विवेक पामवो दुर्लभ छे, एम समजो आखो लोक एकात दुःखे करी वळे छे, एम जाणो, अने 'सर्व जीव' पोतपोताना कर्मे करी विपर्यासपणु अनुभवे छे, तेनो विचार करो"

(सूयगडाग–अध्ययन ७ मु ११)

सर्व दुःखथी मुक्त थवानो अभिप्राय जेनो थयो होय, ते पुरुषे आत्माने गवेषवो, अने आत्मा गवेषवो होय तेणे यमनियमादिक सर्व साधननो आग्रह अप्रधान करी, सत्सगने गवेषवो, तेम ज उपासवो सत्सगनी उपासना करवी होय तेणे ससारने उपासवानो आत्मभाव सर्वथा त्यागवो पोताना सर्व अभिप्रायनो त्याग करी पोतानी सर्व शक्तिए ते सत्सगनी आज्ञाने उपासवी तीर्थंकर एम कहे छे के जे कोई ते आज्ञा उपासे छे, ते अवश्य सत्सगने उपासे छे एम जे सत्सगने उपासे छे ते अवश्य आत्माने उपासे छे, अने आत्माने उपासनार सर्व दुःखथी मुक्त थाय छे

(द्वादशागीनु सळग सूत्र)

बीजानी चिटवणानो अनुग्रह नही करता पोतानी अनुग्रहता इच्छनार जय पामतो नथी; एम प्राये थाय छे माटे इच्छु छु के तमे स्वात्माना अनुग्रहमा दृष्टि आपी छे तेनी वृद्धि करता रहेशो, अने तेथी परनी अनुग्रहता पण करी शकशो

धर्म ज जेना अस्थि अने धर्म ज जेनी मिजा छे, धर्म ज जेनु लोही छे, धर्म ज जेनु आमिप छे, धर्म ज जेनी त्वचा छे, धर्म ज जेनी इद्रियो छे, धर्म ज जेनु कर्म छे, धर्म ज जेनु चलन छे, धर्म ज जेनु बेसवु छे, धर्म ज जेनु ऊठवु छे, धर्म ज जेनु ऊभु रहेवु छे, धर्म ज जेनु शयन छे, धर्म ज जेनी जागृति छे, धर्म ज जेनो आहार छे, धर्म ज जेनो विहार छे, धर्म ज जेनो निहार [!] छे, धर्म ज जेनो विकल्प छे, धर्म ज जेनो सकल्प छे, धर्म ज जेनु सर्वस्व छे एवा पुरुषनी प्राप्ति दुर्लभ छे, अने ते मनुष्यदेहे परमात्मा छे ए दशाने शु आपणे नथी इच्छता ? इच्छीए छीए, तथापि प्रमाद अने असत्सग आडे तेमा दृष्टि नथी देता

आत्मभावनी वृद्धि करजो, अने देहभावने घटाडजो

वि० रायचदना यथोचित

१६

द्वादशांगीनुं सळंग सूत्र

[३९३/४९१]

ॐ

तीर्थंकर वारवार नीचे कह्यो छे, ते उपदेश करता हता —

"हे जीवो ! तमे बूझो, सम्यक्-प्रकारे बूझो मनुष्यपणु मळवु घणु दुर्लभ छे, अने चारे गतिने विषे भय छे, एम जाणो अज्ञानथी सद्विवेक पामवो दुर्लभ छे, एम समजो आखो लोक एकांत दुःखे करी बळे छे, एम जाणो, अने 'सर्व जीव' पोतपोताना कर्मे करी विपर्यासपणु अनुभवे छे, तेनो विचार करो"

(सूयगडांग–अध्ययन ७ मु ११)

सर्व दुःखथी मुक्त थवानो अभिप्राय जेनो थयो होय, ते पुरुषे आत्माने गवेषवो, अने आत्मा गवेषवो होय तेणे यमनियमादिक सर्व साधननो आग्रह अप्रधान करी, सत्सगने गवेषवो, तेम ज उपासवो सत्सगनी उपासना करवी होय तेणे ससारने उपासवानो आत्मभाव सर्वथा त्यागवो पोताना सर्व अभिप्रायनो त्याग करी पोतानी सर्व शक्तिए ते सत्सगनी आज्ञाने उपासवी तीर्थंकर एम कहे छे के जे कोई ते आज्ञा उपासे छे, ते अवश्य सत्सगने उपासे छे एम जे सत्सगने उपासे छे ते अवश्य आत्माने उपासे छे, अने आत्माने उपासनार सर्व दुःखथी मुक्त थाय छे

(द्वादशांगीनु सळग सूत्र)

प्रथममा जे अभिप्राय दर्शाव्यो छे ते गाथा सूयगडागमा नीचे प्रमाणे छे

सगुज्झहा जंतवो माणुसत्त, दठ्ठु भय वालिसेण अलभो,
एगतदुक्खे जरिए व लोए, सक्कम्मणा विप्परियासुवेइ

सर्व प्रकारनी उपाधि, आधि, व्याधिथी मुक्तपणे वर्तता होईए तोपण सत्सगने विपे रहेली भक्ति ते अमने मटवी दुर्लभ जणाय छे सत्सगनु सर्वोत्तम अपूर्वपणु अहोरात्र एम अमने वस्या करे छे, तथापि उदयजोग प्रारब्धथी तेवो अतराय वर्ते छे घणु करी कोई वातनो खेद 'अमारा' आत्माने विपे उत्पन्न थतो नथी, तथापि सत्सगना अतरायनो खेद अहोरात्र घणु करी वर्त्या करे छे 'सर्व भूमिओ, सर्व माणसो, सर्व कामो, सर्व वातचीतादि प्रसगो अजाण्या जेवा, साव परना, उदासीन जेवा अरमणीय, अमोहकर अने रसरहित स्वाभाविकपणे भासे छे' मात्र ज्ञानीपुरुपो, मुमुक्षुपुरुपो, के मार्गानुसारी पुरुपोनो सत्सग ते जाणीतो, पोतानो प्रीतिकर, सुदर, आकर्पनार अने रसस्वरूप भासे छे एम होवाथी अमारु मन घणु करी अप्रतिवद्धपणु भजतु भजतु तम जेवा मार्गेच्छावान पुरुपोने विपे प्रतिवद्धपणु पामे छे

ज्ञानीना प्रत्येक शब्दमा अनंत आगम

[२४६/१६६]

सत्पुरुषना एकेक वाक्यमा, एकेक शब्दमा, अनत आगम रह्या छे, ए वात केम हशे ?

नीचेना वाक्यो प्रत्येक मुमुक्षुओने मे असख्य सत्पुरुपोनी सम्मतिथी मगळरूप मान्या छे मोक्षना सर्वोत्तम कारणरूप मान्या छे —

१ मायिक सुखनी सर्व प्रकारनी वाछा गमे त्यारे पण छोडचा विना छूटको थवो नथी, तो ज्यारथी ए वाक्य श्रवण कर्यु, त्यारथी ज ते क्रमनो अभ्यास करवो योग्य ज छे एम समजवु

२ कोई पण प्रकारे सद्गुरुनो शोध करवो, शोध करीने तेना प्रत्ये तन, मन, वचन अने आत्माथी अर्पणबुद्धि करवी, तेनी ज आज्ञानु सर्व प्रकारे नि शकताथी आराधन करवु, अने तो ज सर्व मायिक वासनानो अभाव थशे एम समजवु

३ अनादि काळना परिभ्रमणमा अनतवार शास्त्रश्रवण, अनतवार विद्याभ्यास, अनतवार जिनदीक्षा, अनतवार आचार्यपणु प्राप्त थयु छे मात्र, 'सत्' मळ्या नथी, 'सत्' सुण्यु नथी, अने 'सत्' श्रध्यु नथी, अने ए मळ्ये, ए सुण्ये, अने ए श्रध्ये ज छूटवानी वार्त्तानो आत्माथी भणकार थशे

४ मोक्षनो मार्ग बहार नथी, पण आत्मामा छे मार्गने पामेलो मार्ग पमाडशे

५ बे अक्षरमा मार्ग रह्यो छे, अने अनादि काळथी एटलु बधु कर्या छता शा माटे प्राप्त थयो नथी ते विचारो

सत् ए काई दूर नथी

[२८८/२१८]

'सत्' ए कई दूर नथी, पण दूर लागे छे, अने ए ज जीवनो मोह छे

'सत्' जे कई छे, ते 'सत् ज' छे, सरळ छे सुगम छे, अने सर्वत्र तेनी प्राप्ति होय छे, पण जेने भ्रांतिरूप आवरणतम वर्ते छे ते प्राणीने तेनी प्राप्ति केम होय? अधकारना गमे तेटला प्रकार करीए, पण तेमा कोई एवो प्रकार नही आवे के जे अजवाळारूप होय, तेम ज आवरण–तिमिर जेने छे एवा प्राणीनी कल्पनामानी कोई पण कल्पना 'सत्' जणाती नथी, अने 'सत्'नी नजीक सभवती नथी 'सत्' छे, ते भ्राति नथी, भ्रातिथी केवळ व्यतिरिक्त (जुदु) छे, कल्पनाथी 'पर' (आघे) छे, माटे जेनी प्राप्त करवानी दृढ मति थई छे, तेणे पोते कई ज जाणतो नथी एवो दृढ निश्चयवाळो प्रथम विचार करवो, अने पछी 'सत्'नी प्राप्ति माटे ज्ञानीने शरणे जवु, तो जरूर मार्गनी प्राप्ति थाय

आ जे वचनो लख्या छे, ते सर्व मुमुक्षुने परम बधवरूप छे, परम रक्षकरूप छे, अने एने सम्यक् प्रकारे विचार्येथी परमपदने आपे एवा छे, एमा निर्ग्रंथ प्रवचननी समस्त द्वादशागी, षट्दर्शननु सर्वोत्तम तत्त्व अने ज्ञानीना बोधनु बीज सक्षेपे कह्यु छे, माटे फरी फरीने तेने सभारजो, विचारजो, समजजो, समजवा प्रयत्न करजो, एने बाध करे एवा बीजा प्रकारोमा

उदासीन रहेजो, एमा ज वृत्तिनो लय करजो ए तमने अने कोई पण मुमुक्षुने गुप्त रीते कहेवानो अमारो मत्र छे, एमा 'सत्' ज कह्यु छे, ए समजवा माटे घणो ज वखत गाळजो

१९

वचनावलि

[२६२/२००]

वचनावलि

१ जोव पोताने भूली गयो छे, अने तेथी सतसुखनो तेने वियोग छे, एम सर्व धर्म सम्मत कह्यु छे

२ पोताने भूली गयारूप अज्ञान, ज्ञान मळवाथी नाश थाय छे, एम नि शक मानवु

३ ज्ञाननी प्राप्ति ज्ञानी पासेथी थवी जोईए ए स्वाभाविक समजाय छे, छता जीव लोकलज्जादि कारणोथी अज्ञानीनो आश्रय छोडतो नथी, ए ज अनतानुबधी कषायनु मूळ छे

४ ज्ञाननी प्राप्ति जेणे इच्छवी, तेणे ज्ञानीनी इच्छाए वर्तवु एम जिनागमादि सर्व शास्त्र कहे छे पोतानी इच्छाए प्रवर्तता अनादि काळथी रखडचो

५ ज्या सुधी प्रत्यक्ष ज्ञानीनी इच्छाए, एटले आज्ञाए नही वर्ताय, त्या सुधी अज्ञाननी निवृत्ति थवी सभवती नथी

६ ज्ञानीनी आज्ञानु आराधन ते करी शके जे एकनिष्ठाए, तन, मन, धननी आसक्तिनो त्याग करी तेनी भक्तिमा जोडाय

७ [1]जोके ज्ञानी भक्ति इच्छता नथी, परतु मोक्षाभिलाषीने ते कर्या विना उपदेश परिणमतो नथी, अने मनन तथा निदिध्यासनादिनो हेतु थतो नथी, माटे मुमुक्षुए ज्ञानीनी भक्ति अवश्य कर्तव्य छे एम सत्पुरुषोए कह्यु छे

८ आमा कहेली वात सर्व शास्त्रने मान्य छे

९ ऋषभदेवजीए अट्ठाणु पुत्रोने त्वराथी मोक्ष थवानो ए ज उपदेश कर्यो हतो

१० परिक्षित राजाने शुकदेवजीए ए ज उपदेश कर्यो छे

११ अनत काळ सुधी जीव निज छदे चाली परिश्रम करे तोपण पोते पोताथी ज्ञान पामे नही, परतु ज्ञानीनी आज्ञानो आराधक अतर्मुहूर्तमा पण केवळज्ञान पामे

१२ शास्त्रमा कहेली आज्ञाओ परोक्ष छे अने ते जीवने अधिकारी थवा माटे कही छे, मोक्ष थवा माटे प्रत्यक्ष ज्ञानीनी आज्ञा आराधवी जोईए

१३ आ ज्ञानमार्गनी श्रेणी कही, ए पाम्या विना बीजा मार्गथी मोक्ष नथी

१४ ए गुप्त तत्त्वने जे आराधे छे, ते प्रत्यक्ष अमृतने पामी अभय थाय छे

इति शिवम्

---

१ पाठान्तर – जोके ज्ञानी भक्ति इच्छता नथी परतु मोक्षाभिलाषीने ते कर्या विना मोक्षनी प्राप्ति थती नथी, आ अनादि काळनु गुप्त तत्त्व सतोना हृदयमा रह्यु ते पाने चढाव्यु छे

जीवने मार्ग मळ्यो नथी एनुं शुं कारण?

[२५९/१९४]

जीवने मार्ग मळ्यो नथी एनु शु कारण?

ए वारवार विचारी योग्य लागे त्यारे साथेनु पत्र वाचजो

हाल विशेष लखी शकवानी के जणाववानी दशा नथी, तोपण एकमात्र तमारी मनोवृत्ति किंचित् दुभाती अटके ए माटे ज्ञे कई अवसरे योग्य लाग्यु ते लख्यु छे

अमने लागे छे के मार्ग सरळ छे, पण प्राप्तिनो योग मळवो दुर्लभ छे.

सत्स्वरूपने अभेदभाव अने अनन्य भक्तिए नमोनम

भाव अप्रतिबद्धताथी निरतर विचरे छे एवा ज्ञानी पुरुषना चरणारविंद, ते प्रत्ये अचळ प्रेम थया विना अने सम्यक्प्रतीति आव्या विना सत्स्वरूपनी प्राप्ति थती नथी, अने आव्येथी अवश्य ते मुमुक्षु जेना चरणारविंद तेणे सेव्या छे, तेनी दशाने पामे छे आ मार्ग सर्व ज्ञानीओए सेव्यो छे, सेवे छे, अने सेवशे ज्ञानप्राप्ति एथी अमने थई हती, वर्तमाने ए ज मार्गथी थाय छे अने अनागत काळे पण ज्ञानप्राप्तिनो ए ज मार्ग छे सर्व शास्त्रोनो बोध लक्ष जोवा जता ए ज छे अने जे कोई पण प्राणी छूटवा इच्छे छे तेणे अखड वृत्तिथी ए ज मार्गने आराधवो ए मार्ग आराध्या विना जीवे अनादि

काळथी परिभ्रमण कर्युं छे ज्या सुधी जीवने स्वच्छदरूपी अधत्व छे, त्या सुधी ए मार्गनु दर्शन थतु नथी (अधत्व टळवा माटे) जीवे ए मार्गनो विचार करवो, दृढ मोक्षेच्छा करवी, ए विचारमा अप्रमत्त रहेवु, तो मार्गनी प्राप्ति थई अधत्व टळे छे, ए निःशक मानजो अनादि काळथी जीव अवळे मार्गे चाल्यो छे जोके तेणे जप, तप, शास्त्राध्ययन वगेरे अनतवार कर्यु छे, तथापि जे कई पण अवश्य करवा योग्य हतु ते तेणे कर्युं नथी, जे के अमे प्रथम ज जणाव्यु छे

[१]सूयगडाग सूत्रमा ऋषभदेवजी भगवाने ज्या अठ्ठाणु पुत्रोने उपदेश्या छे, मोक्ष मार्गे चडाव्या छे त्या ए ज उपदेश कर्यो छे

हे आयुष्यमनो। आ जीवे सर्वे कर्यु छे एक आ विना, ते शु? तो के निश्चय कहीए छीए के सत्पुरुषनु कहेलु वचन, तेनो उपदेश ते साभळया नथी, अथवा रूडे प्रकारे करी ते उठाव्या नथी अने एने ज अमे मुनिओनु सामायिक (आत्मस्वरूपनी प्राप्ति) कह्यु छे

[१]सुधर्मास्वामी जबुस्वामीने उपदेशे छे के जगत आखानु जेणे दर्शन कर्युं छे, एवा महावीर भगवान, तेणे आम अमने कह्यु छे —गुरुने आधीन थई वर्तता एवा अनत पुरुषो मार्ग पामीने मोक्ष प्राप्त थया

एक आ स्थळे नही पण सर्व स्थळे अने सर्व शास्त्रमा ए ज वात कहेवानो लक्ष छे

आणाए धम्मो आणाए तवो।

आज्ञानु आराधन ए ज धर्म अने आज्ञानु आराधन ए ज तप (आचाराग सूत्र)

सर्व स्थळे ए ज मोटा पुरुपोनो कहेवानो लक्ष छे, ए लक्ष जीवने समजायो नथी तेना कारणमा सर्वथी प्रधान एवु कारण स्वच्छद छे अने जेणे स्वच्छदने मद कर्यो छे, एवा पुरुपने प्रतिवद्धता (लोकसवधी वधन, स्वजन कुटुव वधन, देहाभिमानरूप वधन, सकल्प विकल्परूप वधन) ए वधन टळवानो सर्वोत्तम उपाय जे कई छे ते आ उपरथी तमे विचारो अने ए विचारता अमने जे कई योग्य लागे ते पूछजो अने ए मार्गे जो कई योग्यता लावशो तो उपशम गमे त्याथी पण मळशे उपशम मळे अने जेनी आज्ञानु आराधन करीए एवा पुरुषनो खोज राखजो

बाकी बीजा बधा साधन पछी करवा योग्य छे आ सिवाय बीजो कोई मोक्षमार्ग विचारता लागशे नहि (विकल्पथी) लागे तो जणावशो के जे कई योग्य होय ते जणावाय

२१

मार्ग प्राप्तिमां बाधक त्रण कारणो

[२८८/२५४]

निशकताथी निर्भयता उत्पन्न होय छे,
अने तेथी निसगता प्राप्त होय छे

प्रकृतिना विस्तारथी जीवना कर्म अनत प्रकारनी विचित्रताथी प्रवर्ते छे, अने तेथी दोषना प्रकार पण अनत भासे

काळथी परिभ्रमण कर्युं छे ज्या सुधी जीवने स्वच्छदरूपी अधत्व छे, त्या सुधी ए मार्गनु दर्शन थतु नथी (अधत्व टळवा माटे) जीवे ए मार्गनो विचार करवो, दृढ मोक्षेच्छा करवी, ए विचारमा अप्रमत्त रहेवु, तो मार्गनी प्राप्ति थई अधत्व टळे छे, ए नि शक मानजो अनादि काळथी जीव अवळे मार्गे चाल्यो छे जोके तेणे जप, तप, शास्त्राध्ययन वगेरे अनतवार कर्यु छे, तथापि जे कई पण अवश्य करवा योग्य हतु ते तेणे कर्युं नथी, जे के अमे प्रथम ज जणाव्यु छे

[1]सूयगडाग सूत्रमा ऋषभदेवजी भगवाने ज्या अट्ठाणु पुत्रोने उपदेश्या छे, मोक्ष मार्गे चढाव्या छे त्या ए ज उपदेश कर्यो छे

हे आयुष्यमनो! आ जीवे सर्वे कर्युं छे एक आ विना, ते शु? तो के निश्चय कहीए छीए के सत्पुरुषनु कहेलु वचन, तेनो उपदेश ते साभळ्या नथी, अथवा रूडे प्रकारे करी ते उठाव्या नथी अने एने ज अमे मुनिओनु सामायिक (आत्मस्वरूपनी प्राप्ति) कह्यु छे

[1]सुधर्मास्वामी जबुस्वामीने उपदेशे छे के जगत आखानु जेणे दर्शन कर्युं छे, एवा महावीर भगवान, तेणे आम अमने कह्यु छे –गुरुने आधीन थई वर्तता एवा अनत पुरुषो मार्ग पामीने मोक्ष प्राप्त थया

एक आ स्थळे नही पण सर्व स्थळे अने सर्व शास्त्रमा ए ज वात कहेवानो लक्ष छे

आणाए धम्मो आणाए तवो ।

आज्ञानु आराधन ए ज धर्म अने आज्ञानु आराधन ए ज तप (आचाराग सूत्र)

सर्व स्थळे ए ज मोटा पुरुषोनो कहेवानो लक्ष छे, ए लक्ष जीवने समजायो नथी तेना कारणमा सर्वथी प्रधान एवु कारण स्वच्छद छे अने जेणे स्वच्छदने मद कर्यो छे, एवा पुरुषने प्रतिबद्धता (लोकसबधी बधन, स्वजन कुटुब बधन, देहाभिमानरूप बधन, सकल्प विकल्परूप बधन) ए बधन टळवानो सर्वोत्तम उपाय जे कई छे ते आ उपरथी तमे विचारो अने ए विचारता अमने जे कई योग्य लागे ते पूछजो अने ए मार्गे जो कई योग्यता लावशो तो उपशम गमे त्याथी पण मळशे उपशम मळे अने जेनी आज्ञानु आराधन करीए एवा पुरुषनो खोज राखजो

बाकी बीजा बधा साधन पछी करवा योग्य छे आ सिवाय बीजो कोई मोक्षमार्ग विचारता लागशे नहि (विकल्पथी) लागे तो जणावशो के जे कई योग्य होय ते जणावाय

२१

मार्ग प्राप्तिमां बाधक त्रण कारणो

[२८८/२५४]

निःशकताथी निर्भयता उत्पन्न होय छे,
अने तेथी निःसगता प्राप्त होय छे

प्रकृतिना विस्तारथी जीवना कर्म अनत प्रकारनी विचित्रताथी प्रवर्ते छे, अने तेथी दोषना प्रकार पण अनत भासे

छे, पण सर्वथी मोटो दोष ए छे के जेथी ‘तीव्र मुमुक्षुता’ उत्पन्न न ज होय, अथवा ‘मुमुक्षुता’ ज उत्पन्न न होय.

घणु करीने मनुष्यात्मा कोईने कोई धर्ममतमा होय छे, अने तेथी ते धर्ममत प्रमाणे प्रवर्तवानु ते करे छे, एम माने छे, पण एनु नाम ‘मुमुक्षुता’ नथी

‘मुमुक्षुता’ ते छे के सर्व प्रकारनी मोहासक्तिथी मुझाई एक ‘मोक्षने’ विषे ज यत्न करवो अने ‘तीव्र मुमुक्षुता’ ए छे के अनन्य प्रेमे मोक्षना मार्गमा क्षणे क्षणे प्रवर्तवु

‘तीव्र मुमुक्षुता’ विषे अत्र जणाववु नथी पण ‘मुमुक्षुता’ विषे जणाववु छे, के ते उत्पन्न थवानु लक्षण पोताना दोष जोवामा अपक्षपातता ए छे, अने तेने लीधे स्वच्छदनो नाश होय छे

स्वच्छद ज्या थोडो अथवा घणो हानि पाम्यो छे, त्या तेटली बोधबीज योग्य भूमिका थाय छे.

स्वच्छद ज्या प्राये दबायो छे, त्या पछी ‘मार्गप्राप्ति’ने रोकनारा त्रण कारणो मुख्य करीने होय छे एम अमे जाणीए छीए

आ लोकनी अल्प पण सुखेच्छा, परम दैन्यतानी[१] ओछाई अने पदार्थनो अनिर्णय

ए बधा कारणो टाळवानु बीज हवे पछी कहेशु ते पहेला ते ज कारणोने अधिकताथी कहीए छीए

‘आ लोकनी अल्प पण सुखेच्छा’, ए घणु करीने तीव्र मुमुक्षुतानी उत्पत्ति थया पहेला होय छे ते होवाना

---

१ पाठान्तर परम विनयनी ओछाई

कारणो निशकपणे ते 'सत्' छे एवु दृढ थथु नथी, अथवा ते 'परमानदरूप' ज छे एम पण निश्चय नथी अथवा तो मुमुक्षुतामा पण केटलोक आनद अनुभवाय छे, तेने लीधे बाह्य शाताना कारणो पण केटलींकवार प्रिय लागे छे (।) अने तेथी आ लोकनी अल्प पण सुखेच्छा रह्या करे छे, जेथी जीवनी जोग्यता रोकाई जाय छे

[२]सत्पुरुषमा ज परमेश्वर बुद्धि, एने ज्ञानीओअे परम धर्म कह्यो छे, अने ए बुद्धि परम दैन्यत्व सूचवे छे, जेथी सर्व प्राणी विषे पोतानु दासत्व मनाय छे अने परम जोग्यतानी प्राप्ति होय छे ए 'परम दैन्यत्व' ज्या सुधी आवरित रह्यु छे त्या सुधी जीवनी जोग्यता प्रतिबधयुक्त होय छे

कदापि ए बने थया होय, तथापि वास्तविक तत्त्व पामवानी कई जोग्यतानी ओछाईने लीधे पदार्थ–निर्णय न थयो होय तो चित्त व्याकुळ रहे छे, अने मिथ्या समता आवे छे, कल्पित पदार्थ विषे 'सत्'नी मान्यता होय छे जेथी काळे करी अपूर्व पदार्थने विषे परम प्रेम आवतो नथी, अने ए ज परम जोग्यतानी हानि छे

आ त्रणे कारणो घणु करीने अमने मळेला घणाखरा मुमुक्षुमा अमे जोया छे मात्र बीजा कारणनी कईक न्यूनता कोई

---

२ पाठान्तर तथारूप ओळखाण थये सद्गुरुमा परमेश्वरबुद्धि राखी तेमनी आज्ञाए प्रवर्तवु ते 'परम विनय' कह्यो छे तेथी परम जोग्यतानी प्राप्ति होय छे ए परम विनय ज्या सुधी आवे नही त्या सुधी जीवने जोग्यता आवती नथी

कोई विषे जोई छे, अने जो तेओमा सर्व प्रकारे ([३]परम दैन्यतानी खामीनी) न्यूनता थवानु प्रयत्न होय तो जोग्य थाय एम जाणीए छीए परम दैन्यपणु ए त्रणेमा बळवान साधन छे, अने ए त्रणेनु बीज महात्माने विषे परम प्रेमार्पण ए छे

अधिक शु कहीए ? अनत काळे ए ज मार्ग छे

पहेलु अने त्रीजु कारण जवाने माटे बीजा कारणनी हानि करवी [४] अने महात्माना जोगे तेना अलौकिक स्वरूपने ओळखवु ओळखावानी परम तीव्रता राखवी, तो ओळखाशे. मुमुक्षुना नेत्रो महात्माने ओळखी ले छे

महात्मामा जेनो दृढ निश्चय थाय छे, तेने मोहासक्ति मटी पदार्थनो निर्णय होय छे तेथी व्याकुळता मटे छे तेथी नि शकता आवे छे जेथी जीव सर्व प्रकारना दु खथी निर्भय होय छे अने तेथी ज नि सगता उत्पन्न होय छे, अने एम योग्य छे

मात्र तम मुमुक्षुओने अर्थे टूकामा टूकु आ लख्यु छे, तेनो परस्पर विचार करी विस्तार करवो अने ते समजवु एम अमे कही छीए

- अमे आमा घणो गूढ शास्त्रार्थ पण प्रतिपादन कर्यो छे

तमे वारवार विचारजो . योग्यता हशे तो अमारा समागममा आ वातनो विस्तारथी विचार बतावीशु

---

३ पाठान्तर परम विनयनी

४ पाठान्तर अने परम विनयमा वर्तवु योग्य छे

हाल अमारो समागम थाय तेम तो नथी, पण वखते श्रावण वदमा करीए तो थाय, पण ते कये स्थळे ते हजु सुधी विचार्यु -नथी कळियुग छे माटे क्षणवार पण वस्तु विचार विना न रहेवु एम महात्माओनी शिक्षा छे तमने वधाने यथायोग्य पहोंचे

२२

सत्संग माहात्म्य

[४६९/६०९]

१ सहजस्वरूपे जीवनी स्थिति थवी तेने श्री वीतराग 'मोक्ष' कहे छे.

२. सहजस्वरूपथी जीव रहित नथी, पण ते सहजस्वरूपनु मात्र भान जीवने नथी, जे थवु ते ज सहजस्वरूपे स्थिति छे

३. सगना योगे आ जीव सहजस्थितिने भूल्यो छे, सगनी निवृत्तिए सहजस्वरूपनु अपरोक्ष भान प्रगटे छे

४. ए ज माटे सर्व तीर्थंकरादि ज्ञानीओए असगपणु ज सर्वोत्कृष्ट कह्यु छे, के जेना अगे सर्व आत्मसाधन रह्या छे

५ सर्व जिनागमना कहेला वचनो एक मात्र असगपणामा ज समाय छे, केम के ते थवाने अर्थे ज ते सर्व वचनो कह्या छे. एक परमाणुथी माडी चौद राजलोकनी अने मेषोन्मेषथी माडी शैलेशी अवस्था पर्यंतनी सर्व क्रिया वर्णवी छे, ते ए ज असगता समजाववाने अर्थे वर्णवी छे

६ सर्व भावथो असगपणु थवु ते सर्वथी दुष्करमा दुष्कर साधन छे, अने ते निराश्रयपणे सिद्ध थवु अत्यत दुष्कर छे एम विचारी श्री तीर्थंकरे सत्सगने तेनो आधार कह्यो छे, के जे सत्सगना योगे सहजस्वरूपभूत एवु असगपणु जीवने उत्पन्न थाय छे

७ ते सत्सग पण जीवने घणो वार प्राप्त थया छता फळवान थयो नथी एम श्री वीतरागे कह्यु छे, केम के ते सत्सगने ओळखी, आ जीवे तेने परमहितकारी जाण्यो नथी, परमस्नेहे उपास्यो नथी, अने प्राप्त पण अप्राप्त फळवान थवायोग्य सज्ञाए विसर्जन कर्यो छे, एम कह्यु छे आ अमे कह्यु ते ज वातनी विचारणाथी अमारा आत्मामा आत्मगुण आविर्भाव पामी सहजसमाधिपर्यंत प्राप्त थया एवा सत्सगने हु अत्यत अत्यंत भक्तिए नमस्कार करु छु

८ अवश्य आ जीवे प्रथम सर्व साधनने गौण जाणी, निर्वाणनो मुख्य हेतु एवो सत्सग ज सर्वार्पणपणे उपासवो योग्य छे, के जेथी सर्व साधन सुलभ थाय छे, एवो अमारो आत्म-साक्षात्कार छे

९ ते सत्सग प्राप्त थये जो आ जीवने कल्याण प्राप्त न थाय तो अवश्य आ जीवनो ज वाक छे, केमके ते सत्सगना अपूर्व, अलभ्य, अत्यत दुर्लभ एवा योगमा पण तेणे ते सत्सगना योगने बाध करनार एवा माठा कारणोनो त्याग न कर्यो ।

१० मिथ्याग्रह, स्वच्छदपणु, प्रमाद अने इद्रियविषयथी उपेक्षा न करी होय तो ज सत्सग फळवान थाय नही, अथवा

सत्सगमा एकनिष्ठा, अपूर्वभक्ति आणो न होय तो फळवान थाय नही जो एक एवी अपूर्वभक्तिथी सत्सगनी उपासना करी होय तो अल्पकाळमा मिथ्याग्रहादि नाश पामे, अने अनुक्रमे सर्व दोषथी जीव मुक्त थाय

११ सत्सगनी ओळखाण थवी जीवने दुर्लभ छे कोई महत् पुण्ययोगे ते ओळखाण थये निश्चय करी आ ज सत्सग, सत्पुरुष छे एवो साक्षीभाव उत्पन्न थयो होय ते जीवे तो अवश्य करी प्रवृत्तिने सकोचवी, पोताना दोष क्षणे क्षणे, कार्ये कार्ये अने प्रसगे प्रसगे तीक्ष्ण उपयोगे करी जोवा, जोईने ते परिक्षीण करवा, अने ते सत्सगने अर्थे देहत्याग करवानो योग थतो होय तो ते स्वीकारवो, पण तेथी कोई पदार्थने विषे विशेष भक्तिस्नेह थवा देवो योग्य नथी तेम प्रमादे रसगौरवादि दोषे ते सत्सग प्राप्त थये पुरुपार्थ धर्म मद रहे छे, अने सत्सग फळवान थतो नथी एम जाणी पुरुषार्थ वीर्य गोपववु घटे नही

१२ सत्सगनु एटले सत्पुरुषनु ओळखाण थये पण ते योग निरतर रहेतो न होय तो सत्सगथी प्राप्त थयो छे एवो जे उपदेश ते प्रत्यक्ष सत्पुरुष तुल्य जाणी विचारवो तथा आराधवो के जे आराधनाथी जीवने अपूर्व एवु सम्यक्त्व उत्पन्न थाय छे

१३ जीवे मुख्यमा मुख्य अने अवश्यमा अवश्य एवो निश्चय राखवो, के जे कई मारे करवु छे, ते आत्माने कल्याणरूप थाय ते ज करवु छे, अने ते ज अर्थे आ त्रण योगनी उदयबळे

प्रवृत्ति थती होय तो थवा देता, पण छेवटे ते त्रियोगथी रहित एवी स्थिति करवाने अर्थे ते प्रवृत्तिने सकोचता सकोचता क्षय थाय ए ज उपाय कर्त्तव्य छे ते उपाय मिथ्याग्रहनो त्याग, स्वच्छदपणानो त्याग, प्रमाद अने इद्रियविषयनो त्याग ए मुख्य छे ते सत्सगना योगमा अवश्य आराधन कर्या ज रहेवा अने सत्सगना परोक्षपणामा तो अवश्य अवश्य आराधन कर्या ज करवा, केम के सत्सग प्रसगमा तो जीवनु कईक न्यूनपणु होय तो ते निवारण थवानु सत्सग साधन छे, पण सत्सगना परोक्षपणामा तो एक पोतानु आत्मबळ ज साधन छे जो ते आत्मबळ सत्सगथी प्राप्त थयेला एवा बोधने अनुसरे नही, तेने आचरे नही, आचरवामा थता प्रमादने छोडे नही, तो कोई दिवसे पण जीवनु कल्याण थाय नही •

सक्षेपमा लखायला ज्ञानीना मार्गना आश्रयने उपदेशनारा आ वाक्यो मुमुक्षुजीवे पोताना आत्माने विषे निरतर परिणामी करवायोग्य छे, जे पोताना आत्मगुणने विशेष विचारवा शब्दरूपे अमे लख्या छे.

२३

मूर्तिमान मोक्ष सत्पुरुष छे.

[२८६/२४९[

ॐ नम

कराळ काळ होवाथी जीवने ज्या वृत्तिनी स्थिति करवी जोईए, त्या ते करी शकतो नथी

सद्धर्मनो घणु करीने लोप ज रहे छे ते माटे आ काळने कळियुग कहेवामा आव्यो छे

सद्धर्मनो जोग सत्पुरुष विना होय नही, कारण के असत्मा सत् होतु नथी

घणु करीने सत्पुरुषना दर्शननी अने जोगनी आ काळमा अप्राप्ति देखाय छे ज्यारे एम छे, त्यारे सद्धर्मरूप समाधि मुमुक्षु पुरुषने क्याथी प्राप्त होय ? अने अमुक काळ व्यतीत थया छता ज्यारे तेवी समाधि प्राप्त नथी थती त्यारे मुमुक्षुता पण केम रहे ?

घणु करीने जीव जे परिचयमा रहे छे, ते परिचयरूप पोताने माने छे जेनो प्रगट अनुभव पण थाय छे के अनार्य-कुळमा परिचय करी रहेलो जीव अनार्यरूपे पोताने दृढ माने छे, अने आर्यत्वने विषे मति करतो नथी

माटे मोटा पुरुषोए अने तेने लईने अमे एवो दृढ निश्चय कर्यो छे के जीवने सत्सग ए ज मोक्षनु परम साधन छे पोतानी सन्मार्गने विषे योग्यता जेवी छे, तेवी योग्यता धरावनारा पुरुषोनो सग ते सत्सग कह्यो छे मोटा पुरुषना

सगमा निवास छे, तेने अमे परम सत्सग कहीए छीए कारण एना जेवु कोई हितस्वी साधन आ जगतमा अमे जोयु नथी, अने साभळ्यु नथी

पूर्वे थई गयेला मोटा पुरुषनु चितन कल्याणकारक छे, तथापि स्वरूपस्थितिनु कारण होई शकतु नथी, कारण के जीवे शु करवु ते तेवा स्मरणथी नथी समजातु प्रत्यक्षजोगे वगर समजाव्ये पण स्वरूपस्थिति थवी सभवित मानीए छीए, अने तेथी एम निश्चय थाय छे के ते जोगनु अने ते प्रत्यक्ष चितननु फळ मोक्ष होय छे कारण के मूर्तिमान मोक्ष ते सत्पुरुष छे

मोक्षे गया छे एवा (अर्हंतादिक) पुरुषनु चितन घणा काळे भावानुसार मोक्षादिक फळदाता होय छे सम्यक्त्व पाम्या छे एवा पुरुषनो निश्चय थये अने जोग्यताना कारणे जीव सम्यक्त्व पामे छे

२४

आश्रय भक्तिमार्ग (१)

[४५४/५७२]

सर्व विभावथी उदासीन अने अत्यत शुद्ध निज पर्यायने सहजपणे आत्मा भजे, तेने श्री जिने तीव्रज्ञानदशा कही छे जे दशा आव्या विना कोई पण जीव बधनमुक्त थाय नही, एवो सिद्धात श्री जिने प्रतिपादन कर्यो छे, जे अखड सत्य छे

कोईक जीवथी ए गहन दशानो विचार थई शकवा योग्य छे, केम के अनादिथी अत्यत अज्ञान दशाए आ जीवे प्रवृत्ति करी छे, ते प्रवृत्ति एकदम असत्य, असार समजाई, तेनी निवृत्ति सूझे, एम बनवु बहु कठण छे, माटे ज्ञानीपुरुषनो आश्रय करवारूप भक्तिमार्ग जिने निरूपण कर्यो छे, के जे मार्ग आराधवाथी सुलभपणे ज्ञानदशा उत्पन्न थाय छे

ज्ञानीपुरुषना चरणने विषे मन स्थाप्या विना ए भक्ति-मार्ग सिद्ध थतो नथी जेथी फरी फरी ज्ञानीनी आज्ञा आराधवानु जिनागममा ठेकाणे ठेकाणे कथन कर्यु छे ज्ञानीपुरुषना चरणमा मननु स्थापन थवु प्रथम कठण पडे छे, पण वचननी अपूर्वताथी, ते वचननो विचार करवाथी, तथा ज्ञानी प्रत्ये अपूर्व दृष्टिए जोवाथी, मननु स्थापन थवु सुलभ थाय छे

ज्ञानीपुरुषना आश्रयमा विरोध करनारा पचविपयादि दोषो छे ते दोष थवाना साधनथी जेम बने तेम दूर रहेवु, अने प्राप्तसाधनमा पण उदासीनता राखवी, अथवा ते ते साधनोमाथी अहबुद्धि छोडी दई, रोगरूप जाणी प्रवर्तवु घटे अनादि दोषनो एवा प्रसगमा विशेप उदय थाय छे केम के आत्मा ते दोषने छेदवा पोतानी सन्मुख लावे छे के, ते स्वरूपातर करी तेने आकर्षे छे, अने जागृतिमा शिथिल करी नाखी पोताने विषे एकाग्र बुद्धि करावी दे छे ते एकाग्र बुद्धि एवा प्रकारनी होय छे के, 'मने आ प्रवृत्तिथी तेवो विशेप बाध नही थाय, हु अनुक्रमे तेने छोडीश, अने करता जागृत रहीश,' ए आदि भ्रातदशा ते दोष करे छे, जेथी ते दोपनो

सवध जीव छोडतो नथी, अथवा ते दोप वधे छे, तेनो लक्ष तेने आवी शकतो नथी

ए विरोधी साधननो बे प्रकारथी त्याग थई शके छे एक ते साधनना प्रसगनी निवृत्ति, वीजो प्रकार विचारथी करी तेनु तुच्छपणु समजावु

विचारथी करी तुच्छपणु समजावा माटे प्रथम ते पचविषयादिना साधननी निवृत्ति करवी वधारे योग्य छे, केम के तेथी विचारनो अवकाश प्राप्त थाय छे

ते पचविषयादि साधननी निवृत्ति सर्वथा करवानु जीवनु बळ न चालतु होय त्यारे, क्रमेक्रमे, देशेदेशे तेनो त्याग करवो घटे, परिग्रह तथा भोगोपभोगना पदार्थनो अल्प परिचय करवो घटे एम करवाथी अनुक्रमे ते दोष मोळा पडे, अने आश्रयभक्ति दृढ थाय, तथा ज्ञानीना वचनोनु आत्मामा परिणाम थई तीव्रज्ञानदशा प्रगटी जीवन्मुक्त थाय

जीव कोईक वार आवी वातनो विचार करे, तेथी अनादि अभ्यासनु बळ घटवु कठण पडे, पण दिनदिन प्रत्ये, प्रसगे प्रसगे अने प्रवृत्ति प्रवृत्तिए फरी फरी विचार करे, तो अनादि अभ्यासनु बळ घटी, अपूर्व अभ्यासनी सिद्धि थई सुलभ एवो आश्रयभक्तिमार्ग सिद्ध थाय एज विनति

२५

आश्रय भक्तिमार्ग (२)

[५१६/७०६]

१ वृत्तिआदि सक्षेप अभिमानपूर्वक थतो होय तोपण करवो घटे विशेषता एटली के ते अभिमान पर निरतर खेद राखवो तेम बने तो क्रमे करीने वृत्तिआदिनो सक्षेप थाय, अने ते सबधी अभिमान पण सक्षेप थाय

२ घणे स्थळे विचारवान पुरुपोए एम कह्यु छे के ज्ञान थये काम क्रोध, तृष्णादि भाव निर्मूळ थाय ते सत्य छे, तथापि ते वचनोनो एवो परमार्थ नथी के ज्ञान थया प्रथम ते मोळा न पडे के ओछा न थाय मूळसहित छेद तो ज्ञाने करीने थाय, पण कषायादिनु मोळापणु के ओछापणु न थाय त्या सुधी ज्ञान घणु करीने उत्पन्न ज न थाय ज्ञान प्राप्त थवामा विचार मुख्य साधन छे, अने ते विचारने वैराग्य (भोगप्रत्ये अनासक्ति, तथा उपशम (कपायादिनु घणु ज मदपणु, ते प्रत्ये विशेष खेद) बे मुख्य आधार छे, एम जाणी तेनो निरतर लक्ष राखी तेवी परिणति करवी घटे

सत्पुरुषना वचनना यथार्थ ग्रहण विना विचार घणु करीने उद्‌भव थतो नथी, अने सत्पुरुषना वचननु यथार्थ ग्रहण, सत्पुरुषनी प्रतीति ए कल्याण थवामा सर्वोत्कृष्ट निमित्त होवाथी तेमनी ‘अनन्य आश्रयभक्ति’ परिणाम पाम्येथी, थाय छे घणु करी एकबीजा कारणोने अन्योन्याश्रय जेवु छे क्याक कोईनु मुख्यपणु छे, क्याक कोईनु मुख्यपणु छे, तथापि एम

तो अनुभवमा आवे छे के खरेखरो मुमुक्षु होय तेने सत्पुरुषनी 'आश्रयभक्ति' अहंभावादि छेदवाने माटे अने अल्पकाळमा विचारदशा परिणाम पामवाने माटे उत्कृष्ट कारणरूप थाय छे

भोगमा अनासक्ति थाय, तथा लौकिक विशेषता देखाडवानो बुद्धि ओछी करवामा आवे तो तृष्णा निर्बळ थती जाय छे लौकिक मान आदिनु तुच्छपणु समजवामा आवे तो तेनी विशेपता न लागे, अने तेथी तेनी इच्छा सहेजे मोळी पडी जाय, एम यथार्थ भासे छे माड माड आजीविका चालती होय तोपण मुमुक्षुने ते घणु छे, केम के विशेषनो कई अवश्य उपयोग (कारण) नथी, एम ज्या सुधी निश्चयमा न आणवामा आवे त्या सुधी तृष्णा नानाप्रकारे आवरण कर्या करे लौकिक विशेषतामा कई सारभूतता नथी, एम निश्चय करवामा आवे तो माड आजीविका जेटलु मळतु होय तोपण तृप्ति रहे माड आजीविका जेटलु मळतु न होय तोपण मुमुक्षु जीव आर्त्तध्यान घणु करीने थवा न दे, अथवा थये ते पर विशेष खेद करे, अने आजीविकामा त्रूटतु यथाधर्म उपार्जन करवानी मद कल्पना करे ए आदि प्रकारे वर्तता तृष्णानो पराभव (क्षीण) थवा योग्य देखाय छे

३ घणु करीने सत्पुरुषने वचने आध्यात्मिकशास्त्र पण आत्मज्ञाननो हेतु थाय छे, केम के परमार्थआत्मा शास्त्रमा वर्ततो नथी, सत्पुरुषमा वर्ते छे मुमुक्षुए जो कोई सत्पुरुषनो आश्रय प्राप्त थयो होय तो प्राये ज्ञाननो याचना करवी न घटे, मात्र तथारूप वैराग्य उपशमादि प्राप्त करवाना उपाय करवा घटे

ते योग्य प्रकारे सिद्ध थये ज्ञानीनो उपदेश सुलभपणे परिणमे छे, अने यथार्थ विचार तथा ज्ञाननो हेतु थाय छे

४ ज्या सुधी ओछी उपाधिवाळा क्षेत्रे आजीविका चालती होय त्या सुधी विशेष मेळववानी कल्पनाए मुमुक्षुए कोई एक विशेष अलौकिक हेतु विना वधारे उपाधिवाळा क्षेत्रे जवु न घटे केम के तेथी घणी सद्वृत्तिओ मोळी पडी जाय छे, अथवा वर्धमान थती नथी

* * *

२६

वृत्तिओना जय के क्षयनो अभ्यास

[४११/५१०]

बधवृत्तिओने उपशमाववानो तथा निवर्ताववानो जीवने अभ्यास, सतत अभ्यास कर्त्तव्य छे, कारण के विना विचारे, विना प्रयासे ते वृत्तिओनु उपशमवु अथवा निवर्तवु केवा प्रकारथी थाय? कारण विना कोई कार्य सभवतु नथी, तो आ जीवे ते वृत्तिओना उपशमन के निवर्तनतो कोई उपाय कर्यो न होय एटले तेनो अभाव न थाय ए स्पष्ट सभवरूप छे घणी वार पूर्वकाळे वृत्तिओना उपशमनतु तथा निवर्तननु जीवे अभिमान कर्यु छे, पण तेवु कई साधन कर्यु नथी, अने हजु सुधी ते प्रकारमा जीव कई ठेकाणु करतो नथी, अर्थात् हजु तेने ते अभ्यासमा कई रस देखातो नथी, तेम कडवाश लागता छता ते कडवाश उपर पग दई आ जीव उपशमन, निवर्तनमा प्रवेश

करतो नथी आ वात वारवार आ दुष्टपरिणामी जीवे विचारवा योग्य छे, विसर्जन करवा योग्य कोई रीते नथी

पुत्रादि सपत्तिमा जे प्रकारे आ जीवने मोह थाय छे ते प्रकार केवळ नीरस अने निंदवा योग्य छे जीव जो जराय विचार करे तो स्पष्ट देखाय एवु छे के, कोईने विषे पुत्रपणु भावी आ जीवे माठु कर्यामा मणा राखी नथी, अने कोईने विषे पितापणु मानीने पण तेम ज कर्यु छे अने कोई जीव हजु सुधी तो पितापुत्र थई शकया दीठा नथी सौ कहेता आवे छे के आनो आ पुत्र अथवा आनो आ पिता, पण विचारता आ वात कोई पण काळे न वनी शके तेवी स्पष्ट लागे छे अनुत्पन्न एवो आ जीव तेने पुत्रपणे गणवो, के गणाववानु चित्त रहेवु ए सौ जीवनी मूढता छे, अने ते मूढता कोई पण प्रकारे सत्सगनी इच्छावाळा जीवने घटती नथी

जे मोहादि प्रकार विषे तमे लख्यु ते बन्नेने भ्रमणनो हेतु छे, अत्यत विटबणानो हेतु छे ज्ञानीपुरुष पण एम वर्ते तो ज्ञान उपर पग मूकवा जेवु छे, अने सर्व प्रकारे अज्ञाननिद्रानो ते हेतु छे ए प्रकारने विचारे बन्नेने सीधो भाव कर्तव्य छे आ वात अल्पकाळमा चेतवा योग्य छे जेटलो बने तेटलो तमे के बीजा तम सबंधी सत्सगी निवृत्तिनो अवकाश लेशो ते ज जीवने हितकारी छे

वृत्तिओना जय के क्षयनो अभ्यास (१)

[४४७/५६०]

ॐ

जो ज्ञानीपुरुषना दृढ आशयथी सर्वोत्कृष्ट एवु मोक्षपद सुलभ छे, तो पछी क्षणेक्षणे आत्मोपयोग स्थिर करवो घटे एवो कठण मार्ग ते ज्ञानीपुरुषना दृढ आश्रये प्राप्त थवो केम सुलभ न होय? केम के ते उपयोगना एकाग्रपणा विना तो मोक्षपदनी उत्पत्ति छे नही ज्ञानीपुरुषना वचननो दृढ आश्रय जेने थाय तेने सर्व साधन सुलभ थाय एवो अखड निश्चय सत्पुरुषोए कर्यो छे, तो पछी अमे कहीए छीए के आ वृत्तिओनो जय करवो घटे छे, ते वृत्तिओनो जय केम न थई शके? आटलु सत्य छे के आ दुषमकाळने विषे सत्सगनी समीपता के दृढ आश्रय विशेष जोईए अने असत्सगथी अत्यत निवृत्ति जोईए, तोपण मुमुक्षुने तो एम ज घटे छे के कठणमा कठण आत्मसाधन होय तेनी प्रथम इच्छा करवी, के जेथी सर्व साधन अल्पकाळमा फळीभूत थाय

श्री तीर्थंकरे तो एटला सुधी कह्यु छे के जे ज्ञानीपुरुषनी दशा ससारपरिक्षीण थई छे, ते ज्ञानीपुरुषने परपरा कर्मबध सभवतो नथी, तोपण पुरुषार्थ मुख्य राखवो, के जे बीजा जीवने पण आत्मसाधन–परिणामनो हेतु थाय

'समयसार'माथी जे काव्य लखेल छे ते तथा तेवा बीजा सिद्धातो माटे समागमे समाधान करवानु सुगम पडशे.

ज्ञानीपुरुषने आत्मप्रतिबंधपणे संसारसेवा होय नहीं, पण प्रारब्धप्रतिबंधपणे होय, एम छता पण तेथी निवर्तवारूप परिणामने पामे एम ज्ञानीनी रीत होय छे, जे रीतनो आश्रय करता हाल त्रण वर्ष थया विशेष तेम कर्यु छे अने तेमा जरूर आत्मदशाने भुलावे एवो संभव रहे तेवो उदय पण जेटलो बन्यो तेटलो समपरिणामे वेद्यो छे, जोके ते वेदवाना काळने विषे सर्वसंगनिवृत्ति कोई रीते थाय तो सारु एम सूझया कर्यु छे, तोपण सर्वसंगनिवृत्तिए जे दशा रहेवी जोईए ते दशा उदयमा रहे, तो अल्पकालमा विशेष कर्मनी निवृत्ति थाय एम जाणी जेटलु बन्यु तेटलु ते प्रकारे कर्यु छे, पण मनमा हवे एम रहे छे के आ प्रसंगथी एटले सकल गृहवासथी दूर थवाय तेम न होय तोपण व्यापारादि प्रसंगथी निवृत्त, दूर थवाय तो सारु, केम के आत्मभावे परिणाम पामवाने विषे जे दशा ज्ञानीनी जोईए ते दशा आ व्यापार व्यवहारथी मुमुक्षु जीवने देखाती नथी आ प्रकार जे लख्यो छे ते विषे हमणा विचार क्यारेक क्यारेक विशेष उदय पामे छे ते विषे जे परिणाम आवे ते खरु आ प्रसंग लख्यो छे ते लोकोमा हाल प्रगट थवा देवा योग्य नथी माह सुद बीज उपर ते तरफ आववानु थवानो संभव रहे छे ए ज विनती

वृत्तिओना जय के क्षयनो अभ्यास (२)

[५२४/७१६]

ॐ सद्‌गुरुप्रसाद

*　　　*　　　*

श्री देवकरणजीने व्याख्यान करवानु रहे छे, तेथी अहभावादिनो भय रहे छे, ते सभवित छे

जेणे जेणे सद्‌गुरुने विपे तथा तेमनी दशाने विपे विशेपपणु दीठु छे, तेने तेने घणु करीने अहभाव तथारूप प्रसग जेवा प्रसगोमा उदय थतो नथी, अथवा तरत शमाय छे ते अहभावने जो आगळथी झेर जेवो प्रतीत कर्यो होय, तो पूर्वापर तेनो सभव ओछो थाय कईक अतरमा चातुर्यादि भावे मीठाश सूक्ष्मपरिणतिए पण राखी होय, तो ते पूर्वापर विशेपता पामे छे, पण झेर ज छे, निश्चय झेर ज छे, प्रगट काळकूट झेर छे, एमा कोई रीते सशय नथी, अने सशय थाय, तो ते सशय मानवो नथी, ते सशयने अज्ञान ज जाणवु छे, एवी तीव्र खाराश करी मूकी होय, तो ते अहभाव घणु करी बळ करी शकतो नथी वखते ते अहभावने रोकवाथी निरहभावता थई तेनो पाछो अहभाव थई आववानु बने छे, ते पण आगळ झेर, झेर अने झेर मानी राखी वर्तायु होय तो आत्मार्थने बाध न थाय

२९
शूरवीरता

[६१६/८१९]

ॐ

खेद नही करता शूरवीरपणु ग्रहीने ज्ञानीने मार्गे चालता मोक्षपाटण सुलभ ज छे विषय कषायादि विशेष विकार करी जाय ते वखते विचारवानने पोतानु निर्वीर्यपणु जोईने घणो ज खेद थाय छे, अने आत्माने वारवार निंदे छे, फरी फरीने तिरस्कारनी वृत्तिथी जोई, फरी महत पुरुषना चरित्र अने वाकचनु अवलबन ग्रहण करी, आत्माने शौर्य उपजावी, ते विषयादि सामे अति हठ करीने तेने हठावे छे त्या सुधी नीचे मने बेसता नथी, तेम एकलो खेद करीने अटकी रहेता नथी ए ज वृत्तिनु अवलबन आत्मार्थी जीवोए लीधु छे, अने तेथी ज अते जय पाम्या छे आ वात सर्व मुमुक्षुओए मुखे करी हृदयमा स्थिर करवा योग्य छे.

३०
स्वरूपस्मृति केम थाय ?

[३१३/३१९]

अनतकाळ थया स्वरूपनु विस्मरण होवाथी अन्यभाव जीवने साधारण थई गयो छे दीर्घकाळ सुधी सत्सगमा रही वोधभूमिकानु सेवन थवाथी ते विस्मरण अने अन्यभावनी साधारणता टळे छे, अर्थात् अन्यभावथी उदासीनपणु प्राप्त होय छे. आ काळ विषम होवाथी स्वरूपमा तन्मयता रहेवानी दुर्घटता

छे, तथापि सत्सगनु दीर्घकाळ सुधी सेवन ते तन्मयता आपे एमा सदेह नथी थतो

जिदगी अल्प छे, अने जजाळ अनत छे, सख्यात धन छे, अने तृष्णा अनत छे, त्या स्वरूप-स्मृति सभवे नही, पण ज्या जजाळ अल्प छे, अने जिदगी अप्रमत्त छे, तेम ज तृष्णा अल्प छे, अथवा नथी, अने सर्व सिद्धि छे त्या स्वरूपस्मृति पूर्ण थवी सभवे छे अमूल्य एवु ज्ञानजीवन प्रपचे आवरेलु वह्यु जाय छे उदय बळवान छे।

३१

अनंतानुबंधी कषायनुं स्वरूप

[३७७/४५९]

श्रीकृष्णादिकनी क्रिया उदासीन जेवी हती जे जीवने सम्यक्त्व उत्पन्न थाय, तेने सर्व प्रकारनी ससारी क्रिया ते ज समये न होय एवो कई नियम नथी सम्यक्त्व उत्पन्न थवा पछी ससारी क्रिया रसरहितपणे थवी सभवे छे घणु करी एवी कोई पण क्रिया ते जीवनी होती नथी के जेथी परमार्थने विषे भ्राति थाय, अने ज्या सुधी परमार्थने विषे भ्राति थाय नही त्या सुधी बीजी क्रियाथी सम्यक्त्वने बाध थाय नही. सर्पने आ जगतना लोको पूजे छे ते वास्तविकपणे पूज्यबुद्धिथी पूजता नथी, पण भयथी पूजे छे, भावथी पूजता नथी, अने इष्टदेवने लोको अत्यत भावे पूजे छे, एम सम्यक्-दृष्टि जीव ते ससारने भजतो देखाय छे, ते पूर्वे निबधन

करेला अेवा प्रारब्धकर्मथी देखाय छे वास्तव्यपणे भावथी ते ससारमा तेनो प्रतिबंध घटे नही पूर्वकर्मना उदयरूप भयथी घटे छे जेटले अशे भावप्रतिबध न होय तेटले अशे ज सम्यक्दृष्टिपणु ते जीवने होय छे

अनतानुबधी क्रोध, मान, माया अने लोभ सम्यक्त्व सिवाय गया सभवे नही, अेम जे कहेवाय छे ते यथार्थ छे ससारी पदार्थोने विपे जीवने तीव्र स्नेह विना अेवा क्रोध, मान, माया अने लोभ होय नही, के जे कारणे तेने अनत ससारनो अनुबध थाय जे जीवने ससारी पदार्थो विपे तीव्र स्नेह वर्ततो होय तेने कोई प्रसगे पण अनतानुबधी चतुष्कमाथी कोई पण उदय थवा सभवे छे, अने ज्या सुधी तीव्र स्नेह ते पदार्थोमा होय त्या सुधी अवश्य परमार्थ मार्गवाळो जीव ते न होय परमार्थ मार्गनु लक्षण अे छे के अपरमार्थने भजता जीव बधा प्रकारे कायर थया करे, सुखे अथवा दु खे. दु खमा कायरपणु कदापि बीजा जीवोनु पण सभवे छे, पण ससारसुखनी प्राप्तिमा पण कायरपणु, ते सुखनु अण-गमवापणु, नीरसपणु परमार्थमार्गी पुरुषने होय छे

तेवु नीरसपणु जीवने परमार्थज्ञाने अथवा परमार्थज्ञानी —पुरुषना निश्चये थवु सभवे छे, बीजा प्रकारे थवु सभवतु नथी परमार्थज्ञाने अपरमार्थरूप अेवो आ ससार जाणी पछी ते प्रत्ये तीव्र अेवो क्रोध, मान, माया के लोभ कोण करे ? के क्याथी थाय ? जे वस्तुनु माहात्म्य दृष्टिमाथी गयु ते वस्तुने अर्थे अत्यत क्लेश थतो नथी ससारने विषे भ्रांतिपणे जाणेलु सुख ते परमार्थज्ञाने भ्राति ज भासे छे, अने जेने

भ्राति भासी छे तेने पछी तेनु माहात्म्य शु लागे ? अेवो माहात्म्यदृष्टि परमार्थज्ञानीपुरुपना निश्चयवाळा जीवने होय छे, तेनु कारण पण अे ज छे कोई ज्ञानना आवरणने कारणे जीवने व्यवच्छेदक ज्ञान थाय नही, तथापि सामान्य अेवु ज्ञान, ज्ञानी पुरुपनी श्रद्धारूपे थाय छे वडना बीजनी पेठे परमार्थ – वडनु बीज अे छे

तीव्र परिणामे, भवभयरहितपणे ज्ञानीपुरुप के सम्यक्दृष्टि जीवने क्रोध, मान, माया के लोभ होय नही जे ससारअर्थे अनुबध करे छे, ते करता परमार्थने नामे, भ्रातिगत परिणामे असद्गुरु, देव, धर्मने भजे छे, ते जीवने घणु करी अनतानुबधी क्रोध, मान, माया, लोभ थाय छे, कारण के बीजी ससारनी क्रियाओ घणु करी अनत अनुबध करवावाळी नथी, मात्र अपरमार्थने परमार्थ जाणी आग्रहे जीव भज्या करे, ते परमार्थज्ञानी अेवा पुरुष प्रत्ये, देव प्रत्ये, धर्म प्रत्ये निरादर छे, अेम कहेवामा घणु करी यथार्थ छे ते सद्गुरु, देव, धर्म प्रत्ये असत्गुर्वादिकना आग्रहथी, माठा बोधथी, आशातनाअे, उपेक्षाअे प्रवर्ते अेवो सभव छे तेम ज ते माठा सगथी तेनी ससारवासना परिच्छेद नही थती होवा छता ते परिच्छेद मानी परमार्थ प्रत्ये उपेक्षक रहे छे, अे ज अनतानुबधी क्रोध, मान, माया, लोभनो आकार छे

३२

अनंतानुबंधी कषायनुं स्वरूप

[४७१/६१३]

जे कपाय परिणामथी अनत ससारनो सबघ थाय ते कषाय परिणामने जिनप्रवचनमा 'अनतानुबधी' सज्ञा कही छे जे कषायमा तन्मयपणे अप्रशस्त (माठा) भावे तीव्रोपयोगे आत्मानी प्रवृत्ति छे, त्या 'अनतानुबधी'नो सभव छे मुख्य करीने अही , कह्या छे, ते स्थानके ते कषायनो विशेष सभव छे सत्‌देव, सद्‌गुरु अने सत्‌धर्मनो जे प्रकारे द्रोह थाय, अवज्ञा थाय, तथा विमुखभाव थाय, ए आदि प्रवृत्तिथी, तेमज असत्‌देव, असत्‌गुरु तथा असत्‌धर्मनो जे प्रकारे आग्रह थाय, ते सबधी कृतकृत्यता मान्य थाय, ए आदि प्रवृत्तिथी प्रवर्तता 'अनतानुवधी कषाय' सभवे छे, अथवा ज्ञानीना वचनमा स्त्रीपुत्रादि भावोने जे मर्यादा पछी इच्छता निर्ध्वंस परिणाम कह्या छे, ते परिणामे प्रवर्तता पण 'अनतानुबधी' होवायोग्य छे सक्षेपमा 'अनतानुबधी कषाय'नी व्याख्या ए प्रमाणे जणाय छे

जे पुत्रादि वस्तु लोकसज्ञाए इच्छवायोग्य गणाय छे, ते वस्तु दु खदायक अने असारभूत जाणी पाप्त थया पछी नाश पाम्या छता पण इच्छवायोग्य लागती नहोती, तेवा पदार्थनी हाल इच्छा उत्पन्न थाय छे, अने तेथी अनित्यभाव जेम बळवान थाय तेम करवानी जिज्ञासा उद्‌भवे छे, ए आदि उदाहरण साथे लख्यु ते वाच्यु छे

जे पुरुषनी ज्ञानदशा स्थिर रहेवा योग्य छे, एवा ज्ञानीपुरुषने पण ससारप्रसगनो उदय होय तो जागृतपणे प्रवर्तवु घटे छे, एम वीतरागे कह्यु छे, ते अन्यथा नथी, अने आपणे सौए जागृतपणे प्रवर्तवु करवामा कई शिथिलता राखीए तो ते ससारप्रसगथी वाध थता वार न लागे, एवो उपदेश ए वचनोथी आत्मामा परिणामी करवा योग्य छे, एमा सशय घटतो नथी प्रसगनी साव निवृत्ति अशक्य थती होय तो प्रसग सक्षेप करवो घटे, अने क्रमे करीने साव निवृत्तिरूप परिणाम आणवु घटे, ए मुमुक्षु पुरुपनो भूमिकाधर्म छे सत्सग सत्शास्त्रना योगथी ते धर्मनु आराधन विशेषे करी सभवे छे

२३

अनंतानुबंधी कषायनुं स्वरूप

- [७३८/१९–२२]

१९ क्रोध, मान, माया, अने लोभनी चोकडीने कषाय एवा नामथी ओळखवामा आवे छे आ कषाय छे ते अत्यत क्रोधादिवाळो छे ते जो अनत ससारनो हेतु होईने अनतानुबधी कषाय थतो होय तो ते चक्रवर्त्यादिने अनत ससारनी वृद्धि थवी जोईए, अने ते हिसाबे अनत ससार व्यतीत थया पहेला मोक्ष थवो शी रीते घटे ? ए वात विचारवा योग्य छे

२० जे क्रोधादिथी अनत ससारनी वृद्धि थाय ते अनतानुबधी कषाय छे, ए पण निःशक छे ते हिसाबे उपर बतावेला क्रोधादि अनतानुबधी सभवता नथी त्यारे अनतानुबधीनी चोकडी बीजी रीते सभवे छे

२१ सम्यक् ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रणेनी ऐक्यता ते 'मोक्ष' ते सम्यक् ज्ञान, दर्शन अने चारित्र एटले वीतराग ज्ञान, दर्शन अने चारित्र छे तेनाथी ज अनत ससारथी मुक्तपणु पमाय छे आ वीतराग ज्ञान, कर्मना अबधनो हेतु छे वीतरागना मार्गे चालवु अथवा तेमनी आज्ञा प्रमाणे चालवु ए पण अबधक छे ते प्रत्ये जे क्रोधादि कषाय होय तेथी विमुक्त थवु ते ज अनत ससारथी अत्यतपणे मुक्त थवु छे, अर्थात मोक्ष छे मोक्षथी विपरीत एवो जे अनत ससार तेनी वृद्धि जेनाथी थाय छे तेने अनतानुबधी कहेवामा आवे छे, अने छे पण तेम ज वीतरागना मार्गे अने तेमनी आज्ञाए चालनारानु कल्याण थाय छे आवो जे घणा जीवोने कल्याणकारी मार्ग ते प्रत्ये क्रोधादिभाव (जे महा विपरीतना करनारा छे) ते ज अनतानुबधी कषाय छे

२२ जोके क्रोधादिभाव लौकिके पण अफळ नथी, परतु वीतरागे प्ररूपेल वीतरागज्ञान अथवा मोक्षधर्म अथवा तो सत्धर्म तेनु खडन अथवा ते प्रत्ये क्रोधादिभाव तीव्रमदादि जेवे भावे होय तेवे भावे अनतानुबधी कषायथी बध थई अनत एवा ससारनी वृद्धि थाय छे

३४

अनतानुबंधीथी छूटवानो उपाय

[४१९/५२२]

जीवने ज्ञानी पुरुषनु ओळखाण थये तथाप्रकारे अनतानुवधो क्रोध, मान, माया, लोभ मोळा पडवानो प्रकार वनवायोग्य छे, के जेम वनी अनुक्रमे ते परिक्षीणपणाने पामे छे सत्पुरुपनु ओळखाण जेम जेम जीवने थाय छे, तेम तेम मताभिग्रह, दुराग्रहतादि भाव मोळा पडवा लागे छे, अने पोताना दोप जोवा भणी चित्त वळी आवे छे, विकथादि भावमा नीरसपणु लागे छे, के जुगुप्सा उत्पन्न थाय छे, जीवने अनित्यादि भावना चिंतववा प्रत्ये बळवीर्य स्फुरवा विषे जे प्रकारे ज्ञानीपुरुष समीपे साभळ्यु छे, तेथी पण विशेष बळवान परिणामथी ते पचविपयादिने विपे अनित्यादि भाव दृढ करे छे अर्थात् सत्पुरुष मळ्ये आ सत्पुरुप छे एटलु जाणी, सत्पुरुषने जाण्या प्रथम जेम आत्मा पचविपयादिने विषे रक्त हतो तेम रक्त त्यार पछी नथी रहेतो, अने अनुक्रमे ते रक्तभाव मोळो पडे एवा वैराग्यमा जीव आवे छे, अथवा सत्पुरुषनो योग थया पछी आत्मज्ञान कई दुर्लभ नथी, तथापि सत्पुरूषने विषे, तेना वचनने विषे, ते वचनना आशयने विषे, प्रीति भक्ति थाय नही त्या सुधी आत्मविचार पण जीवमा उदय आववायोग्य नथी, अने सत्पुरुपनो जीवने योग थयो छे, एवु खरेखरु ते जीवने भास्यु छे, एम पण कहेवु कठण छे

जीवने सत्पुरुषनो योग थये तो एवी भावना थाय के अत्यार सुधी जे मारा प्रयत्न कल्याणने अर्थे हता ते सौ निष्फळ हता, लक्ष वगरना बाणनी पेठे हता, पण हवे सत्पुरुषनो अपूर्व योग थयो छे, तो मारा सर्व साधन सफळ थवानो हेतु छे लोकप्रसगमा रहीने जे निष्फळ, निर्लक्ष साधन कर्या ते प्रकारे हवे सत्पुरुषने योगे न करता जरूर अतरात्मामा विचारीने दृढ परिणाम राखीने, जीवे आ योगने, वचनने विषे जागृत थवा योग्य छे, जागृत रहेवा योग्य छे, अने ते ते प्रकार भावी, जीवने दृढ करवो के जेथी तेने प्राप्त जोग 'अफळ' न जाय, अने सर्व प्रकारे ए ज बळ आत्मामा वर्धमान करवु, के आ योगथी जीवने अपूर्व फळ थवा योग्य छे, तेमा अतराय करनार 'हु जाणु छु, ए मारु अभिमान, कुळधर्मने अने करता आव्या छीए ते क्रियाने केम त्यागी शकाय एवो लोकभय, सत्पुरुषनी भक्ति आदिने विषे पण लौकिकभाव, अने कदापि कोई पच-विषयाकार एवा कर्म ज्ञानीने उदयमा देखी तेवो भाव पोते आराधवापणु ए आदि प्रकार छे,' ते ज अनतानुबधी क्रोध, मान, माया लोभ छे ए प्रकार विशेषपणे समजवा योग्य छे, तथापि अत्यारे जेटलु बन्यु तेटलु लख्यु छे

उपशम, क्षयोपशम अने क्षायिक सम्यक्त्वने माटे सक्षेपमा व्याख्या कही हती, तेने अनुसरती त्रिभोवनना स्मरणमा छे

ज्या ज्या आ जीव जन्म्यो छे, भवना प्रकार धारण कर्या छे, त्या त्या तथा प्रकारना अभिमानपणे वर्त्यो छे, जे अभिमान निवृत्त कर्या सिवाय ते ते देहनो अने देहना सबधमा आवता पदार्थोनो आ जीवे त्याग कर्यो छे, एटले हजी सुधी ते ज्ञानविचारे

करो भाव गाळचो नथी, अने ते ते पूर्वसज्ञाओ हजी एम ने एम आ जीवना अभिमानमा वर्तो आवे छे, ए ज एने लोक आखानी अधिकरण क्रियानो हेतु कह्यो छे, जे पण विशेपपणे अत्र लखवानु बनो शक्यु नथी पत्रादि माटे नियमितपणा माटे विचार करीश

३५

सद्गुरु भक्तिनो अंतराशय

[२६९/२१३]

पुराणपुरुषने नमोनम

आ लोक त्रिविध तापथी आकुळव्याकुळ छे झाझवाना पाणीने लेवा दोडी तृषा छिपाववा इच्छे छे, अेवो दीन छे अज्ञानने लीधे स्वरूपनु विस्मरण थई जवाथी भयकर परिभ्रमण तेने प्राप्त थयु छे समये समये अतुल खेद, ज्वरादिक रोग, मरणादिक भय, वियोगादिक दुखने ते अनुभवे छे, अेवी अशरणतावाळा आ जगतने एक सत्पुरुष ज शरण छे, सत्पुरुपनी वाणी विना कोई ए ताप अने तृषा छेदी शके नही एम निश्चय छे माटे फरी फरी ते सत्पुरुषना चरणनु अमे ध्यान करीए छीए

ससार केवळ अशातामय छे कोई पण ,प्राणीने अल्प पण शाता छे, ते पण सत्पुरुषनो ज अनुग्रह छे, कोई पण प्रकारना पुण्य विना शातानी प्राप्ति नथी, अने ए पुण्य पण

सत्पुरुषना उपदेश विना कोईए जाण्यु नथी, घणे काळे उपदेशेलु ते पुण्य रूढिने आधीन थई प्रवर्ते छे, तेथी जाणे ते ग्रथादिकथी प्राप्त थयेलु लागे छे, पण एनु मूळ एक सत्पुरुष ज छे, माटे अमे एम ज जाणीए छीए के एक अश शाताथी करीने पूर्णकामता सुधीनी सर्व समाधि तेनु सत्पुरुष ज कारण छे, आटली बधी समर्थता छता जेने कई पण स्पृहा नथी, उन्मत्तता नथी, पोतापणु नथी, गर्व नथी गारव नथी, एवा आश्चर्यनी प्रतिमारूप सत्पुरुषने अमे फरी फरी नामरूपे स्मरीए छीए

त्रिलोकना नाथ वश थया छे जेने एवा छता पण एवी कोई अटपटी दशाथी वर्ते छे के जेनु सामान्य मनुष्यने ओळखाण थवु दुर्लभ छे, एवा सत्पुरुषने अमे फरीफरी स्तवीए छीए

एक समय पण केवळ असगपणाथी रहेवु ए त्रिलोकने वश करवा करता पण विकट कार्य छे तेवा असगपणाथी त्रिकाळ जे रह्या छे, एवा सत्पुरुषना अत करण, ते जोई अमे परमाश्चर्य पामी नमीए छीए

हे परमात्मा! अमे तो एम ज मानीए छीए के आ काळमा पण जीवनो मोक्ष होय तेम छता जैन ग्रथोमा क्वचित् प्रतिपादन थयु छे ते प्रमाणे आ काळे मोक्ष न होय, तो आ क्षेत्रे ए प्रतिपादन तु राख, अने अमने मोक्ष आपवा करता सत्पुरुषना ज चरणनु ध्यान करीए अने तेनी समीप ज रहीए एवो योग आप

हे पुरुषपुराण। अमे तारामा अने सत्पुरुषमा कई भेद होय एम समजता नथी, तारा करता अमने तो सत्पुरुष ज विशेष लागे छे, कारण के तु पण तेने आधीन ज रह्यो छे, अने अमे सत्पुरुषने ओळख्या विना तने ओळखी शक्या नही, ए ज तारु दुर्घटपणु अमने सत्पुरुष प्रत्ये प्रेम उपजावे छे कारण के तु वश छता पण तेओ उन्मत्त नथी, अने ताराथी पण सरळ छे, माटे हवे तु कहे तेम करीए?

हे नाथ। तारे खोटु न लगाडवु के अमे तारा करता पण सत्पुरुषने विशेष स्तवीए छीए, जगत आखु तने स्तावे छे, तो पछी अमे एक तारा सामा बेठा रहीशु तेमा तेमने क्या स्तवननी आकाक्षा छे, अने क्या तने न्यूनपणु पण छे?

ज्ञानी पुरुषो त्रिकाळनी वात जाणता छता प्रगट करता नथी, एम आपे पूछ्यु, ते सबधमा एम जणाय छे के ईश्वरी इच्छा ज एवी छे के अमुक पारमार्थिक वात सिवाय ज्ञानी बीजी त्रिकाळिक वात प्रसिद्ध न करे, अने ज्ञानीनी पण अतर–इच्छा तेवी ज जणाय छे जेनी कोई पण प्रकारनी आकाक्षा नथी, एवा ज्ञानी पुरुषने कई कर्तव्यरूप नही होवाथी जे कई उदयमा आवे तेटलु ज करे छे

अमे तो कई तेवु ज्ञान धरावता नथी के जेथी त्रणे काळ सर्व प्रकारे जणाय, अने अमने एवा ज्ञाननो कई विशेष लक्ष्ये नथी, अमने तो वास्तविक एवु जे स्वरूप तेनी भक्ति अने असगता, ए प्रिय छे ए ज विज्ञापन

मार्गानुसारिता (१)

[२५०/१७२]

अनत काळथी पोताने पोता विषेनी ज भ्राति रही गई छे, आ एक अवाच्य, अद्भुत विचारणानु स्थळ छे ज्या मतिनी गति नथी, त्या वचननी गति क्याथी होय?

निरतर उदासीनतानो क्रम सेववो, सत्पुरुषनी भक्ति प्रत्ये लीन थवु, सत्पुरुषोना चरित्रोनु स्मरण करवु, सत्पुरुषोना लक्षणनु चिंतन करवु, सत्पुरुषोनी मुखाकृतिनु हृदयथी अवलोकन करवु, तेना मन, वचन, कायानी प्रत्येक चेष्टाना अद्भुत रहस्यो फरी फरी निदिध्यासन करवा, तेओए सम्मत करेलु सर्व सम्मत करवु

आ ज्ञानीओए हृदयमा राखेलु, निर्वाणने अर्थे मान्य राखवा योग्य, श्रद्धवा योग्य, फरी फरी चिंतववा योग्य, क्षणे क्षणे, समये समये तेमा लीन थवा योग्य, परम रहस्य छे अने ए ज सर्व शास्त्रनो, सर्व सतना हृदयनो, ईश्वरना घरनो मर्म पामवानो महा मार्ग छे अने ए सघळानु कारण कोई विद्यमान सत्पुरुषनी प्राप्ति, अने ते प्रत्ये अविचळ श्रद्धा ए छे

अधिक शु लखवु? आजे, गमे तो काले, गमे तो लाख वर्षे अने गमे तो तेथी मोडे अथवा वहेले, ए ज सूझशे, ए ज प्राप्त थये छूटको छे सर्व प्रदेशे मने तो ए ज सम्मत छे.

प्रसगोपात्त पत्र लखवानो लक्ष राखीश आपना प्रसगीओमा ज्ञानवार्ता करता रहेशो अने तेमने परिणामे लाभ थाय एम मळ्ता रहेशो

अबालालथी आ पत्र अधिक समजवानु बनी शकशे आप तेनी विद्यमानताए पत्रनु अवलोकन करशो अने तेना तेम ज त्रिभोवन वगेरेना उपयोग माटे जोईए तो पत्रनी प्रति करवा आपशो

३७

मार्गानुसारिता (२)

[३७६/४५४]

ॐ

ससार स्पष्ट प्रीतिथी करवानी इच्छा थती होय तो ते पुरुषे ज्ञानीना वचन साभळ्या नथी, अथवा ज्ञानीपुरुषना दर्शन पण तेणे कर्या नथी, एम तीर्थंकर कहे छे

जेनी केडनो भग थयो छे, तेनु प्राये बधु बळ परिक्षीण-पणाने भजे छे जेने ज्ञानीपुरुषना वचनरूप लाकडीनो प्रहार थयो छे ते पुरुषने विषे ते प्रकारे ससार सबधी बळ होय छे, एम तीर्थंकर कहे छे

ज्ञानीपुरुषने जोया पछी स्त्रीने जोई जो राग उत्पन्न थतो होय तो ज्ञानीपुरुषने जोया नथी, एम तमे जाणो

ज्ञानीपुरुषना वचनने साभळ्या पछी स्त्रीनु सजीवन शरीर अजीवनपणे भास्या विना रहे नही

खरेखर पृथ्वीनो विकार धनादि सपत्ति भास्या विना रहे नही

ज्ञानीपुरुप सिवाय तेनो आत्मा बीजे कचाय क्षणभर स्थायी थवाने विषे इच्छे नही

ए आदि वचनो ते पूर्वे ज्ञानीपुरुपो मार्गानुसारी पुरुषने वोधता हता

जे जाणीने, साभळीने ते सरळ जीवो आत्माने विषे अवधारता हता

प्राणत्याग जेवा प्रसगने विषे पण ते वचनोने अप्रधान न करवा योग्य जाणता हता, वर्तता हता

तम सर्व मुमुक्षुभाईओने अमारा भक्तिभावे नमस्कार पहोचे अमारो आवो उपाधिजोग जोई जीवमा कलेश पाम्या विना जेटलो बने तेटलो आत्मा-सबधी अभ्यास वधारवानो विचार करजो

सर्वथी स्मरणजोग वात तो घणी छे, तथापि ससारमा साव उदासीनता, परना अल्पगुणमा पण प्रीति, पोताना अल्पदोषने विषे पण अत्यत कलेश, दोषना विलयमा अत्यत वीर्यनु स्फुरवु, ए वातो सत्सगमा अखड एक शरणागतपणे ध्यानमा राखवा योग्य छे जेम बने तेम निवृत्तिकाळ, निवृत्तिक्षेत्र, निवृत्तिद्रव्य, अने निवृत्तिभावने भजजो तीर्थंकर गौतम जेवा ज्ञानीपुरुषने पण सवोधता हता के• समयमात्र पण प्रमाद योग्य नथी

अज्ञान अने दर्शन परिषह

[४३५/५३७]

श्री सत्पुरुषोने नमस्कार

श्री स्थंभतीर्थवासी मुमुक्षुजनो प्रत्ये,

श्री मोहमयी भूमिथी . . . . ना आत्मस्मृतिपूर्वक यथायोग्य प्राप्त थाय विशेष विनति के मुमुक्षु अबालालनु लखेल पत्र १ आजे प्राप्त थयु छे

कृष्णदासने चित्तनी व्यग्रता जोईने, तमारा सौना मनमा खेद रहे छे, तेम बनवु स्वाभाविक छे जो बने तो 'योगवासिष्ठ' ग्रथ त्रीजा प्रकरणथी तेमने वचावशो, अथवा श्रवण करावशो, अने प्रवृत्तिक्षेत्रेथी जेम अवकाश मळे तथा सत्सग थाय तेम करशो दिवसना भागमा तेवो वधारे वखत अवकाश लेवानु बने तेटलो लक्ष राखवो योग्य छे

समागमनी इच्छा सौ मुमुक्षुभाईओनी छे एम लख्यु ते विषे विचारीश मागशर महिनाना छेला भागमा के पोप महिनाना आरभमा घणु करी तेवो योग थवो सभवे छे

कृष्णदासे चित्तमाथी विक्षेपनी निवृत्ति करवा योग्य छे केमके मुमुक्षु जीवने एटले विचारवान जीवने आ ससारने विषे अज्ञान सिवाय बीजो कोई भय होय नही एक अज्ञाननी निवृत्ति इच्छवी ए रूप जे इच्छा ते सिवाय विचारवान जीवने बीजी इच्छा होय नही, अने पूर्वकर्मना बळे तेवो कोई उदय होय तोपण विचारवानना चित्तमा ससार कारागृह छे, समस्त लोक दु खे करी आर्त्त छे, भयाकुल छे, रागद्वेषना प्राप्त

फळथी बळतो छे, एवो विचार निश्चयरूप ज वर्ते छे, अने ज्ञान-प्राप्तिनो कई अतराय छे, माटे ते कारागृहरूप ससार मने भयनो हेतु छे अने लोकनो प्रसग करवा योग्य नथी, ए ज एक भय विचारवानने घटे छे

महात्मा श्री तीर्थंकरे निर्ग्रंथने प्राप्तपरिषह सहन करवानी फरी फरी भलामण आपी छे ते परिषहनु स्वरूप प्रतिपादन करता अज्ञानपरिषह अने दर्शनपरिषह एवा बे परिषह प्रतिपादन कर्या छे, के कोई उदययोगनु बळवानपणु होय अने सत्सग, सत्पुरुषनो योग थया छता जीवने अज्ञानना कारणो टाळवामा हिम्मत न चाली शकती होय, मुझवण आवी जती होय, तोपण धीरज राखवी, सत्सग, सत्पुरुषनो योग विशेष विशेष करी आराधवो, तो अनुक्रमे अज्ञाननी निवृत्ति थशे, केमके निश्चय जे उपाय छे, अने जीवने निवृत्त थवानी बुद्धि छे, तो पछी ते अज्ञान निराधार थयु छतु शी रीते रही शके ? एक मात्र पूर्वकर्मयोग सिवाय त्या कोई तेने आधार नथी. ते तो जे जीवने सत्सग, सत्पुरुषनो योग थयो छे अने पूर्वकर्मनिवृत्ति प्रत्ये प्रयोजन छे, तेने क्रमे करी टळवा ज योग्य छे, एम विचारी ते अज्ञानथी थतु आकुळव्याकुळपणु ते मुमुक्षुजीवे धीरजथी सहन करवु, ए प्रामाणे परमार्थ कहीने परिषह कह्यो छे अत्र अमे सक्षेपमा ते बेय परिषहनु स्वरूप लख्यु छे आ परिषहनु स्वरूप जाणी सत्सग, सत्पुरुषना योगे, जे अज्ञानथी मुझवण थाय छे ते निवृत्त थशे एवो निश्चय राखी, यथाउदय जाणी, धीरज राखवानु भगवान तीर्थंकरे कह्यु छे, पण ते धीरज एवा अर्थमा कही

नथी, के सत्सग सत्पुरुपना योगे प्रमाद हेतुए विलव करवो ते धीरज छे, अने उदय छे, ते वात पण विचारवान जीवे स्मृतिमा राखवा योग्य छे

श्री तीर्थंकरादिए फरी फरो जीवोने उपदेश कह्यो छे, पण जीव दिशामूढ रहेवा इच्छे छे त्या उपाय प्रवर्ती शके नही फरी फरी ठोकी ठोकीने कह्यु छे के एक जा जीव समजे तो सहज मोक्ष छे, नही तो अनत उपाये पण नथी अने ते समजवु पण कई विकट नथी, केमके जीवनु सहज जे स्वरूप छे ते ज मात्र समजवु छे, अने ते कई वीजाना स्वरूपनी वात नथी के वखते ते गोपवे के न जणावे, तेथी समजवी न बने पोताथी पोते गुप्त रहेवानु शी रीते बनवा योग्य छे ? पण स्वप्नदशामा जेम न बनवा योग्य एवु पोतानु मृत्यु पण जीव जुए छे, तेम अज्ञानदशारूप स्वप्नरूपयोगे आ जीव पोताने, पोताना नही एवा वीजा द्रव्यने विषे स्वपणे माने छे, अने ए ज मान्यता ते ससार छे, ते ज अज्ञान छे, नरकादि गतिनो हेतु ते ज छे, ते ज जन्म छे, मरण छे अने ते ज देह छे, देहना विकार छे, ते ज पुत्र, ते ज पिता, ते ज शत्रु, ते ज मित्रादि भाव कल्पनाना हेतु छे, अने तेनी निवृत्ति थई त्या सहज मोक्ष छे, अने ए ज निवृत्तिने अर्थे सत्सग, सत्पुरुषादि साधन कह्या छे अने ते साधन पण जीव जो पोताना पुरुषार्थने तेमा गोपव्या सिवाय प्रवर्तावे तो ज सिद्ध छे वधारे शु कहीए ? आटलो ज सक्षेप जीवमा परिणाम पामे तो ते सर्व व्रत, यम, नियम, जप, यात्रा, भक्ति, शास्त्रज्ञान आदि करी छूटचो एमा कई सशय नथी ए ज विनति

भक्तिमार्गनी प्रधानता (१)

[५०४/६९३]

जेने मृत्युनी साथे मित्रता होय, अथवा जे मृत्युथी भागी छूटी शके एम होय, अथवा हु नही ज मरु एम जेने निश्चय होय, ते भले सुखे सूए

—श्री तीर्थंकर—छजीवनिकाय अध्ययन

ज्ञानमार्ग दुराराध्य छे, परमावगाढदशा पाम्या पहेला ते मार्गे पडवाना घणा स्थानक छे सदेह, विकल्प, स्वच्छदता, अतिपरिणामीपणु ए आदि कारणो वारवार जीवने ते मार्गे पडवाना हेतुओ थाय छे, अथवा ऊर्ध्वभूमिका प्राप्त थवा देता नथी.

क्रियामार्गे असद्अभिमान, व्यवहारआग्रह, सिद्धिमोह, पूजासत्कारादि योग, अने दैहिकक्रियामा आत्मनिष्ठादि दोषोनो सभव रह्यो छे.

कोईक महात्माने बाद करता घणा विचारवान जीवोए भक्तिमार्गनो ते ज कारणोथी आश्रय कर्यो छे, अने आज्ञाश्रितपणु अथवा परमपुरुष सद्गुरुने विषे सर्वार्पण स्वाधीनपणु शिरसावद्य दीठु छे, अने तेम ज वर्त्या छे, तथापि तेवो योग प्राप्त थवो जोईए, नही तो चितामणि जेवो जेनो एक समय छे एवो मनुष्यदेह ऊलटो परिभ्रमणवृद्धिनो हेतु थाय.

४०

भक्तिमार्गनी प्रधानता (२)

[४९१/६६७]

महात्मा बुद्ध (गौतम) जरा, दारिद्रच, रोग अने मृत्यु ए चारने एक आत्मज्ञान विना अन्य सर्व उपाये अजित देखी, जेने विषे तेनी उत्पत्तिनो हेतु छे, एवा ससारने छोडीने चाल्या जता हवा श्री ऋषभादि अनत ज्ञानीपुरुषोए ए ज उपाय उपास्यो छे, अने सर्व जीवोने ते उपाय उपदेश्यो छे ते आत्मज्ञान दुर्गम्य प्राये देखीने निष्कारण करुणाशील एवा ते सत्पुरुषोए भक्तिमार्ग प्रकाश्यो छे, जे सर्व अशरणने निश्चळ शरणरूप छे, अने सुगम छे

४१

पराभक्ति

* * *

[२७६/२२३]

परमात्मा अने आत्मानु एकरूप थई जवु (!) ते पराभक्तिनी छेवटनी हद छे एक ए ज लय रहेवी ते पराभक्ति छे परममहात्म्या गोपागनाओ महात्मा वासुदेवनी भक्तिमा ए ज प्रकारे रही हती, परमात्माने निरजन अने निर्देहरूपे चिंतव्ये जीवने ए लय आववी विकट छे, एटला माटे जेने परमात्मानो साक्षात्कार थयो छे, एवो देहधारी परमात्मा ते पराभक्तिनु परम कारण छे ते ज्ञानीपुरुषना सर्व चरित्रमा ऐक्यभावनो

लक्ष थवाथी तेना हृदयमा विराजमान परमात्मानो ऐक्यभाव होय छे, अने ए ज पराभक्ति छे ज्ञानीपुरुष अने परमात्मामा अतर ज नथी, अने जे कोई अतर माने छे, तेने मार्गनी प्राप्ति परम विकट छे ज्ञानी तो परमात्मा ज छे, अने तेना ओळखाण विना परमात्मानी प्राप्ति थई नथी, माटे सर्वप्रकारे भक्ति करवा योग्य एवी देहधारी दिव्य मूर्ति ज्ञानीरूप परमात्मानी—ने नमस्कारादि भक्तिथी माडी पराभक्तिना अंत सुधी एक लये आराधवी, एवो शास्त्रलक्ष छे. परमात्मा आ देहधारीरूपे थयो छे एम ज ज्ञानीपुरुष प्रत्ये जीवने बुद्धि थये भक्ति ऊगे छे, अने ते भक्ति क्रमे करी पराभक्तिरूप होय छे आ विषे श्रीमद्भागवतमा भगवद्-गीतामा घणा भेद प्रकाशित करी ए ज लक्ष्य प्रशस्यो छे, अधिक शु कहेवु ? ज्ञानी तीर्थंकरदेवमा लक्ष थवा जैनमा पण पचपरमेष्टि मत्रमा "नमो अरिहताण" पद पछी सिद्धने नमस्कार कर्यो छे, ए ज भक्ति माटे एम सूचवे छे के प्रथम ज्ञानीपुरुषनी भक्ति, अने ए ज परमात्मानी प्राप्ति अने भक्तिनु निदान छे

*　　　*　　　*

४२

ब्राह्मी वेदना

[२८३/२४१]

जेने लागी छे तेने ज लागी छे अने तेणे ज जाणी छे, ते ज "पियु पियु" पोकारे छे ए ब्राह्मी वेदना कही केम जाय ? के ज्या वाणीनो प्रवेश नथी वधारे शु कहेवु ?

लागी छे तेने ज लागी छे तेना ज चरणसगथी लागे छे, अने लागे छे त्यारे ज छूटको होय छे ए विना वीजो सुगम मोक्षमार्ग छे ज नही. तथापि कोई प्रयत्न करतु नथी। मोह बळवान छे।

४३

भक्ति माहात्म्य

[३९५/२६३]

वियोगथी थयेला ताप विषेनु तमारु एक पत्र चारेक दिवस पहेला प्राप्त थयु हतु तेमा दर्शावेली इच्छा विषे टूका शब्दोमा जणाववा जेटलो वखत छे, ते ए के तमने जेवी ज्ञाननी जिज्ञासा छे तेवी भक्तिनी नथी भक्ति, प्रेमरूप विना ज्ञान शून्य ज छे, तो पछी तेने प्राप्त करीने शु करवु छे? जे अटकयु ते योग्यतानी कचाशने लीधे अने ज्ञानी करता ज्ञानमा वधारे प्रेम राखो छो तेने लीधे ज्ञानी पासे ज्ञान इच्छवु ते करता बोधस्वरूप समजी भक्ति इच्छवी ए परम फळ छे वधारे शु कहीए?

मन, वचन, कायाथी तमारो कोई पण दोष थयो होय, तो दीनतापूर्वक क्षमा मागु छु ईश्वर कृपा करे तेने कळियुगमा ए पदार्थनी प्राप्ति थाय महा विकट छे आवती काले अहीथी रवाना थई ववाणिया भणी जवु धार्यु छे

२

भक्ति कर्तव्य

१

सद्‌गुरु महिमा

[६३४/८७५]

ॐ

अहो सत्पुरुषना वचनामृत, मुद्रा अने
सत्समागम !
सुषुप्त चेतनने जागृत करनार,
पडती वृत्तिने स्थिर राखनार,
दर्शन मात्रथी पण निर्दोष
अपूर्व स्वभावने प्रेरक,
स्वरूपप्रतीति, अप्रमत्त सयम,
अने
पूर्ण वीतराग निर्विकल्प स्वभावना
कारणभूत,–
छेल्ले
अयोगी स्वभाव प्रगट करी
अनत अव्याबाध स्वरूपमा
स्थिति करावनार !
त्रिकाळ जयवत वर्तो !
ॐ शाति शाति शाति

२

जिनवाणी स्तुति

[१३१/१०७]

मनहर छद

अनत अनत भाव भेदथी भरेली भली,
अनत अनत नय निक्षेपे व्याख्यानी छे,
सकल जगत हितकारिणी हारिणी मोह,
तारिणी भवाब्धि मोक्षचारिणी प्रमाणी छे,
उपमा आप्यानी जेने तमा राखवी ते व्यर्थ,
आपवाथी निज मति मपाई मे मानी छे,
अहो ! राजचद्र, बाळ ख्याल नथी पामता ए,
जिनेश्वर तणी वाणी जाणी तेणे जाणी छे १

३

प्रभुप्रार्थना

[२९५/२६४]

हे प्रभु, हे प्रभु, शु कहु, दीनानाथ दयाळ,
हु तो दोष अनतनु, भाजन छु करुणाळ १

शुद्ध भाव मुजमा नथी, नथी सर्व तुजरूप,
नथी लघुता के दीनता, शु कहु परमस्वरूप ? २

नथी आज्ञा गुरुदेवनी, अचळ करी उरमाही,
आप तणो विश्वास दृढ, ने परमादर नाही ३

४

कैवल्य बीज

[२९६/२६५]

ॐ

सत्

तोटक छद

यमनियम सजम आप कियो,
पुनि त्याग बिराग अथाग लह्यो,
वनवास लियो मुख मौन रह्यो,
दृढ आसन पद्म लगाय दियो १

वीश दोहराके जेमा प्रथम वाक्य 'हे प्रभु! हे प्रभु! शु कहु? दीनानाथ दयाळ' छे, ते दोहरा तमने स्मरणमा हशे ते दोहरानी विशेष अनुप्रेक्षा थाय तेम करशो तो विशेष गुणावृत्तिनो हेतु छे

बीजा आठ त्रोटक छद ते साथे अनुप्रेक्षा करवा योग्य छे, के जेमा आ जीवने शु आचरवु बाकी छे, अने जे जे परमार्थने नामे आचरण कर्यां ते अत्यार सुधी वृथा थया, ने ते आचरणने विषे मिथ्याग्रह छे ते निवृत्त करवानो बोध कह्यो छे, ते पण अनुप्रेक्षा करता जीवने पुरुषार्थ विशेपनो हेतु छे

'योगवासिष्ठ'नी वाचना पूरी थई होय तो थोडो वखत तेनो अवकाश राखी एटले हमणा फरी वाचवानु वध राखी 'उत्तराध्ययन-सूत्र' विचारशो, पण ते कुळसप्रदायना आग्रहार्थ निवृत्त करवाने विचारशो, केमके जीवने कुळयोगे सप्रदाय प्राप्त थयो होय छे ते परमार्थरूप छे के केम? एम विचारता दृष्टि चालती नथी, अने सहेजे ते ज परमार्थ मानी राखी जीव परमार्थथी चूके छे, माटे मुमुक्षु जीवने तो एम ज कर्त्तव्य छे के जीवने सद्गुरुयोगे कल्याणनी प्राप्ति अल्पकाळमा थाय तेना साधन, वैराग्य अने उपशमार्थे 'योगवासिष्ठ' उत्तराध्ययनादि' विचारवा योग्य छे, तेम ज प्रत्यक्ष पुरुपना वचननु निरावाधपणु, पूर्वापर अविरोधपणु जाणवाने अर्थे विचारवायोग्य छे

मन पौन निरोध स्वबोध कियो
हठजोग प्रयोग सु तार भयो,
जप भेद जपे तपत्यौंहि तपे,
उरसेहि उदासी लहि सवपैं २

सब शास्त्रन के नय धारी हिये,
मत मडन खडन भेद लिये,
वह साधन बार अनत कियो,
तदपि कछु हाथ हजु न पर्यो ३

अब क्यौं न बिचारत है मनसे,
कछु और रहा उन साधनसे?
बिन सद्गुरु कोय न भेद लहे,
मुख आगल है कह बात कहे? ४

करुना हम पावत हे तुमकी,
वह बात रही सगुरु गमकी,
पलमे प्रगटे मुख आगलसे,
जब सद्गुरुचर्न सुप्रेम बसे ५

तनसे, मनसे, धनसे, सबसे,
गुरुदेवकी आन स्वआत्म बसे;
तब कारज सिद्ध बने अपनो,
रस अमृत पावहि प्रेम घनो ६

वह सत्य सुधा दरसावहिंगे,
चतुरागुल हे दृगसे मिलहे,
रस देव निरजन को पिवही
गहि जोग जुगोजुग सो जीवहि ७

पर प्रेम प्रवाह बढे प्रभुसे,
सब आगमभेद सुउर बसे,
वह केवलको बीज ग्यानि कहे,
निजको अनुभौ बतलाई दिये ८

५

क्षमापना

[९८/५६]

हे भगवान ! हु वहु भूली गयो, मे तमारा अमूल्य वचनने लक्षमा लीधा नही तमारा कहेला अनुपम तत्त्वनो में विचार कर्यो नही तमारा प्रणीत करेला उत्तम शीलने सेव्यु नही तमारा कहेला दया, शाति, क्षमा अने पवित्रता में ओळख्या नही हे भगवन् ! हु भूल्यो, आथडचो, रझळचो अने अनत ससारनी विटम्बनामा पडचो छु हु पापी छु हु बहु मदोन्मत्त अने कर्मरजथी करीने मलिन छु हे परमात्मा ! तमारा कहेला तत्त्व विना मारो मोक्ष नथी हु निरतर प्रपचमा पडचो छु अज्ञानथी अध थयो छु, मारामा विवेकशक्ति

नथी अने हु मूढ छु, हु निराश्रित छु, अनाथ छु निरागी परमात्मा। हु हवे तमारु, तमारा धर्मनु अने तमारा मुनिनु शरण ग्रहु छु मारा अपराध क्षय थई हु ते सर्व पापथी मुक्त थउ ए मारी अभिलाषा छे आगळ करेला पापोनो हु हवे पश्चात्ताप करु छु जेम जेम हु सूक्ष्म विचारथी ऊडो उतरु छु तेम तेम तमारा तत्त्वना चमत्कारो मारा स्वरूपनो प्रकाश करे छे तमे निरागी, निर्विकारी, सत्चिदानस्वरूप, सहजानदी, अनतज्ञानी, अनतदर्शी अने त्रैलोक्यप्रकाशक छो हु मात्र मारा हितने अर्थे तमारी साक्षीए क्षमा चाहु छु एक पळ पण तमारा कहेला तत्त्वनी शका न थाय, तमारा कहेला रस्तामा अहोरात्र हु रहु, ए ज मारी आकाक्षा अने वृत्ति थाओ? हे सर्वज्ञ भगवान। तमने हु विशेष शु कहु? तमाराथी कई अजाण्यु नथी मात्र पश्चात्तापथी हु कर्मजन्य पापथी क्षमा इच्छु छु—ॐ शाति शाति शाति .

६

आलोचना

[२२१/१२८]

प्रथम सवत्सरी अने ए दिवस पर्यंत सबधीमा कोई पण प्रकारे तमारो अविनय, आशातना, असमाधि मारा मन, वचन, कायाना कोई पण योगाध्यवसायथी थई होय तेने माटे पुन पुन क्षमावु छु

अतर्ज्ञानथी स्मरण करता एवो कोई काळ जणातो नथी वा साभरतो नथी के जे काळमा, जे समयमा आ जीवे

परिभ्रमण न कर्युं होय, सकल्प-विकल्पनु रटण न कर्युं होय, अने ए वडे 'समाधि' न भूल्यो होय निरतर ए स्मरण रह्या करे छे, अने ए महा वैराग्यने आपे छे

वळी स्मरण थाय छे के ए परिभ्रमण केवळ स्वच्छदथी करता जीवने उदासीनता केम न आवी? बीजा जीवो परत्वे क्रोध करता, मान करता, माया करता, लोभ करता के अन्यथा करता ते माठु छे एम यथायोग्य का न जाण्यु? अर्थात् एम जाणवु जोईतु हतु, छता न जाण्यु ए वळी फरी परिभ्रमण करवानो वैराग्य आपे छे

वळी स्मरण थाय छे के जेना विना एक पळ पण हु नही जीवी शकु एवा केटलाक पदार्थो (स्त्रीआदिक) ते अनत वार छोडता, तेनो वियोग थया अनत काळ पण थई गयो, तथापि तेना विना जिवायु ए कई थोडु आश्चर्यकारक नथी अर्थात् जे जे वेळा तेवो प्रीतिभाव कर्यो हतो ते ते वेळा ते कल्पित हतो एवो प्रीतिभाव का थयो? ए फरी फरी वैराग्य आपे छे

वळी जेनु मुख कोई काळे पण नही जोउ, जेने कोई काळे हु ग्रहण नही ज करु, तेने घेर पुत्रपणे, स्त्रीपणे, दासपणे, दासीपणे, नाना जतुपणे शा माटे जन्म्यो? अर्थात् एवा द्वेषथी एवा रूपे जन्मवु पडयु! अने तेम करवानी तो इच्छा नहोती! कहो ए स्मरण थता आ क्लेषित आत्मा परत्वे जुगुप्सा नही आवती होय? अर्थात् आवे छे

वधारे शु कहेवु ? जे जे पूर्वना भवातरे भ्रातिपणे भ्रमण कर्युं, तेनु स्मरण थता हवे केम जीववु ए चिंतना थई पडी छे फरी न ज जन्मवु अने फरी एम न ज करवु एवु दृढत्व आत्मामा प्रकाशे छे पण केटलीक निरुपायता छे त्या केम करवु ? जे दृढता छे ते पूर्ण करवी, जरूर पूर्ण पडवी ए ज रटण छे, पण जे कई आडु आवे छे, ते कोरे करवु पडे छे, अर्थात् खसेडवु पडे छे, अने तेमा काळ जाय छे जीवन चाल्यु जाय छे, एने न जवा देवु, ज्या सुधी यथायोग्य जय न थाय त्या सुधी, एम दृढता छे तेनु केम करवु ? कदापि कोई रीते तेमानु कई करीए तो तेवु स्थान क्या छे के ज्या जईने रहीए ? अर्थात् तेवा सतो क्या छे, के ज्या जईने ए दशामा बेसी तेनु पोषण पामीए ? त्यारे हवे केम करवु ?

"गमे तेम हो, गमे तेटला दुख वेठो, गमे तेटला परिषह सहन करो, गमे तेटला उपसर्ग सहन करो, गमे तेटली व्याधिओ सहन करो, गमे तेटली उपाधिओ आवी पडो, गमे तेटली आधिओ आवी पडो, गमे तो जीवनकाळ एक समय मात्र हो, अने दुर्निमित्त हो, पण एम करवु ज

"त्या सुधी हे जीव ! छूटको नथी."

आम नेपथ्यमाथी उत्तर मळे छे, अने ते यथायोग्य लागे छे

क्षणे क्षणे पलटाती स्वभाववृत्ति नथी जोईती. अमुक काळ सुधी शून्य सिवाय कंई नथी जोईतु, ते न होय तो अमुक काळ सुधी सत सिवाय कई नथी जोईतु, ते न होय

तो अमुक काळ सुधी सत्सग सिवाय कई नथी जोईतु, ते न होय तो आर्याचरण (आर्य पुरुषोए करेला आचरण) सिवाय कई नथी जोईतु, ते न होय तो जिनभक्तिमा अति शुद्ध भावे लीनता सिवाय कई नथी जोईतु; ते न होय तो पछी मागवानी इच्छा पण नथी

गम पड्या विना आगम अनर्थकारक थई पडे छे. सत्संग विना ध्यान ते तरगरूप थई पडे छे सत विना अतनी वातमा अत पमातो नथी लोकसज्ञाथी लोकाग्रे जवातु नथी लोकत्याग विना वैराग्य यथायोग्य पामवो दुर्लभ छे

"ए कई खोटु छे?" शु?

परिभ्रमण करायु ते करायु हवे तेना प्रत्याख्यान लईए तो? लई शकाय

ए पण आश्चर्यकारक छे.

अत्यारे ए ज फरी योगवाइए मलीशु

ए ज विज्ञापन.

७

षट्पद विवेक अने सद्गुरुभक्ति रहस्य

[३९४/४९३]

अनन्य शरणना आपनार एवा श्री सद्गुरुदेवने
अत्यत भक्तिथी नमस्कार

शुद्ध आत्मस्वरूपने पाम्या छे एवा ज्ञानीपुरुषोए नीचे कह्या छे ते छ पदने सम्यग्दर्शनना निवासना सर्वोत्कृष्ट स्थानक कह्या छे

षट्पद विवेक

प्रथम पद —'आत्मा छे' जेम घटपटआदि पदार्थो छे, तेम आत्मा पण छे अमुक गुण होवाने लीधे जेम घटपटआदि होवानु प्रमाण छे, तेम स्वपरप्रकाशक एवी चैतन्यसत्तानो प्रत्यक्ष गुण जेने विषे छे एवो आत्मा होवानु प्रमाण छे

बीजु पद —'आत्मा नित्य छे' घटपटआदि प्रदार्थो अमुक काळवर्ती छे आत्मा त्रिकाळवर्ती छे घटपटादि सयोगे करी पदार्थ छे आत्म स्वभावे करीने पदार्थ छे, केम के तेनी उत्पत्ति माटे कोई पण संयोगो अनुभवयोग्य थता नथी कोई पण सयोगी द्रव्यथी चेतनसत्ता प्रगट थवा योग्य नथी, माटे अनुत्पन्न छे असयोगी होवाथी अविनाशी छे, केम के जेनी कोई सयोगथी उत्पत्ति न होय, तेनो कोईने विषे लय पण होय नही

त्रीजु पद —'आत्मा कर्त्ता छे' सर्व प्रदार्थ अर्थ-क्रियासपन्न छे कई ने कई परिणामक्रिया सहित ज सर्व पदार्थ जोवामा आवे छे आत्मा पण क्रियासपन्न छे क्रियासपन्न छे, माटे कर्त्ता छे. ते कर्त्तापणु त्रिविध श्री जिने विवेच्यु छे; परमार्थथी स्वभावपरिणतिए निजस्वरूपनो कर्त्ता छे अनुपचरित (अनुभवमा आववायोग्य, विशेष सबधसहित) व्यवहारथी ते आत्मा द्रव्यकर्मनो कर्त्ता छे उपचारथी घर, नगर आदिनो कर्त्ता छे

चोथु पद —'आत्मा भोक्ता छे' जे जे कई क्रिया छे ते ते सर्व सफळ छे, निरर्थक नथी जे कई पण करवामा आवे तेनु फळ भोगववामा आवे एवो प्रत्यक्ष अनुभव छे विष

खाधाथी विषनु फळ; साकर खावाथी साकरनु फळ अग्निस्पर्शथी ते अग्निस्पर्शनु फळ, हिमने स्पर्श करवाथी हिमस्पर्शनु जेम फळ थया विना रहेतु नथी, तेम कषायादि के अकषायादि जे कई पण परिणामे आत्मा प्रवर्ते तेनु फळ पण थवा योग्य ज छे, अने ते थाय छे ते क्रियानो आत्मा कर्त्ता होवाथी भोक्ता छे

पाचमु पद —'मोक्षपद छे' जे अनुपचरित व्यवहारथी जीवने कर्मनु कर्त्तापणु निरूपण कर्यु, कर्त्तापणु होवाथी भोक्तापणु निरूपण कर्यु, ते कर्मनु टळवापणु पण छे, केम के प्रत्यक्ष कषायादिनु तीव्रपणु होय पण तेना अनभ्यासथी, तेना अपरिचयथी, तेने उपशम करवाथी, तेनु मदपणु देखाय छे, ते क्षीण थवा योग्य देखाय छे, क्षीण थई शके छे. ते ते बधभाव क्षीण थई शकवायोग्य होवाथी तेथी रहित एवो जे शुद्ध आत्मस्वभाव ते रूप मोक्षपद छे

छट्ठु पद —ते 'मोक्षनो उपाय छे' जो कदी कर्म-बधमात्र थया करे एम ज होय, तो तेनी निवृत्ति कोई काळे सभवे नही, पण कर्मबधथी विपरीत स्वभाववाळा एवा ज्ञान, दर्शन, समाधि, वैराग्य, भक्त्यादि साधन प्रत्यक्ष छे, जे साधनना बळे कर्मबध शिथिल थाय छे; उपशम पामे छे, क्षीण थाय छे माटे ते ज्ञान, दर्शन, सयमादि मोक्षपदना उपाय छे.

श्री ज्ञानीपुरुषोए सम्यक्दर्शनना मुख्य निवासभूत कह्या एवा आ छ पद अत्रे सक्षेपमा जणाव्या छे समीपमुक्तिगामी

जीवने सहज विचारमा ते सप्रमाण थवायोग्य छे, परम निश्चयरूप जणावायोग्य छे, तेनो सर्व विभागे विस्तार थई तेना आत्मामा विवेक थवायोग्य छे, आ छ पद अत्यत सदेहरहित छे, एम परमपुरुषे निरूपण कर्यु छे ए छ पदनो विवेक जीवने स्वस्वरूप समजवाने अर्थे कह्यो छे अनादि स्वप्नदशाने लीधे उत्पन्न थयेलो एवो जीवनो अहभाव, ममत्वभाव ते निवृत्त थवाने अर्थे आ छ पदनी ज्ञानीपुरुषोए देशना प्रकाशी छे ते स्वप्नदशाथी रहित मात्र पोतानु स्वरूप छे, एम जो जीव परिणाम करे, तो सहजमात्रमा ते जागृत थई सम्यक्‌दर्शनने प्राप्त थाय, सम्यक्‌दर्शनने प्राप्त थई स्वस्वभावरूप मोक्षने पामे कोई विनाशी, अशुद्ध अने अन्य एवा भावने विषे तेने हर्ष, शोक, सयोग, उत्पन्न न थाय ते विचारे स्वस्वरूपने विषे ज शुद्धपणु, सपूर्णपणु, अविनाशीपणु, अत्यत आनदपणु, अतररहित तेना अनुभवमा आवे छे सर्व विभागपर्यायमा मात्र पोताने अध्यासथी ऐक्यता थई छे, तेथी केवळ पोतानु भिन्नपणु ज छे एम स्पष्ट–प्रत्यक्ष–अत्यत प्रत्यक्ष–अपरोक्ष तेने अनुभव थाय छे विनाशी अथवा अन्य पदार्थना सयोगने विषे तेने इष्टअनिष्टपणु प्राप्त थतु नथी जन्म, जरा, मरण, रोगादि बाधारहित सपूर्ण माहात्म्यनु ठेकाणु एवु निजस्वरूप जाणी, वेदी ते कृतार्थ थाय छे जे जे पुरुषोने ए छ पद सप्रमाण एवा परम पुरुषना वचने आत्मानो निश्चय थयो छे, ते ते पुरुषो सर्व स्वरूपने पाम्या छे, आधि, व्याधि, उपाधि, सर्व सगथी रहित थया छे, थाय छे, अने भाविकाळमा पण तेम ज थशे

(सद्गुरुभक्ति रहस्य)

जे सत्पुरुषोए जन्म, जरा, मरणना नाश करवावाळा, स्वस्वरूपमा सहज अवस्थान थवानो उपदेश कह्यो छे, ते सत्पुरुषोने अत्यत भक्तिथी नमस्कार छे तेनी निष्कारण करुणाने नित्य प्रत्ये निरतर स्तववामा पण आत्मस्वभाव प्रगटे छे, एवा सर्व सत्पुरुषो, तेना चरणारविंद सदाय हृदयने विषे स्थापन रहो।

जे छ पदथी सिद्ध छे एवु आत्मस्वरूप ते जेना वचनने अगीकार कर्ये सहजमा प्रगटे छे, जे आत्मस्वरूप प्रगटवाथी सर्वकाळ जीव सपूर्ण आनदने प्राप्त थई निर्भय थाय छे, ते वचनना कहेनार एवा सत्पुरुषना गुणनी व्याख्या करवाने अशक्ति छे, केम के जेनो प्रत्युपकार न थई शके एवो परमात्मभाव ते जाणे कई पण इच्छया विना मात्र निष्कारण करुणाशीलताथी आप्यो, एम छता पण जेणे अन्य जीवने विषे आ मारो शिष्य छे, अथवा भक्तिनो कर्त्ता छे, माटे मारो छे, एम कदी जोयु नथी, एवा जे सत्पुरुष तेने अत्यत भक्तिए फरी फरी नमस्कार हो।

जे सत्पुरुषोए सद्गुरुनी भक्ति निरूपण करी छे, ते भक्ति मात्र शिष्यना कल्याणने अर्थे कही छे जे भक्तिने प्राप्त थवाथी सद्गुरुना आत्मानी चेष्टाने विषे वृत्ति रहे, अपूर्व गुण दृष्टिगोचर थई अन्य स्वच्छद मटे, अने सहेजे आत्मबोध थाय एम जाणीने जे भक्तिनु निरूपण कर्यु छे, ते भक्तिने अने ते सत्पुरुषोने फरी फरी त्रिकाळ नमस्कार हो।

जो कदी प्रगटपणे वर्तमानमा केवळज्ञाननी उत्पत्ति थई नथी, पण जेना वचनना विचारयोगे शक्तिपणे केवळज्ञान छे एम स्पष्ट जाण्यु छे, श्रद्धापणे केवळज्ञान थयु छे, विचार-दशाए केवळज्ञान थयु छे, इच्छादशाए केवळज्ञान थयु छे, मुख्य नयना हेतुथी केवळज्ञान वर्ते छे, ते केवळज्ञान सर्व अव्याबाध सुखनु प्रगट करनार, जेना योगे सहजमात्रमा जीव पामवा योग्य थयो, ते सत्पुरुषना उपकारने सर्वोत्कृष्ट भक्तिए नमस्कार हो। नमस्कार हो।।

८

धर्मनिष्ठा

[४०६/५०५]

ॐ

वीतरागनो कहेलो परम शात रसमय धर्म पूर्ण सत्य छे, एवो निश्चय राखवो जीवना अनअधिकारीपणाने लीधे तथा सत्पुरुषना योग विना समजातु नथी, तोपण तेना जेवु जीवने ससार-रोग मटाडवाने बीजु कोई पूर्ण हितकारी औषध नथी, एवु वारवार चितवन करवु

आ परम तत्त्व छे, तेनो मने सदाय निश्चय रहो, ए यथार्थ स्वरूप मारा हृदयने विषे प्रकाश करो, अने जन्ममरणादि बधनथी अत्यत निवृत्ति थाओ। निवृत्ति थाओ।।

हे जीव। आ क्लेशरूप ससार थकी, विराम पाम, विराम पाम, काईक विचार, प्रमाद छोडी जागृत था। जागृत

था ! ! नही तो रत्नचिंतामणि जेवो आ मनुष्यदेह निष्फळ जशे.

हे जीव ! हवे तारे सत्पुरुषनी आज्ञा निश्चय उपासवा योग्य छे.

ॐ शांतिः शांति शांति

९

सप्तदोष परिहार

[८२३/१९]

हे काम ! हे मान ! हे संगउदय !
हे वचनवर्गणा ! हे मोह ! हे मोहदया !
हे शिथिलता ! तमे शा माटे अंतराय करो छो ?
परम अनुग्रह करीने हवे अनुकूळ थाओ ! अनुकूळ थाओ.

१०

संत शरणता काव्य

[२९२/२५८]

ॐ सत्

बिना नयन पावे नही, बिना नयनकी बात;
सेवे सद्गुरुके चरन, सो पावे साक्षात्. १

बूझी चहत जो प्यास को, है बूझनकी रीत,
पावे नहि गुरुगम बिना, एही अनादि स्थित २

एहि नहि है कल्पना, एही नहि विभग,
कई नर पचमकाळमे, देखी वस्तु अभग ३

नहि दे तु उपदेशकु, प्रथम लेहि उपदेश,
सबसे न्यारा अगम है, वो ज्ञानीका देश ४

जप, तप, और व्रतादि सब, तहा लगी भ्रमरूप,
जहा लगी नहि सतकी, पाई कृपा अनूप ५

पायाकी ए बात है, निज छदनको छोड,
पिछे लाग सत्पुरुषके, तो सब बधन तोड. ६

११

सद्गुरुवन्दन

[५५५/१२४–२७]

अहो! अहो! श्री सद्गुरु, करुणासिंधु अपार,
आ पामर पर प्रभु कर्यो, अहो! अहो! उपकार.
शु प्रभु चरण कने धरु, आत्माथी सौ हीन,
ते तो प्रभुए आपियो, वर्तु चरणाधीन,
आ देहादि आजथी, वर्तो प्रभु आधीन,
दास, दास हु दास छु, तेह प्रभुनो दीन
षट् स्थानक समजावीने, भिन्न बताव्यो आप,
म्यान थकी तरवारवत्, ए उपकार अमाप
जे स्वरूप समज्या विना, पाम्यो दुःख अनंत,
समजाव्यु ते पद नमु, श्री सद्गुरु भगवत

परम पुरुष प्रभु सद्‌गुरु, परम ज्ञान सुखधाम,
जेणे आप्यु भान निज, तेने सदा प्रणाम.

देह छता जेनी दशा, वर्ते देहातीत,
ते ज्ञानीना चरणमा, हो वंदन अगणीत

१२
प्रणिपात स्तुति

[३५७/४१७]

हे परमकृपाळु देव ! जन्म, जरा, मरणादि सर्व दु खोनो अत्यत क्षय करनारो एवो वीतराग पुरुषनो मूळ मार्ग आप श्रीमदे अनत कृपा करी मने आप्यो, ते अनत उपकारनो प्रतिउपकार वाळवा हु सर्वथा असमर्थ छु, वळी आप श्रीमत कई पण लेवाने सर्वथा निस्पृह छो, जेथी हु मन, वचन, कायानी एकाग्रताथी आपना चरणारविन्दमा नमस्कार करु छु आपनी परमभक्ति अने वीतरागपुरुषना मूळधर्मनी उपासना मारा हृदयने विषे भवपर्यंत अखड जाग्रत रहो एटलु मागु छु ते सफळ थाओ

ॐ शाति शाति शाति.

१२

मंत्र

(१) सहजात्म स्वरूप परम गुरु

(२) आतमभावना भावता जीव लहे केवलज्ञान रे.

(३) परम गुरु निर्ग्रंन्थ सर्वज्ञ देव

३

परमार्थ पद्यावलि

१

जिनभक्ति

[६८/१५]

तोटक छंद

शुभ शीतळतामय छाय रही,
मनवांछित ज्या फळपक्ति कही,
जिनभक्ति ग्रहो तरु कल्प अहो,
भजीने भगवत भवत लहो १

निज आत्मस्वरूप मुदा प्रगटे,
मनताप उताप तमाम मटे,
अति निर्जरता वणदाम ग्रहो,
भजीने भगवत भवत लहो २

समभावी सदा परिणाम थशे,
जड मद अधोगति जन्म जशे;
शुभ मगळ आ परिपूर्ण चहो,
भजीने भगवत भवत लहो ३

शुभ भाव वडे मन शुद्ध करो,
नवकार महापदने समरो,
नहि एह समान सुमत्र कहो,
भजीने भगवत भवत लहो ४

करशो क्षय केवळ राग कथा,
धरशो शुभ तत्त्वस्वरूप यथा,
नृपचद्र प्रपच्च अनत दहो,
भजीने भगवत भवत लहो ५

२

काळना मुखमा

[८/३]

हरिगीत

मोतीतणी माळा गळामा मूल्यवती मलकती,
हीरातणा शुभ हारथी बहु कठकाति झळकती,
आभूषणोथी ओपता भाग्या मरणने जोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने १

मणिमय मुगट माथे धरीने कर्ण कुडळ नाखता,
काचन कडा करमा धरी कशीए कचाश न राखता,
पळमा पड्या पृथ्वीपति ए भान भूतळ खोईने,
जन जाणॅीए मन मानॅीए नव काळ मूके कोईने २

दश आगळीमा मागलिक मुद्रा जडित माणिक्यथी,
जे परम प्रेमे पे'रता पोची कळा वारीकथी,
ए वेढ वीटी सर्व छोडी चालिया मुख धोईने,
जन जाणॅीए मन मानॅीए नव काळ मूके कोईने ३

मूँछ वाकडी करी फाकडा थई लीबु धरता ते परे,
कापेल राखी कातरा हरकोईना हैया हरे,
ए साकडीमा आविया छटक्या तजी सहु सोईने,
जन जाणॅीए मन मानॅीए नव काळ मूके कोईने ४

छो खडना अधिराज जे चडे करीने नीपज्या,
ब्रह्माडमा बळवान थईने भूप भारे ऊपज्या,
ए चतुर चक्री चालिया होता नहोता होईने,
जन जाणॅीए मन मानॅीए नव काळ मूके कोईने ५

जे राजनीतिनिपुणतामा न्यायवता नीवड्या,
अवळा कर्ये जेना बधा सवळा सदा पासा पड्या,
ए भाग्यशाळी भागिया ते खटपटो सौ खोईने,
जन जाणॅीए मन मानॅीए नव काळ मूके कोईने. ६

तरवार बहादुर टेक धारी पूर्णतामा पेखिया,
हाथी हणे हाथे करी ए केशरी सम देखिया,
एवा भला भडवीर ते अते रहेला रोईने,
जन जाणॅीए मन मानॅीए नव काळ मूके कोईने ७

समभावी सदा परिणाम थशे,
जड मद अधोगति जन्म जशे,
शुभ मगळ आ परिपूर्ण चहो,
भजीने भगवत भवत लहो ३

शुभ भाव वडे मन शुद्ध करो,
नवकार महापदने समरो;
नहि एह समान सुमत्र कहो,
भजीने भगवत भवंत लहो ४

करशो क्षय केवळ राग कथा,
धरशो शुभ तत्त्वस्वरूप यथा,
नृपचद्र प्रपच अनत दहो,
भजीने भगवत भवत लहो ५

२

काळना मुखमा

[८/३]

हरिगीत

मोतीतणी माळा गळामा मूल्यवती मलकती,
हीरातणा शुभ हारथी बहु कठकाति झळकती,
आभूषणोथी ओपता भाग्या मरणने जोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने १

मणिमय मुगट माथे धरीने कर्ण कुडळ नाखता,
काञ्चन कडा करमा धरी कशीए कचाश न राखता,
पळमा पड्या पृथ्वीपति ए भान भूतळ खोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने २

दश आगळीमा मागलिक मुद्रा जडित माणिक्यथी,
जे परम प्रेमे पे'रता पोची कळा बारीकथी,
ए वेढ वीटी सर्व छोडी चालिया मुख धोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने ३

मूँछ वाकडी करी फाकडा थई लीबु धरता ते परे,
कापेल राखी कातरा हरकोईना हैया हरे,
ए साकडीमा आविया छटक्या तजी सहु सोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने ४

छो खडना अधिराज जे चडे करीने नीपज्या,
ब्रह्माडमा बळवान थईने भूप भारे ऊपज्या,
ए चतुर चक्री चालिया होता नहोता होईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने ५

जे राजनीतिनिपुणतामा न्यायवता नीवड्या,
अवळा कर्ये जेना बधा सवळा सदा पासा पड्या,
ए भाग्यशाळी भागिया ते खटपटो सौ खोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने ६

तरवार बहादुर टेक धारी पूर्णतामा पेखिया,
हाथी हणे हाथे करी ए केशरी सम देखिया,
एवा भला भडवीर ते अते रहेला रोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने ७

३

ब्रह्मचर्य-महिमा

[१९६/७९]

दोहरा

नीरखीने नवयौवना, लेश न विषयनिदान
गणे काष्ठनी पूतळी, ते भगवान समान. १

आ सघळा संसारनी, रमणी नायकरूप,
ए त्यागी, त्याग्यु बधु, केवळ शोकस्वरूप २.

एक विषयने जीतता, जीत्यो सौ संसार,
नृपति जीतता जीतिये, दळ, पुर ने अधिकार ३.

विषयरूप अंकुरथी, टळे ज्ञान ने ध्यान,
लेश मदिरापानथी, छाके ज्यम अज्ञान ४

जे नव वाड विशुद्धथी, धरे शियळ सुखदाई,
भव तेनो लव पछी रहे, तत्त्ववचन ए भाई ५.

सुंदर शियळ सुरतरु, मन वाणी ने देह,
जे नरनारी सेवशे, अनुपम फळ ले तेह ६.

पात्र विना वस्तु न रहे, पात्रे आत्मिक ज्ञान,
पात्र थवा सेवो सदा, ब्रह्मचर्य मतिमान. ७

४

आत्मधर्म अने गुरुसेवा

[१९६/७९]

भिन्न भिन्न मत देखीए, भेद दृष्टिनो एह,
एक तत्त्वना मूळमा, व्याप्या मानो तेह १
तेह तत्त्वरूप वृक्षनु, आत्मधर्म छे मूळ,
स्वभावनी सिद्धि करे, धर्म ते ज अनुकूळ. २
प्रथम आत्मसिद्धि थवा, करीए ज्ञान विचार,
अनुभवी गुरुने सेवीए, बुधजननो निर्धार ३
क्षण क्षण जे अस्थिरता, अने विभाविक मोह,
ते जेनामाथी गया, ते अनुभवी गुरु जोय ४
बाह्य तेम अभ्यतरे, ग्रथ ग्रथि नहि होय,
परम पुरुष तेने कहो, सरळ दृष्टिथी जोय ५
बाह्य परिग्रह ग्रथि छे, अभ्यतर मिथ्यात्व,
स्वभावथी प्रतिकूळता, — ६

५

लोकस्वरूप रहस्य

[२११/१०७]

१ लोक पुरुषसस्थाने कह्यो, एनो भेद तमे कंई लह्यो?
एनु कारण समज्या कांई, के समजाव्यानी चतुराई? १
शरीर परथी ए उपदेश, ज्ञान दर्शने के उद्देश,
जेम जणावो सुणीए तेम, का तो लईए दईए क्षेम २

---

२ शु करवाथी पोते सुखी ? शु करवाथी पोते दु खी ?
पोते शु ? क्याथी छे आप ? एनो मागो शीघ्र जवाप. १

---

३ ज्या शका त्या गण सताप, ज्ञान तहा शका नहि स्थाप,
प्रभुभक्ति त्या उत्तम ज्ञान, प्रभु मेळववा गुरु भगवान १

गुरु ओळखवा घट वैराग्य, ते ऊपजवा पूर्वित भाग्य,
तेम नही तो कई सत्सग, तेम नही तो कई दु खरग २

---

४ जे गायो ते सघळे एक, सकळ दर्शने ए ज विवेक,
समजाव्यानी शैली करी, स्याद्वाद समजण पण खरी १

मूळ स्थिति जो पूछो मने, तो सोपी दउ योगी कने,
प्रथम अत ने मध्ये एक, लोकरूप अलोके देख. २

जीवाजीव स्थितिने जोई, टळ्यो ओरतो शका खोई,
एम ज स्थिति त्या नही उपाय, "उपाय का नही ?" शका जाय ३

ए आश्चर्य जाणे ते जाण, जाणे ज्यारे प्रगटे भाण,
समजे वधमुक्तियुत जीव, नीरखी टाळे शोक सदीव ४

बधयुक्त जीव कर्म सहित, पुद्गल रचना कर्म खचीत,
पुद्गलज्ञान प्रथम ले जाण, नर देहे पछी पामे ध्यान ५

जो के पुद्गलनो ए देह, तोपण ओर स्थिति त्या छेह,
समजण वीजी पछी कहीश, ज्यारे चित्ते स्थिर थईश ६

---

५ जहा राग अने वळी द्वेष, तहा सर्वदा मानो क्लेश,
उदासीनतानो ज्या वास, सकळ दु खनो छे त्या नाश. १
सर्व कालनु छे त्या ज्ञान, देह छता त्या छे निर्वाण,
भव छेवटनी छे ए दशा, राम धाम आवीने वस्या २

६

अनुभव

[७९६/१२]

मारग साचा मिल गया, छूट गये सदेह,
होता सो तो जल गया भिन्न किया निज देह
समज, पिछे सब सरल है बिनू समज मुशकील,
ये मुशकीली क्या कहु ? . . . .
खोज पिड ब्रह्माडका, पत्ता तो लग जाय,
येहि ब्रह्माडि वासना, जब जावे तब . .
आप आपकु भुल गया, इनसे क्या अधेर ?
समर समर अब हसत है, नहि भूलेगे फेर
जहा कलपना—जलपना, तहा मानु दुख छाई,
मिटे कलपना—जलपना, तब वस्तू तिन पाई.
[1]हे जीव ! क्या इच्छत हवे ? है इच्छा दु ख मूल,
जब इच्छाका नाश तब, मिटे अनादि भूल
ऐसी कहाँसे मति भई, आप आप है नाहि,
आपनकु जब भुल गये, अवर कहाँसे लाई
आप आप ए शोधसें, आप आप मिल जाय,
आप मिलन नय बापको, ...

---

१ पाठान्तर —क्या इच्छत ? खोवत सवे !

आस्रव-संवर

[७९६/१४]

होत आसवा परिसवा, नहि इनमे संदेह,
मात्र दृष्टिकी भूल है, भूल गये गत एहि.

रचना जिन उपदेशकी, परमोत्तम तिनु काल,
इनमे सब मत रहत है, करते निज संभाल

जिन सो ही हे आतमा, अन्य होई सो कर्म,
कर्म कटे सो जिन वचन, तत्त्वज्ञानीको मर्म.

जव जान्यो निजरूपको, तब जान्यो सव लोक,
[1]नहिं जान्यो निजरूपको, सब जान्यो सो फोक

एहि दिशाकी मूढता, है नहिं जिनपे भाव;
जिनसे भाव बिनु कबू, नहिं छूटत दुखदाव

व्यवहारसे देव जिन, निहचेसे है आप,
एहि बचनसे समज ले, जिनप्रवचनकी छाप.

एहि नही है कल्पना, एही नही विभंग,
जव जागेंगे आतमा, तव लागेंगे रंग

---

१ पाठान्तर —होत न्यूनसे न्यूनता,

८
सत्संग-निष्ठा

[२३१/१५४]

ॐ

बीजा साधन बहु कर्यां, करी कल्पना आप
अथवा असद्‌गुरु थकी, ऊलटो वध्यो उताप.

पूर्व पुण्यना उदयथी, मळ्यो सद्‌गुरु योग,
वचन सुधा श्रवणे जता, थयु हृदय गतशोग
निश्चय एथी आवियो, टळशे अही उताप,
नित्य कर्यो सत्सग में, एक लक्षथी आप.

९
ज्ञान-मीमांसा

[२९७/२६७]

हरिगीत

जिनवर कहे छे ज्ञान तेने सर्व भव्यो साभळो.

जो होय पूर्व भणेल नंव पण, जीवने जाण्यो नही,
तो सर्व ते अज्ञान भाख्यु, साक्षी छे आगम अही,
ए पूर्व सर्व कह्या विशेषे, जीव करवा निर्मळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो साभळो. १

नहि ग्रंथ माही ज्ञान भाख्यु, ज्ञान नहि कविचातुरी,
नहि मन्त्र तन्त्रो ज्ञान दाख्या, ज्ञान नहि भाषा ठरी,
नहि अन्य स्थाने ज्ञान भाख्यु, ज्ञान ज्ञानीमा कळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो साभळो २

आ जीव ने आ देह एवो, भेद जो भास्यो नही,
पचखाण कीधा त्या सुधी, मोक्षार्थ ते भाख्या नही,
ए पाचमे अगे कह्यो, उपदेश केवळ निर्मळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो साभळो. ३

केवळ नही ब्रह्मचर्यथी, ...
केवळ नही सयम थकी, पण ज्ञान केवळथी कळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो साभळो ४

शास्त्रो विशेष सहित पण जो, जाणियु निजरूपने,
का तेहवो आश्रय करजो, भावथी साचा मने,
तो ज्ञान तेने भाखियु, जो सम्मति आदि स्थळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने सर्व भव्यो साभळो. ५

आठ समिति जाणीए जो, ज्ञानीना परमार्थथी,
तो ज्ञान भाख्यु तेहने, अनुसार ते मोक्षार्थथी,
निज कल्पनाथी कोटि शास्त्रो, मात्र मननो आमळो.
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो साभळो. ६

चार वेद पुराण आदि शास्त्र सौ मिथ्यात्वना,
श्रीनदीसूत्रे भाखिया छे, भेद ज्या सिद्धातना,
पण ज्ञानीने ते ज्ञान भास्या, ए ज ठेकाणे ठरो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो साभळो ७

व्रत नही पच्चखाण नहि, नहि त्याग वस्तु कोईनो,
महापद्मतीर्थंकर थशे, श्रेणिक ठाणग जोई लो,
छेद्यो अनता ....
. . . . .

१०

मूळ मार्ग

[५२३/७१५]

मूळ मारग साभळो जिननो रे,
करी वृत्ति अखड सन्मुख, मूळ०
नो'य पूजादिनी जो कामना रे,
नो'य व्हालु अतर भवदुःख मूळ० १
करी जोजो वचननी तुलना रे,
जोजो शोधीने जिनसिद्धात, मूळ०
मात्र कहेवु परमारथहेतुथी रे,
कोई पामे मुमुक्षु वात मूळ० २
ज्ञान, दर्शन, चारित्रनी शुद्धता रे,
एकपणे अने अविरुद्ध, मूळ०
जिनमारग ते परमार्थथी रे,
एम कह्यु सिद्धाते बुध मूळ० ३
लिंग अने भेदो जे व्रतना रे,
द्रव्य देश काळादि भेद, मूळ०
पण ज्ञानादिनी जे शुद्धता रे,
ते तो त्रणे काळे अभेद मूळ० ४

हवे ज्ञान दर्शनादि शब्दनो रे,
सक्षेपे सुणो परमार्थ, मूळ०
तेने जोता विचारी विशेषथी रे,
समजाशे उत्तम आत्मार्थ. मूळ० ५
छे देहादिथी भिन्न आत्मा रे,
उपयोगी सदा अविनाश, मूळ०
एम जाणे सद्गुरु उपदेशथी रे,
कह्यु ज्ञान तेनु नाम खास मूळ० ६
जे ज्ञाने करीने जाणियु रे,
तेनी वर्ते छे शुद्ध प्रतीत, मूळ०
कह्यु भगवते दर्शन तेहने रे,
जेनु बीजु नाम समकीत. मूळ० ७
जेम आवी प्रतीति जीवनी रे,
जाण्यो सर्वेथी भिन्न असग, मूळ०
तेवो स्थिर स्वभाव ते उपजे रे,
नाम चरित्र ते अणलिग मूळ० ८
ते त्रणे अभेद परिणामथी रे,
ज्यारे वर्ते ते आत्मारूप, मूळ०
तेह मारग जिननो पामियो रे,
किंवा पाम्यो ते निजस्वरूप मूळ० ९
एवा मूळ ज्ञानादि पामवा रे,
अने जवा अनादि बध, मूळ०
उपदेश सद्गुरुनो पामवो रे,
टाळी स्वच्छद ने प्रतिबध मूळ० १०

एम देव जिनदे भाखियु रे,
मोक्षमारगनु शुद्ध स्वरूप, मूळ०
भव्य जनोना हितने कारणे रे,
सक्षेपे कह्यु स्वरूप मूळ० ११

११

पथ परमपद

[५६०/७२४]

गीति

पंथ परमपद बोध्यो, जेह प्रमाणे परम वीतरागे,
ते अनुसरी कहीशु, प्रणमीने ते प्रभु भक्ति रागे. १
मूळ परमपद कारण, सम्यक्‌दर्शन ज्ञान चरण पूर्ण,
प्रणमे एक स्वभावे, शुद्ध समाधि त्या परिपूर्ण २
जे चेतन जड भावो, अवलोक्या छे मुनीद्र सर्वज्ञे,
तेवी अतर आस्था, प्रगटचे दर्शन कह्यु छे तत्त्वज्ञे ३
सम्यक् प्रमाणपूर्वक, ते ते भावो ज्ञान विषे भासे,
सम्यग् ज्ञान कह्यु ते, सशय, विभ्रम, मोह त्या नाश्ये ४
विषयारभ-निवृत्ति, राग-द्वेषनो अभाव ज्या थाय,
सहित सम्यक्‌दर्शन, शुद्ध चरण त्या समाधि सद्‌पाय ५
त्रणे अभिन्न स्वभावे, परिणमी आत्मस्वरूप ज्या थाय,
पूर्ण परमपदप्राप्ति, निश्चयथी त्या अनन्य सुखदाय ६

जीव, अजीव पदार्थो, पुण्य, पाप, आस्रव तथा बध,
सवर, निर्जरा, मोक्ष, तत्त्व कह्या नव पदार्थ सबध. ७
जीव अजीव विषे ते, नवे तत्त्वनो समावेश थाय,
वस्तु विचार विशेषे, भिन्न प्रबोध्या महान मुनिराय. ८

१२

जड-चेतन विवेक (१)

[२९७/२६६]

दोहरा

जड भावे जड परिणमे, चेतन चेतन भाव,
कोई कोई पलटे नही, छोडी आप स्वभाव १
जड ते जड त्रण काळमा, चेतन चेतन तेम,
प्रगट अनुभवरूप छे, सशय तेमा केम? २
जो जड छे त्रण काळमा, चेतन चेतन होय,
बंध मोक्ष तो नहि घटे, निवृत्ति प्रवृत्ति न्होय ३
बध मोक्ष सयोगथी, ज्या लग आत्म अभान,
पण नहि त्याग स्वभावनो, भाखे जिन भगवान ४
वर्ते बध प्रसगमा, ते निज पद अज्ञान,
पण जडता नहि आत्मने, ए सिद्धात प्रमाण ५
ग्रहे अरूपी रूपीने, ए अचरजनी वात,
जीव बधन जाणे नही, केवो जिन सिद्धात ६
प्रथम देह दृष्टि हती, तेथी भास्यो देह,
हवे दृष्टि थई आत्ममा, गयो देहथी नेह ७

जड चेतन सयोग आ, खाण अनादि अनत,
कोई न कर्ता तेहनो, भाखे जिन भगवत. ८
मूळ द्रव्य उत्पन्न नहि, नही नाश पण तेम,
अनुभवथी ते सिद्ध छे, भाखे जिनवर एम. ९
होय तेहनो नाश नहि, नही तेह नहि होय,
एक समय ते सौ समय, भेद अवस्था जोय १०

× × ×

परम पुरुष प्रभु सद्गुरु, परम ज्ञान सुखधाम,
जेणे आप्यु भान निज, तेने सदा प्रणाम १

१३

जड-चेतन विवेक (२)

[६४२/९०२]

जड ने चैतन्य बन्ने द्रव्यनो स्वभाव भिन्न,
सुप्रतीतपणे बन्ने जेने समजाय छे,
स्वरूप चेतन निज, जड छे सबध मात्र,
अथवा ते ज्ञेय पण परद्रव्यमाय छे,
एवो अनुभवनो प्रकाश उल्लासित थयो,
जडथी उदासी तेने आत्मवृत्ति थाय छे,
कायानी विसारी माया, स्वरूपे समाया एवा,
निर्ग्रंथनो पथ भवअतनो उपाय छे. १
देह जीव एकरूपे भासे छे अज्ञान वडे,
क्रियानी प्रवृत्ति पण तेथी तेम थाय छे,

शत्रु मित्र प्रत्ये वर्ते समदर्शिता,
मान अमाने वर्ते ते ज स्वभाव जो,
जीवित के मरणे नही न्यूनाधिकता,
भव मोक्षे पण शुद्ध वर्ते समभाव जो अपूर्व० १०

एकाकी विचरतो वळी स्मशानमा,
वळी पर्वतमा वाघ सिंह सयोग जो,
अडोल आसन, ने मनमा नही क्षोभता,
परम मित्रनो जाणे पाम्या योग जो अपूर्व० ११

घोर तपश्चर्यामा पण मनने ताप नही,
सरस अन्ने नही मनने प्रसन्नभाव जो,
रजकण के रिद्धि वैमानिक देवनी,
सर्वे मान्या पुद्गल एक स्वभाव जो अपूर्व० १२

एम पराजय करीने चारित्रमोहनो,
आवु त्या ज्या करण अपूर्व भाव जो,
श्रेणी क्षपकतणी करीने आरूढता,
अनन्य चितन अतिशय शुद्धस्वभावजो अपूर्व० १३

मोह स्वयभूरमण समुद्र तरी करी,
स्थिति त्या ज्या क्षीणमोह गुणस्थान जो,
अंत समय त्या पूर्णस्वरूप वीतराग थई,
प्रगटावु निज केवळज्ञान निधान जो अपूर्व० १४

चार कर्म घनघाती ते व्यवच्छेद ज्या,
भवना बीजतणो आत्यतिक नाश जो,
सर्व भाव ज्ञाता द्रष्टा सह शुद्धता,
कृतकृत्य प्रभु वीर्य अनत प्रकाश जो अपूर्व० १५

वेदनीयादि चार कर्म वर्ते जहा,
वळी सीदरीवत् आकृति मात्र जो,
ते देहायुष आधीन जेनी स्थिति छे,
आयुष पूर्णे, मटिये दैहिक पात्र जो अपूर्व० १६

मन, वचन, काया ने कर्मनी वर्गणा,
छूटे जहा सकळ पुद्गल सबध जो,
एवु अयोगी गुणस्थानक त्या वर्ततु,
महाभाग्य सुखदायक पूर्ण अबध जो अपूर्व० १७

एक परमाणु मात्रनी मळे न स्पर्शता,
पूर्ण कलक रहित अडोल स्वरूप जो,
शुद्ध निरजन चैतन्यमूर्ति अनन्यमय,
अगुरु, लघु, अमूर्त्त सहजपदरूप जो अपूर्व० १८

पूर्वप्रयोगादि कारणना योगणी,
ऊर्ध्वगमन सिद्धालयना प्राप्त सुस्थितजो,
सादि अनत अनंत समाधिसुखमा,
अनत दर्शन, ज्ञान अनत सहित जो अपूर्व० १९

जे पद श्री सर्वज्ञे दीठु ज्ञानमा,
कही शक्या नही पण ते श्री भगवान जो,
तेह स्वरूपने अन्य वाणी ते शु कहे ?
अनुभवगोचर मात्र रह्यु ते ज्ञान जो अपूर्व० २०

एह परमद प्राप्तिनु कयु ध्यान मे,
गजा वगरने हाल मनोरथरूप ,जो,
तो पण निश्चय राजचद्र मनने रह्यो,
प्रभुआज्ञाए थाशु ते ज स्वरूप जो अपूर्व० २१

१५

अन्तिम संदेश

[६५९/९५४]

ॐ

श्रीजिन परमात्मने नम

(१) इच्छे छे जे जोगी जन, अनत सुखस्वरूप,
मूळ शुद्ध ते आत्मपद, सयोगी जिनस्वरूप १
आत्मस्वभाव अगम्य ते, अवलबन आधार,
जिनपदथी दर्शावियो, तेह स्वरूप प्रकार. २
जिनपद निजपद एकता, भेदभाव नही काई,
लक्ष थवाने तेहनो, कह्या शास्त्र सुखदाई ३
जिन प्रवचन दुर्गम्यता, थाके अति मतिमान,
अवलबन श्री सद्‌गुरु, सुगम अने सुखखाण ४
उपासना जिनचरणनी, अतिशय भक्तिसहित,
मुनिजन सगति रति अति, सयम योग घटित ५
गुणप्रमोद अतिशय रहे, रहे अतर्मुख योग,
प्राप्ति श्री सद्‌गुरु वडे, जिन दर्शन अनुयोग ६
प्रवचन समुद्र बिंदुमा, ऊलटी[1] आवे एम,
पूर्व चौदनी लब्धिनु, उदाहरण पण तेम ७
विषय विकार सहित जे रह्या मतिना योग,
परिणामनी विषमता, तेने योग अयोग. ८

---

१ पाठान्तर 'उल्लसी'

मद विषय ने सरळता, सह आज्ञा सुविचार,
करुणा कोमळतादि गुण, प्रथम भूमिका धार ९

रोक्या शब्दादिक विपय, सयम साधन राग,
जगत इष्ट नहि आत्मथी, मध्य पात्र महा भाग्य १०

नहि तृष्णा जीव्यातणी, मरण योग नही क्षोभ,
महापात्र ते मार्गना, परम योग जितलोभ ११

(२) आव्ये बहु समदेशमा, छाया जाय समाई,
आव्ये तेम स्वभावमा, मन स्वरूप पण जाई १

ऊँपजे मोह विकल्पथी, समस्त आ ससार,
अतर्मुख अवलोकता, विलय थता नहि वार २

* * *

(३) सुख धाम अनत सुसत चही, दिन रात रहे तद्ध्यानमही,
परशाति अनत सुधामय जे, प्रणमु पद ते वर ते जय ते. १

४

आत्मचितन

[४८५/६४६]

१ विचारश्रेणीनो उदय

सर्व जीवने अप्रिय छता जे दुखनो अनुभव करवो पडे छे, ते दुख सकारण होवु जोईए, ए भूमिथी मुख्य करीने विचारवानी विचारश्रेणी उदय पामे छे, अने ते परथी अनुक्रमे आत्मा, कर्म, परलोक, मोक्ष आदि भावोनु स्वरूप सिद्ध थयु होय एम जणाय छे

वर्तमानमा जो पोतानु विद्यमानपणु छे, तो भूतकाळने विषे पण तेनु विद्यमानपणु होवु जोईए, अने भविष्यमा पण

तेम ज होवु जोईए आ प्रकारना विचारनो आश्रय मुमुक्षु जीवने कर्तव्य छे कोई पण वस्तुनु पूर्वपश्चात् होवापणु न होय, तो मध्यमा तेनु होवापणु न होय एवो अनुभव विचारता थाय छे

वस्तुनी केवळ उत्पत्ति अथवा केवळ नाश नथी, सर्वकाळ तेनु होवापणु छे, रूपातर परिणाम थया करे छे, वस्तुता फरती नथी, एवो श्री जिननो अभिमत छे, ते विचारवा योग्य छे

'षड्दर्शनसमुच्चय' कईक गहन छे, तोपण फरी फरी विचारवाथी तेनो केटलोक बोध थशे जेम जेम चित्तनु शुद्धिपणु अने स्थिरत्व होय छे, तेम तेम ज्ञानीना वचनोनो विचार यथायोग्य थई शके छे सर्व ज्ञाननु फळ पण आत्म-स्थिरता थवी एज छे, एम वीतराग पुरुषोए कह्यु छे, ते अत्यंत सत्य छे

२. आत्मानु अस्तित्व

[१७०/३९]

नेत्रोकी श्यामता विषे जो पुतलियारूप स्थित है, अरु रूपको देखता है, साक्षीभूत है, सो अतर कैसे नही देखता? जो त्वचा विषे स्पर्श करता है, शीतउष्णादिको जानता है, ऐसा सर्व अग विषे व्यापक अनुभव करता है, जैसे तिलो विषे तेल व्यापक होता है, तिसका अनुभव कोऊ नही करता जो शब्द श्रवणइद्रियके अतर ग्रहण करता है, तिस शब्दशक्तिको जानणेहारी सत्ता है, जिस विषे शब्दशक्तिका

विचार होता है, जिसकरि रोम खडे होई आते है, सो सत्ता दूर कैसे होवे? जो जिह्वाके अग्रविपे रसस्वादको ग्रहण करता है, तिस रसका अनुभव करणेहारी अलेप सत्ता है, सो सन्मुख कैसे न होवे? वेद वेदात, सप्तसिद्धात, पुराण, गीता करि जो ज्ञेय, जानके योग्य है आत्मा है तिसको जब जान्या तब विश्राम कैसे न होवे?

३

आत्मज्ञाननी महत्ता

[४५१/५६९]

श्री सत्पुरुषोने नमस्कार

सर्व क्लेशथी अने सर्व दुःखथी मुक्त थवानो उपाय एक आत्मज्ञान छे विचार विना आत्मज्ञान थाय नही, अने असत्सग तथा असत्प्रसगथी जीवनु विचारबळ प्रवर्ततु नथी, एमा किंचित्मात्र सशय नथी

आरभपरिग्रहनु अल्पत्व करवाथी असत्प्रसगनु बळ घटे छे, सत्सगना आश्रयथी असत्संगनु बळ घटे छे. असत्सगनु बळ घटवाथी आत्मविचार थवानो अवकाश प्राप्त थाय छे आत्मविचार थवाथी आत्मज्ञान थाय छे, अने आत्मज्ञानथी निजस्वभावस्वरूप, सर्व क्लेश अने सर्व दुःखथी रहित एवो मोक्ष थाय छे, ए वात केवळ सत्य छे

जे जीवो मोहनिद्रामा सूता छे ते अमुनि छे, निरतर आत्मविचारे करी मुनि तो जागृत रहे, प्रमादीने सर्वथा भय छे, अप्रमादीने कोई रीते भय नथी, एम श्री जिने कह्यु छे

सर्व पदार्थनु स्वरूप जाणवानो हेतु मात्र एक आत्मज्ञान करवु ए छे जो आत्मज्ञान न थाय तो सर्व पदार्थना ज्ञाननु निष्फळपणु छे

जेटलु आत्मज्ञान थाय तेटली आत्मसमाधि प्रगटे

कोई पण तथारूप जोगने पामीने जीवने एक क्षण पण अतर्भेदजागृति थाय तो तेने मोक्ष विशेष दूर नथी.

अन्य परिणाममा जेटली तादात्म्यवृत्ति छे, तेटलो जीवथी मोक्ष दूर छे

जो कोई आत्मजोग बने तो आ मनुष्यपणानु मूल्य कोई रीते न थई शके तेवु छे प्राये मनुष्यदेह विना आत्मजोग बनतो नथी एम जाणी, अत्यत निश्चय करी, आ ज देहमा आत्मजोग उत्पन्न करवो घटे

विचारनी निर्मळताए करी जो आ जीव अन्य परिचयथी पाछो वळे तो सहजमा हमणा ज तेने आत्मजोग प्रगटे असत्सगप्रसगनो घेरावो विशेष छे, अने आ जीव तेथी अनादिकाळनो हीनसत्त्व थयो होवाथी तेथी अवकाश प्राप्त करवा अथवा तेनी निवृत्ति करवा जेम बने तेम सत्सगनो आश्रय करे तो कोई रीते पुरुषार्थयोग्य थई विचार दशाने पामे

जे प्रकारे अनित्यपणु, असारपणु आ ससारनु अत्यतपणे भासे ते प्रकारे करी आत्मविचार उत्पन्न थाय

हवे आ उपाधिकार्यथी छूटवानी विशेष विशेष आर्त्ति थया करे छे, अने छूटवा विना जे कई पण काळ जाय छे ते, आ जीवनु शिथिलपणु ज छे, एम लागे छे, अथवा एवो निश्चय रहे छे

जनकादि उपाधिमा रह्या छता आत्मस्वभावमा वसता हता एवा आलबन प्रत्ये क्यारेय बुद्धि थती नथी श्री जिन जेवा जन्मत्यागी पण छोडीने चाली नीकळ्या एवा भयना हेतुरूप उपाधियोगनी निवृत्ति आ पामर जीव करता करता काळ व्यतीत करशे तो अश्रेय थशे, एवो भय जीवना उपयोग प्रत्ये प्रवर्तें छे, केमके एम ज कर्तव्य छे

जे रागद्वेषादि परिणाम अज्ञान विना संभवता नथी, ते रागद्वेपादि परिणाम छता जीवन्मुक्तपणु सर्वथा मानीने जीवन्मुक्त दशानी जीव आसातना करे छे, एम वर्ते छे सर्वथा रागद्वेष परिणामनु परिक्षीणपणु ज कर्तव्य छे.

अत्यत ज्ञान होय त्या अत्यत त्याग सभवे छे अत्यंत त्याग प्रगट्या विना अत्यत ज्ञान न होय एम श्री तीर्थंकरे स्वीकार्यु छे

आत्मपरिणामथी जेटलो अन्य पदार्थनो तादात्म्यअध्यास निवर्तवो तेने श्री जिन त्याग कहे छे

ते तादात्म्यअध्यास निवृत्तिरूप त्याग थवा अर्थे आ बाह्य प्रसगनो त्याग पण उपकारी छे, कार्यकारी छे. बाह्य प्रसगना त्यागने अर्थे अतत्याग कह्यो नथी, एम छे, तोपण आ जीवे अतत्यागने अर्थे बाह्य प्रसगनी निवृत्तिने कंई पण उपकारी मानवी योग्य छे.

नित्य छूटवानो विचार करीए छीए अने जेम ते कार्य तरत पते तेम जाप जपीए छीए जो के एम लागे छे के ते विचार अने जाप हजी तथारूप नथी, शिथिल छे, माटे

अत्यत विचार अने ते जापने उग्रपणे आराधवानो अल्पकाळमा योग करवो घटे छे, एम वर्त्या करे छे

प्रसगथी केटलाक अरसपरस सबध जेवा वचनो आ पत्रमा लख्या छे, ते विचारमा स्फुरी आवता स्वविचारबळ वधवाने अर्थे अने तमने वाचवा विचारवाने अर्थे लख्या छे.

जीव, प्रदेश, पर्याय तथा सख्यात, असख्यात, अनंत आदि विषे तथा रसना व्यापकपणा विषे क्रमे करी समजवु योग्य थशे

तमारो अत्र आववानो विचार छे, तथा श्री डुगर आववानो सभव छे एम लख्यु ते जाण्यु छे. सत्सग जोगनी इच्छा रह्या करे छे.

४

सुख अंतरमां छे

[२१२/१०८]

हे जीव, तु भ्रमा मा, तने हित कहुं छुं.

अतरमा सुख छे, वहार शोधवाथी मळशे नही.

अतरनु सुख अतरनी समश्रेणीमा छे; स्थिति थवा माटे बाह्य पदार्थोनु विस्मरण कर, आश्चर्य भूल. -

समश्रेणी रहेवी वहु दुर्लभ छे, निमित्ताधीन वृत्ति फरी फरी चलित थई जशे, न थवा अचळ गंभीर उपयोग राख

आ क्रम यथायोग्यपणे चाल्यो आव्यो तो तु जीवन त्याग करतो रहीश, मूझाईश नही, निर्भय थईश.

भ्रमा मा, तने हित कहु छु.

आ मारु छे एवा भावनी व्याख्या प्राये न कर.

जगतमा कोई एवु पुस्तक वा लेख वा कोई एवो साक्षी ऋाहित तमने एम नथी कही शकतो के आ सुखनो मार्ग छे, वा तमारे आम वर्तवु वा सर्वने एक ज क्रमे ऊगवु, ए ज सूचवे छे के त्या कई प्रबळ विचारणा रही छे.

एक भोगी थवानो बोध करे छे
एक योगी थवानो बोध करे छे
ए बेमाथी कोने सम्मत करीशु ?
बन्ने शा माटे बोध करे छे ?
बन्ने कोने बोध करे छे ?
कोना प्रेरवाथी करे छे ?
कोईने कोईनो अने कोईने कोईनो बोध का लागे छे ?
एना कारणो शु छे ?.
तेनो साक्षी कोण छे ?
तमे शु वाच्छो छो ?
ते क्याथी मळशे वा शामा छे ?
ते कोण मेळवशे ?
क्या थईने लावशो ?
लाववानु कोण शीखवशे ?
वा शीख्या छीए ?
शीख्या छो तो क्याथी शीख्या छो ?
अपुनर्वृत्तिरूपे शीख्या छो ?
नही तो शिक्षण मिथ्या ठरशे
जीवन शु छे ?
जीव शु छे ?

तमे शु छो ?

तमारी इच्छापूर्वक का नथी थतु ?

ते केम करी शकशो ?

बाधता प्रिय छे के निरावाधता प्रिय छे ?

ते क्या क्या केम केम छे ?

एनो निर्णय करो

अतरमा सुख छे

बहारमा नथी

सत्य कहु छु

हे जीव, भूल मा, तने सत्य कहु छु

सुख अतरमा छे, ते बहार शोधवाथी नही मळे

अतरनु सुख अतरनी स्थितिमा छे, स्थिति थवा माटे बाह्यपदार्थो सबधीनु आश्चर्य भूल

स्थिति रहेवी बहु विकट छे, निमित्ताधीन फरी फरी वृत्ति चलित थई जाय छे एनो दृढ उपयोग राखवो जोईए.

ए क्रम यथायोग्य चलाव्यो आवीश तो तु मूझाईश नही, निर्भय थईश

हे जीव ! तु भूल मा वखते वखते उपयोग चूकी कोईने रजन करवामा, कोईथी रजन थवामा, वा मननी निर्बळताने लीधे अन्य पासे मद थई जाय छे, ए भूल थाय छे ते न कर

७

यथार्थ वक्ताने नमस्कार

[३६६/४३६]

ॐ

'समता, रमता, ऊरधता, ज्ञायकता, सुखभास,
वेदकता, चैतन्यता, ए सब जीव विलास'

जे तीर्थंकरदेवे स्वरूपस्थ आत्मापणे थई वक्तव्यपणे जे प्रकारे ते आत्मा कही शकाय ते प्रमाणे अत्यत यथास्थित कह्यो छे, ते तीर्थंकरने बीजी सर्व प्रकारनी अपेक्षानो त्याग करी नमस्कार करीए छीए.

पूर्वे घणा शास्त्रोनो विचार करवाथी ते विचारना फळमा सत्पुरुषने विषे जेना वचनथी भक्ति उत्पन्न थई छे, ते तीर्थंकरना वचनने नमस्कार करीए छीए

घणा प्रकारे जीवनो विचार करवाथी, ते जीव आत्मारूप पुरुष विना जाण्यो जाय एवो नथी, एवी निश्चळ श्रद्धा उत्पन्न थई ते तीर्थंकरना मार्गबोधने नमस्कार करीए छीए

भिन्न भिन्न प्रकारे ते जीवनो विचार थवा अर्थे, ते जीव प्राप्त थवा अर्थे, योगादिक अनेक साधनोनो बळवान परिश्रम कर्ये छते, प्राप्ति न थई, ते जीव जे वडे सहज प्राप्त थाय छे, ते ज कहेवा विषे जेनो उद्देश छे, ते तीर्थंकरना उद्देशवचनने नमस्कार करीए छीए

[अपूर्ण]

८

आत्मविचार भूमिका

[३६६/४३७]

आ जगतने विषे जेने विपे विचारशक्ति वाचासहित वर्ते छे, एवा मनुष्यप्राणी कल्याणनो विचार करवाने सर्वेथी अधिक योग्य छे, तथापि प्राये जीवने अनत वार मनुष्यपणु मळ्या छता ते कल्याण सिद्ध थयु नथी, जेथी वर्तमान सुधी जन्ममरणनो मार्ग आराधवो पड्यो छे अनादि एवा आ लोकने विषे जीवनी अनतकोटी सख्या छे, समये समये अनत प्रकारनी जन्ममरणादि स्थिति ते जीवोने विषे वर्त्या करे छे, एवो अनतकाळ पूर्वे व्यतीत थयो छे अनतकोटी जीवना प्रमाणमा आत्मकल्याण जेणे आराध्यु छे, के जेने प्राप्त थयु छे, एवा जीव अत्यत थोडा थया छे, वर्तमाने तेम छे, अने हवे पछीना काळमा पण तेवी ज स्थिति सभवे छे, तेम ज छे अर्थात् कल्याणनी प्राप्ति जीवने त्रणे काळने विषे अत्यत दुर्लभ छे, एवो जे श्री तीर्थंकरदेवादि ज्ञानीनो उपदेश ते सत्य छे एवी, जीवसमुदायनी जे भ्राति ते अनादि सयोगे छे, एम घटे छे, एम ज छे, ते भ्राति जे कारणथी वर्ते छे, ते कारणना मुख्य बे प्रकार जणाय छे, एक पारमार्थिक अने एक व्यावहारिक, अने ते बे प्रकारनो एकत्र अभिप्राय जे छे ते ए छे के, आ जीवने खरी मुमुक्षुता आवी नथी, एक अक्षर सत्य पण ते जीवमा परिणाम पाम्यु नथी, सत्पुरुषना दर्शन प्रत्ये जीवने रुचि थई नथी, तेवा तेवा जोगे समर्थ अतरायथी जीवने ते प्रतिबंध रह्यो

छे, अने तेनु सौथी मोटु कारण असत्सगनी वासनाए जन्म पाम्यु एवु निजेच्छापणु, अने असत्दर्शनने विषे सत्दर्शनरूप भ्राति ते छे 'आत्मा नामनो कोई पदार्थ नथी', 'एवो एक अभिप्राय धरावे छे, 'आत्मा नामनो पदार्थ सयोगिक छे', एवो अभिप्राय कोई बीजा दर्शननो समुदाय स्वीकारे छे, 'आत्मा देह स्थितिरूप छे, देहनी स्थिति पछी नथी,' एवो अभिप्राय कोई बीजा दर्शननो छे 'आत्मा अणु छे,' 'आत्मा सर्वव्यापक छे,' 'आत्मा शून्य छे,' 'आत्मा साकार छे' 'आत्मा प्रकाशरूप छे,' 'आत्मा स्वतत्र नथी,' 'आत्मा कर्त्ता नथी,' आत्मा कर्त्ता छे भोक्ता नथी,' 'आत्म कर्त्ता नथी भोक्ता छे,' 'आत्मा कर्त्ता नथी भोक्ता नथी,' 'आत्मा जड छे,' 'आत्मा कृत्रिम छे,' ए आदि अनत नय जेना थई शके छे एवा अभिप्रायनी भ्रातिनु कारण एवु असत्-दर्शन ते आराधवाथी पूर्वे आ जीवे पोतानु स्वरूप ते जेम छे तेम जाण्यु नथी ते ते उपर जणाव्या एकात-अयथार्थपदे जाणी आत्माने विपे अथवा आत्माने नामे ईश्वरादि विषे पूर्वे जीवे आग्रह कर्यो छे, एवु जे असत्सग, निजेच्छापणु अने मिथ्यादर्शननु परिणाम ते ज्या सुधी मटे नही त्या सुधी आ जीव क्लेशरहित एवो शुद्ध असंख्य प्रदेशात्मकमुक्त थवो घटतो नथी, अने ते असत्सगादि टाळवाने अर्थे सत्सग, ज्ञानीनी आज्ञानु अत्यत अगीकृतपणु, अने परमार्थस्वरूप एवु जे आत्मापणु ते जाणवायोग्य छे

पूर्वे थया एवा जे तीर्थंकरादि ज्ञानीपुरुपो तेमणे उपर कही एवी जे भ्राति तेनो अत्यत विचार करी, अत्यत एकाग्र-पणे, तन्मयपणे जीवस्वरूपने विचारी, जीवस्वरूपे शुद्ध स्थिति

करी छे, ते आत्मा अने बीजा सर्व पदार्थो ते श्री तीर्थंकरादिए सर्वप्रकारनी भ्रांतिरहितपणे जाणवाने अर्थे अत्यंत दुष्कर एवो पुरुषार्थ आराध्यो छे आत्माने एक पण अणुना आहारपरिणामथी अनन्य भिन्न करी आ देहने विषे स्पष्ट एवो अनाहारी आत्मा, स्वरूपथी जीवनार एवो जोयो छे ते जोनार एवा जे तीर्थंकरादि ज्ञानी पोते पोते ज शुद्धात्मा छे, तो त्या भिन्नपणे जोवानु कहेवु जोके घटतु नथी, तथापि वाणीधर्मे एम कह्यु छे एवो जे अनतप्रकारे विचारीने पण जाणवा योग्य 'चैतन्यघन जीव' ते बे प्रकारे तीर्थंकरे कह्यो छे, के जे सत्पुरुषथी जाणी, विचारी, सत्कारीने जीव पोते ते स्वरूपने विषे स्थिति करे. पदार्थमात्र तीर्थंकरादि ज्ञानीए 'वक्तव्य' अने 'अवक्तव्य' एवा बे व्यवहारधर्मवाळा मान्या छे अवक्तव्यपणे जे छे ते अही 'अवक्तव्य' ज छे वक्तव्यपणे जे जीव धर्म छे, ते सर्व प्रकारे तीर्थंकरादि कहेवा समर्थ छे, अने ते मात्र जीवना विशुद्ध परिणामे अथवा सत्पुरुषे करी जणाय एवो जीव धर्म छे, अने ते ज धर्म ते लक्षणे करी अमुक मुख्य प्रकारे करी ते दोहाने विषे कह्यो छे अत्यंत परमार्थना अभ्यासे ते व्याख्या अत्यत स्फुट समजाय छे, अने ते समजाये आत्मापणु पण अत्यत प्रगटे छे, तथापि यथावकाश अत्र तेनो अर्थ लख्यो छे

९

जीव लक्षण

[३६७/४३८]

'समता, रमता, ऊरधता, ज्ञायकता सुख भास,
वेदकता चैतन्यता, ए सब जीव विलास '

श्री तीर्थंकर एम कहे छे के आ जगतमा आ जीव नामना पदार्थने गमे ते प्रकारे कह्यो होय ते प्रकार तेनी स्थितिमा हो, तेने विषे अमारु उदासीनपणु छे जे प्रकारे निराबाधपणे ते जीव नामनो पदार्थ अमे जाण्यो छे, ते प्रकारे करी ते प्रगट अमे कह्यो छे जे लक्षणे कह्यो छे, ते सर्व प्रकारना बाधे करी रहित एवो कह्यो छे अमे ते आत्मा एवो जाण्यो छे, जोयो छे, स्पष्ट अनुभव्यो छे, प्रगट ते ज आत्मा छीए ते आत्मा 'समता' नामने लक्षणे युक्त छे वर्तमान समये जे असख्य प्रदेशात्मक चैतन्यस्थिति ते आत्मानी छे ते, ते पहेलाना एक, वे, त्रण, चार, दश, सख्यात, असख्यात, अनत समये हती, वर्तमाने छे, हवे पछीना काळने विषे पण ते ज प्रकारे तेनी स्थिति छे कोई पण काळे तेनु असख्यात प्रदेशात्मकपणु, चैतन्यपणु, अरूपीपणु, ए आदि समस्त स्वभाव ते छूटवा घटता नथी, एवु जे समपणु, समता ते जेनामा लक्षण छे ते जीव छे

पशु, पक्षी, मनुष्यादि देहने विषे वृक्षादिने विषे जे कई रमणीयपणु जणाय छे, अथवा जेना वडे ते सर्व प्रगट स्फूर्तिवाळा जणाय छे, प्रगट सुदरपणा समेत लागे छे, ते

रमता, रमणीयपणु छे लक्षण जेनु ते जीव नामनो पदार्थ छे जेना विद्यमानपणा विना आखु जगत शून्यवत् सभवे छे, एवु रम्यपणु जेने विषे छे, ते लक्षण जेने विपे घटे ते जीव छे

कोई पण जाणनार क्यारे पण पदार्थने पोताना अविद्यमानपणे जाणे एम बनवा योग्य नथी प्रथम पोतानु विद्यमानपणु घटे छे, अने कोई पण पदार्थनु ग्रहण, त्यागादि के उदासीन ज्ञान थवामा पोते ज कारण छे बीजा पदार्थना अगीकारमा, तेना अल्पमात्र पण ज्ञानमा प्रथम जे होय, तो ज थई शके एवो सर्वथी प्रथम रहेनारो जे पदार्थ ते जीव छे तेने गौण करीने एटले तेना विना कोई कई पण जाणवा इच्छे तो ते बनवायोग्य नथी, मात्र ते ज मुख्य होय तो ज बीजु कई जाणी शकाय एवो ए प्रगट 'ऊर्ध्वताधर्म' ते जेने विषे छे, ते पदार्थने श्री तीर्थंकर जीव कहे छे

प्रगट एवा जड पदार्थो अने जीव, ते जे कारणे करी भिन्न पडे छे, ते लक्षण जीवनो ज्ञायकपणा नामनो गुण छे कोई पण समये ज्ञायकरहितपणे आ जीव पदार्थ कोई पण अनुभवी शके नही, अने ते जीव नामना पदार्थ सिवाय बीजा कोई पण पदार्थने विपे ज्ञायकपणु सभवी शके नही एवु जे अत्यत अनुभवनु कारण ज्ञायकता ते लक्षण जेमा छे ते पदार्थ, तीर्थंकरे जीव कह्यो छे

शब्दादि पाच विषय सबधी अथवा समाधि आदि जोग सबधी जे स्थितिमा सुख सभवे छे ते भिन्न भिन्न करी जोता मात्र छेवटे ते सर्वने विषे सुखनु कारण एक ज एवो ए जीव पदार्थ संभवे छे, ते सुखभास नामनु लक्षण, माटे तीर्थंकरे

जोवनु कह्यु छे, अने व्यवहारदृष्टाते निद्राथी ते प्रगट जणाय छे जे निद्राने विषे बीजा सर्व पदार्थथी रहितपणु छे, त्या पण हु सुखी छु एवु जे ज्ञान छे, ते बाकी वध्यो एवो जे जीव पदार्थ तेनु छे, बीजु कोई त्या विद्यमान नथी, अने सुखनु भासवापणु तो अत्यत स्पष्ट छे, ते जेनेथी भासे छे ते जीव नामना पदार्थ सिवाय बीजे कयाय ते लक्षण जोयु नथी

आ मोळु छे, आ मीठु छे, आ खाटु छे, आ खारु छे, हुं आ स्थितिमा छु, टाढे ठरु छु, ताप पडे छे, दुखी छु, दुख अनुभवु छु, एवु जे स्पष्टज्ञान, वेदनज्ञान, अनुभवज्ञान, अनुभवपणु ते जो कोईमा पण होय तो ते आ जीव पदने विषे छे, अथवा ते जेनु लक्षण होय छे ते पदार्थ जीव होय छे, ए ज तीर्थंकरादिनो अनुभव छे

स्पष्ट प्रकाशपणु, अनत अनत कोटी तेजस्वी दीपक, मणि, चद्र, सूर्यादिनी काति जेना प्रकाश विना प्रगटवा समर्थ नथी, अर्थात् ते सर्व पोते पोताने जणावा अथवा जाणवा योग्य नथी जे पदार्थना प्रकाशने विषे चैतन्यपणाथी ते पदार्थो जाण्या जाय छे, ते पदार्थो प्रकाश पामे छे, स्पष्ट भासे छे, ते पदार्थ जे कोई छे ते जीव छे अर्थात् ते लक्षण प्रगटपणे स्पष्ट प्रकाशमान, अचळ एवु निराबाध प्रकाश्यमान चैतन्य, ते जीवनु ते जीवप्रत्ये उपयोग वाळता प्रगट देखाय छे

ए जे लक्षणो कह्या ते फरी फरी विचारी जीव निराबाध-पणे जाण्यो जाय छे, जे जाणवाथी जीव जाण्यो छे ते लक्षणो ए प्रकारे तीर्थंकरादिए कह्या छे

१०

आत्मा सच्चिदानंद

[५१९/७१०]

आत्मा ॐ आत्मा

सच्चिदानद सच्चिदानद

ज्ञानापेक्षाए सर्वव्यापक, सच्चिदानद एवो हु आत्मा एक छु एम विचारवु, ध्याववु

निर्मळ, अत्यत निर्मळ, परम शुद्ध, चैतन्यघन, प्रकट आत्मस्वरूप छे

सर्वने बाद करता करता जे अबाध्य अनुभव रहे छे ते आत्मा छे

जे सर्वने जाणे छे ते आत्मा छे

जे सर्व भावने प्रकाशे छे ते आत्मा छे

उपयोगमय आत्मा छे

अव्याबाध समाधिस्वरूप आत्मा छे

आत्मा छे आत्मा अत्यत प्रगट छे, केमके स्वसवेदन प्रगट अनुभवमा छे

ते आत्मा नित्य छे, अनुत्पन्न अने अमिलन स्वरूप होवाथी

भ्रातिपणे परभावनो कर्ता छे

तेना फळनो भोक्ता छे

भान थये स्वभावपरिणामी छे

सर्वथा स्वभावपरिणाम ते मोक्ष छे

जोवनु कह्यु छे, अने व्यवहारदृष्टाते निद्राथी ते प्रगट जणाय छे जे निद्राने विषे बीजा सर्व पदार्थथी रहितपणु छे, त्या पण हु सुखी छु एवु जे ज्ञान छे, ते बाकी वध्यो एवो जे जीव पदार्थ तेनु छे, बीजु कोई त्या विद्यमान नथी, अने सुखनु भासवापणु तो अत्यत स्पष्ट छे, ते जेनेथी भासे छे ते जीव नामना पदार्थ सिवाय बीजे कयाय ते लक्षण जोयु नथी

आ मोळु छे, आ मीठु छे, आ खाटु छे, आ खारु छे, हु आ स्थितिमा छु, टाढे ठरु छु, ताप पडे छे, दुःखी छु, दुःख अनुभवु छु, एवु जे स्पष्टज्ञान, वेदनज्ञान, अनुभवज्ञान, अनुभवपणु ते जो कोईमा पण होय तो ते आ जीव पदने विषे छे, अथवा ते जेनु लक्षण होय छे ते पदार्थ जीव होय छे, ए ज तीर्थंकरादिनो अनुभव छे

स्पष्ट प्रकाशपणु, अनत अनत कोटी तेजस्वी दीपक, मणि, चद्र, सूर्यादिनी काति जेना प्रकाश विना प्रगटवा समर्थ नथी, अर्थात् ते सर्व पोते पोताने जणावा अथवा जाणवा योग्य नथी जे पदार्थना प्रकाशने विषे चैतन्यपणाथी ते पदार्थो जाण्या जाय छे, ते पदार्थो प्रकाश पामे छे, स्पष्ट भासे छे, ते पदार्थ जे कोई छे ते जीव छे अर्थात् ते लक्षण प्रगटपणे स्पष्ट प्रकाशमान, अचळ एवु निराबाध प्रकाश्यमान चैतन्य, ते जीवनु ते जीवप्रत्ये उपयोग वाळता प्रगट देखाय छे

ए जे लक्षणो कह्या ते फरी फरी विचारी जीव निराबाधपणे जाण्यो जाय छे, जे जाणवाथी जीव जाण्यो छे ते लक्षणो ए प्रकारे तीर्थंकरादिए कह्या छे

१०

आत्मा सच्चिदानद

[५१९/७१०]

आत्मा ॐ आत्मा

सच्चिदानद सच्चिदानद

ज्ञानापेक्षाए सर्वव्यापक, सच्चिदानद एवो हु आत्मा एक छु एम विचारवु, ध्याववु

निर्मळ, अत्यत निर्मळ, परम शुद्ध, चैतन्यघन, प्रकट आत्मस्वरूप छे

सर्वने बाद करता करता जे अबाध्य अनुभव रहे छे ते आत्मा छे

जे सर्वने जाणे छे ते आत्मा छे

जे सर्व भावने प्रकाशे छे ते आत्मा छे

उपयोगमय आत्मा छे

अव्याबाध समाधिस्वरूप आत्मा छे

आत्मा छे आत्मा अत्यत प्रगट छे, केमके स्वसवेदन प्रगट अनुभवमा छे

ते आत्मा नित्य छे, अनुत्पन्न अने अमिलन स्वरूप होवाथी

भ्रातिपणे परभावनो कर्ता छे

तेना फळनो भोक्ता छे

भान थये स्वभावपरिणामी छे

सर्वथा स्वभावपरिणाम ते मोक्ष छे

सद्गुरु, सत्संग, सत्शास्त्र, सद्विचार अने सयमादि तेना साधन छे

आत्माना अस्तित्वथी माडी निर्वाण सुघीना पद साचा छे, अत्यत साचा छे, केमके प्रगट अनुभवमा आवे छे.

भ्रातिपणे आत्मा परभावनो कर्ता होवाथी शुभाशुभ कर्मनी उत्पत्ति थाय छे

कर्म सफळ होवाथी ते शुभाशुभ कर्म आत्मा भोगवे छे.

उत्कृष्ट शुभथी उत्कृष्ट अशुभ सुधीना सर्व न्यूनाधिक पर्याय भोगववारूप क्षेत्र अवश्य छे

निज स्वभाव ज्ञानमा केवळ उपयोगे, तन्मयाकार, सहज स्वभावे, निर्विकल्पपणे आत्मा परिणमे ते केवळज्ञान छे

तथारूप प्रतीतिपणे परिणमे सम्यक्त्व छे

निरतर ते प्रतीति वर्त्या करे ते क्षायिक सम्यक्त्व कहीए छीए

क्वचित् मद, क्वचित् तीव्र, क्वचित् विसर्जन, क्वचित् स्मरणरूप एम प्रतीति रहे तेने क्षयोपशम सम्यक्त्व कहीए छीए.

ते प्रतीतिने सत्तागत आवरण उदय आव्या नथी, त्या सुघी उपशम सम्यक्त्व कहीए छीए

आत्माने आवरण उदय आवे त्यारे ते प्रतीतिथी पडी जाय तेने सास्वादन सम्यक्त्व कहीए छीए.

अत्यत प्रतीति थवाना योगमा सत्तागत अल्प पुद्गलनु वेदवु ज्या रह्यु छे तेने वेदक सम्यक्त्व कहीए छीए

तथारूप प्रतीति थये अन्यभाव सबधी अहममत्वादि, हर्ष, शोक क्रमे करी क्षय थाय

मनरूप योगमा तारतम्यसहित जे कोई चारित्र आराधे ते सिद्धि पामे छे अने जे स्वरूपस्थिरता भजे ते स्वभाव-स्थिति पामे छे.

निरतर स्वरूपलाभ, स्वरूपाकार उपयोगनु परिणमन ए आदि स्वभाव अंतराय कर्मना क्षये प्रगटे छे

केवळ स्वभावपरिणामी ज्ञान ते केवळज्ञान छे.... केवळज्ञान छे.

११

आत्मभावना

[६२०/८३३]

सर्व द्रव्यथी, सर्व क्षेत्रथी, सर्व काळथी अने सर्व भावथी जे सर्व प्रकारे अप्रतिबध थई निजस्वरूपमा स्थित थया ते परम पुरुषोने नमस्कार

जेने कंई प्रिय नथी, कई अप्रिय नथी, जेने कोई शत्रु नथी, जेने कोई मित्र नथी, जेने मान–अपमान, लाभ–अलाभ, हर्ष–शोक, जन्म–मृत्यु आदि द्वद्वनो अभाव थई जे शुद्ध चैतन्यस्वरूपने विषे स्थिति पाम्या छे, पामे छे अने पामशे तेमनु अति उत्कृष्ट पराक्रम सानदाश्चर्य उपजावे छे

देह प्रत्ये जेवो वस्त्रनो सबध छे, तेवो आत्मा प्रत्ये जेणे देहनो संबध यथातथ्य दीठो छे, म्यान प्रत्ये तरवारनो जेवो सबंध छे तेवो देह प्रत्ये जेणे आत्मानो सबंध दीठो छे, अबद्ध स्पष्ट आत्मा जेणे अनुभव्यो छे, ते महत्पुरुषोने जीवन अने मरण बन्ने समान छे.

जे अचिंत्य द्रव्यनी शुद्धचितिस्वरूप काति परम प्रगट थई अचिंत्य करे छे, ते अचित्य द्रव्य सहज स्वाभाविक निजस्वरूप छे एवो निश्चय जे परम कृपाळु सत्पुरुषे प्रकाश्यो तेनो अपार उपकार छे

चद्र भूमिने प्रकाशे छे, तेना किरणनी कातिना प्रभावथी समस्त भूमि श्वेत थई जाय छे, पण कई चद्र भूमिरूप कोई काळे तेम थतो नथी, एम समस्त विश्वने प्रकाशक एवो आ आत्मा ते क्यारे पण विश्वरूप थतो नथी, सदासर्वदा चैतन्य-स्वरूप ज रहे छे विश्वमा जीव अभेदता माने छे ए ज भ्राति छे.

जेम आकाशमा विश्वनो प्रवेश नथी, सर्वं भावनी वासनाथी आकाश रहित ज छे, तेम सम्यक्दृष्टि पुरुषोए प्रत्यक्ष सर्व द्रव्यथी भिन्न, सर्व अन्य पर्यायथी रहित ज आत्मा दीठो छे

जेनी उत्पत्ति कोई पण अन्य द्रव्यथी थती नथी, तेवा आत्मानो नाश पण क्याथी होय ?

अज्ञानथी अने स्वस्वरूप प्रत्येना प्रमादथी आत्माने मात्र मृत्युनी भ्राति छे ते ज भ्राति निवृत्त करी शुद्ध चैतन्य निजअनुभव प्रमाणस्वरूपमा परम जाग्रत थई ज्ञानी सदाय निर्भय छे. ए ज स्वरूपना लक्षथी सर्व जीव प्रत्ये साम्यभाव उत्पन्न थाय छे. सर्वं परद्रव्यथी वृत्ति व्यावृत्त करी आत्मा अक्लेश समाधिने पामे छे.

परमसुखस्वरूप, परमोत्कृष्ट शात, शुद्ध चैतन्यस्वरूप समाधिने सर्वकाळने माटे पाम्या ते भगवंतने नमस्कार, ते पदमा निरतर लक्षरूप प्रवाह छे जेनो ते सत्पुरुषोने नमस्कार.

सर्वथी सर्व प्रकारे हु भिन्न छु, एक केवळ शुद्ध चैतन्यस्वरूप, परमोत्कृष्ट, अचिंत्य सुखस्वरूप मात्र एकात शुद्ध अनुभवरूप हुं छु, त्या विक्षेप शो? विकल्प शो? भय शो? खेद शो? बीजी अवस्था शी? हु मात्र निर्विकल्प शुद्ध शुद्ध, प्रकृष्ट शुद्ध परमशात चैतन्य छु हु मात्र निर्विकल्प छु हुं निजस्वरूपमय उपयोग करु छु तन्मय थाउ छु

शाति शाति शाति:.

१२
आत्मस्थिति क्रम

[८००/२९]

शरीरने विषे आत्मभावना प्रथम थती होय तो थवा देवी, क्रमे करी प्राणमा आत्मभावना करवी, पछी इन्द्रियोमा आत्मभावना करवी, पछी सकल्पविकल्परूप परिणाममा आत्मभावना करवी, पछी स्थिर ज्ञानमा आत्मभावना करवी त्या सर्वप्रकारनी अन्यालबनरहित स्थिति करवी

१३
आत्मध्यान

[८३२/२९]

द्वि० आ० शु० १, १९५४

ॐ नम

सर्वं विकल्पनो, तर्कनो त्याग करीने

मननो वचननो कायानो इन्द्रियनो आहारनो निद्रानो	} जय करीने

निर्विकल्पपणे अतर्मुखवृत्ति करी आत्मध्यान करवु. मात्र अनाबाध अनुभवस्वरूपमा लीनता थवा देवी, बीजी चिंतवना न करवी. जे जे तर्कादि ऊठे, ते नही लंबावता उपशमावी देवा

१४
स्वाध्याय ध्यान

[८२०/९]

हे मुनिओ! ज्या सुधी केवळ समवस्थानरूप सहज स्थिति स्वाभाविक न थाय त्या सुधी तमे ध्यान अने स्वाध्यायमा लीन रहो.

जीव केवळ स्वाभाविक स्थितिमा स्थित थाय त्या कई करवु रह्यु नथी.

ज्या जीवना परिणाम वर्धमान, हीयमान थया करे छे त्या ध्यान कर्तव्य छे अर्थात् ध्यानलीनपणे सर्व बाह्यद्रव्यना परिचयथी विराम पामी निजस्वरूपना लक्षमा रहेवु उचित छे

उदयना धक्काथी ते ध्यान ज्यारे ज्यारे छूटी जाय त्यारे त्यारे तेनु अनुसधान घणी त्वराथी करवु

वच्चेना अवकाशमा स्वाध्यायमा लीनता करवी सर्व परद्रव्यमा एक समय पण उपयोग सग न पामे एवी दशाने जीव भजे त्यारे केवळज्ञान उत्पन्न थाय

१५

ध्याननुं सुगम स्वरूप

[३५६/४१६]

जे प्रकारे अत्रे कहेवामा आव्यु हतु, ते प्रकारथी पण सुगम एवु ध्याननु स्वरूप अही लख्यु छे

१ निर्मळ एवा कोई पदार्थने विषे दृष्टिनु स्थापन करवानो अभ्यास करीने प्रथम तेने अचपळ स्थितिमा आणवी.

२ एवु केटलुक अचपळपणु प्राप्त थया पछी जमणा चक्षुने विषे सूर्य अने डाबा चक्षुने विषे चद्र स्थित छे, एवी भावना करवी

३ ए भावना ज्या सुधी ते पदार्थना आकारादिना दर्शनने आपे नही त्या सुधी सुदृढ करवी

४ तेवी सुदृढता थया पछी चद्रने जमणा चक्षुने विषे अने सूर्यने वाम चक्षुने विषे स्थापन करवा

५ ए भावना ज्या सुधी ते पदार्थना आकारादि दर्शनने आपे नही त्या सुधी सुदृढ करवी आ जे दर्शन कह्यु छे, ते भास्यमानदर्शन समजवु

६ ए बे प्रकारनी ऊलटसूलट भावना सिद्ध थये भ्रकुटीना मध्यभागने विषे ते बन्नेनु चिंतन करवु

७ प्रथम ते चिंतन दृष्टि उघाडी राखी करवु

८ घणा प्रकारे ते चिंतन दृढ थवा पछी दृष्टि बध राखवी ते पदार्थना दर्शननी भावना करवी

९ ते भावनाथी दर्शन सुदृढ थया पछी ते बन्ने पदार्थो अनुक्रमे हृदयने विषे एक अष्टदलकमळनु चिंतन करी स्थापित करवा

१० हृदयने विषे एवु एक अष्टदलकमळ मानवामा आव्यु छे, तथापि ते विमुख मुखे रह्यु छे, एम मानवामा आव्यु छे, जेथी सन्मुख मुखे तेने चिंतववु, अर्थात् सूलटु चिंतववु

११. ते अष्टदळकमळने विषे प्रथम चद्रना तेजने स्थापन करवु पछी सूर्यना तेजने स्थापन करवु, अने पछी अखड दिव्याकार एवी अग्निनी ज्योतिनु स्थापन करवु

१२ ते भाव दृढ थये पूर्ण छे जेनु ज्ञान, दर्शन अने आत्मचरित्र एवा श्री वीतरागदेव तेनी प्रतिमा महातेजोमय स्वरूपे तेने विषे चिंतववी

१३ ते परम दिव्य प्रतिमा नही बाळ, युवा अने वृद्ध एवा दिव्यस्वरूपे चिंतववी

१४ सपूर्ण ज्ञान, दर्शन उत्पन्न थवाथी स्वरूपसमाधिने विषे श्री वीतरागदेव अत्र छे, एम भाववु

१५ स्वरूपसमाधिने विषे स्थित एवा ते वीतराग आत्माना स्वरूपमा तदाकार ज छे, एम भाववु

१६ तेमना मूर्धस्थानने विषेथी ते वखते ॐकारनो ध्वनि थया करे छे एम भाववु

१७ ते भावनाओ दृढ थये ते ॐकार सर्व प्रकारना वक्तव्य ज्ञानने उपदेशे छे, एम भाववु

१८ जे प्रकारना सम्यक्मार्गे करी वीतरागदेव वीतराग निष्पन्नताने पाम्या एवु ज्ञान ते उपदेशनु रहस्य छे, एम चिंतवता चिंतवता ते ज्ञान ते शु? एम भाववु

१९ ते भावना दृढ थया पछी तेमणे जे द्रव्यादि पदार्थो कह्या छे, तेनु भावन करी आत्माने स्वस्वरूपमा चिंतववो, सर्वांग चिंतववो

ध्यानना घणा घणा प्रकार छे ए सर्वमा श्रेष्ठ एवु तो आत्मा जेमा मुख्यपणे वर्ते छे, ते ध्यान कहेवाय छे, अने ए ज आत्मध्याननी प्राप्ति, घणु करीने आत्मज्ञाननी प्राप्ति विना थती नथी एवु जे आत्मज्ञान ते यथार्थ बोधनी प्राप्ति सिवाय उत्पन्न थतु नथी ए यथार्थ वोधनी प्राप्ति घणु करीने क्रमे करीने घणा जीवोने थाय छे, अने तेनो मुख्य मार्ग ते बोधस्वरूप एवा ज्ञानीपुरुषनो आश्रय के सग अने तेने विषे बहुमान, प्रेम ए छे ज्ञानी पुरुषनो तेवो तेवो सग जीवने अनतकाळमा घणी वार थई गयो छे, तथापि आ पुरुष ज्ञानी छे, माटे हवे तेनो आश्रय ग्रहण करवो ए ज कर्तव्य छे,

एम जीवने आव्यु नथी, अने ते ज कारण जीवने परिभ्रमणनु थयु छे, एम अमने तो दृढ करीने लागे छे.

ज्ञानीपुरुषनु ओळखाण नही थवामा घणु करीने जीवना त्रण मोटा दोष जाणीए छीए एक तो 'हु जाणु छु,' 'हु समजु छु' एवा प्रकारनु जे मान जीवने रह्या करे छे ते मान बीजु परिग्रहादिकने विषे ज्ञानी पुरुष पर राग करता पण विशेष राग त्रीजु, लोकभयने लीधे, अपकीर्त्तिभयने लीधे, अने अपमानभयने लीधे ज्ञानीथी विमुख रहेवु, तेना प्रत्ये जेवु विनयान्वित थवु जोईए तेवु न थवु ए त्रण कारणो जीवने ज्ञानीथी अजाण्यो राखे छे, ज्ञानीने विषे पोता समान कल्पना रह्या करे छे, पोतानी कल्पना प्रमाणे ज्ञानीना विचारनु, शास्त्रनु तोलन करवामा आवे छे, थोडु पण ग्रंथसबधी वाचनादि ज्ञान मळवाथी घणा प्रकारे ते दर्शाववानी जीवने इच्छा रह्या करे छे ए वगेरे जे दोष ते उपर जणाव्या एवा जे त्रण दोष तेने विषे समाय छे अने ए त्रणे दोषनु उपादान कारण एवो तो एक 'स्वच्छद' नामनो महा दोष छे, अने तेनु निमित्तकारण असत्सग छे

जेने तमारा प्रत्ये, तमने परमार्थनी कोई प्रकारे कई पण प्राप्ति थाओ ए हेतु सिवाय बीजी स्पृहा नथी, एवो हु ते आ स्थळे स्पष्ट जणाववा इच्छु छु, अने ते ए के उपर जणावेला दोषो जे विषे हजु तमने प्रेम वर्ते छे, 'हुं जाणु छु,' 'हु समजु छु,' ए दोष घणी वार वर्तवामा प्रवर्ते छे, असार एवा परिग्रहादिकने विषे पण महत्तानी इच्छा रहे छे, ए वगेरे जे दोषो ते, ध्यान, ज्ञान ए सर्वेनु कारण जे ज्ञानीपुरुष अने

तेनी आज्ञाने अनुसरवु तेने आडा आवे छे माटे जेम बने तेम आत्मवृत्ति करी तेने ओछा करवानु प्रयत्न करवु, अने लौकिक भावनाना प्रतिबधथी उदास थवु ए ज कल्याणकारक छे, एम जाणीए छीए

१६

असंगतानो अभ्यास करो

[६४१/९०१]

ॐ

'गुरु गणधर गुणधर अधिक, प्रचुर परपर और,
व्रततपधर, तनु नगनधर, वदौ वृषदौसिरमोर

जगत विषयना विक्षेपमा स्वरूपविभ्राति वडे विश्राति पामतु नथी

अनत अव्याबाध सुखनो एक अनन्य उपाय स्वरूपस्थ थवु ते ज छे ए ज हितकारी उपाय ज्ञानीए दीठो छे

भगवान जिने द्वादशागी ए ज अर्थे निरूपण करी छे, अने ए ज उत्कृष्टताथी ते शोभे छे जयवत छे

ज्ञानीना वाक्यना श्रवणथी उल्लासित थतो एवो जीव, चेतन, जडने भिन्नस्वरूप यथार्थपणे प्रतीत करे छे, अनुभवे छे, अनुक्रमे स्वरूपस्थ थाय छे

यथास्थित अनुभव थवाथी स्वरूपस्थ थवा योग्य छे

दर्शनमोह व्यतीत थवाथी ज्ञानीना मार्गमा परमभक्ति समुत्पन्न थाय छे, तत्त्वप्रतीति सम्यक्पणे उत्पन्न थाय छे

तत्त्वप्रतीति वडे शुद्ध चैतन्य प्रत्ये वृत्तिनो प्रवाह् वळे छे शुद्ध चैतन्यना अनुभव अर्थे चारित्रमोह व्यतीत करवा योग्य छे

चारित्रमोह, चैतन्यना–ज्ञानी पुरुषना सन्मार्गना नैष्टिकपणाथी प्रलय थाय छे

असगताथी परमावगाढ अनुभव थवा योग्य छे

हे आर्य मुनिवरो। ए ज असग शुद्ध चैतन्यार्थे असग-योगने अहोनिश इच्छीए छीए हे मुनिवरो। असगतानो अभ्यास करो

बे वर्ष कदापि समागम न करवो एम थवाथी अविरोधता थती होय तो छेवटे बीजो कोई सद्‌उपाय न होय तो तेम करशो, जे महात्माओ असग चैतन्यमा लीन थया, थाय छे अने थशे तेने नमस्कार ॐ शाति

१७

आत्मसंबोधन

[८१९/७]

हे जीव। स्थिर दृष्टिथी करीने तु अतरगमा जो, तो सर्व परद्रव्यथी मुक्त एवु तारु स्वरूप तने परम प्रसिद्ध अनुभवाशे

हे जीव। असम्यक्‌दर्शनने लीधे ते स्वरूप तने भासतु नथी ते स्वरूपमा तने शका छे, व्यामोह अने भय छे

सम्यक्‌दर्शननो योग प्राप्त करवाथी ते अभासनादिनी निवृत्ति थशे

हे सम्यक्‌दर्शनी। सम्यक्‌चारित्र ज सम्यक्‌दर्शननु फळ घटे छे, माटे तेमा अप्रमत्त था

जे प्रमत्तभाव उत्पन्न करे छे ते कर्मबंधनी तने सुप्रतीतिनो हेतु छे.

हे सम्यक्‌चारित्री। हवे शिथिलपणु घटतु नथी घणो अतराय हतो ते निवृत्त थयो, तो हवे निरतराय पदमा शिथिलता शा माटे करे छे?

१८

अप्रमत्तता

[८२०/११]

आम काळ व्यतीत थवा देवो योग्य नथी. समये समय आत्मोपयोगे उपकारी करीने निवृत्त थवा देवा योग्य छे.

अहो आ देहनी रचना। अहो चेतन। अहो तेनु सामर्थ्य। अहो ज्ञानी। अहो तेनी गवेषणा। अहो तेमनु ध्यान। अहो तेमनी समाधि। अहो तेमनो सयम। अहो तेमनो अप्रमत्तभाव। अहो तेमनी परम जागृति। अहो तेमनो वीतराग स्वभाव। अहो तेमनु निवारण ज्ञान। अहो तेमना योगनी शाति। अहो तेमना वचनादि योगनो उदय।

हे आत्मा। आ बधु तने सुप्रतीत थयु छता प्रमत्तभाव केम? मद प्रयत्न केम? जघन्यमद जागृति केम? शिथिलता केम? मूझवण केम? अतरायनो हेतु शो?

अप्रमत्त था, अप्रमत्त था.

परम जागृत स्वभाव भज, परम जागृत स्वभाव भज.

५

समाधिभावना

१

समाधि–साधन

[३८५/४७१]

आत्माने समाधि थवा माटे, आत्मस्वरूपमा स्थिति माटे सुधारस के जे मुखने विषे वरसे छे, ते एक अपूर्व आधार छे, माटे कोई रीते तेने बीजज्ञान कहो तो हरकत नथी, मात्र एटलो भेद छे के ते ज्ञान ज्ञानीपुरुष, के जे तेथी आगळ छे, आत्मा छे, एम जाणनार होवा जोईए

द्रव्यथी द्रव्य मळतु नथी, एम जाणनारने कई कर्त्तव्य कहो शकाय नही, पण ते क्यारे ? स्वद्रव्य द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावे यथावस्थित समजाये, स्वद्रव्य स्वरूपपरिणामे परिणमी अन्यद्रव्य प्रत्ये केवळ उदास थई, कृतकृत्य थये कई कर्त्तव्य रहेतु नथी, एम घटे छे, अने एम ज छे

२

समाधि असमाधि विचार (१)

[४४४/५५१]

श्री जिन आत्मपरिणामनो स्वस्थताने समाधि अने आत्म-परिणामनी अस्वस्थताने असमाधि कहे छे, ते अनुभवज्ञाने जोता परम सत्य छे.

अस्वस्थ कार्यनी प्रवृत्ति करवी, अने आत्मपरिणाम स्वस्थ राखवा एवी विषमप्रवृत्ति श्री तीर्थंकर जेवा ज्ञानीथी बनवी कठण कही छे, तो पछी बीजा जीवने विषे ते वात संभवित करवी कठण होय एमां आश्चर्य नथी

कोई पण परपदार्थने विषे इच्छानी प्रवृत्ति छे, अने कोई पण परपदार्थना वियोगनी चिंता छे, तेने श्री जिन आर्त्तध्यान कहे छे, तेमां अंदेशो घटतो नथी

त्रण वर्षना उपाधियोगथी उत्पन्न थयो एवो विक्षेपभाव ते मटाडवानो विचार वर्ते छे दृढ वैराग्यवानना चित्तने जे प्रवृत्ति बाध करी शके एवी छे, ते प्रवृत्ति अदृढ वैराग्यवान जीवने कल्याण सन्मुख थवा न दे एमां आश्चर्य नथी.

जेटली संसारने विषे सारपरिणति मनाय तेटली आत्मज्ञाननी न्यूनता श्री तीर्थंकरे कही छे

परिणाम जड होय एवो सिद्धांत नथी चेतनने चेतनपरिणाम होय अने अचेतनने अचेतन परिणाम होय, एवो जिने अनुभव कर्यो छे कोई पण पदार्थ परिणाम के पर्याय विना होय नही, एम श्री जिने कह्यु छे अने ते सत्य छे

श्री जिने जे आत्मअनुभव कर्यो छे, अने पदार्थना स्वरूप साक्षात्कार करी जे निरूपण कर्यु छे ते, सर्व मुमुक्षु जीवे परमकल्याणने अर्थे निश्चय करी विचारवा योग्य छे जिने कहेला सर्व पदार्थना भावो एक आत्मा प्रगट करवाने अर्थे छे, अने मोक्षमार्गमां प्रवृत्ति बेनी घटे छे, एक आत्मज्ञाननो अने एक आत्मज्ञानीना आश्रयवाननी, एम श्री जिने कह्यु छे

आत्मा साभळवो, विचारवो, निदिध्यासवो, अनुभववो एवी एक वेदनी श्रुति छे, अर्थात् जो एक ए ज प्रवृत्ति करवामा आवे तो जीव तरी पार पामे एवु लागे छे बाकी तो मात्र कोई श्री तीर्थंकर जेवा ज्ञानी विना, सर्वने आ प्रवृत्ति करता कल्याणनो विचार करवो अने निश्चय थवो तथा आत्म-स्वस्थता थवी दुर्लभ छे

३

समाधि असमाधि विचार (२)

[४५०/५६८ [

आत्मस्वरूपनो निर्णय थवामा अनादिथी जीवनी भूल थती आवी छे जेथी हमणा थाय तेमा आश्चर्य लागतु नथी

सर्व क्लेशथी अने सर्व दु खथी मुक्त थवानो आत्मज्ञान सिवाय बीजो कोई उपाय नथी सद्विचार विना आत्मज्ञान थाय नही, अने असत्सग–प्रसगथी जीवनु विचारबळ प्रवर्तंतु नथी एमा किंचित्मात्र सशय नथी

आत्मपरिणामनी स्वस्थताने श्री तीर्थंकर 'समाधि' कहे छे.

आत्मपरिणामनी अवस्थताने श्री तीर्थंकर 'असमाधि' कहे ,छे.

आत्मपरिणामनी सहज स्वरूपे परिणति थवी तेने श्री तीर्थंकर 'धर्म' कहे छे

आत्मपरिणामनी कई पण चपळ परिणति थवी तेने श्री तीर्थंकर 'कर्म' कहे छे

श्री जिन तीर्थंकरे जेवो बध अने मोक्षनो निर्णय कह्यो छे, तेवो निर्णय वेदातादि दर्शनमा दृष्टिगोचर थतो नथी, अने जेवु श्री जिनने विषे यथार्थवक्तापणु जोवामा आवे छे, तेवु यथार्थवक्तापणु बीजामा जोवामा आवतु नथी

आत्माना अतर्व्यापार (शुभाशुभ परिणामधारा) प्रमाणे बधमोक्षनी व्यवस्था छे, शारीरिक चेष्टा प्रमाणे ते नथी पूर्वे उत्पन्न करेला वेदनीय कर्मना उदय प्रमाणे रोगादि उत्पन्न थाय छे, अने ते प्रमाणे निर्बळ, मद, म्लान, उष्ण, शीत आदि शरीरचेष्टा थाय छे

विशेष रोगना उदयथी अथवा शारीरिक मदबळथी ज्ञानीनु शरीर कपाय, निर्बळ थाय, म्लान थाय, मद थाय, रौद्र लागे, तेने भ्रमादिनो उदय पण वर्ते, तथापि जे प्रमाणे जीवने विषे बोध अने वैराग्यनी वासना थई होय छे ते प्रमाणे ते रोगने जीव ते ते प्रसगमा घणु करी वेदे छे

कोई पण जीवने अविनाशी देहनी प्राप्ति थई एम दीठु नथी, जाण्यु नथी तथा सभवतु नथी, अने मृत्युनु आववु अवश्य छे, एवो प्रत्यक्ष नि सशय अनुभव छे, तेम छता पण आ जीव ते वात फरी फरी भूली जाय छे ए मोटु आश्चर्य छे

जे सर्वज्ञ वीतरागने विषे अनत सिद्धिओ प्रगटी हती ते वीतरागे पण आ देहने अनित्यभावी दीठो छे, तो पछी बीजा जीवो कया प्रयोगे देहने नित्य करी शकशे ?

श्री जिननो एवो अभिप्राय छे, के प्रत्येक द्रव्य अनत पर्यायवाळु छे जीवने अनता पर्याय छे अने परमाणुने पण अनता पर्याय छे जीव चेतन होवाथी तेना पर्याय पण चेतन

छे, अने परमाणु अचेतन होवाथी तेना पर्याय पण अचेतन छे जीवना पर्याय अचेतन नथी अने परमाणुना पर्याय सचेतन नथी, एवो श्री जिने निश्चय कर्यो छे अने तेम ज योग्य छे, केमके प्रत्यक्ष पदार्थनु स्वरूप पण विचारता तेवु भासे छे.

जीव विषे, प्रदेश विषे, पर्याय विषे, तथा सख्यात, असख्यात, अनत आदि विषेनो यथाशक्ति विचार करवो जे कई अन्य पदार्थनो विचार करवो छे ते जीवना मोक्षार्थे करवो छे, अन्य पदार्थना ज्ञानने माटे करवो नथी

४

मृत्युने नित्य निकट समजीने प्रवर्तो

[५१०/७०२]

विचारवान पुरुषो तो कैवल्यदशा थता सुधी
मृत्युने नित्य समीप ज समजीने प्रवर्ते छे

घणु करीने उत्पन्न करेला एवा कर्मनी रहस्यभूत मति मृत्यु वखते वर्ते छे क्वचित् माड परिचय थयेल एवो परमार्थ ते एक भाव, अने नित्य परिचित निजकल्पनादि भावे रूढि-धर्मनु ग्रहण एवो भाव, एम भाव बे प्रकारना थई शके. सद्विचारे यथार्थ आत्मदृष्टि के वास्तव उदासीनता तो सर्व जीव समूह जोता कोईक विरल जीवने क्वचित् क्वचित् होय छे, अने बीजो भाव अनादि परिचित छे, ते ज प्राये सर्व जीवमा जोवामा आवे छे, अने देहात प्रसगे पण तेनु प्राबल्य जोवामा आवे छे, एम जाणी मृत्यु समीप आव्ये तथारूप परिणति

करवानो विचार विचारवान पुरुष छोडी दई, प्रथमथी ज ते प्रकारे वर्ते छे तमे पोते बाह्यक्रियानो विधिनिषेधाग्रह विसर्जन-वत् करी दई, अथवा तेमा अतरपरिणामे उदासीन थई, देह अने तेना सबधी सबधनो वारवारनो विक्षेप छोडी दई, यथार्थ आत्मभावनो विचार करवानु लक्षगत करो तो ते ज सार्थक छे छेल्ले अवसरे अनशनादि के सस्तरादिक के सलेखनादिक क्रिया क्वचित् बनो के न बनो तोपण जे जीवने उपर कह्यो ते भाव लक्षगत छे, तेनो जन्म सफळ छे, अने क्रमे करी ते निश्रेयने प्राप्त थाय छे

तमने बाह्यक्रियादिनो केटलाक कारणथी विशेष विधि-निषेध लक्ष जोईने अमने खेद थतो के आमा काळ व्यतीत थता आत्मावस्था केटली स्वस्थता भजे छे, अने शु यथार्थ स्वरूपनो विचार करी शके छे, के तमने तेनो आटलो बधो परिचय खेदनो हेतु लागतो नथी? सहजमात्र जेमा उपयोग दीधो होय तो चाले तेवु छे, तेमा लगभग 'जागृति' काळनो घणो भाग व्यतीत थवा जेवु थाय छे ते केने अर्थे? अने तेनु शु परिणाम? ते शा माटे तमने ध्यानमा आवतु नथी? ते विषे क्वचित् कई प्रेरवानी इच्छा थयेली सभवे छे, पण तमारी तथारूप रुचि अने स्थिति न देखावाथी प्रेरणा करता करता वृत्ति सक्षेपी लीधेली हजी पण तमारा चित्तमा आ वातने अवकाश आपवा योग्य अवसर छे लोको मात्र विचारवान के सम्यग्दृष्टि समजे तेथी कल्याण नथी, अथवा बाह्यव्यवहारना घणा विधिनिषेधना कर्तृत्वना महात्म्यमा कई कल्याण नथी, एम अमने तो लागे छे आ कई एकातिक दृष्टिए लख्यु छे अथवा अन्य कई

हेतु छे, एम विचारवु छोडी दई, जे कई ते वचनोथी अतर्मुख-वृत्ति थवानी प्रेरणा थाय ते करवानो विचार राखवो ए ज सुविचारदृष्टि छे

लोकसमुदाय कोई भलो थवानो नथी, अथवा स्तुतिनिंदाना प्रयत्नार्थे आ देहनी प्रवृत्ति ते विचारवानने कर्त्तव्य नथी बाह्य-क्रियाना अतर्मुखवृत्ति वगरना विधिनिषेधमा कई पण वास्तव्य कल्याण रह्यु नथी गच्छादि भेदने निर्वाहवामा, नाना प्रकारना विकल्पो सिद्ध करवामा आत्माने आवरण करवा बराबर छे. अनेकातिक मार्ग पण सम्यक् एकात एवा निजपदनी प्राप्ति करावना सिवाय बीजा अन्य हेतुए उपकारी नथी, एम जाणी लख्यु छे ते मात्र अनुकपाबुद्धिए, निराग्रहथी, निष्कपटताथी, निर्दंभताथी, अने हितार्थे लख्यु छे, एम जो तमे यथार्थ विचारशो तो दृष्टिगोचर थशे, अने वचननु ग्रहण के प्रेरणा थवानो हेतु थशे

५

व्याधिना उदयमां

[३७८/४६०]

शारीरिक वेदनाने देहनो धर्म जाणी अने बाधेला एवा कर्मोनु फळ जाणी सम्यक्प्रकारे अहियासवायोग्य छे घणी वार शारीरिक वेदनानु बळ विशेष वर्ततु होय छे, त्यारे उपर जे कह्यो छे ते सम्यक्प्रकार रुडा जीवोने पण स्थिर रहेवो कठण थाय छे, तथापि हृदयने विषे वारवार ते वातनो विचार

करता अने आत्माने नित्य, अछेद्य, अभेद्य, जरा, मरणादि धर्मथी रहित भावता, विचारता, केटलोक रीते ते सम्यक्प्रकारनो निश्चय आवे छे मोटा पुरुषोए अहियासेला एवा उपसर्ग, तथा परिषहना प्रसगोनी जीवमा स्मृति करी, ते विषे तेमनो रहेलो अखड निश्चय ते फरी फरी हृदयमा स्थिर करवायोग्य जाणवाथी जीवने ते सम्यक् परिणाम फळीभूत थाय छे, अने वेदना, वेदनाना क्षयकाळे निवृत्त थये फरी ते वेदना कोई कर्मोनु कारण थती नथी व्याधिरहित शरीर होय तेवा समयमा जीवे जो तेनाथी पोतानु जुदापणु जाणी, तेनु अनित्यादि स्वरूप जाणी, ते प्रत्येथी मोह--ममत्वादि त्याग्या होय, तो ते मोटु श्रेय छे, तथापि तेम न बन्यु होय तो कई पण व्याधि उत्पन्न थये तेवी भावना भावता जीवने निश्चळ एवु घणु करी कर्म-बधन थतु नथी, अने महाव्याधिना उत्पत्तिकाळे तो देहनु ममत्व जीवे जरूर त्यागी ज्ञानीपुरुषना मार्गनी विचारणाए वर्तवु, ए रूडो उपाय छे जोके देहनु तेवु ममत्व त्यागवु के ओछु करवु ए महा दुष्कर वात छे, तथापि जेनो तेम करवा निश्चय छे, ते वहेले मोडे फळीभूत थाय छे

ज्या सुधी देहादिकथी करी जीवने आत्मकल्याणनु साधन करवु रह्यु छे, त्या सुधी ते देहने विषे अपारिणामिक एवी ममता भजवी योग्य छे, एटले के आ देहना कोई उपचार करवा पडे तो ते उपचार देहना ममत्वार्थे करवानी इच्छाए नही, पण ते देहे करी ज्ञानीपुरुषना मार्गनु आराधन थई शके छे, एवो कोई प्रकारे तेमा रहेलो लाभ, ते लाभने अर्थे, अने तेवी ज बुद्धिए ते देहनी व्याधिना उपचारे प्रवर्तवामा बाध

नथी जे कई ते ममता छे ते अपारिणामिक ममता छे, एटले परिणामे समतास्वरूप छे, पण ते देहनी प्रियतार्थे, सासारिक साधनमा प्रधान भोगनो ए हेतु छे, ते त्यागवो पडे छे, एवा आर्त्तध्याने कोई प्रकारे पण ते देहमा बुद्धि न करवी एवी ज्ञानीपुरुषना मार्गनी शिक्षा जाणी आत्मकल्याणनो तेवा प्रसगे लक्ष राखवो योग्य छे

सर्व प्रकारे ज्ञानीना शरणमा बुद्धि राखी निर्भयपणाने, नि खेदपणाने भजवानी शिक्षा श्री तीर्थंकर जेवाए कही छे, अने अमे पण ए ज कहीए छीए कोई पण कारणे आ ससारमा क्लेशित थवा योग्य नथी अविचार अने अज्ञान ए सर्व क्लेशनु, मोहनु, अने माठी गतिनु कारण छे सद्‌विचार, अने आत्मज्ञान ते आत्मगतिनु कारण छे

तेनो प्रथम साक्षात् उपाय ज्ञानीपुरुषनी आज्ञाने विचारवी ए ज जणाय छे

६

क्षणभंगुर देह

[४६२/५९२]

जे देह पूर युवावस्थामा अने सपूर्ण आरोग्यतामा देखाता छता पण क्षणभगुर छे, ते देहमा प्रीति करीने शु करीए ?

जगतना सर्व पदार्थ करता जे प्रत्ये सर्वोत्कृष्ट प्रीति छे, एवो आ देह ते पण दु खनो हेतु छे, तो बीजा पदार्थमा सुखना हेतुनो शु कल्पना करवी ?

जे पुरुषोए वस्त्र जेम शरीरथी जुदु छे, एम आत्माथी शरीर जुदु छे एम दीठु छे, ते पुरुषो धन्य छे

बीजानी वस्तु पोतार्थी ग्रहण थई होय, ते ज्यारे एम जणाय के बीजानी छे, त्यारे ते आपी देवानु ज कार्य महात्मा पुरुषो करे छे.

दुषमकाळ छे एमा सशय नथी

तथारूप परमज्ञानी आप्तपुरुषनो प्राये विरह छे

विरला जीवो सम्यक्दृष्टिपणु पामे एवी काळस्थिति थई गई छे, ज्या सहजसिद्ध आत्मचारित्रदशा वर्ते छे एवु केवळज्ञान पामवु कठण छे, एमा सशय नथी

प्रवृत्ति विराम पामती नथी, विरक्तपणु घणु वर्ते छे

वनने विषे अथवा एकातने विषे सहजस्वरूपने अनुभवतो एवो आत्मा निर्विषय केवळ प्रवर्ते एम करवामा सर्वे इच्छा रोकाणी छे

७

निश्चय अने आश्रय

[६२६/८४३]

श्रीमत् वीतराग भगवतोए निश्चितार्थ
करेलो एवो अचित्य चितामणि
स्वरूप, परम हितकारी, परम
अद्भुत, सर्व दु.खनो नि'सशय
आत्यतिक क्षय करनार,

परम अमृत स्वरूप एवो सर्वोत्कृष्ट
शाश्वत धर्म जयवत वर्तो,
त्रिकाळ जयवत वर्तो.

ते श्रीमत् अनत चतुष्टयस्थित भगवतनो अने ते जयवत धर्मनो आश्रय सदैव कर्तव्य छे जेने बीजु कई सामर्थ्य नथी एवा अबुध अने अशक्त मनुष्यो पण ते आश्रयना वळथी परम सुखहेतु एवा अद्भुत फळने पाम्या छे, पामे छे अने पामशे माटे निश्चय अने आश्रय ज कर्त्तव्य छे, अधीरजथी खेद कर्त्तव्य नथी

चित्तमा देहादि भयनो विक्षेप पण करवो योग्य नथी.

देहादि सबधी जे पुरुषो हर्षविषाद करता नथी ते पुरुषो पूर्ण द्वादशागने सक्षेपमा समज्या छे एम समजो ए ज दृष्टि कर्त्तव्य छे.

हु धर्म पाम्यो नथी, हु-धर्म केम पामीश ? ए आदि खेद नही करता वीतराग पुरुषोनो धर्म जे देहादि सबधीथी हर्षविषादवृत्ति दूर करी आत्मा असग–शुद्ध–चैतन्य–स्वरूप छे, एवी वृत्तिनो निश्चय अने आश्रय ग्रहण करी ते ज वृत्तिनु बळ राखवु, अने मद वृत्ति थाय त्या वीतराग पुरुषोनी दशानु स्मरण करवु, ते अद्भुत चरित्र पर दृष्टि प्रेरीने वृत्तिने अप्रमत्त करवी, ए सुगम अने सर्वोत्कृष्ट उपकारकारक तथा कल्याण-स्वरूप छे

निर्विकल्प

८

हर्ष-विषाद त्याग

[३६२/४२५]

ज्ञानीना मार्गनो विचार करता जणाय छे के कोई पण प्रकारे मूर्च्छापात्र आ देह नथी, तेने दुःखे शोचवा योग्य आ आत्मा नथी आत्माने आत्म-अज्ञाने शोचवु ए सिवाय बीजो शोच तेने घटतो नथी प्रगट एवा यमने समीप देखता छता जेने देहने विषे मूर्च्छा नथी वर्तती ते पुरुषने नमस्कार छे. ए ज वात चिंतवी राखवी अमने तमने प्रत्येकने घटे छे

देह ते आत्मा नथी, आत्मा ते देह नथी घडाने जोनार जेम घडादिथी भिन्न छे, तेम देहनो जोनार, जाणनार एवो आत्मा ते देहथी भिन्न छे, अर्थात् देह नथी

विचार करता ए वात प्रगट अनुभवसिद्ध थाय छे, तो पछी ए भिन्न देहना तेना स्वाभाविक क्षय-वृद्धि-रूपादि परिणाम जोई हर्ष-शोकवान थवु कोई रीते घटतु नथी, अने अमने तमने ते निर्धार करवो, राखवो घटे छे, अने ए ज्ञानीना मार्गनो मुख्य ध्वनि छे

९

वेदना विजय

[६५०/९२७]

यथार्थं जोईए तो शरीर ए ज वेदनानी मूर्ति छे. समये समये जीव ते द्वाराए वेदना ज वेदे छे. कवचित् शाता अने प्राये अशाता ज वेदे छे. मानसिक अशातानु मुख्यपणु छता ते सूक्ष्म सम्यग्-दृष्टिवानने जणाय छे शारीरिक अशातानु मुख्यपणु स्थूळ दृष्टिवानने पण जणाय छे जे वेदना पूर्वे सुदृढ बधथी जीवे बधन करी छे, ते वेदना उदय सप्राप्त थता इन्द्र, चंद्र, नागेन्द्र के जिनेन्द्र पण रोकवाने समर्थ नथी तेनो उदय जीवे वेदवो ज जोईए. अज्ञान दृष्टि जीवो खेदथी वेदे तोपण कंई ते वेदना घटती नथी के जाती रहेती नथी सत्यदृष्टिवान जीवो शात भावे वेदे तो तेथी ते वेदना वधी जती नथी, पण नवीन बधनो हेतु थती नथी पूर्वनी बळवान निर्जरा थाय छे आत्मार्थीने ए ज कर्तव्य छे

'हु शरीर नथी, पण तेथी भिन्न एवो ज्ञायक आत्मा छु, तेम नित्य शाश्वत छु आ वेदना मात्र पूर्व कर्मनी छे, पण मारु स्वरूप नाश करवाने ते समर्थ नथी, माटे मारे खेद कर्तव्य ज नथी' एम आत्मार्थीनु अनुप्रेक्षण होय छे

१०

जन्म-सार्थकता

[५०३/६९२]

दुर्लभ एवो मनुष्यदेह पण पूर्वे अनत वार प्राप्त थया छता कई पण सफळपणु थयु नही, पण आ मनुष्यदेहने कृतार्थता छे, के जे मनुष्यदेहे आ जीवे ज्ञानीपुरुषने ओळख्या, तथा ते महाभाग्यनो आश्रय कर्यो, जे पुरुपना आश्रये अनेक प्रकारना मिथ्या आग्रहादिनी मदता थई, ते पुरुपने आश्रये आ देह छूटे ए ज सार्थक छे जन्मजरामरणादिने नाश करवावाळु आत्मज्ञान जेमने विषे वर्ते छे, ते पुरुपनो आश्रय ज जीवने जन्मजरामरणादिनो नाश करी शके, केमके ते यथासभव उपाय छे. सयोग संबधे आ देह प्रत्ये आ जीवने जे प्रारब्ध हशे ते व्यतीत थये ते देहनो प्रसग निवृत्त थशे तेनो गमे त्यारे वियोग निश्चये छे, पण आश्रयपूर्वक देह छूटे ए ज जन्म सार्थक छे, के जे आश्रयने पामीने जीव ते भवे अथवा भावि एवा थोडा काळे पण स्वस्वरूपमा स्थिति करे

तमे तथा श्री मुनि प्रसगोपात्त खुशालदास प्रत्ये जवानु राखशो, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रहादि यथाशक्ति धारण करवानी तेमने सभावना देखाय तो मुनिए तेम करवामा प्रतिबध नथी

श्री सद्गुरुए कह्यो छे एवा निर्ग्रंथमार्गनो सदाय आश्रय रहो.

हु देहादि स्वरूप नथी, अने देह, स्त्री, पुत्रादि कोई पण मारा नथी, शुद्ध चैतन्यस्वरूप अविनाशी एवो हु आत्मा छु, एम आत्मभावना करता रागद्वेषनो क्षय थाय

११

असाताजय अने जिनभावना

[६४४/९१३]

अकस्मात् शारीरिक अशातानो उदय थयो छे अने ते शात स्वभावथी वेदवामा आवे छे एम जाणवामा हतु, अने तेथी सतोष प्राप्त थयो हतो

समस्त ससारी जीवो कर्मवशात् शाता-अशातानो उदय अनुभव्या ज करे छे जेमा मुख्यपणे तो अशातानो ज उदय अनुभवाय छे. क्वचित् अथवा कोईक देहसयोगमा शातानो उदय अधिक अनुभवातो जणाय छे, पण वस्तुताए त्या पण अतरदाह बळ्या ज करतो होय छे पूर्ण ज्ञानी पण जे अशातानु वर्णन करी शकवा योग्य वचनयोग धरावता नथी, तेवी अनत अनत अशाता आ जीवे भोगवी छे, अने जो हजु तेना कारणोनो नाश करवामा न आवे तो भोगववी पडे ए सुनिश्चित छे, एम जाणी विचारवान उत्तम पुरुषो ते अतरदाह-रूप शाता अने वाह्याभ्यतर सकलेशअग्निरूपे प्रज्वलित एवी अशातानो आत्यतिक वियोग करवानो मार्ग गवेपवा तत्पर थया, अने ते सन्मार्ग गवेषी, प्रतीत करी, तेने यथायोग्यपणे आराधी, अव्यावाध सुखस्वरूप एवा आत्माना सहज शुद्ध स्वभाव-रूप परमपदमा लीन थया

शाता अशातानो उदय के अनुभव प्राप्त थवाना मूळ कारणोने गवेषता एवा ते महत् पुरुपोने एवी विलक्षण

सानदाश्चर्यक वृत्ति उद्‌भवती के शाता करता अशातानो उदय सप्राप्त थये अने तेमा पण तीव्रपणे ते उदय सप्राप्त थये तेमनु वीर्य विशेषपणे जाग्रत थतु, उल्लास पामतु, अने ते समय कल्याणकारी अधिकपणे समजातो

केटलाक कारणविशेषने योगे व्यवहारदृष्टिथी ग्रहण करवा योग्य औषधादि आत्ममर्यादामा रही ग्रहण करता, परतु मुख्य-पणे ते परम उपशमने ज सर्वोत्कृष्ट औषधरूपे उपासता

उपयोग लक्षणे सनातनस्फुरित एवा आत्माने देहथी, तैजस अने कार्मण शरीरथी पण भिन्न अवलोकवानी दृष्टि साध्य करी, ते चैतन्यात्मकस्वभाव आत्मा निरतर वेदक स्वभाव-वाळो होवाथी अबधदशाने सप्राप्त न थाय त्या सुधी शाता अशातारूप अनुभव वेद्या विना रहेवानो नथी एम निश्चय करी, जे शुभाशुभ परिणामधारानी परिणति वडे ते शाता अशातानो सवध करे छे ते धारा प्रत्ये उदासीन थई, देहादिथी भिन्न अने स्वरूपमर्यादामा रहेला ते आत्नामा जे चल स्वभाव-रूप परिणामधारा छे तेनो आत्यतिक वियोग करवानो सन्मार्ग ग्रहण करी, परमे शुद्ध चैतन्यस्वभावरूप प्रकाशमय ते आत्मा कर्मयोगथी सकलक परिणाम दर्शावे छे तेथी उपराम थई, जेम उपशमित थवाय, ते उपयोगमा अने ते स्वरूपमा स्थिर थवाय, अचल थवाय, ते ज लक्ष, ते ज भावना, ते ज चितवना अने ते ज सहज परिणामरूप स्वभाव करवा योग्य छे महात्माओनी वारवार ए ज शिक्षा छे

ते सन्मार्गने गवेषता, प्रतीत करवा इच्छता, तेने सप्राप्त करवा इच्छता एवा आत्मार्थी जनने परमवीतरागस्वरूप देव,

स्वरूपनैष्ठिक निस्पृह निर्ग्रंथरूप गुरु, परमदयामूळ धर्मव्यवहार अने परमशात रस रहस्यवाकचमय सत्शास्त्र, सन्मार्गनी सपूर्णता थता सुधी परमभक्ति वडे उपासवा योग्य छे, जे आत्माना कल्याणना परमकारणो छे

अत्र एक स्मरण सप्राप्त थयेली गाथा लखी अही आ पत्र सक्षेपीए छीए.

भीसण नरयगईए, तिरियगईए कुदेवमणुयगईए;

पत्तोसि तिव्व दुःख, भावहि जिणभावणा जीव.

भयंकर नरकगतिमा, तिर्यंचगतिमा अने माठी देव तथा मनुष्यगतिमा हे जीव! तु तीव्र दुखनें पाम्यो, माटे हवे तो जिनभावना (जिन भगवान जे परमशात रसे परिणमी स्वरूपस्थ थया ते परमशातस्वरूप चिंतवना) भाव–चिंतव (के जेथी तेवा अनत दुखोनो आत्यतिक वियोग थई परम अव्याबाध सुखसपत्ति सप्राप्त थाय) ॐ शाति शाति शाति

१२

ममत्व निवृत्ति

[५६२/७२८]

श्री माणेकचंदनो देह छूटवा संबधी खबर जाण्या.

सर्व देहधारी जीवो मरण पासे शरणरहित छे मात्र ते देहनु यथार्थ स्वरूप प्रथमथी जाणी तेनु ममत्व छेदीनें निजस्थिरताने अथवा ज्ञानीना मार्गनी यथार्थ प्रतीतिने पाम्या छे ते ज जीव ते मरणकाळे शरणसहित छता घणु करीने

फरी देह धारण करता नथी, अथवा मरणकाळे देहना ममत्व-भावनु अल्पत्व होवाथी पण निर्भय वर्ते छे. देह छूटवानो काळ अनियत होवाथी विचारवान पुरुषो अप्रमादपणे प्रथमथी ज तेनु ममत्व निवृत्त करवानो अविरुद्ध उपाय साधे छे, अने ए ज तमारे, अमारे, सौए लक्ष राखवा योग्य छे प्रीतिबधनथी खेद थवा योग्य छे, तथापि एमा बीजो कोई उपाय नही होवाथी ते खेदने वैराग्यस्वरूपमा परिणमन करवो ए ज विचारवानने कर्तव्य छे.

१३

असंग दशा

[६०३/७७९]

ॐ सर्वज्ञ

स्वभावजागृतदशा

चित्रसारी न्यारी, परजक न्यारो, सेज न्यारी,
चादरि भी न्यारी, इहा झूठी मेरी थपना,
अतीत अवस्था सैन, निद्रावाहि कोउ पै न,
विद्यमान पलक न, यामै अब छपना,
स्वास औ सुपन दोउ, निद्राकी अलंग वूझे,
सूझै सब अग लखि, आतम दरपना,
त्यागी भयौ चेतन, अचेतनता भाव त्यागि,
भालै दृष्टि खोलिकै, सभालै रूप अपना.

अनुभवउत्साहदशा

जैसौ निरभेदरूप, निहचै अतीत हुतो,
तैसी निरभेद अब, भेदकौ न गहैगौ।
दीसै कर्मरहित सहित सुख समाधान,
पायौ निजथान फिर वाहरि न बहैगौ,
कबहू कदापि अपनौ सुभाव त्यागि करि,
राग रस राचिकै न परवस्तु गहैगौ,
अमलान ज्ञान विद्यमान परगट भयौ,
याहि भाति आगम अनतकाल रहैगौ

स्थितिदशा

एक परिनामके न करता दरव दोई,
दोई परिनाम एक दर्व न धरतु है,
एक करतूति दोई दर्व कबहूँ न करै,
दोई करतूति एक दर्व न करतु है,
जीव पुद्गल एक खेत अवगाही दोउ,
अपनें अपने रूप दोउ कोउ न टरतु है,
जड परिनामनिकौ करता है पुद्गल,
चिदानन्द चेतन सुभाव आचरतु है

श्री सोभागने विचारने अर्थे आ कागळ लख्यो छे, ते हाल श्री अबालाले अथवा बीजा एक योग्य मुमुक्षुए तेमने ज सभळाववो योग्य छे

सर्व अन्यभावथी आत्मा रहित छे, केवळ एम जेने अनुभव वर्ते छे ते 'मुक्त' छे.

बीजा सर्व द्रव्यथी असगपणु, क्षेत्रथो असंगपणु, काळथो असगपणु अने भावथी असगपणु सर्वथा जेने वर्ते छे ते 'मुक्त' छे.

अटळ अनुभवस्वरूप आत्मा सर्व द्रव्यथी प्रत्यक्ष जुदो भासवो त्याथी मुक्तदशा वर्ते छे ते पुरुष मौन थाय छे, ते पुरुष अप्रतिबद्ध थाय छे, ते पुरुष असग थाय छे, ते पुरुष निर्विकल्प थाय छे अने ते पुरुष मुक्त थाय छे

जेणे त्रणे काळने विषे देहादियो पोतानो कईपण सबध नहोतो एवी असगदशा उत्पन्न करी ते भगवानरूप सत्यपुरुषोने नमस्कार छे.

तिथि आदिनो विकल्प छोडी निज विचारमा वर्तवु ए ज कर्तव्य छे

शुद्ध सहज आत्मस्वरूप.

१४

समदशा

[६०४/७८०]

जेने कोई पण प्रत्ये राग, द्वेष रह्या नथी,
ते महात्माने वारवार नमस्कार

"आत्मसिद्धि" ग्रथना सक्षेप अर्थनु पुस्तक तथा केटलाक उपदेशपत्रोनी प्रत अत्रे हती ते आजे टपालमा

मोकल्या छे बन्नेमा मुमुक्षु जीवने विचारवा योग्य घणा प्रसगो छे

परमयोगी एवा श्री ऋषभदेवादि पुरुषो पण जे देहने राखी शक्या नथी, ते देहमा एक विशेषपणु रह्यु छे ते ए के, तेनो सबध वर्ते त्या सुधीमा जीवे असगपणु, निर्मोहपणु करी लई अबाध्य अनुभवस्वरूप एवु निजस्वरूप जाणी, बीजा सर्व भाव प्रत्येथी व्यावृत्त (छूटा) थवु, के जेथी फरी जन्म-मरणनो फेरो न रहे ते देह छोडती वखते जेटला अंशे असंगपणु, निर्मोहपणु, यथार्थ समरसपणु रहे छे तेटलु मोक्षपद नजीक छे एम परम ज्ञानी पुरुषनो निश्चय छे.

कई पण मन, वचन, कायाना योगथी अपराध थयो होय जाणता अथवा अजाणता ते सर्व विनयपूर्वक खमावु छु, घणा नम्रभावथी खमावु छु

आ देहे करवा योग्य कार्य तो एक ज छे के कोई प्रत्ये राग अथवा कोई प्रत्ये किंचित्मात्र द्वेष न रहे सर्वत्र समदशा वर्ते ए ज कल्याणनो मुख्य निश्चय छे ए ज विनति

१५
वीतराग दशा

[६०५/७८१]

परमपुरुषदशावर्णन

'कीचसौ कनक जाकै, नीच सौ नरेसपद,
मीचसी मिताई, गरुवाई जाकै गारसी,

जहरसी जोग जाति, कहरसी करामाति,
हहरसी हौस, पुद्गलछवि छारसी,
जालसौ जगबिलास, भालसौ भुवनवास,
कालसौ कुटुबकाज, लोकलाज लारसी,
सीठसौ सुजसु जानै, बीठसौ वखत मानै,
ऐसी जाकी रीति ताही, वदत वनारसी '

जे कचनने कादव सरखु जाणे छे, राजगादीने नीचपद सरखी जाणे छे, कोईथी स्नेह करवो तेने मरण समान जाणे छे, मोटाईने लीपवानी गार जेवी जाणे छे, कीमिया वगेरे जोगने झेर समान जाणे छे, सिद्धि वगेरे ऐश्वर्यने अशाता समान जाणे छे, जगतमा पूज्यता थवा आदिनी होसने अनर्थ समान जाणे छे, पुद्गलनी छबी एवी औदारिकादि कायाने राख जेवी जाणे छे, जगतना भोगविलासने मूझावारूप जाळ समान जाणे छे, घरवासने भाला समान जाणे छे, कुटुबना कार्यने काळ एटले मृत्यु समान जाणे छे, लोकमा लाज वधारवानी इच्छाने मुखनी लाळ समान जाणे छे, कीर्तिनी इच्छाने नाकना मेल जेवी जाणे छे अने पुण्यना उदयने जे विष्टा समान जाणे छे, एवी जेनी रीति होय तेने बनारसीदास वदना करे छे

कोईने अर्थे विकल्प नही आणता असगपणु ज राखशो जेम जेम सत्पुरुषना वचन तेमने प्रतीतिमा आवशे, जेम जेम आज्ञाथी अस्थिमिजा रंगाशे, तेम तेम ते ते जीव आत्मकल्याणने सुगमपणे पामशे, एम निःसदेहता छे.

त्रबक, मणि वगेरे मुमुक्षुने तो सत्समागम विषेनी रुचि अतर इच्छाथी कईक आ अवसरना समागममा थई छे, एटले एकदम दशा विशेष ना थाय तोपण आश्चर्य नथी.

खरा अत करणे विशेष सत्समागमना आश्रयथी जीवने उत्कृष्ट दशा पण घणा थोडा वखतमा प्राप्त थाय छे

व्यवहार अथवा परमार्थ सबधी कोई पण जीव विषेनी वृत्ति होय ते उपशात करी केवळ असग उपयोगे अथवा परमपुरुषनी उपर कही छे ते दशाना अवलबने आत्मस्थिति करवी एम विज्ञापना छे, केमके बीजो कोई पण विकल्प राखवा जेवु नथी जे कोई साचा अत करणे सत्पुरुषना वचनने ग्रहण करशे ते सत्यने पामशे एमा कई सशय नथी, अने शरीरनिर्वाहादि व्यवहार सौ सौना प्रारब्ध प्रमाणे प्राप्त थवा योग्य छे, एटले ते विषे पण कई विकल्प राखवा योग्य नथी जे विकल्प तमे घणु करीने शमाव्यो छे, तोपण निश्चयना बळवानपणाने अर्थे दर्शाव्यु छे

सर्व जीव प्रत्ये, सर्वभाव प्रत्ये अखड एकरस वीतराग-दशा राखवी ए ज सर्व ज्ञाननु फळ छे आत्मा शुद्धचैतन्य, जन्मजरामरणरहित असग स्वरूप छे, एमा सर्व ज्ञान समाय छे, तेनी प्रतीतिमा सर्व सम्यक्दर्शन समाय छे, आत्माने असगस्वरूपे स्वभावदशा रहे ते सम्यक्चारित्र, उत्कृष्ट सयम अने वीतरागदशा छे जेना सपूर्णपणानु फळ सर्वदु खनो क्षय छे, ए केवळ नि सदेह छे, केवळ नि सदेह छे. ए ज विनति.

१६

भेदज्ञान एज ज्ञानीनो जाप

[७७३/१६–२०]

१६ ज्ञानीओए मानेलु छे के आ देह पोतानो नथी, ते रहेवानो पण नथी, ज्यारे त्यारे पण तेनो वियोग थवानो छे. ए भेदविज्ञानने लईने हमेशा नगारा वागता होय तेवी रीते तेना काने पडे छे, अने अज्ञानीना कान बहेरा होय छे एटले ते जाणतो नथी.

१७ ज्ञानी देह जवानो छे एम समजी तेनो वियोग थाय तेमा खेद करता नथी पण जेवी रीते कोईनी वस्तु लीधी होय ने तेने पाछी आपवी पडे तेम देहने उल्लासथी पाछो सोपे छे, अर्थात् देहमा परिणमता नथी

१८ देह अने आत्मानो भेद पाडवो ते 'भेदज्ञान', ज्ञानीनो ते जाप छे ते जापथी देह अने आत्मा जुदा पाडी शके छे ते भेदविज्ञान थवा माटे महात्माओए सकळ शास्त्रो रच्या छे जेम तेजाबथी सोनु तथा कथीर जुदा पडे छे, तेम ज्ञानीना भेदविज्ञानना जापरूप तेजाबथी स्वाभाविक आत्मद्रव्य अगुरुलघु स्वभाववाळु होईने प्रयोगी द्रव्यथी जुदु पडी स्वधर्ममा आवे छे

१९ बीजा उदयमा आवेला कर्मोनु आत्मा गमे तेम समाधान करी शके, पण वेदनीयकर्ममा तेम थई शके नही, ने ते आत्मप्रदेशे वेदवु ज जोईए, ने ते वेदता मुश्केलीनो पूर्ण अनुभव थाय छे त्या जो भेदज्ञान सपूर्ण प्रगट थयु न

होय तो आत्मा देहाकारे परिणमे, एटले देह पोतानो मानी लई वेदे छे, अने तेने लईने आत्मानी शातिनो भग थाय छे. आवा प्रसगे जेमने भेदज्ञान सपूर्ण थयु छे एवा ज्ञानीओने अशातावेदनी वेदता निर्जरा थाय छे, ने त्या ज्ञानीनी कसोटी थाय छे एटले बीजा दर्शनोवाळा त्या ते प्रमाणे टकी शकता नथी, ने ज्ञानी एवी रीते मानीने टकी शके छे.

२० पुद्‌गलद्रव्यनी दरकार राखवामा आवे तोपण ते ज्यारे त्यारे चाल्यु जवानु छे, अने जे पोतानु नथी ते पोतानु थवानु नथी, माटे लाचार थई दीन बनवु ते शा कामनु?

१७

अविषम उपयोगने नमस्कार

[५६३/७३५]

विषमभावना निमित्तो बळवानपणे प्राप्त थया छता जे ज्ञानीपुरुष अविषम उपयोगे वर्त्या छे, वर्ते छे, अने भविष्यकाळे वर्ते ते सर्वने वारवार नमस्कार

उत्कृष्टमा उत्कृष्ट व्रत, उत्कृष्टमा उत्कृष्ट तप, उत्कृष्टमा उत्कृष्ट नियम, उत्कृष्टमा उत्कृष्ट लब्धि, उत्कृष्टमा उत्कृष्ट ऐश्वर्य, ए जेमा सहेजे शमाय छे एवा निरपेक्ष अविषम उपयोगने नमस्कार ए ज ध्यान

१८

अंतिम आराधना

[५५४/११५-१७]

छूटे देहाध्यास तो नहि कर्ता तु कर्म,
नहि भोक्ता तु तेहनो, एज धर्मनो मर्म. ११५
एज धर्मथी मोक्ष छे, तु छो मोक्षस्वरूप,
अनंत दर्शन ज्ञान तु, अव्याबाध स्वरूप ११६
शुद्ध बुद्ध चैतन्यघन स्वय ज्योति सुखधाम,
बीजु कहिये केटलु ? कर विचार तो पाम. ११७

परम गुरु निर्ग्रंथ सर्वज्ञ देव.

आत्म-सिद्धि*

आत्मसिद्धिशास्त्र सार्थ

[५२६/७१८]

नडियाद, आसो वद १, गुरु, १९५२

जे स्वरूप समज्या विना, पाम्यो दुख अनत,
समजाव्यु ते पद नमु, श्री सद्गुरु भगवंत. १

---

* आ 'आत्मसिद्धिशास्त्र'नी १४२ गाथा 'आत्मसिद्धि' तरीके स १९५२ना आसो वद १ गुरुवार नडियादमा श्रीमद्नी स्थिरता हती त्यारे रची हती आ गाथाओना टूका कर्थ खभातना एक परम मुमुक्षु श्री अबालाल लालचदे करेल छे जे श्रीमद्नी

होय तो आत्मा देहाकारे परिणमे, एटले देह पोतानो मानी लई वेदे छे, अने तेने लईने आत्मानी शातिनो भग थाय छे आवा प्रसगे जेमने भेदज्ञान सपूर्ण थयु छे एवा ज्ञानीओने अशातावेदनी वेदता निर्जरा थाय छे, ने त्या ज्ञानीनी कसोटी थाय छे एटले बीजा दर्शनोवाळा त्या ते प्रमाणे टकी शकता नथी, ने ज्ञानी एवी रीते मानीने टकी शके छे.

२० पुद्‌गलद्रव्यनी दरकार राखवामा आवे तोपण ते ज्यारे त्यारे चाल्यु जवानु छे, अने जे पोतानु नथी ते पोतानु थवानु नथी, माटे लाचार थई दीन बनवु ते शा कामनु?

१७

अविषम उपयोगने नमस्कार

[५६३/७३५]

विषमभावना निमित्तो बळवानपणे प्राप्त थया छता जे ज्ञानीपुरुष अविषम उपयोगे वर्त्या छे, वर्ते छे, अने भविष्यकाळे वर्ते ते सर्वने वारवार नमस्कार

उत्कृष्टमा उत्कृष्ट व्रत, उत्कृष्टमा उत्कृष्ट तप, उत्कृष्टमा उत्कृष्ट नियम, उत्कृष्टमा उत्कृष्ट लब्धि, उत्कृष्टमा उत्कृष्ट ऐश्वर्य, ए जेमा सहेजे गमाय छे एवा निरपेक्ष अविषम उपयोगने नमस्कार ए ज ध्यान

१८

अंतिम आराधना

[५५४/११५-१७]

छूटे देहाध्यास तो नहि कर्ता तु कर्म,
नहि भोक्ता तु तेहनो, एज धर्मनो मर्म   ११५
एज धर्मथी मोक्ष छे, तु छो मोक्षस्वरूप,
अनत दर्शन ज्ञान तु, अव्याबाध स्वरूप   ११६
शुद्ध बुद्ध चैतन्यघन स्वय ज्योति सुखधाम,
बीजु कहिये केटलु ? कर विचार तो पाम   ११७

परम गुरु निर्ग्रंथ सर्वज्ञ देव.

आत्म-सिद्धि*

आत्मसिद्धिशास्त्र सार्थ

[५२६/७१८]

नडियाद, आसो वद १, गुरु, १९५२

जे स्वरूप समज्या विना, पाम्यो दुख अनत,
समजाव्यु ते पद नमु, श्री सद्गुरु भगवत. १

---

* आ 'आत्मसिद्धिशास्त्र'नी १४२ गाथा 'आत्मसिद्धि' तरीके स १९५२ना आसो वद १ गुरुवार नडियादमा श्रीमद्नी स्थिरता हती त्यारे रची हती आ गाथाओना टूका अर्थ खभातना एक परम मुमुक्षु श्री अबालाल लालचदे करेल छे जे श्रीमद्नी

जे आत्मस्वरूप समज्या विना भूतकाळे हु अनंत दुःख पाम्यो, ते पद जेणे समजाव्यु एटले भविष्यकाळे उत्पन्न थवा योग्य एवा अनंत दुःख पामत ते मूळ जेणे छेद्यु एवा श्रीसद्‌गुरू भगवानने नमस्कार करु छु (१)

वर्तमान आ काळमा, मोक्षमार्ग बहु लोप,
[1]विचारवा आत्मार्थीने भाख्यो अत्र आगोप्य २

आ वर्तमान काळमा मोक्षमार्ग घणो लोप थई गयो छे, जे मोक्षमार्ग आत्मार्थीने विचारवा माटे (गुरु–शिष्यना संवादरूपे) अत्रे प्रगट कहीए छीए (२)

कोई क्रियाजड थई रह्या, शुष्कज्ञानमा कोई,
माने मारग मोक्षनो, करुणा ऊँपजे जोई ३

कोई क्रियाने ज वळगी रह्या छे, अने कोई शुष्कज्ञानने ज वळगी रह्या छे, एम मोक्षमार्ग माने छे, जे जोईने दया आवे छे (३)

बाह्य क्रियामा राचता, अतर्भेद न काई,
ज्ञानमार्ग निषेधता, तेह क्रियाजड आई ४

बाह्य क्रियामा ज मात्र राची रह्या छे, अतर कई

दृष्टि तळे ते वखते नीकळी गयेल छे (जुओ आक ७३०नो पत्र) आ उपरात 'श्रीमद् राजचद्र'नी पहेली अने बीजी आवृत्तिमाना आक ४४२, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१ना पत्रो श्रीमदे पोते आत्मसिद्धिना विवेचन रूपे लखेल छे, जे आत्मसिद्धि रची तेने बीजे दिवसे एटले आसो वद २, १९५२ना लखायला छे आ विवेचन जे जे गाथा अगेनु छे ते ते गाथा नीचे आपेल छे

१ पाठातर गुरु शिष्य सवादथी, कहीए ते आगोप्य

भेदायु नथी, अने ज्ञानमार्गने निषेध्या करे छे, ते अही क्रियाजड कह्या छे (४)

बध मोक्ष छे कल्पना, भाखे वाणी माही,
वर्ते मोहावेशमा, शुष्कज्ञानी ते आही ५

बध, मोक्ष मात्र कल्पना छे, एवा निश्चयवाक्य मात्र वाणीमा बोले छे, अने तथारूप दशा थई नथी, मोहना प्रभावमा वर्ते छे, ए अही शुष्कज्ञानी कह्या छे (५)

वैराग्यादि सफळ तो, जो सह आतमज्ञान,
तेम ज आतमज्ञानना, प्राप्तितणा निदान. ६

वैराग्यत्यागादि जो साथे आत्मज्ञान होय तो सफळ छे, अर्थात् मोक्षनी प्राप्तिना हेतु छे, अने ज्या आत्मज्ञान न होय त्या पण जो ते आत्मज्ञानने अर्थे करवामा आवता होय, तो ते आत्मज्ञाननी प्राप्तिना हेतु छे (६)

वैराग्य, त्याग, दयादि अंतरग वृत्तिवाळी क्रिया छे ते जो साथे आत्मज्ञान होय तो सफळ छे अर्थात् भवनु मूळ छेदे छे, अथवा वैराग्य, त्याग, दयादि आत्मज्ञाननी प्राप्तिना कारणो छे एटले जीवमा प्रथम ए गुणो आव्येथी सद्गुरुनो उपदेश तेमा परिणाम पामे छे उज्ज्वळ अत करण विना सद्गुरुनो उपदेश परिणमतो नथी, तेथी वैराग्यादि आत्मज्ञाननी प्राप्तिना साधनो छे एम कह्यु

अत्रे जे जीवो क्रियाजड छे तेने एवो उपदेश कर्यो के काया ज मात्र रोकवी ते काई आत्मज्ञाननी प्राप्तिना हेतु नथी, वैराग्यादि गुणो आत्मज्ञाननी प्राप्तिना हेतु छे, माटे

तमे ते क्रियाने अवगाहो, अने ते क्रियामा पण अटकीने रहेवु घटतु नथी, केमके आत्मज्ञान विना ते पण भवनु मूळ छेदी शकता नथी माटे आत्मज्ञाननी प्राप्तिने अर्थे ते वैराग्यादि गुणोमा वर्तो, अने कायक्लेश-रूप पण कषायादिनु जेमा तथारूप कई क्षीणपणु थतु नथी तेमा तमे मोक्षमार्गनो दुराग्रह राखो नही, एम क्रियाजडने कह्यु, अने जे शुष्कज्ञानीओ त्यागवैराग्यादि रहित छे, मात्र वाचाज्ञानी छे तेने एम कह्यु के वैराग्यादि साधन छे ते आत्मज्ञाननी प्राप्तिना कारणो छे, कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी, तमे वैराग्यादि पण पाम्या नथी, तो आत्मज्ञान क्याथी पाम्या हो ते कईक आत्मामा विचारो संसार प्रत्ये बहु उदासीनता, देहनी मूर्च्छानु अल्पत्व, भोगमा अनासक्ति, तथा मानादिनु पातळापणु ए आदि गुणो विना तो आत्मज्ञान परिणाम पामतु नथी, अने आत्मज्ञान पाम्ये तो ते गुणो अत्यत दृढ थाय छे, केमके आत्मज्ञानरूप मूळ तेने प्राप्त थयु. तेने बदले तमे आत्मज्ञान अमने छे एम मानो छो अने आत्मामा तो भोगादि कामनानो अग्नि बळ्या करे छे, पूजा सत्कारादिनो कामना वारवार स्फुरायमान थाय छे, सहज अशाताए बहु आकुळ-व्याकुळता थई जाय छे, ते केम लक्षमा आवता नथी के आ आत्मज्ञानना लक्षणो नही। 'मात्र मानादि कामनाए आत्मज्ञानी कहेवरावु छु,' एम जे समजवामा आवतुं नथी ते समजो, अने वैराग्यादि साधनो प्रथम तो आत्मामा उत्पन्न करो के जेथी आत्मज्ञाननी सन्मुखता थाय (६)

त्याग विराग न चित्तमा, थाय न तेने ज्ञान,
अटके त्याग विरागमा, तो भूले निजभान ७

जेना चित्तमा त्याग अने वैराग्यादि साधनो उत्पन्न थया न होय तेने ज्ञान न थाय, अने जे त्याग विरागमा ज अटकी रही, आत्मज्ञाननी आकाक्षा न राखे, ते पोतानु भान भूले, अर्थात् अज्ञानपूर्वक त्यागवैराग्यादि होवाथी ते पूजासत्कारादिथी पराभव पामे, अने आत्मार्थ चूकी जाय (७)

जेना अत करणमा त्यागवराग्यादि गुणो उत्पन्न थया नथी एवा जीवने आत्मज्ञान न थाय केमके मलिन अत करणरूप दर्पणमा आत्मोपदेशनु प्रतिबिब पडवु घटतु नथी तेम ज मात्र त्यागवैराग्यमा राचीने कृतार्थता माने ते पण पोताना आत्मानु भान भूले अर्थात् आत्मज्ञान नही होवाथी अज्ञाननु सहचारीपणु छे, जेथी ते त्यागवैराग्यादिनु मान उत्पन्न करवा अर्थे अने मानार्थे सर्व सयमादि प्रवृत्ति थई जाय, जेथी ससारनो उच्छेद न थाय, मात्र त्या ज अटकवु थाय अर्थात् ते आत्मज्ञानने पामे नही एम क्रियाजडने साधन–क्रिया अने ते साधननु जेथी सफळपणु थाय छे एवा आत्मज्ञाननो उपदेश कर्यो अने शुष्कज्ञानीने त्याग वैरागादि साधननो उपदेश करी वाचाज्ञानमा कल्याण नथी एम प्रेर्यु (७)

ज्या ज्या जे जे योग्य छे, तहा समजवु तेह,
त्या त्या ते ते आचरे, आत्मार्थी जन एह ८

ज्या ज्या जे जे योग्य छे, त्या त्या ते ते समजे, अने त्या त्या ते ते आचरे ए आत्मार्थी पुरुषना लक्षणो छे (८)

जे जे ठेकाणे जे जे योग्य छे एटले ज्या त्यागवैराग्यादि योग्य होय त्या त्यागवैराग्यादि समजे, ज्या आत्मज्ञान योग्य

तेने विचारनो अवकाश रह्यो नथी. एम क्रियाजड अथवा शुष्कज्ञानी ते बन्ने भूल्या छे, अने ते परमार्थ पामवानी वाछा राखे छे, अथवा परमार्थ पाम्या छीए एम कहे छे, ते मात्र तेमनो दुराग्रह ते प्रत्यक्ष देखाय छे. जो सद्गुरुना चरण सेव्या होत, तो एवा दुराग्रहमा पडी जवानो वखत न आवत, अने आत्मसाधनमा जीव दोरात, अने तथारूप साधनथी परमार्थने पामत, अने निजपदनो लक्ष लेत, अर्थात् तेनी वृत्ति आत्मसन्मुख थात

वळी ठाम ठाम एकाकीपणे विचरवानो निषेध कर्यो छे, अने सद्गुरुनी सेवामा विचरवानो ज उपदेश कर्यो छे, तेथी पण एम समजाय छे के जीवने हितकारी अने मुख्य मार्ग ते ज छे, अने असद्गुरुथी पण कल्याण थाय एम कहेवु ते तो तीर्थंकरादिनी, ज्ञानीनी आसातना करवा समान छे, केमके तेमा अने असद्गुरुमा कई भेद न पड्यो, जन्माध, अने अत्यत शुद्ध निर्मळ चक्षुवाळानु कई न्यूनाधिकपणु ठर्यु ज नही वळी कोई 'श्री ठाणागसूत्र'नी चोभगी[1] ग्रहण करीने एम कहे के 'अभव्यना तार्या पण तरे,' तो ते वचन पण वदतोव्याघात जेवु छे, एक तो मूळमा 'ठाणाग'मा ते प्रमाणे पाठ ज नथी, जे पाठ छे ते आ प्रमाणे छे –[2] . . तेनो शब्दार्थ आ प्रमाणे छे –[2] . . तेनो विशेषार्थ टीकाकारे आ प्रमाणे कर्यो छे –[2] . जेमा कोई स्थळे अभव्यना तार्या तरे एवु कह्यु नथी, अने कोई

१ जुओ आक ५४२ 'श्रीमद्राजचन्द्र'

२ मूळ पाठ मूकवा धारेलो पण मुकायो लागतो नथी.

एक टबामा कोईए एवु वचन लख्यु छे ते तेनी समजनु अयथार्थपणु समजाय छे.

कदापि एम कोई कहे के अभव्य कहे छे ते यथार्थ नथी, एम भासवाथी यथार्थ शु छे, तेनो लक्ष थवाथी स्वविचारने पामीने तर्या एम अर्थ करीए तो ते एक प्रकारे सभवित थाय छे, पण तेथी अभव्यना तार्या तर्या एम कही शकातु नथी एम विचारी जे मार्गथी अनत जीव तर्या छे, अने तरशे ते मार्गने अवगाहवो अने स्वकल्पित अर्थनो मानादिनी जाळवणो छोडी दई त्याग करवो ए ज श्रेय छे जो अभव्यथी तराय छे एम तमे कहो, तो तो अवश्य निश्चय थाय छे के असद्गुरुथी तराशे एमा कशो सदेह नथी

अने अशोच्या केवळी जेमणे पूर्वे कोई पासेथी धर्म साभळ्यो नथी तेने कोई तथारूप आवरणना क्षयथी ज्ञान ऊपज्यु छे, एम शास्त्रमा निरूपण कर्यु छे, ते आत्मानु माहात्म्य दर्शाववा, अने जेने सद्गुरुयोग न होय तेने जाग्रत करवा, ते ते अनेकातमार्ग निरूपण करवा दर्शाव्यु छे, पण सद्गुरुआज्ञाए प्रवर्तवानो मार्ग उपेक्षित करवा दर्शाव्यु नथी. वळी ए स्थळे तो ऊलटु ते मार्ग उपर दृष्टि आववा वधारे सबळ कर्यु छे, अने कह्यु छे, के ते अशोच्या केवळी[1] .. अर्थात् अशोच्या केवळीनो आ प्रसग साभळीने कोईए जे शाश्वतमार्ग चाल्यो आवे छे, तेना निषेध प्रत्ये जवु एवो आशय नथी, एम निवेदन कर्यु छे.

---

१ मूळ पाठ मूकवा धारेलो पण मुकायो लागतो नथी.

तेने विचारनो अवकाश रह्यो नथी. एम क्रियाजड अथवा शुष्कज्ञानो ते बन्ने भूल्या छे, अने ते परमार्थ पामवानी वाछा राखे छे, अथवा परमार्थ पाम्या छीए एम कहे छे, ते मात्र तेमनो दुराग्रह ते प्रत्यक्ष देखाय छे जो सद्गुरुना चरण सेव्या होत, तो एवा दुराग्रहमा पडी जवानो वखत न आवत, अने आत्मसाधनमा जीव दोरात, अने तथारूप साधनथी परमार्थने पामत, अने निजपदनो लक्ष लेत, अर्थात् तेनी वृत्ति आत्मसन्मुख थात

वळी ठाम ठाम एकाकीपणे विचरवानो निषेध कर्यो छे, अने सद्गुरुनी सेवामा विचरवानो ज उपदेश कर्यो छे, तेथी पण एम समजाय छे के जीवने हितकारी अने मुख्य मार्ग ते ज छे, अने असद्गुरुथी पण कल्याण थाय एम कहेवु ते तो तीर्थंकरादिनी, ज्ञानीनी आसातना करवा समान छे, केमके तेमा अने असद्गुरुमा कई भेद न पड्यो, जन्माध, अने अत्यत शुद्ध निर्मळ चक्षुवाळानु कई न्यूनाधिकपणु ठर्यु ज नही वळी कोई 'श्री ठाणागसूत्र'नी चोभगी[1] ग्रहण करीने एम कहे के 'अभव्यना तार्या पण तरे,' तो ते वचन पण वदतोव्याघात जेवु छे, एक तो मूळमा 'ठाणाग'मा ते प्रमाणे पाठ ज नथी, जे पाठ छे ते आ प्रमाणे छे –[2] . . . . तेनो शब्दार्थ आ प्रमाणे छे –[2] . . तेनो विशेषार्थ टीकाकारे आ प्रमाणे कर्यो छे –[2]. . जेमा कोई स्थळे अभव्यना तार्या तरे एवु कह्यु नथी, अने कोई

---

१ जुओ आक ५४२ 'श्रीमद्राजचन्द्र'

२ मूळ पाठ मूकवा धारेलो पण मुकायो लागतो नथी.

एक टबामा कोईए एवु वचन लख्यु छे ते तेनी समजनु अयथार्थपणु समजाय छे.

कदापि एम कोई कहे के अभव्य कहे छे ते यथार्थ नथी, एम भासवाथी यथार्थ शु छे, तेनो लक्ष थवाथी स्वविचारने पामीने तर्या एम अर्थ करीए तो ते एक प्रकारे सभवित थाय छे, पण तेथी अभव्यना तार्या तर्या एम कही शकातु नथी एम विचारी जे मार्गथी अनत जीव तर्या छे, अने तरशे ते मार्गने अवगाहवो अने स्वकल्पित अर्थनो मानादिनी जाळवणो छोडी दई त्याग करवो ए ज श्रेय छे. जो अभव्यथी तराय छे एम तमे कहो, तो तो अवश्य निश्चय थाय छे के असद्गुरुथी तराशे एमा कशो सदेह नथी

अने अशोच्या केवळी जेमणे पूर्वे कोई पासेथी धर्म साभळ्यो नथी तेने कोई तथारूप आवरणना क्षयथी ज्ञान ऊपज्यु छे, एम शास्त्रमा निरूपण कर्यु छे, ते आत्मानु माहात्म्य दर्शाववा, अने जेने सद्गुरुयोग न होय तेने जाग्रत करवा, ते ते अनेकातमार्ग निरूपण करवा दर्शाव्यु छे, पण सद्गुरुआज्ञाए प्रवर्तवानो मार्ग उपेक्षित करवा दर्शाव्यु नथी. वळी ए स्थळे तो ऊलटु ते मार्ग उपर दृष्टि आववा वधारे सबळ कर्यु छे, अने कह्यु छे, के ते अशोच्या केवळी[१] .. अर्थात् अशोच्या केवळीनो आ प्रसग साभळीने कोईए जे शाश्वतमार्ग चाल्यो आवे छे, तेना निषेध प्रत्ये जवु एवो आशय नथी, एम निवेदन कर्यु छे.

---

१ मूळ पाठ मूकवा धारेलो पण मुकायो लागतो नथी.

कोई तीव्र आत्मार्थीने एवो कदापि सद्‌गुरुनो योग न मळ्यो होय, अने तेनी तीव्र कामनामा ने कामनामा ज निजविचारमा पडवाथी, अथवा तीव्र आत्मार्थने लीधे निजविचारमा पडवाथी आत्मज्ञान थयु होय तो ते सद्‌गुरुमार्गनो उपेक्षित नहो एवो, अने सद्‌गुरुथी पोताने ज्ञान मळ्यु नथी माटे मोटो छु एवो नही होय, तेने थयु होय, एम विचारी विचारवान जीवे शाश्वत मोक्षमार्गनो लोप न थाय तेवु वचन प्रकाशवु जोईए

एक गामथी बीजे गाम जवु होय अने तेनो मार्ग दीठो न होय एवो पोते पचाश वर्षनो पुरुष होय, अने लाखो गाम जोई आव्यो होय तेने पण ते मार्गनी खबर पडती नथी, अने कोईने पूछे त्यारे जणाय छे, नही तो भूल खाय छे, अने ते मार्गने जाणनार एवु दश वर्षनु बाळक पण तेने ते मार्ग देखाडे छे तेथी ते पहोची शके छे, एम लौकिकमा अथवा व्यवहारमा पण प्रत्यक्ष छे माटे जे आत्मार्थी होय, अथवा जेने आत्मार्थनी इच्छा होय तेणे सद्‌गुरुना योगे तरवाना कामी जीवनु कल्याण थाय ए मार्ग लोपवो घटे नही, केमके तेथी सर्व ज्ञानी पुरुषनी आज्ञा लोपवा बराबर थाय छे.

पूर्वे सद्‌गुरुनो योग तो घणी वखत थयो छे छता जीवनु कल्याण थयु नही, जेथी सद्‌गुरुना उपदेशनु एवु कई विशेषपणु देखातु नथी, एम आशका थाय तो तेनो उत्तर बीजा पदमा ज कह्यो छे के —

जे पोताना पक्षने त्यागी दई सद्‌गुरुना चरणने सेवे, ते परमार्थने पामे अर्थात् पूर्वे सद्‌गुरुनो योग थवानी वात सत्य छे, परतु त्या जीवे तेने सद्‌गुरु जाण्या नथी, अथवा

ओळख्या नथी, प्रतीत्या नथी, अने तेनी पासे पोताना मान अने मत मूक्या नथी, अने तेथी सद्‌गुरुनो उपदेश परिणाम पाम्यो नही, अने परमार्थनो प्राप्ति थई नही, एम जो पोतानो मत एटले स्वच्छद अने कुळधर्मनो आग्रह दूर करीने सदुपदेश ग्रहण करवानो कामी थयो होत तो अवश्य परमार्थ पामत

अत्रे असद्‌गुरुए दृढ करावेला दुर्बोधथी अथवा मानादिकना तीव्र कामीपणाथी एम पण आशका थवी सभवे छे के कईक जीवोना पूर्वे कल्याण थया छे, अने तेमने सद्‌गुरुना चरण सेव्या विना कल्याणनी प्राप्ति थई छे, अथवा असद्‌गुरुथी पण कल्याणनी प्राप्ति थाय, असद्‌गुरुने पोताने भले मार्गनी प्रतीति नथी, पण बीजाने ते पमाडी शके एटले बीजो ते मार्गनी प्रतीति, तेनो उपदेश साभळीने करे तो ते परमार्थने पामे, माटे सद्‌गुरुचरणने सेव्या विना पण परमार्थनी प्राप्ति थाय एवो आशकानु समाधान करे छे —

यद्यपि कोई जीवो पोते विचार करता बूझ्या छे, एवो शास्त्रमा प्रसग छे, पण कोई स्थळे एवो प्रसग कह्यो नथी के असद्‌गुरुथी अमुक बूझ्या हवे कोई पोते विचार करता बूझ्या छे एम कह्यु छे तेमा शास्त्रोनो कहेवानो हेतु एवो नथी के सद्‌गुरुनो आज्ञाए वर्तवाथी जीवनु कल्याण थाय छे एम अमे कह्यु छे पण ते वात यथार्थ नथी, अथवा सद्‌गुरुनी आज्ञानु जीवने कई कारण नथी एम कहेवाने माटे तेम जे जीवो पोताना विचारथी स्वयबोध पाम्या छे एम कह्यु छे ते पण वर्तमान देहे पोताना विचारथी अथवा बोधथी बूझ्या कह्या छे, पण पूर्वे ते विचार अथवा बोध तेणे सन्मुख कर्यो

छे तेथी वर्तमानमा ते स्फुरायमान थवानो सभव छे. तीर्थंकरादि 'स्वयबुद्ध' कह्या छे ते पण पूर्वे त्रीजे भवे सद्गुरुथी निश्चय समकित पाम्या छे एम कह्यु छे एटले ते स्वयबुद्धपणु कह्यु छे ते वर्तमान देहनी अपेक्षाए कह्यु छे, अने ते सद्गुरुपदना निषेधने अर्थे कह्यु नथी

अने जो सद्गुरुपदनो निषेध करे तो ते 'सद्देव, सद्गुरु अने सद्धर्मनी प्रतीति विना समकित कह्यु नथी,' ते कहेवा मात्र ज थयु

अथवा जे शास्त्रनु तमे प्रमाण लो छो ते शास्त्र सद्गुरु एवा जिनना कहेला छे तेथी प्रमाणिक मानवा योग्य छे के कोई असद्गुरुना कहेला छे तेथी प्रमाणिक मानवा योग्य छे? जो असद्गुरुना शास्त्रो पण प्रमाणिक मानवामा बाध न होय, तो तो अज्ञान अने रागद्वेष आराधवाथी पण मोक्ष थाय एम कहेवामा बाध नथी, ते विचारवा योग्य छे

'आचारागसूत्र'मा (प्रथम श्रुतस्कंध, प्रथमाध्ययनना प्रथम उद्देशे, प्रथम वाक्य) कह्यु छे के, आ जीव पूर्वथी आव्यो छे? पश्चिमथी आव्यो छे? उत्तरथी आव्यो छे? दक्षिणथी आव्यो छे? अथवा ऊचेथी? नीचेथी के कोई अनेरी दिशाथी आव्यो छे? एम जे जाणतो नथी ते मिथ्यादृष्टि छे, जे जाणे ते सम्यग्दृष्टि छे ते जाणवाना त्रण कारणो आ प्रमाणे – (१) तीर्थंकरना उपदेशथी, (२) सद्गुरुना उपदेशनी, अने (३) जातिस्मृतिज्ञानथी

अत्रे जातिस्मृति ज्ञान कह्यु ते पण पूर्वना उपदेशनी संधि छे एटले पूर्वे तेने बोध थवामा सद्गुरुनो असभव

धारवो घटतो नथी वळी ठाम ठाम जिनागममा एम कह्यु छे के—

[1]'गुरुणो छदाणुवत्तगा' गुरुनी आज्ञाए प्रवर्तवु

गुरुनी आज्ञाए चालता अनता जीवो सीझ्या, सीझे छे अने सीझशे तेम कोई जीव पोताना विचारथी बोध पाम्या, तेमा प्राये पूर्वे सद्‌गुरुउपदेशनु कारण होय छे पण कदापि ज्या तेम न होय त्या पण ते सद्‌गुरुनो नित्यकामी रह्यो थको सद्विचारमा प्रेरातो प्रेरातो स्वविचारथी आत्मज्ञान पाम्यो एम कहेवा योग्य छे, अथवा तेने कई सद्‌गुरुनी उपेक्षा नथी अने ज्या सद्‌गुरुनी उपेक्षा वर्ते त्यां माननो सभव थाय छे, अने ज्या सद्‌गुरु प्रत्ये मान होय त्या कल्याण थवु कह्यु, के तेने सद्विचार प्रेरवानो आत्मगुण कह्यो

तथारूप मान आत्मगुणनु अवश्य घातक छे बाहुबळजीमा अनेक गुणसमूह विद्यमान छता नाना अठ्ठाणु भाईने वंदन करवामा पोतानु लघुपणु थशे, माटे अत्रे ज ध्यानमा रोकावु योग्य छे एम राखी एक वर्ष सुधी निराहारपणे अनेक गुणसमुदाये आत्मध्यानमा रह्या, तोपण आत्मज्ञान थयु नही बाकी बीजी बधी रीतनी योग्यता छता एक ए मानना कारणथी ते ज्ञान अटक्यु हतु ज्यारे श्री ऋषभदेवे प्रेरेली एवी ब्राह्मी अने सुदरी सतीए तेने ते दोष निवेदन कर्यो अने ते दोषनु भान तेने थयु तथा ते दोषनी उपेक्षा करी असारत्व जाण्यु त्यारे केवळज्ञान थयु ते मान ज अत्रे चार घनघाती कर्मनु मूळ थई वर्त्युं

---

१ सूत्रकृताग, प्रथम श्रुतस्कध, द्वितीय अध्ययन, गा० ३२

हतु. वळी बार बार महिना सुधी निराहारपणे, एक लक्षे, एक आसने, आत्मविचारमा रहेनार एवा पुरुषने एटला माने तेवी बारे महिनानी दशा सफळ थवा न दीधी, अर्थात् ते दशाथी मान न समजायु अने ज्यारे सद्गुरु एवा श्री ऋषभदेवे ते मान छे एम प्रेर्युं त्यारे मुहूर्तमा ते मान व्यतीत थयु, ए पण सद्गुरुनु ज माहात्म्य दर्शाव्यु छे

वळी आखो मार्ग ज्ञानीनी आज्ञामा समाय छे एम वारवार कह्यु छे. 'आचारागसूत्र 'मा कह्यु छे के — (सुधर्मास्वामी जबुस्वामीने उपदेशे छे, के जगत आखानु जेणे दर्शन कर्यु छे एवा महावीर भगवान तेणे अमने आम कह्यु छे.) गुरुने आधीन थई वर्तता एवा अनंता पुरुषो मार्ग पामीने मोक्ष प्राप्त थया

'उत्तराध्ययन', 'सूयगडागादि 'मा ठाम ठाम ए ज कह्यु छे (९)

आत्मज्ञान समदर्शिता, विचरे उदयप्रयोग,
अपूर्व वाणी परमश्रुत सद्गुरु लक्षण योग्य[1] १०

आत्मज्ञानने विषे जेमनी स्थिति छे, एटले परभावनी इच्छाथी जे रहित थया छे, तथा शत्रु, मित्र, हर्ष, शोक, नमस्कार, तिरस्कारादि भाव प्रत्ये जेने समता वर्ते छे, मात्र पूर्वे उत्पन्न थयेला एवा कर्मोना उदयने लीधे जेमनी विचारवा आदि क्रिया छे, अज्ञानी करता जेनी वाणी प्रत्यक्ष जुदी पडे छे, अने षट्दर्शनना तात्पर्यने जाणे छे, ते सद्गुरुना उत्तम लक्षणो छे (१०)

---

१ जुओ आक न ८३५, 'श्रीमद्राजचन्द्र'

स्वरूपस्थित इच्छारहित, विचरे पूर्वप्रयोग,
अपूर्व वाणी, परमश्रुत, सद्गुरुलक्षण योग्य

आत्मास्वरूपने विषे जेनी स्थिति छे, विषय अने मान पूजादि इच्छाथी रहित छे, अने मात्र पूर्वे उत्पन्न थयेला एवा कर्मना प्रयोगथी जे विचरे छे, जेमनी वाणी अपूर्व छे, अर्थात् निज अनुभवसहित जेनो उपदेश होवाथी अज्ञानीनी वाणी करता प्रत्यक्ष जुदी पडे छे, अने परमश्रुत एटले षट्दर्शनना यथास्थित जाण होय, ए सद्गुरुना योग्य लक्षणो छे

अत्रे स्वरूपस्थित एवु प्रथमपद कह्यु तेथी ज्ञानदशा कही इच्छारहितपणु कह्यु तेथी चारित्रदशा कही. इच्छारहित होय ते विचरी केम शके? एवी आशका, 'पूर्वप्रयोग एटले पूर्वना बधायेला प्रारब्धथी विचरे छे, विचरवा आदिनी बाकी जेने कामना नथी,' एम कही निवृत्त करी अपूर्व वाणी एम कहेवाथी वचनातिशयता कही, केमके ते विना मुमुक्षुने उपकार न थाय परमश्रुत कहेवाथी षट्दर्शन अविरुद्ध दशाए जाणनार कह्या, एटले श्रुतज्ञाननु विशेषणु दर्शाव्यु.

आशका –वर्तमानकाळमा स्वरूपस्थित पुरुष होय नही, एटले जे स्वरूपस्थित विशेषणवाळा सद्गुरु कह्या छे, ते आजे होवा योग्य नथी

समाधान –वर्तमानकाळमा कदापि एम कहेलु होय तो कहेवाय के 'केवळभूमिका'ने विषे एवी स्थिति असभवित छे, पण आत्मज्ञान ज न थाय एम कहेवाय नही, अने आत्मज्ञान छे ते स्वरूपस्थिति छे

आशंका '—आत्मज्ञान थाय तो वर्तमानकाळमा मुक्ति थवो जोईए अने जिनागममा ना कही छे .

समाधान —ए वचन कदापि एकाते एम ज एम गणीए, तोपण तेथी एकावतारीपणानो निशेध थतो नथो, अने एकावतारीपणु आत्मज्ञान विना प्राप्त थाय नही

आशका —त्याग वैराग्यादिना उत्कृष्टपणाथी तेने एकावतारीपणु कह्यु हशे.

समाधान —परमार्थथी उत्कृष्ट त्यागवैराग्य विना एकावतारीपणु थाय ज नही एवो सिद्धात छे; अने वर्तमानमा पण चोथा पाचमा अने छठ्ठा गुणस्थानकनो कशो निषेध छे नही अने चोथे गुणस्थानकेथी ज आत्मज्ञाननो सभव थाय छे, पाचमे विशेष स्वरूपस्थिति थाय छे, छठ्ठे घणा अशे स्वरूपस्थिति थाय छे, पूर्वप्रेरित प्रमादना उदयथी मात्र कईक प्रमाददशा आवी जाय छे पण ते आत्मज्ञानने रोधक नथी, चारित्रने रोधक छे

आशका —अत्रे तो स्वरूपस्थित एवु पद वापर्यु छे, अने स्वरूपस्थित पद तो तेरमे गुणस्थानके ज सभवे छे

समाधान —स्वरूपस्थितिनी पराकाष्टा तो चौदमा गुणस्थानकने छेडे थाय छे, केमके नाम गोत्रादि चार कर्मनो नाश त्या थाय छे, ते पहेला केवळीने चार कर्मनो सग छे, तेथी सपूर्ण स्वरूपस्थिति तो तेरमे गुणस्थानके पण न कहेवाय

आशका —त्या नामादि कर्मथी करीने अव्याबाध स्वरूपस्थितिनी ना कहे तो ते ठीक छे, पण केवळज्ञानरूप स्वरूपस्थिति

छे, तेथी स्वरूपस्थिति कहेवामा दोष नथी, अने अत्रे तो तेम नथी, माटे स्वरूपस्थितिपणु केम कहेवाय ?

समाधान :- केवळज्ञानने विषे स्वरूपस्थितिनु तारतम्य विशेष छे, अने चोथे, पाचमे, छठ्ठे, गुणस्थानके तेथी अल्प छे, एम कहेवाय, पण स्वरूपस्थिति नथी एम न कही शकाय चोथे गुणस्थानके मिथ्यात्वमुक्तदशा थवाथी आत्मस्वभाव-आविर्भावपणु छे, अने स्वरूपस्थिति छे, पाचमे गुणस्थानके देशे करीने चारित्रघातक कषायो रोकावाथी आत्मस्वभावनु चोथा करता विशेष आविर्भावपणु छे, अने छठ्ठामा कषायो विशेष रोकवाथी सर्व चारित्रनु उदयपणु छे, तेथी आत्म-स्वभावनु विशेष आविर्भावपणु छे मात्र छठ्ठे गुणस्थानके पूर्वनिबधित कर्मना उदयथी प्रमत्तदशा क्वचित् वर्ते छे तेने लीधे 'प्रमत्त' सर्व चारित्र कहेवाय, पण तेथी स्वरूपस्थितिमा विरोध नही, केमके आत्मस्वभावनु बाहुल्यताथी आविर्भावपणु छे वळी आगम पण एम कहे छे के, चोथे गुणस्थानकेथी तेरमा गुणस्थानक सुधी आत्मप्रतीति समान छे, ज्ञाननो तारतम्यभेद छे

जो चोथे गुणस्थानके स्वरूपस्थिति अशे पण न होय, तो मिथ्यात्व जवानु फळ शु थयु ? कई ज थयु नही जे मिथ्यात्व गयु ते ज आत्मस्वभावनु आविर्भावपणु छे, अने ते ज स्वरूपस्थिति छे जो सम्यक्त्वथी तथारूप स्वरूपस्थिति न होत, तो श्रेणिकादिने एकावतारीपणु केम प्राप्त थाय ? एक पण त्या व्रत, पच्चखाण नथी अने मात्र एक ज भव बाकी रह्यो एवु अल्पससारीपणु थयु ते ज स्वरूपस्थितिरूप समकितनु

बळ छे पाचमे अने छट्ठे गुणस्थानके चारित्रनु बळ विशेष छे, अने मुख्यपणे उपदेशक गुणस्थानक तो छट्ठु अने तेरमु छे. बाकीना गुणस्थानको उपदेशकनी प्रवृत्ति करी शकवा योग्य नथी, एटले तेरमे अने छट्ठे गुणस्थानके ते पद प्रवर्ते छे (१०)

[१]प्रत्यक्षसद्‌गुरु सम नहिं, परोक्ष जिन उपकार,
एवो लक्षथया विना, ऊगे न आत्मविचार ११

ज्या सुधी जीवने पूर्वकाळे थई गयेला एवा जिननी वात पर ज लक्ष रह्या करे, अने तेनो उपकार कह्या करे, अने जेथी प्रत्यक्ष आत्मभ्रातिनु समाधान थाय एवा सद्‌गुरुनो समागम प्राप्त थयो होय तेमा परोक्ष जिनोना वचन करता मोटो उपकार समायो छे, तेम जे न जाणे तेने आत्मविचार उत्पन्न न थाय (११)

सद्‌गुरुना उपदेश वण, समजाय न जिनरूप,
समज्या वण उपकार शो ? समज्ये जिनस्वरूप १२

सद्‌गुरुना उपदेश विना जिननु स्वरूप समजाय नही, अने स्वरूप समजाया विना उपकार शो थाय ? जो सद्‌गुरुउपदेशे जिननु स्वरूप समजे तो समजनारनो आत्मा परिणामे जिननी दशाने पामे (१२)

सद्‌गुरुना उपदेशथी, समजे जिननु रूप,
तो ते पामे निजदशा, जिन छे आत्मस्वरूप
पाम्या शुद्ध स्वभावने, छे जिन तेथी पूज्य,
समजो जिनस्वभाव तो, आत्मभाननो गुज्य

---

१ जुओ आक न ५२७ 'श्रीमद्‌राजचन्द्र'

सद्‌गुरुना उपदेशथी जे जिननु स्वरूप समजे, ते पोताना स्वरूपनी दशा पामे, केमके शुद्ध आत्मापणु ए ज जिननु स्वरूप छे, अथवा राग, द्वेष अने अज्ञान जिनने विषे नथी ते ज शुद्ध आत्मपद छे, अने ते पद तो सत्ताए सर्व जीवनु छे ते सद्‌गुरु–जिनने अवलबीने अने जिनना स्वरूपने कहेवे करी मुमुक्षुजीवने समजाय छे. (१२)

आत्मादि अस्तित्वना, जेह निरूपक शास्त्र,
प्रत्यक्ष सद्‌गुरु योग नहि, त्या आधार सुपात्र १३

जे जिनागमादि आत्माना होवापणानो तथा परलोकादिना होवापणानो उपदेश करवावाळा शास्त्रो छे ते पण ज्या प्रत्यक्ष सद्‌गुरुनो जोग न होय त्या सुपात्र जीवने आधाररूप छे, पण सद्‌गुरुसमान ते भ्रातिना छेदक कही न शकाय (१३)

[1]अथवा सद्‌गुरुए कह्या, जे अवगाहन काज,
ते ते नित्य विचारवा, करी मतातर त्याज १४

अथवा जो सद्‌गुरुए ते शास्त्रो विचारवानी आज्ञा दीधी होय, तो ते शास्त्रो मतातर एटले कुळधर्मने सार्थक करवानो हेतु आदि भ्राति छोडीने मात्र आत्मार्थे नित्य विचारवा (१४)

रोके जीव स्वच्छद तो, पामे अवश्य मोक्ष,
पाम्या एम अनत छे, भाख्यु जिन निर्दोष १५

जीव अनादिकाळथी पोताना डहापणे अने पोतानी इच्छाए चाल्यो छे, एनु नाम 'स्वच्छद' छे जो ते स्वच्छदने रोके तो जरूर ते मोक्षने पामे, अने ए रीते भूतकाळे अनत जीव

---

१ पाठातर — अथवा सद्‌गुरुए कह्या, जो अवगाहन काज,
तो ते नित्य विचारवा, करी मतातर त्याज

मोक्ष पाम्या छे. एम राग, द्वेष अने अज्ञान एमानो एक्के दोष जेने विषे नथी एवा दोषरहित वीतरागे कह्यु छे. (१५)

प्रत्यक्ष सद्गुरु योगथी, स्वच्छद ते रोकाय,
अन्य उपाय कर्या थकी, प्राये बमणो थाय १६

प्रत्यक्ष सद्गुरुना योगथी ते स्वच्छंद रोकाय छे, बाकी पोतानी इच्छाए बीजा घणा उपाय कर्या छता घणु करीने ते बमणो थाय छे (१६)

स्वच्छद मत आग्रह तजी, वर्ते सद्गुरुलक्ष,
समकित तेने भाखियु, कारण गणी प्रत्यक्ष १७

स्वच्छदने तथा पोताना मतना आग्रहने तजीने जे सद्गुरुना लक्षे चाले तेने प्रत्यक्ष कारण गणीने वीतरागे 'समकित' कह्यु छे (१७)

मानादिक शत्रु महा, निज छदे न मराय,
जाता सद्गुरु शरणमा, अल्प प्रयासे जाय. १८

मान अने पूजासत्कारादिनो लोभ ए आदि महाशत्रु छे, ते पोताना डहापणे चालता नाश पामे नही, अने सद्गुरुना शरणमा जता सहज प्रयत्नमा जाय. (१८)

जे सद्गुरु उपदेशथी, पाम्यो केवळज्ञान,
गुरु रह्या छद्मस्थ पण, विनय करे भगवान १९

जे सद्गुरुना उपदेशथी कोई केवळज्ञानने पाम्या, ते सद्गुरु हजु छद्मस्थ रह्या होय, तोपण जे केवळज्ञानने पाम्या छे एवा ते केवळी भगवान छद्मस्थ एवा पोताना सद्गुरुनी वैयावच्च करे (१९)

एवो मार्ग विनय तणो, भाख्यो श्री वीतराग;
मूळ हेतु ए मार्गनो, समजे कोई सुभाग्य २०

एवो विनयनो मार्ग श्री जिने उपदेश्यो छे. ए मार्गनो मूळ हेतु एटले तेथी आत्माने शो उपकार थाय छे, ते कोईक सुभाग्य एटले सुलभबोधि अथवा आराधक जीव होय ते समजे (२०)

असद्गुरु ए विनयनो, लाभ लहे जो काई,
महामोहनीय कर्मथी, बूडे भवजळ माही २१

आ विनयमार्ग कह्यो तेनो लाभ एटले ते शिष्यादिनी पासे करावबानी इच्छा करीने जो कोई पण असद्गुरु पोताने विषे सद्गुरुपणु स्थापे तो ते महामोहनीय कर्म उपार्जन करीने भवसमुद्रमा बूडे (२१)

होय मुमुक्षु जीव ते, समजे एह विचार,
होय मतार्थी जीव ते, अवळो ले निर्धार २२

जे मोक्षार्थी जीव होय ते आ विनयमार्गादिनो विचार समजे, अने जे मतार्थी होय ते तेनो अवळो निर्धार ले, एटले का पोते तेवो विनय शिष्यादि पासे करावे, अथवा असद्गुरुने विषे पोते सद्गुरुनी भ्राति राखी आ विनयमार्गनो उपयोग करे (२२)

होय मतार्थी तेहने, थाय न आतमलक्ष,
तेह मतार्थी लक्षणो, अही कह्या निर्पक्ष २३

जे मतार्थी जीव होय तेने आत्मज्ञाननो लक्ष थाय नही, एवा मतार्थी जीवना अही निष्पक्षपाते लक्षणो कह्या छे (२३)

मोक्ष पाम्या छे. एम राग, द्वेष अने अज्ञान एमानो एक्के दोष जेने विषे नथी एवा दोषरहित वीतरागे कह्यु छे. (१५)

प्रत्यक्ष सद्‌गुरु योगथी, स्वच्छद ते रोकाय,
अन्य उपाय कर्या थकी, प्राये बमणो थाय. १६

प्रत्यक्ष सद्‌गुरुना योगथी ते स्वच्छंद रोकाय छे, बाकी पोतानी इच्छाए बीजा घणा उपाय कर्या छता घणुं करीने ते बमणो थाय छे (१६)

स्वच्छद मत आग्रह तजी, वर्ते सद्‌गुरुलक्ष,
समकित तेने भाखियु, कारण गणी प्रत्यक्ष १७

स्वच्छदने तथा पोताना मतना आग्रहने तजीने जे सद्‌गुरुना लक्षे चाले तेने प्रत्यक्ष कारण गणीने वीतरागे 'समकित' कह्यु छे (१७)

मानादिक शत्रु महा, निज छदे न मराय,
जाता सद्‌गुरु शरणमा, अल्प प्रयासे जाय. १८

मान अने पूजासत्कारादिनो लोभ ए आदि महाशत्रु छे, ते पोताना डहापणे चालता नाश पामे नही, अने सद्‌गुरुना शरणमा जता सहज प्रयत्नमा जाय (१८)

जे सद्‌गुरु उपदेशथी, पाम्यो केवळज्ञान,
गुरु रह्या छद्मस्थ पण, विनय करे भगवान १९

जे सद्‌गुरुना उपदेशथी कोई केवळज्ञानने पाम्या, ते सद्‌गुरु हजु छद्मस्थ रह्या होय, तोपण जे केवळज्ञानने पाम्या छे एवा ते केवळी भगवान छद्मस्थ एवा पोताना सद्‌गुरुनी वैयावच्च करे (१९)

एवो मार्ग विनय तणो, भाख्यो श्री वीतराग;
मूळ हेतु ए मार्गनो, समजे कोई सुभाग्य   २०

एवो विनयनो मार्ग श्री जिने उपदेश्यो छे ए मार्गनो मूळ हेतु एटले तेथी आत्माने शो उपकार थाय छे, ते कोइक सुभाग्य एटले सुलभबोधि अथवा आराधक जीव होय ते समजे (२०)

असद्गुरु ए विनयनो, लाभ लहे जो काई,
महामोहनीय कर्मथी, बूडे भवजळ माही २१

आ विनयमार्ग कह्यो तेनो लाभ एटले ते शिष्यादिनो पासे कराववानी इच्छा करीने जो कोई पण असद्गुरु पोताने विषे सद्गुरुपणु स्थापे तो ते महामोहनीय कर्म उपार्जन करीने भवसमुद्रमा बूडे (२१)

होय मुमुक्षु जीव ते, समजे एह विचार,
होय मतार्थी जीव ते, अवळो ले निर्धार २२

जे मोक्षार्थी जीव होय ते आ विनयमार्गादिनो विचार समजे, अने जे मतार्थी होय ते तेनो अवळो निर्धार ले, एटले का पोते तेवो विनय शिष्यादि पासे करावे, अथवा असद्गुरुने विषे पोते सद्गुरुनी भ्राति राखी आ विनयमार्गनो उपयोग करे (२२)

होय मतार्थी तेहने, थाय न आतमलक्ष,
तेह मतार्थी लक्षणो, अही कह्या निर्पक्ष २३

जे मतार्थी जीव होय तेने आत्मज्ञाननो लक्ष थाय नही, एवा मतार्थी जीवना अही निष्पक्षपाते लक्षणो कह्या छे (२३)

बाह्यत्याग पण ज्ञान नहि, ते माने गुरु सत्य,
अथवा निजकुळधर्मना, ते गुरुमा ज ममत्व २४

जेने मात्र बाह्यथी त्याग देखाय छे पण आत्मज्ञान नथी, अने उपलक्षणथी अतरग त्याग नथी, तेवा गुरुने साचा गुरु माने, अथवा तो पोताना कुळधर्मना गमे तेवा गुरु होय तोपण तेमा ज ममत्व राखे (२४)

जे जिनदेह प्रमाण ने, समवसरणादि सिद्धि,
वर्णन समजे जिननु, रोकी रहे निज बुद्धि २५

जे जिनना देहादिनु वर्णन छे तेने जिननु वर्णन समजे छे, अने मात्र पोताना कुळधर्मना देव छे माटे मारापणाना कल्पित रागे समवसरणादि माहात्म्य कह्या करे छे अने तेमा पोतानी बुद्धिने रोकी रहे छे, एटले परमार्थहेतुस्वरूप एवु जिननु जे अतरगस्वरूप जाणवा योग्य छे ते जाणता नथी, तथा ते जाणवानो प्रयत्न करता नथी, अने मात्र समवसरणादिमा ज जिननु स्वरूप कहीने मतार्थमा रहे छे (२५)

प्रत्यक्ष सद्गुरुयोगमा, वर्ते दृष्टि विमुख,
असद्गुरुने दृढ करे, निज मानार्थे मुख्य २६

प्रत्यक्ष सद्गुरुनो क्यारेक योग मळे तो दुराग्रहादिछेदक तेनी वाणी साभळीने तेनाथी अवळी रीते चाले, अर्थात् ते हितकारी वाणीने ग्रहण करे नही, अने पोते खरेखरो दृढ मुमुक्षु छे एवु मान मुख्यपणे मेळववाने अर्थे असद्गुरुसमीपे जईने पोते तेना प्रत्ये पोतानु विशेप दृढपणु जणावे (२६)

देवादि गति भगमां, जे समजे श्रुतज्ञान,
मानें निज मत वेषनो, आग्रह मुक्तिनिदान २७

देव-नारकादि गतिना 'भांगा' आदिना स्वरूप कोईक विशेष परमार्थहेतुथी कह्यां छे, ते हेतुने जाण्यो नथी, अने ते भंगजाळने श्रुतज्ञान जे समजे छे, तथा पोताना मतनो, वेषनो आग्रह राखवामां ज मुक्तिनो हेतु माने छे (२७)

लह्युं स्वरूप न वृत्तिनुं, ग्रह्युं व्रत अभिमान,
ग्रहे नहीं परमार्थने, लेवा लौकिक मान २८

वृत्तिनुं स्वरूप शुं? ते पण ते जाणतो नथी, अने 'हुं व्रतधारी छुं' एवुं अभिमान धारण कर्युं छे क्वचित् परमार्थना उपदेशनो योग बने तोपण लोकोमां पोतानुं मान अने पूजा-सत्कारादि जतां रहेशे, अथवा ते मानादि पछी प्राप्त नहीं थाय एम जाणीने ते परमार्थने ग्रहण करे नहीं (२८)

अथवा निश्चय नय ग्रहे, मात्र शब्दनी मांय,
लोपे सद्व्यवहारने, साधन रहित थाय २९

अथवा 'समयसार' के 'योगवासिष्ठ' जेवा ग्रंथो वांची ते मात्र निश्चयनयने ग्रहण करे केवी रीते ग्रहण करे? मात्र कहेवारूपे, अंतरंगमां तथारूप गुणनी कशी स्पर्शना नहीं, अने सद्गुरु, सत्शास्त्र तथा वैराग्य, विवेकादि साचा व्यवहारने लोपे, तेम ज पोताने ज्ञानी मानी लईने साधनरहित वर्ते (२९)

ज्ञानदशा पामे नहीं, साधनदशा न कांई,
पामे तेनो संग जे, ते बूडे भव मांही. ३०

ते ज्ञानदशा पामे नहीं, तेम वैराग्यादि साधनदशा पण तेने नथी, जेथी तेवा जीवनो संग बीजा जे जीवने थाय ते पण भवसागरमां डूबे (३०)

ए पण जीव मतार्थमा, निजमानादि काज,
पामे नहि परमार्थने, अन्-अधिकारीमा ज ३१

ए जीव पण मतार्थमा ज वर्ते छे, केमके उपर कह्या जीव, तेने जेम कुळधर्मादिथी मतार्थता छे, तेम आने ज्ञानी गणाववाना माननी इच्छाथी पोताना शुश्कमतनो आग्रह छे, माटे ते पण परमार्थने पामे नही, अने अन्अधिकारी एटले जेने विषे ज्ञान परिणाम पामवा योग्य नही एवा जीवोमा ते पण गणाय (३१)

नहि कषाय उपशातता, नहि अतर वैराग्य,
सरळपणु न मध्यस्थता, ए मतार्थी दुर्भाग्य. ३२

जेने क्रोध, मान, माया, लोभरूप कषाय पातळा पड्या नथी, तेम जेने अतर वैराग्य उत्पन्न थयो नथी, आत्मामा गुण ग्रहण करवारूप सरळपणु जेने रह्यु नथी, तेम सत्यासत्यतुलना करवाने जेने अपक्षपातदृष्टि नथी, ते मतार्थी जीव दुर्भाग्य एटले जन्म, जरा, मरणने छेदवावाळा मोक्षमार्गने पामवा योग्य एवु तेनु भाग्य न समजवु (३२)

लक्षण कह्या मतार्थीना, मतार्थ जावा काज,
हवे कहु आत्मार्थीना आत्म-अर्थ सुखसाज. ३३

एम मतार्थी जीवना लक्षण कह्या. ते कहेवानो हेतु ए छे के कोई पण जीवनो ते जाणीने मतार्थ जाय हवे आत्मार्थी जीवना लक्षण कहीए छीए ते लक्षण केवा छे? तो के आत्माने अव्याबाध सुखनी सामग्रीना हेतु छे (३३)

आत्मज्ञान त्या मुनिपणु, ते साचा गुरु होय,
बाकी कुळगुरु कल्पना, आत्मार्थी नहि जोय ३४

ज्या आत्मज्ञान होय त्या मुनिपणु होय, अर्थात् आत्मज्ञान न होय त्या मुनिपणु न ज सभवे. 'ज समति पासह त मोणति पासह' — ज्या समकित एटले आत्मज्ञान छे त्या मुनिपणु जाणो एम 'आचारागसूत्र'मा कह्यु छे, एटले जेमा आत्मज्ञान होय ते साचा गुरु छे एम जाणे छे, अने आत्मज्ञानरहित होय तोपण पोताना कुळना गुरुने सद्गुरु मानवा ए मात्र कल्पना छे, तेथी कंई भवच्छेद न थाय एम आत्मार्थी जुए छे (३४)

प्रत्यक्ष सद्गुरु प्राप्तिनो, गणे परम उपकार,
त्रणे योग एकत्वथी, वर्ते आज्ञाधार ३५

प्रत्यक्ष सद्गुरुनी प्राप्तिनो मोटो उपकार जाणे, अर्थात् शास्त्रादिथी जे समाधान थई शकवा योग्य नथी, अने जे दोषो सद्गुरुनी आज्ञा धारण कर्या विना जता नथी ते सद्गुरुयोगथी समाधान थाय, अने ते दोषो टळे, माटे प्रत्यक्ष सद्गुरुनो मोटो उपकार जाणे, अने ते सद्गुरु प्रत्ये मन, वचन, कायानी एकताथी आज्ञाकितपणे वर्ते (३५)

एक होय त्रण काळमा, परमारथनो पथ,
प्रेरे ते परमार्थने, ते व्यवहार समत ३६

त्रणे काळने विषे परमार्थनो पथ एटले मोक्षनो मार्ग एक होवो जोईए, अने जेथी ते परमार्थ सिद्ध थाय ते व्यवहार जीवे मान्य राखवो जोईए, बीजो नही (३६)

एम विचारी अतरे, शोधे सद्‌गुरु योग,
काम एक आत्मार्थनु, बीजो नहि मनरोग. ३७

एम अतरमा विचारीने जे सद्‌गुरुना योगनी शोध करे, मात्र एक आत्मार्थनो इच्छा राखे पण मानपूजादिक, सिद्धिरिद्धिनी कशी इच्छा राखे नही, – ए रोग जेना मनमा नथी (३७)

कषायनी उपशातता, मात्र मोक्ष अभिलाष,
भवे खेद, प्राणीदया, त्या आत्मार्थ निवास ३८

ज्या कषाय पातळा पड्या छे, मात्र एक मोक्षपद सिवाय बीजा कोई पदनी अभिलाषा नथी, ससारपर जेने वैराग्य वर्ते छे, अने प्राणीमात्र पर जेने दया छे, एवा जीवने विषे आत्मार्थनो निवास थाय (३८)

दशा न एवी ज्या सुधी, जीव लहे नहि जोग,
मोक्षमार्ग पामे नही, मटे न अतर रोग ३९

ज्या सुधी एवी जोगदशा जीव पामे नही, त्यासुधी तेने मोक्षमार्गनी प्राप्ति न थाय, अने आत्मभ्रातिरूप अनत दु खनो हेतु एवो अतररोग न मटे (३९)

आवे ज्या एवी दशा, सद्‌गुरुबोध सुहाय,
ते बोधे सुविचारणा, त्या प्रगटे सुखदाय ४०

एवी दशा ज्या आवे त्या सद्‌गुरुनो बोध शोभे अर्थात् परिणाम पामे, अने ते बोधना परिणामथी सुखदायक एवी सुविचारदशा प्रगटे (४०)

ज्या प्रगटे सुविचारणा, त्या प्रगटे निज ज्ञान,
जे ज्ञाने क्षय मोह थई, पामे पद निर्वाण ४१

ज्या सुविचारदशा प्रगटे त्या आत्मज्ञान उत्पन्न थाय, अने ते ज्ञानथी मोहनो क्षय करी निर्वाणपदने पामे (४१)

ऊँपजे ते सुविचारणा, मोक्षमार्ग समजाय,
गुरुशिष्यसवादथी, भाखु षट्पद आही ४२

जेथी ते सुविचारदशा उत्पन्न थाय, अने मोक्षमार्ग समजवामा आवे ते छ पदरूपे गुरुशिष्यना सवादथी करीने अही कहु छु (४२)

षट्पदनामकथन

'आत्माछे' 'ते नित्य छे,' 'छे कर्ता निजकर्म,'
'छे भोक्ता,' वळी 'मोक्ष छे,' 'मोक्ष उपाय सुधर्म' ४३

'आत्मा छे,' 'ते आत्मा नित्य छे,' 'ते आत्मा पोताना कर्मनो कर्ता छे', 'ते कर्मनो भोक्ता छे', 'तेथी मोक्ष थाय छे', अने 'ते मोक्षनो उपाय एवो सत्धर्म छे' (४३)

षट्स्थानक सक्षेपमा, षट्दर्शन पण तेह,
समजावा परमार्थने, कह्या ज्ञानीए एह ४४

ए छ स्थानक अथवा छ पद अही सक्षेपमा कह्या छे, अने विचार करवाथी षट्दर्शन पण ते ज छे, परमार्थ समजवाने माटे ज्ञानीपुरुषे ए छ पदो कह्या छे (४४)

शका — शिष्य उवाच

[आत्माना होवापणारूप प्रथम स्थानकनो शिष्य शका कहे छे –]

नथी दृष्टिमा आवतो, नथी जणातु रूप,
बीजो पण अनुभव नही, तेथी न जीवस्वरूप ४५

दृष्टिमा आवतो नथी, तेम जेनु कई रूप जणातु नथी, तेम स्पर्शादि बीजा अनुभवथी पण जणावापणु नथी, माटे जीवनु स्वरूप नथी, अर्थात् जीव नथी. (४५)

अथवा देह ज आतमा, अथवा इन्द्रिय प्राण,
मिथ्या जुदो मानवो, नही जुदु एधाण ४६

अथवा देह छे ते ज आत्मा छे, अथवा इन्द्रियो छे ते आत्मा छे, अथवा श्वासोच्छ्वास छे ते आत्मा छे, अर्थात् ए सौ एकना एक देहरूपे छे, माटे आत्माने जुदो मानवो ते मिथ्या छे, केमके तेनु कशु जुदु एंधाण एटले चिह्न नथी (४६)

वळी जो आत्मा होय तो, जणाय ते नहि केम?
जणाय जो ते होय तो, घट पट आदि जेम ४७

अने जो आत्मा होय तो ते जणाय शा माटे नही? जो घट, पट आदि पदार्थो छे तो जेम जणाय छे, तेम आत्मा होय तो शा माटे न जणाय? (४७)

माटे छे नहि आतमा, मिथ्या मोक्ष उपाय,
ए अंतर शका तणो, समजावो सदुपाय ४८

माटे आत्मा छे नही, अने आत्मा नथी एटले तेना मोक्षना अर्थे उपाय करवा ते फोकट छे, ए मारा अतरनी शकानो कई पण सदुपाय समजावो एटले समाधान होय तो कहो (४८)

समाधान—सद्‌गुरु उवाच
[आत्मा छे, एम सद्‌गुरु समाधान करे छे —]

भास्यो देहाध्यासथी, आत्मा देहसमान,
पण ते बन्ने भिन्न छे, प्रगट लक्षणे भान ४९

देहाध्यासथी एटले अनादिकाळथी अज्ञानने लीधे देहनो परिचय छे तेथी आत्मा देह जेवो अर्थात् तने देह भास्यो छे, पण आत्मा अने देह बन्ने जुदा छे, केमके वेय जुदा जुदा लक्षणथी प्रगट भानमा आवे छे (४९)

भास्यो देहाध्यासथी, आत्मा देह समान,
पण ते बन्ने भिन्न छे, जेम असि ने म्यान ५०

अनादिकाळथी अज्ञानने लीधे देहना परिचयथी देह ज आत्मा भास्यो छे, अथवा देह जेवो आत्मा भास्यो छे, पण जेम तरवार ने म्यान, म्यानरूप लागता छता बन्ने जुदा जुदा छे, तेम आत्मा अने देह बन्ने जुदा जुदा छे (५०)

जे द्रष्टा छे दृष्टिनो, जे जाणे छे रूप,
अबाध्य अनुभव जे रहे, ते छे जीवस्वरूप ५१

ते आत्मा दृष्टि एटले आखथी क्याथी देखाय? केमके ऊलटो तेनो ते जोनार छे स्थूळसूक्ष्मादि रूपने जे जाणे छे, अने सर्वने बाध करता करता कोई पण प्रकारे जेनो बाध करी शकातो नथी एवो बाकी जे अनुभव रहे छे ते जीवनु स्वरूप छे (५१)

[1]छे इन्द्रिय प्रत्येकने, निज निज विषयनु ज्ञान,
पाच इन्द्रीना विषयनु, पण आत्माने भान ५२

[1]कर्णेन्द्रियथी साभळ्यु ते ते कर्णेन्द्रिय जाणे छे पण चक्षु–इन्द्रिय तेने जाणती नथी, अने चक्षु–इन्द्रिये दीठेलु ते कर्णेन्द्रिय जाणती नथी अर्थात् सौ सौ इन्द्रियने पोतपोताना विषयनु ज्ञान छे, पण बीजी इन्द्रियोना विषयनु ज्ञान नथी,

---

१ पाठातर — कान न जाणे आखने, आख न जाणे कान,

अने आत्माने तो पाचे इन्द्रियना विषयनु ज्ञान छे अर्थात् जे ते पाचे इन्द्रियोना ग्रहण करेला विषयने जाणे छे ते 'आत्मा' छे, अने आत्मा विना एकेक इन्द्रिय एकेक विषयने ग्रहण करे एम कह्यु ते पण उपचारथी कह्यु छे (५२)

देह न जाणे तेहने, जाणे न इन्द्री, प्राण,
आत्मानी सत्ता वडे, तेह प्रवर्ते जाण ५३

देह तेने जाणतो नथी, इन्द्रियो तेने जाणती नथी अने श्वासोच्छ्वासरूप प्राण पण तेने जाणतो नथी, ते सौ एक आत्मानी सत्ता पामीने प्रवर्ते छे, नही तो जडपणे पड्या रहे छे, एम जाण. (५३)

सर्व अवस्थाने विषे, न्यारो सदा जणाय,
प्रगटरूप चैतन्यमय ए एधाण सदाय ५४

जाग्रत, स्वप्न अने निद्रा ए अवस्थामा वर्तती छता ते ते अवस्थाओथी जुदो जे रह्या करे छे, अने ते ते अवस्था व्यतीत थये'पण जेनु होवापणु छे अने ते ते अवस्थाने जे जाणे छे, एवो प्रगटस्वरूप चैतन्यमय छे, अर्थात् जाण्या ज करे छे एवो जेनो स्वभाव प्रगट छे, अने ए तेनी निशानी सदाय वर्ते छे, कोई दिवस ते निशानीनो भग थतो नथी (५४)

घट, पट आदि जाण तु, तेथी तेने मान,
जाणनार ते मान नहि, कहीए केवु ज्ञान? ५५

घट, पट आदिने तु पोते जाणे छे, 'ते छे' एम तु माने छे, अने जे ते घट, पट आदिनो जाणनार छे तेने मानतो नथी, ए ज्ञान ते केवु कहेवु? (५५)

परम बुद्धि कृश देहमा, स्थूळ देह मति अल्प,
देह होय जो आत्मा, घटे न आम विकल्प ५६

दुर्बळ देहने विषे परम बुद्धि जोवामा आवे छे, अने स्थूळ देहने विषे थोडी बुद्धि पण जोवामा आवे छे, जो देह ज आत्मा होय तो एवो विकल्प एटले विरोध थवानो वखत न आवे (५६)

जड चेतननो भिन्न छे, केवळ प्रगट स्वभाव,
एकपणु पामे नही, त्रणे काळ द्वयभाव ५७

कोई काळे जेमा जाणवानो स्वभाव नथी ते जड, अने सदाय जे जाणवाना स्वभाववान छे ते चेतन, एवो बेयनो केवळ जुदो स्वभाव छे, अने ते कोई पण प्रकारे एकपणु पामवा योग्य नथी त्रणे काळ जड जडभावे, अने चेतन चेतनभावे रहे एवो बेयनो जुदो जुदो द्वैतभाव प्रसिद्ध ज अनुभवाय छे (५७)

आत्मानी शका करे, आत्मा पोते आप,
शकानो करनार तें, अचरज एह अमाप ५८

आत्मानी शका आत्मा आपे पोते करे छे जे शकानो करनार छे, ते ज आत्मा छे ते जणातो नथी, ए माप न थई शके एवु आश्चर्य छे (५८)

शका—शिष्य उवाच

[आत्मा नित्य नथी एम शिष्य कहे छे —]

आत्माना अस्तित्वना, आपे कह्या प्रकार,
सभव तेनो थाय छे, अतर कर्ये विचार ५९

अने आत्माने तो पाचे इन्द्रियना विषयनु ज्ञान छे अर्थात् जे ते पाचे इन्द्रियोना ग्रहण करेला विषयने जाणे छे ते 'आत्मा' छे, अने आत्मा विना एकेक इन्द्रिय एकेक विषयने ग्रहण करे एम कह्यु ते पण उपचारथी कह्यु छे. (५२)

देह न जाणे तेहने, जाणे न इन्द्री, प्राण,
आत्मानी सत्ता वडे, तेह प्रवर्ते जाण ५३

देह तेने जाणतो नथी, इन्द्रियो तेने जाणती नथी अने श्वासोच्छ्‌वासरूप प्राण पण तेने जाणतो नथी, ते सौ एक आत्मानी सत्ता पामीने प्रवर्ते छे, नही तो जडपणे पड्या रहे छे, एम जाण (५३)

सर्व अवस्थाने विषे, न्यारो सदा जणाय,
प्रगटरूप चैतन्यमय ए एधाण सदाय ५४

जाग्रत, स्वप्न अने निद्रा ए अवस्थामा वर्तंतो छता ते ते अवस्थाओथी जुदो जे रह्या करे छे, अने ते ते अवस्था व्यतीत थये'पण जेनु होवापणु छे अने ते ते अवस्थाने जे जाणे छे, एवो प्रगटस्वरूप चैतन्यमय छे, अर्थात् जाण्या ज करे छे एवो जेनो स्वभाव प्रगट छे, अने ए तेनी निशानी सदाय वर्ते छे, कोई दिवस ते निशानीनो भग थतो नथी (५४)

घट, पट आदि जाण तु, तेथी तेने मान,
जाणनार ते मान नहि, कहीए केवु ज्ञान? ५५

घट, पट आदिने तु पोते जाणे छे, 'ते छे' एम तु माने छे, अने जे ते घट, पट आदिनो जाणनार छे तेने मानतो नथी, ए ज्ञान ते केवु कहेवु? (५५)

परम बुद्धि कृश देहमा, स्थूळ देह मति अल्प,
देह होय जो आत्मा, घटे न आम विकल्प ५६

दुर्बळ देहने विषे परम बुद्धि जोवामा आवे छे, अने स्थूळ देहने विषे थोडी बुद्धि पण जोवामा आवे छे, जो देह ज आत्मा होय तो एवो विकल्प एटले विरोध थवानो वखत न आवे (५६)

जड चेतननो भिन्न छे, केवळ प्रगट स्वभाव,
एकपणु पामे नही, त्रणे काळ द्वयभाव ५७

कोई काळे जेमा जाणवानो स्वभाव नथी ते जड, अने सदाय जे जाणवाना स्वभाववान छे ते चेतन, एवो बेयनो केवळ जुदो स्वभाव छे, अने ते कोई पण प्रकारे एकपणु पामवा योग्य नथी त्रणे काळ जड जडभावे, अने चेतन चेतनभावे रहे एवो बेयनो जुदो जुदो द्वैतभाव प्रसिद्ध ज अनुभवाय छे (५७)

आत्मानी शका करे, आत्मा पोते आप,
शकानो करनार ते, अचरज एह अमाप ५८

आत्मानी शका आत्मा आपे पोते करे छे जे शकानो करनार छे, ते ज आत्मा छे ते जणातो नथी, ए माप न थई शके एवु आश्चर्य छे (५८)

शका—शिष्य उवाच

[आत्मा नित्य नथी एम शिष्य कहे छे —]

आत्माना अस्तित्वना, आपे कह्या प्रकार,
सभव तेनो थाय छे, अतर कर्ये विचार ५९

आत्माना होवापणा विषे आपे जे जे प्रकार कह्या तेनो अतरमा विचार करवाथी सभव थाय छे (५९)

बीजी शका थाय त्या, आत्मा नहि अविनाश,
देहयोगथी उपजे, देहवियोगे नाश ६०

पण बीजी एम शका थाय छे, के आत्मा छे तोपण ते अविनाश एटले नित्य नथी, त्रणे काळ होय एवो पदार्थ नथी, मात्र देहना सयोगथी उत्पन्न थाय, अने वियोगे विनाश पामे (६०)

अथवा वस्तु क्षणिक छे, क्षणे क्षणे पलटाय,
ए अनुभवथी पण नही, आत्मा नित्य जणाय. ६१

अथवा वस्तु क्षणे क्षणे बदलाती जोवामा आवे छे, तेथी सर्व वस्तु क्षणिक छे, अने अनुभवथी जोता पण आत्मा नित्य जणातो नथी (६१)

समाधान—सद्गुरु उवाच

[आत्मा नित्य छे, एम सद्गुरु समाधान करे छे —]

देह मात्र सयोग छे, वळी जड रूपी दृश्य,
चेतनना उत्पत्ति लय, कोना अनुभव वश्य ? ६२

देहमात्र परमाणुनो सयोग छे, अथवा सयोगे करी आत्माना सबधमा छे वळी ते देह जड छे, रूपी छे, अने दृश्य एटले बीजा कोई द्रष्टानो ते जाणवानो विषय छे, एटले ते पोते पोताने जाणतो नथी, तो चेतनना उत्पत्ति अने नाश ते क्याथी जाणे ? ते देहना परमाणुए परमाणुनो

विचार करता पण ते जड ज छे, एम समजाय छे तेथी तेमाथी चेतननी उत्पत्ति थवा योग्य नथी, अने उत्पत्ति थवा योग्य नथी तेथी चेतन तेमा नाश पण पामवा योग्य नथी वळी ते देह रूपी एटले स्थूळादि परिणामवाळो छे, अने चेतन द्रष्टा छे, त्यारे तेना सयोगथी चेतननी उत्पत्ति शी रीते थाय? अने तेमा लय पण केम थाय? देहमाथी चेतन उत्पन्न थाय छे, अने तेमा ज नाश पामे छे, ए वात कोना अनुभवने वश रही? अर्थात् एम केणे जाण्यु? केमके जाणनार एवा चेतननी उत्पत्ति देहथी प्रथम छे नही, अने नाश तो तेथी पहेला छे, त्यारे ए अनुभव थयो कोने? ६२

जीवनु स्वरूप अविनाशी एटले नित्य त्रिकाळ रहेवाळु सभवतु नथी, देहना योगथी एटले देहना जन्म साथे ते जन्मे छे अने देहना वियोगे एटले देहना नाशथी ते नाश पामे छे ए आशकानु समाधान आ प्रमाणे विचारशो –

देह छे ते जीवने मात्र सयोग सबधे छे, पण जीवनु मूळ स्वरूप उत्पन्न थवानु कई ते कारण नथी अथवा देह छे ते मात्र सयोगथी उत्पन्न थयेलो एवो पदार्थ छे वळी ते. जड छे एटले कोईने जाणतो नथी, पोताने ते जाणतो नथी तो बीजाने शु जाणे? वळी देह रूपी छे, स्थूळादि स्वभाववाळो छे अने चक्षुनो विषय छे ए प्रकारे देहनु स्वरूप छे, तो ते चेतनना उत्पत्ति अने लयने शी रीते जाणे? अर्थात् पोताने ते जाणतो नथी तो 'माराथी आ चेतन उत्पन्न थयु छे', एम शी रीते जाणे? अने 'मारा छूटी जवा पछी आ चेतन छूटी जशे अर्थात् नाश पामशे' एम जड एवो देह शी रीते

आत्माना होवापणा विषे आपे जे जे प्रकार कह्या तेनो अतरमा विचार करवाथी सभव थाय छे (५९)

बीजी शका थाय त्या, आत्मा नहि अविनाश,
देहयोगथी उपजे, देहवियोगे नाश ६०

पण बीजो एम शका थाय छे, के आत्मा छे तोपण ते अविनाश एटले नित्य नथी, त्रणे काळ होय एवो पदार्थ नथी, मात्र देहना सयोगथी उत्पन्न थाय, अने वियोगे विनाश पामे (६०)

अथवा वस्तु क्षणिक छे, क्षणे क्षणे पलटाय,
ए अनुभवथी पण नही, आत्मा नित्य जणाय ६१

अथवा वस्तु क्षणे क्षणे बदलाती जोवामा आवे छे, तेथी सर्व वस्तु क्षणिक छे, अने अनुभवथी जोता पण आत्मा नित्य जणातो नथी (६१)

समाधान—सद्गुरु उवाच

[आत्मा नित्य छे, एम सद्गुरु समाधान करे छे —]

देह मात्र सयोग छे, वळी जड रूपी दृश्य,
चेतनना उत्पत्ति लय, कोना अनुभव वश्य? ६२

देहमात्र परमाणुनो सयोग छे, अथवा सयोगे करी आत्माना सबधमा छे वळी ते देह जड छे, रूपी छे, अने दृश्य एटले बीजा कोई द्रष्टानो ते जाणवानो विषय छे, एटले ते पोते पोताने जाणतो नथी, तो चेतनना उत्पत्ति अने नाश ते क्याथी जाणे? ते देहना परमाणुए परमाणुनो

विचार करता पण ते जड ज छे, एम समजाय छे तेथी तेमाथी चेतननी उत्पत्ति थवा योग्य नथी, अने उत्पत्ति थवा योग्य नथी तेथी चेतन तेमा नाश पण पामवा योग्य नथी वळी ते देह रूपी एटले स्थूळादि परिणामवाळो छे, अने चेतन द्रष्टा छे, त्यारे तेना संयोगथी चेतननी उत्पत्ति शी रीते थाय? अने तेमा लय पण केम थाय? देहमाथी चेतन उत्पन्न थाय छे, अने तेमा ज नाश पामे छे, ए वात कोना अनुभवने वश रही? अर्थात् एम कोणे जाण्यु? केमके जाणनार एवा चेतननी उत्पत्ति देहथी प्रथम छे नही, अने नाश तो तेथी पहेला छे, त्यारे ए अनुभव थयो कोने? ६२

जीवनु स्वरूप अविनाशी एटले नित्य त्रिकाळ रहेवाळु सभवतु नथी, देहना योगथी एटले देहना जन्म साथे ते जन्मे छे अने देहना वियोगे एटले देहना नाशथी ते नाश पामे छे ए आशकानु समाधान आ प्रमाणे विचारशो –

देह छे ते जीवने मात्र सयोग सबधे छे, पण जीवनु मूळ स्वरूप उत्पन्न थवानु कई ते कारण नथी अथवा देह छे ते मात्र सयोगथी उत्पन्न थयेलो एवो पदार्थ छे वळी ते जड छे एटले कोईने जाणतो नथी, पोताने ते जाणतो नथी तो बीजाने शु जाणे? वळी देह रूपी छे, स्थूळादि स्वभाववाळो छे अने चक्षुनो विषय छे ए प्रकारे देहनु स्वरूप छे, तो ते चेतनना उत्पत्ति अने लयने शी रीते जाणे? अर्थात् पोताने ते जाणतो नथी तो 'माराथी आ चेतन उत्पन्न थयु छे', एम शी रीते जाणे? अने 'मारा छूटी जवा पछी आ चेतन छूटी जशे अर्थात् नाश पामशे' एम जड एवो देह शी रीते

जाणे? केमके जाणनारो पदार्थ तो जाणनार ज रहे छे, देह जाणनार थई शकतो नथी, तो पछी चेतनना उत्पत्तिलयनो अनुभव केने वश कहेवो?

देहने वश तो कहेवाय एवु छे ज नही, केमके ते प्रत्यक्ष जड छे, अने तेनु जडपणु जाणनारो एवो तेथी भिन्न बीजो पदार्थ पण समजाय छे

जो कदी एम कहीए, के चेतनना उत्पत्तिलय चेतन जाणे छे तो ते वात बोलता ज विघ्न पामे छे केमके, चेतनना उत्पत्ति, लय जाणनार तरीके चेतननो ज अगीकार करवो पड्यो, एटले ए वचन तो मात्र अपसिद्धातरूप अने कहेवामात्र थयु, जेम 'मारा मोढामा जीभ नथी' एवु वचन कोई कहे तेम चेतनना उत्पत्ति, लय चेतन जाणे छे, माटे चेतन नित्य नथी, एम कहीए ते, तेवु प्रमाण थयु ते प्रमाणनु केवु यथार्थ-पणु छे ते तमे ज विचारी जुओ (६२)

जेना अनुभव वश्य ए, उत्पन्न लयनु ज्ञान,
ते तेथी जुदा विना, थाय न केमे भान ६३

जेना अवुभवमा ए उत्पत्ति अने नाशनु ज्ञान वर्ते ते भान तेथी जुदा विना कोई प्रकारे पण सभवतु नथी, अर्थात् चेतनना उत्पत्ति, लय थाय छे, एवो कोईने पण अनुभव थवा योग्य छे नही ६३

देहनो उत्पत्ति अने देहना लयनु ज्ञान जेना अनुभवमा वर्ते छे, ते ते देहथी जुदो न होय तो कोई पण प्रकारे देहनी उत्पत्ति अने लयनु ज्ञान थाय नही. अथवा जेनी उत्पत्ति अने लय जे जाणे छे ते तेथी जुदो ज होय, केमके

ते उत्पत्तिलयरूप न ठर्यो, पण तेनो जाणनार ठर्यो माटे ते बेनी एकता केम थाय? (६३)

जे सयोगो देखिये, ते ते अनुभव दृश्य,
ऊपजे नहि सयोगथी, आत्मा नित्य प्रत्यक्ष ६४

जे जे सयोगो देखीए छीए ते ते अनुभवस्वरूप एवा आत्माना दृश्य एटले तेने आत्मा जाणे छे, अने ते सयोगनु स्वरूप विचारता एवो कोई पण सयोग समजातो नथी के जेथी आत्मा उत्पन्न थाय छे, माटे आत्म सयोगथी नही उत्पन्न थयेलो एवो छे, अर्थात् असयोगी छे, स्वाभाविक पदार्थ छे, माटे ते प्रत्यक्ष 'नित्य' समजाय छे ६४

जे जे देहादि सयोगो देखाय छे ते ते अनुभवस्वरूप एवा आत्माना दृश्य छे, अर्थात् आत्मा तेने जुए छे अने जाणे छे, एवा पदार्थ छे ते वधा सयोगोनो विचार करी जुओ तो कोई पण सयोगोथी अनुभवस्वरूप एवो आत्मा उत्पन्न थई शकवा योग्य तमने जणाशे नही कोई पण सयोगो तमने जाणता नथी अने तमे ते सर्व सयोगोने जाणो छो ए ज तमारु तेथी जुदापणु अने असयोगीपणु एटले ते सयोगोथी उत्पन्न नही थवापणु सहजे सिद्ध थाय छे, अने अनुभवमा आवे छे तेथी एटले कोई पण सयोगोथी जेनी उत्पत्ति थई शकती नथी, कोई पण सयोगो जेनी उत्पत्ति माटे अनुभवमां आवी शकता नथी, जे जे सयोगो कल्पीए तेथी ते अनुभव न्यारो ने न्यारो ज मात्र तेने जाणनार रूपे ज रहे छे, ते अनुभवस्वरूप आत्माने तमे नित्य अस्पर्श्य एटले ते सयोगोना भावरूप स्पर्शने पाम्यो नथी, एम जाणो (६४)

जडथी चेतन ऊपजे, चेतनथी जड थाय;

एवो अनुभव कोईने, क्यारे कदी न थाय ६५

जडथी चेतन ऊपजे, अने चेतनथी जड उत्पन्न थाय एवो कोईने क्यारे कदीपण अनुभव थाय नही (६५)

कोई सयोगोथी नहि, जेनी उत्पत्ति थाय,

नाश न तेनो कोईमा तेथी नित्य सदाय. ६६

जेनी उत्पत्ति कोईपण सयोगोथी थाय नही, तेनो नाश पण कोईने विषे थाय नही, माटे आत्मा त्रिकाळ 'नित्य' छे. ६६

कोई पण सयोगोथी जे उत्पन्न न थयु होय अर्थात् पोताना स्वभावथी करीने जे पदार्थ सिद्ध होय, तेनो लय बीजा कोई पण पदार्थमा थाय यही, अने जो बीजा पदार्थमा तेनो लय थतो होय, तो तेमाथी तेनी प्रथम उत्पत्ति थवी जोईती हती, नही तो तेमा तेनी लयरूप ऐक्यता थाय नही माटे आत्मा अनुत्पन्न अने अविनाशी जाणीने नित्य छे एवी प्रतीति करवी योग्य लागशे (६६)

क्रोधादि तरतम्यता, सर्पादिकनी माय,

पूर्वजन्म सस्कार ते, जीव नित्यता त्याय ६७

क्रोधादि प्रकृतिओनु विशेपपणु सर्प वगेरे प्राणीमा जन्मथी ज जोवामा आवे छे, वर्तमान देहे तो ते अभ्यास कर्यो नथी, जन्मनी साथे ज ते छे, एटले ए पूर्वजन्मनो ज सस्कार छे, जे पूर्वजन्म जीवनी नित्यता सिद्ध करे छे ६७

सर्पमा जन्मथी क्रोधनु विशेपपणु जोवामा आवे छे, पारेवाने विषे जन्मथी ज निर्हिसकपणु जोवामा आवे छे, माकड आदि जतुओने पकडता तेने पकडवाथी दु ख थाय छे एवी

भयसज्ञा प्रथमथी तेना अनुभवमा रही छे, तेथी ते नासी जवानो प्रयत्न करे छे, कईक प्राणीमा जन्मथी प्रीतिनु, कईकमा समतानु, कईकमा विशेष निर्भयतानु, कईकमा गभीरतानु, कईकमा विशेष भयसज्ञानु, कईकमा कामादि प्रत्ये असगतानु, अने कईकने आहारादि विषे अधिक अधिक लुब्धपणानु विशेषपणु जोवामा आवे छे, ए आदि भेद एटले क्रोधादि सज्ञाना न्यूनाधिकपणा आदिथी तेम ज ते ते प्रकृतिओ जन्मथी सहचारीपणे रही जोवामा आवे छे तेथी तेनु कारण पूर्वना सस्कारो ज सभवे छे

कदापि एम कहीए के गर्भमा वीर्य–रेतना गुणना योगथी ते ते प्रकारना गुणो उत्पन्न थाय छे पण तेमा पूर्वजन्म कई कारणभूत नथी, ए कहेवु पण यथार्थ नथी जे माबापो कामने विषे विशेष प्रीतिवाळा जोवामा आवे छे, तेना पुत्रो परम वीतराग जेवा बाळपणाथी ज जोवामा आवे छे, वळी जे माबापोमा क्रोधनु विशेषपणु जोवामा आवे छे, तेनी सततिमा समतानु विशेषपणु दृष्टिगोचर थाय छे, ते शी रीते थाय? वळी ते वीर्य–रेतना तेवा गुणो संभवता नथी, केमके ते वीर्य–रेत पोते चेतन नथी, तेमा चेतन सचरे छे, एटले देह धारण करे छे, एथी करीने वीर्य-रेतने आश्रये क्रोधादि भाव गणी शकाय नही, चेतन विना कोई पण स्थळे तेवा भावो अनुभवमा आवता नथी मात्र ते चेतनाश्रित छे, एटले वीर्य–रेतना गुणो नथी, जेथी तेना न्यूनाधिके करी क्रोधादिनु न्यूनाधिकपणु मुख्यपणे थई शकवा योग्य नथी चेतनना ओछा अधिका प्रयोगथी क्रोधादिनु न्यूनाधिकपणु थाय छे, जेथी गर्भना

वीर्य–रेतनो गुण नही, पण चेतननो ते गुणने आश्रय छे, अने ते न्यूनाधिकपणु ते चेतनना पूर्वंना अभ्यासथी ज सभवे छे, केमके कारण विना कार्यनी उत्पत्ति न थाय चेतननो पूर्व प्रयोग तथा प्रकारे होय, तो ते सस्कार वर्ते, जेथी आ देहादि प्रथमना सस्कारोनो अनुभव थाय छे, अने ते सस्कारो पूर्वजन्म सिद्ध करे छे, अने पूर्वजन्मनी सिद्धिथी आत्मानी नित्यता सहेजे सिद्ध थाय छे (६७)

आत्मा द्रव्ये नित्य छे, पर्याये पलटाय,
वाळादि वय त्रण्यनु, ज्ञान एकने थाय ६८

आत्मा वस्तुपणे नित्य छे समये समये ज्ञानादि परिणामना पलटवाथी तेना पर्यायनु पलटवापणु छे (कई समुद्र पलटातो नथी, मात्र मोजा पलटाय छे, तेनी पेठे) जेम वाळ, युवान अने वृद्ध ए त्रण अवस्था छे, ते आत्माने विभावथी पर्याय छे अने वाळ अवस्था वर्तता आत्मा वाळक जणातो, ते बाळ अवस्था छोडी ज्यारे युवावस्था ग्रहण करी त्यारे युवान जणायो, अने युवावस्था तजी वृद्धावस्था ग्रहण करी त्यारे वृद्ध जणायो. ए त्रणे अवस्थानो भेद थयो ते पर्यायभेद छे, पण ते त्रणे अवस्थामा आत्मद्रव्यनो भेद थयो नही, अर्थात् अवस्थाओ वदलाई पण आत्मा वदलायो नथी आत्मा ए त्रणे अवस्थाने जाणे छे, अने ते त्रणे अवस्थानी तेने ज स्मृति छे त्रणे अवस्थामा आत्मा एक होय तो एम वने, पण जो आत्मा क्षणे क्षणे वदलातो होय तो तेवो अनुभव वने ज नही (६८)

अथवा ज्ञान क्षणिकनु, जे जाणी वदनार,
वदनारो ते क्षणिक नहि, कर अनुभव निर्धार ६९

वळी अमुक पदार्थ क्षणिक छे एम जे जाणे छे, अने क्षणिकपणु कहे छे ते कहेनार अर्थात् जाणनार क्षणिक होय नही, केमके प्रथम क्षणे अनुभव थयो तेने वीजे क्षणे ते अनुभव कही शकाय, ते बीजे क्षणे पोते न होय तो क्यायी कहे? माटे ए अनुभवथी पण आत्माना अक्षणिकपणानो निश्चय कर (६९)

क्यारे कोई वस्तुनो, केवळ होय न नाश,
चेतन पामे नाश तो, केमा भळे तपास ७०

वळी कोई पण वस्तुनो कोई पण काळे केवळ तो नाश थाय ज नही, मात्र अवस्थातर थाय, माटे चेतननो पण केवळ नाश नही अने अवस्थातररूप नाश थतो होय तो ते केमा भळे, अथवा केवा प्रकारनु अवस्थातर पामे ते तपास अर्थात् घटादि पदार्थ फूटी जाय छे, एटले लोको एम कहे छे के घडो नाश पाम्यो छे, कई माटीपणु नाश पाम्यु नथी ते छिन्नभिन्न थई जई सूक्ष्ममा सूक्ष्म भूको थाय, तोपण परमाणु-समूहरूपे रहे, पण केवळ नाश न थाय, अने तेमानु एक परमाणु पण घटे नही, केमके अनुभवथी जोता अवस्थातर थई शके, पण पदार्थनो समूळगो नाश थाय एम भासी ज शकवा योग्य नथी, एटले जो तु चेतननो नाश कहे, तोपण केवळ नाश तो कही ज शकाय नही, अवस्थातररूप नाश कहेवाय जेम घट फूटी जई क्रमे करी परमाणुसमूहरूपे स्थितिमा रहे, तेम चेतननो अवस्थातररूप नाश तारे कहेवो होय तो ते शी स्थितिमा रहे, अथवा घटना परमाणुओ जेम परमाणुसमूहमा भळ्या तेम

चेतन कई वस्तुमा भळवा योग्य छे ते तपास, अर्थात् ए प्रकारे तु अनुभव करी जोईश तो कोईमा नही भळो शकवा योग्य, अथवा परस्वरूपे अवस्थातर नही पामवा योग्य एवु चेतन एटले आत्मा तने भास्यमान थशे (७०)

शका—शिष्य उवाच

[आत्मा कर्मनो कर्त्ता नथी, अेम शिष्य कहे छे —]

कर्त्ता जीव न कर्मनो, कर्म ज कर्त्ता कर्म,
अथवा सहज स्वभाव का, कर्म जीवनो धर्म ७१

जोव कर्मनो कर्ता नथी, कर्मना कर्ता कर्म छे अथवा अनायासे ते थया करे छे एम नही, ने जीव ज तेनो कर्ता छे एम कहो तो पछी ते जीवनो धर्म ज छे, अर्थात् धर्म होवाथी कयारेय निवृत्त न थाय (७१)

आत्मा सदा असग ने, करे प्रकृति बध;
अथवा ईश्वर प्रेरणा, तेथी जीव अवध. ७२

अथवा एम नही, तो आत्मा सदा असग छे, अने सत्त्वादि गुणवाळी प्रकृति कर्मनो बध करे छे; तेम नही, तो जीवने कर्म करवानी प्रेरणा ईश्वर करे छे, तेथी ईश्वरेच्छारूप होवाथी जीव ते कर्मथी 'अवध' छे (७२)

माटे मोक्ष उपायनो, कोई न हेतु जणाय,
कर्मतणु कर्तापणु, का नहि, का नहि जाय ७३

माटे जीव कोई रीते कर्मनो कर्ता थई शकतो नथी, अने मोक्षनो उपाय करवानो कोई हेतु जणातो नथी, का

जीवने कर्मनु कर्तापणु नथी अने जो कर्तापणु होय तो कोई रीते ते तेनो स्वभाव मटवा योग्य नथी (७३)

समाधान—सद्गुरु उवाच

[कर्मनु कर्तापणु आत्माने जे प्रकारे छे ते प्रकारे सद्गुरु समाधान करे छे—]

होय न चेतन प्रेरणा, कोण ग्रहे तो कर्म?
जडस्वभाव नहि प्रेरणा, जुओ विचारी धर्म[1] ७४

चेतन एटले आत्मानी प्रेरणारूप प्रवृत्ति न होय, तो कर्मने कोण ग्रहण करे? जडनो स्वभाव प्रेरणा नथी. जड अने चेतन बेयना धर्म विचारी जुओ ७४

जो चेतननो प्रेरणा न होय, तो कर्म कोण ग्रहण करे? प्रेरणापणे ग्रहण कराववारूप स्वभाव जडनो छे ज नही, अने एम होय तो घट, पटादि पण क्रोधादि भावमा परिणमवा जोईए अने कर्मना ग्रहणकर्ता होवा जोईए, पण तेवो अनुभव तो कोईने क्यारे पण थतो नथी, जेथी चेतन एटले जीव कर्म ग्रहण करे छे, एम सिद्ध थाय छे, अने ते माटे कर्मनो कर्ता कहीए छीए अर्थात् एम जीव कर्मनो कर्ता छे.

'कर्मना कर्ता कर्म कहेवाय के केम?' तेनु पण समाधान आथी थशे के जड कर्ममा प्रेरणारूप धर्म नही होवाथी ते ते रीते ग्रहण करवाने असमर्थ छे, अने कर्मनु करवापणु जीवने छे, केमके तेने विषे प्रेरणाशक्ति छे (७४)

जो चेतन करतु नथी, नथी थता तो कर्म,
तेथी सहज स्वभाव नहि, तेम ज नहि जीवधर्म ७५

---

१ पाठातर —जुओ विचारी मर्म

आत्मा जो कर्म करतो नथी, तो ते थता नथी, तेथी सहज स्वभावे एटले अनायासे ते थाय एम कहेवु घटतु नथी, तेम ज ते जीवनो धर्म पण नही, केमके स्वभावनो नाश थाय नही, अने आत्मा न करे तो कर्म थाय नही, एटले ए भाव टळी शके छे, माटे ते आत्मानो स्वाभाविक धर्म नही (७५)

केवळ होत असग जो, भासत तने न केम ?
असग छे परमार्थथी, पण निजभाने तेम ७६

केवळ जो असग होत, अर्थात् क्यारे पण तेने कर्मनु करवापणु न होत तो तने पोताने ते आत्मा प्रथमथी केम न भासत ? परमार्थथी ते आत्मा असग छे, पण ते तो ज्यारे स्वरूपनु भान थाय त्यारे थाय (७६)

कर्ता ईश्वर कोई नहि, ईश्वर शुद्ध स्वभाव,
अथवा प्रेरक ते गण्ये, ईश्वर दोषप्रभाव ७७

जगतनो अथवा जीवोना कर्मनो ईश्वर कर्ता कोई छे नही, शुद्ध आत्मस्वभाव जेनो थयो छे ते ईश्वर छे, अने तेने जो प्रेरक एटले कर्मकर्ता गणीए तो तेने दोषनो प्रभाव थयो गणावो जोईए, माटे ईश्वरनी प्रेरणा जीवना कर्म करवामा पण कहेवाय नही ७७

हवे तमे अनायासथी ते कर्मो थता होय, एम कह्यु ते विचारीए, अनायास एटले शु ? आत्माए नही चितवेलु ? अथवा आत्मानु कई पण कर्तृत्व छता प्रवर्तेलु नही ? अथवा ईश्वरादि कोई कर्म वळगाडी दे तेथी थयेलु ? अथवा प्रकृति पराणे वळगे तेथी थयेलु ? एवा मुख्य चार विकल्पथी अनायास-कर्तापणु विचारवा योग्य छे प्रथम विकल्प आत्माए नही

चितवेलु एवो छे जो तेम थतु होय तो तो कर्मनु ग्रहवापणु रहेतु ज नथी, अने ज्या ग्रहवापणु रहे नही त्या कर्मनु होवापणु सभवतु नथी, अने जीव तो प्रत्यक्ष चिंतवन करे छे अने ग्रहणाग्रहण करे छे, एम अनुभव थाय छे

जेमा ते कोई रीते प्रवर्ततो ज नथी, तेवा क्रोधादि भाव तेने सप्राप्त थता ज नथी, तेथी एम जणाय छे के नही चिंतवेला अथवा आत्माथी नही प्रवर्तेला एवा कर्मोनु ग्रहण तेने थवायोग्य नथी, एटले ए बन्ने प्रकारे अनायास कर्मनु ग्रहण सिद्ध थतु नथी

त्रीजो प्रकार ईश्वरादि कोई कर्म वळगाडी दे तेथी अनायास कर्मनु ग्रहण थाय छे एम कहीए तो ते घटतु नथी. प्रथम तो ईश्वरनु स्वरूप निर्धारवु घटे छे, अने ए प्रसग पण विशेष समजवा योग्य छे, तथापि अत्रे ईश्वर के विष्णु आदि कर्तानो कोई रीते स्वीकार करी लईए छीए, अने ते पर विचार करीए छीए —

जो ईश्वरादि कर्मना वळगाडनार होय तो तो जीव नामनो वच्चे कोई पण पदार्थ रह्यो नही, केमके प्रेरणादि धर्मे करीने तेनु अस्तित्व समजातु हतु, ते प्रेरणादि तो ईश्वरकृत ठर्या, अथवा ईश्वरना गुण ठर्या, तो पछी बाकी जीवनु स्वरूप शु रह्यु के तेने जीव एटले आत्मा कहीए? एटले कर्म ईश्वरप्रेरित नही पण आत्माना पोताना ज करेला होवा योग्य छे

तेम चोथो विकल्प प्रकृत्यादि पराणे वळगवाथी कर्म थता होय? ते विकल्प पण यथार्थ नथी केमके प्रकृत्यादि

जड छे, तेने आत्मा ग्रहण न करे तो ते शी रीते वळगवा योग्य थाय? अथवा द्रव्यकर्मनु बीजु नाम प्रकृति छे, एटले कर्मनु कर्तापणु कर्मने ज कहेवा बराबर थयु ते तो पूर्वे निषेधी देखाडयु छे प्रकृति नही, तो अत करणादि कर्म ग्रहण करे तेथी आत्मामा कर्तापणु वळगे छे, एम कहीए तो ते पण एकाते सिद्ध नथी अत करणादि पण चेतननी प्रेरणा विना अत करणादिरूपे प्रथम ठरे ज क्याथी? चेतन जे कर्मवळगणानु, मनन करवा, अवलवन ले छे, ते अत करण छे जो चेतन मनन करे नही, तो कई ते वळगणामा मनन करवानो धर्म नथी, ते तो मात्र जड छे चेतननी प्रेरणाथी चेतन तेने अवलबीने कई ग्रहण करे छे तेथी तेना विषे कर्तापणु आरोपाय छे, पण मुख्यपणे ते चेतन कर्मनो कर्ता छे

आ स्थळे तमे वेदातादि दृष्टिए विचारशो तो अमारा आ वाक्यो तमने भ्रातिगत पुरुषना कहेला लागशे पण हवे जे प्रकार कह्यो छे ते समजवाथी तमने ते वाक्यनी यथातथ्यता लागशे, अने भ्रातिगतपणु भास्यमान नही थाय

जो कोई पण प्रकारे आत्मानु कर्मनु कर्तृत्वपणु न होय, तो कोई पण प्रकारे तेनु भोक्तृत्वपणु पण न ठरे, अने ज्यारे एम ज होय तो पछी तेना कोई पण प्रकारना दु खोनो सभव पण न ज थाय ज्यारे कोई पण प्रकारना दु खोनो सभव आत्माने न ज थतो होय तो पछी वेदातादि शास्त्रो सर्व दु खथी क्षय थवानो जे मार्ग उपदेशे छे ते शा माटे उपदेशे छे? 'ज्या सुधी आत्मज्ञान थाय नही, त्या सुधी दु खनी आत्यतिक निवृत्ति थाय नही,' एम वेदातादि कहे छे,

ते जो दुःख न ज होय तो तेनी निवृत्तिनो उपाय शा माटे कहेवो जोईए? अने कर्तृत्वपणु न होय, तो दुःखनु भोक्तृत्वपणु क्याथी होय? एम विचार करवाथी कर्मनु कर्तृत्व ठरे छे

हवे अत्रे एक प्रश्न थवा योग्य छे अने तमे पण ते प्रश्न कर्यो छे के 'जो कर्मनु कर्तापणु आत्माने मानीए, तो तो आत्मानो ते धर्म ठरे, अने जे जेनो धर्म होय ते क्यारे पण उच्छेद थवा योग्य नथी, अर्थात् तेनाथी केवळ भिन्न पडी शकवा योग्य नथी, जेम अग्निनी उष्णता अथवा प्रकाश तेम' एम ज जो कर्मनु कर्तापणु आत्मानो धर्म ठरे, तो ते नाश पामे नही

उत्तर – सर्व प्रमाणाशना स्वीकार्या विना एम ठरे, पण विचारवान होय ते कोई एक प्रमाणाश स्वीकारीने बीजा प्रमाणाशनो नाश न करे 'ते जीवने कर्मनु कर्तापणु न होय' अथवा 'होय तो ते प्रतीत थवा योग्य नथी' ए आदि प्रश्न कर्याना उत्तरमा जीवनु कर्मनु कर्तृत्व जणाव्यु छे कर्मनु कर्तृत्व होय तो ते टळे ज नही, एम काई सिद्धात समजवो योग्य नथी, केमके जे जे कोई पण वस्तु ग्रहण करी होय ते छोडी शकाय एटले त्यागी शकाय, केमके ग्रहण करेली वस्तुथी ग्रहण करनारी वस्तुनु केवळ एकत्व केम थाय? तेथी जीवे ग्रहण करेला एवा जे द्रव्यकर्म तेनो जीव त्याग करे तो थई शकवा योग्य छे, केमके ते तेने सहकारी स्वभावे छे, सहज स्वभावे नथी, अने ते कर्मने मे तमने अनादि भ्रम कह्यो छे, अर्थात् ते कर्मनु कर्तापणु अज्ञानथी प्रतिपादन कर्युं छे, तेथी पण ते निवृत्त थवा योग्य छे, एम साथे समजवु घटे छे जे जे भ्रम होय छे, ते ते वस्तुनी ऊलटी स्थितिनी मान्यतारूप

होय छे, अने तेथी ते टळवा योग्य छे, जेम मृगजळमाथी जळबुद्धि कहेवानो हेतु ए छे के, अज्ञाने करीने पण जो आत्माने कर्तापणु न होय, तो तो कशु उपदेशादि श्रवण, विचार, ज्ञान आदि समजवानो हेतु रहेतो नथी. हवे अही आगळ जीवनु परमार्थे जे कर्तापणु छे ते कहीए छीए. (७७)

चेतन जो निज भानमा, कर्ता आप स्वभाव,
वर्ते नहि निज भानमा, कर्ता कर्म–प्रभाव ७८

आत्मा जो पोताना शुद्ध चैतन्यादि स्वभावमा वर्ते तो ते पोताना ते ज स्वभावनो कर्ता छे, अर्थात् ते ज स्वरूपमा परिणमित छे, अने ते शुद्ध चैतन्यादि स्वभावना भानमा वर्तंतो न होय त्यारे कर्मभावनो कर्ता छे. ७८

पोताना स्वरूपना भानमा आत्मा पोताना स्वभावनो एटले चैतन्यादि स्वभावनो ज कर्ता छे, अन्य कोई पण कर्मादिनो कर्ता नथी, अने आत्मा ज्यारे पोताना स्वरूपना भानमा वर्ते नही त्यारे कर्मना प्रभावनो कर्ता कह्यो छे

परमार्थे तो जीव अक्रिय छे, एम वेदातादिनु निरूपण छे, अने जिनप्रवचनमा पण सिद्ध एटले शुद्धात्मानु अक्रियपणु छे, एम निरूपण कर्युं छे, छता अमे आत्माने शुद्धावस्थामा कर्ता होवाथी सक्रिय कह्यो एवो सदेह अत्रे थवा योग्य छे ते सदेह आ प्रकारे शमाववा योग्य छे –शुद्धात्मा परयोगनो, परभावनो अने विभावनो त्या कर्ता नथी, माटे अक्रिय कहेवा योग्य छे, पण चैतन्यादि स्वभावनो पण आत्मा कर्ता नथी एम जो कहीए तो तो पछी तेनु कई पण स्वरूप न रहे. शुद्धात्माने योगक्रिया नही होवाथी ते अक्रिय छे, पण स्वा-

भाविक चैतन्यादि स्वभावरूप क्रिया होवाथी ते सक्रिय छे चैतन्यात्मपणु आत्माने स्वाभाविक होवाथी तेमा आत्मानु परिणमवु ते एकात्मपणे ज छे, अने तेथी परमार्थनयथी सक्रिय एवु विशेषण त्या पण आत्माने आपी शकाय नही निज स्वभावमा परिणमवारूप सक्रियताथी निज स्वभावनु कर्तापणु शुद्धात्माने छे, तेथी केवळ शुद्ध स्वधर्म होवाथी एकात्मपणे परिणमे छे, तेथी अक्रिय कहेता पण दोष नथी जे विचारे सक्रियता, अक्रियता निरूपण करी छे, ते विचारना परमार्थने ग्रहीने सक्रियता, अक्रियता कहेता कशो दोष नथी (७८)

शका — शिष्य उवाच

[ते कर्मनु भोक्तापणु जीवने नहीं होय? एम शिष्य कहे छे —]

जीव कर्म कर्ता कहो, पण भोक्ता नहि सोय,
शु समजे जड कर्म के, फळ परिणामी होय? ७९

जीवने कर्मनो कर्ता कहीए तोपण ते कर्मनो भोक्ता जीव नही ठरे, केमके जड एवा कर्म शु समजे के ते फळ देवामा परिणामी थाय? अर्थात् फळदाता थाय? (७९)

फळदाता ईश्वर गण्ये, भोक्तापणु सधाय,
एम कह्ये ईश्वरतणु, ईश्वरपणु ज जाय ८०

फळदाता ईश्वर गणीए तो भोक्तापणु साधी शकीए, अर्थात् जीवने ईश्वर कर्म भोगवावे तेथी जीव कर्मनो भोक्ता सिद्ध थाय, पण परने फळ देवा आदि प्रवृत्तिवाळो ईश्वर गणीए तो तेनु ईश्वरपणु ज रहेतु नथी, एम पण पाछो विरोध आवे छे ८०

'ईश्वर सिद्ध थया विना एटले कर्मफळदातृत्वादि कोई पण ईश्वर ठर्या विना जगतनी व्यवस्था रहेवी

सभवती नथी,' एवा अभिप्राय परत्वे नीचे प्रमाणे विचारवा योग्य छे

जो कर्मना फळने ईश्वर आपे छे एम गणीए तो त्या ईश्वरनु ईश्वरपणु ज रहेतु नथी, केमके परने फळ देवा आदि प्रपचमा प्रवर्तता ईश्वरने देहादि अनेक प्रकारनो सग थवो सभवे छे, अने तेथी यथार्थ शुद्धतानो भग थाय छे मुक्त जीव जेम निष्क्रिय छे एटले परभावादिनो कर्ता नथी, जो परभावादिनो कर्ता थाय तो तो ससारनी प्राप्ति थाय छे, तेम ज ईश्वर पण परने फळ देवा आदि रूप क्रियामा प्रवर्ते तो तेने पण परभावादिना कर्तापणानो प्रसग आवे छे, अने मुक्त जीव करता तेनु न्यूनत्व ठरे छे, तेथी तो तेनु ईश्वरपणु ज उच्छेदवा जेवी स्थिति थाय छे

वळी जीव अने ईश्वरनो स्वभावभेद मानता पण अनेक दोष सभवे छे बन्नेने जो चैतन्यस्वभाव मानीए, तो बन्ने समान धर्मना कर्ता थया, तेमा ईश्वर जगतादि रचे अथवा कर्मनु फळ आपवारूप कार्य करे अने मुक्त गणाय, अने जीव एकमात्र देहादि सृष्टि रचे, अने पोताना कर्मोनु फळ पामवा माटे ईश्वराश्रय ग्रहण करे, तेम ज बधमा गणाय ए यथार्थ वात देखाती नथी एवी विषमता केम सभवित थाय?

वळी जीव करता ईश्वरनु सामर्थ्य विशेष मानीए तोपण विरोध आवे छे ईश्वरने शुद्ध चैतन्य स्वरूप गणीए तो शुद्ध चैतन्य एवा मुक्त जीवमा अने तेमा भेद पडवो न जोईए, अने ईश्वरथी कर्मना फळ आपवादि कार्य न थवा जोईए, अथवा मुक्त जीवथी पण ते कार्य थवु जोईए, अने ईश्वरने जो अशुद्ध चैतन्यस्वरूप गणीए तो तो ससारी जीवो

जेवो तेनो स्थिति ठरे, त्या पछो सर्वज्ञादि गुणनो सभव क्याथी थाय? अथवा देहधारी सर्वज्ञनी पेठे तेने 'देहधारी सर्वज्ञ ईश्वर' मानीए तोपण सर्व कर्मफळदातृत्वरूप 'विशेष स्वभाव' ईश्वरमा कया गुणने लीधे मानवा योग्य थाय? अने देह तो नाश पामवा योग्य छे, तेथी ईश्वरनो पण देह नाश पामे, अने ते मुक्त थये कर्मफळदातृत्व न रहे, ए आदि अनेक प्रकारथी ईश्वरने कर्मफळदातृत्व कहेता दोष आवे छे, अने ईश्वरने तेवे स्वरूपे मानता तेनु ईश्वरपणु उत्थापवा समान थाय छे (८०)

ईश्वर सिद्ध थया विना, जगत नियम नहि होय,
पछी शुभाशुभ कर्मना, भोग्यस्थान नहि कोय ८१

तेवो फळदाता ईश्वर सिद्ध थतो नथी एटले जगतनो नियम पण कोई रहे नही, अने शुभाशुभ कर्म भोगववाना कोई स्थानक पण ठरे नही, एटले जीवने कर्मनु भोक्तृत्व क्या रह्यु? (८१)

समाधान — सद्गुरु उवाच

[जीवने पोतानां करेला कर्मनु भोक्तापणु छे, अेम सद्गुरु समाधान करे छे –]

भावकर्म निज कल्पना, माटे चेतनरूप,
जीववीर्यनी स्फुरणा ग्रहण करे जडधूप ८२

भावकर्म जीवने पोतानी भ्राति छे, माटे चेतनरूप छे, अने ते भ्रातिने अनुयायी थई जीववीर्य स्फुरायमान थाय छे, तेथी जड एवा द्रव्यकर्मनी वर्गणा ते ग्रहण करे छे ८२

कर्म जड छे तो ते शु समजे के आ जीवने आ रीते मारे फळ आपवु, अथवा ते स्वरूपे परिणमवु? माटे जीव कर्मनो भोक्ता थवो सभवतो नथी, ए आशकानु समाधान नीचेथी थशे.

जोव पोताना स्वरूपना अज्ञानथी कर्मनो कर्ता छे ते अज्ञान ते चेतनरूप छे, अर्थात् जीवनी पोतानी कल्पना छे, अने ते कल्पनाने अनुसरोने तेना वोर्यस्वभावनी स्फूर्ति थाय छे, अथवा तेनु सामर्थ्यं तदनुयायीपणे परिणमे छे, अने तेथी जडनी धूप एटले द्रव्यकर्मरूप पुद्गलनी वर्गणाने ते ग्रहण करे छे (८२)

झेर सुधा समजे नही, जोव खाय फळ थाय,
एम शुभाशुभ कर्मनु, भोक्तापणु जणाय ८३

झेर अने अमृत पोते जाणता नथी के अमारे आ जीवने फळ आपवु छे, तोपण जे जीव खाय छे, तेने ते फळ थाय छे, एम शुभाशुभ कर्म, आ जीवने आ फळ आपवु छे एम जाणता नथी, तोपण ग्रहण करनार जीव, झेर अमृतना परिणामनी रीते फळ पामे छे ८३

झेर अने अमृत पोते एम समजता नथी के अमने खानारने मृत्यु, दीर्घायुषता थाय छे, पण स्वभावे तेने ग्रहण करनार प्रत्ये जेम तेनु परिणमवु थाय छे, तेम जीवमा शुभाशुभ कर्म पण परिणमे छे, अने फळ सन्मुख थाय छे, एम जीवने कर्मनु भोक्तापणु समजाय छे (८३)

एक राक ने एक नृप, ए आदि जे भेद,
कारण विना न कार्य ते, ते ज शुभाशुभ वेद्य ८४

एक राक छे अने एक राजा छे, ए आदि शब्दथी नीचपणु, ऊचपणु, कुरूपपणु, सुरूपपणु एम घणु विचित्रपणु छे, अने एवो जे भेद रहे छे ते, सर्वने समानता नथी, ते ज

शुभाशुभ कर्मनु भोक्तापणु छे, एम सिद्ध करे छे, केमके कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी ८४

ते शुभाशुभ कर्मनु फळ न थतु होय, तो एक राक अने एक राजा ए आदि जे भेद छे, ते न थवा जोईए, केमके जीवपणु समान छे, तथा मनुष्यपणु समान छे, तो सर्वने सुख अथवा दुःख पण समान जोईए, जेने बदले आवु विचित्रपणु जणाय छे, ते ज शुभाशुभ कर्मथी उत्पन्न थयेलो भेद छे, केमके कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी एम शुभ अने अशुभ कर्म भोगवाय छे (८४)

फळदाता ईश्वरतणी, एमा नथी जरूर,
कर्म स्वभावे परिणमे, थाय भोगथी दूर ८५

फळदाता ईश्वरनी एमा कई जरूर नथी झेर अने अमृतनी रीते शुभाशुभ कर्म स्वभावे परिणमे छे, अने निःसत्त्व थयेथी झेर अने अमृत फळ देता जेम निवृत्त थाय छे, तेम शुभाशुभ कर्मने भोगववाथी ते निःसत्त्व थये निवृत्त थाय छे ८५

झेर झेरपणे परिणमे छे, अने अमृत अमृतपणे परिणमे छे, तेम अशुभ कर्म अशुभपणे परिणमे अने शुभ कर्म शुभपणे परिणमे छे, माटे जीव जेवा जेवा अध्यवसायथी कर्मने ग्रहण करे छे, तेवा तेवा विपाकरूपे कर्म परिणमे छे, अने जेम झेर अने अमृत परिणमी रह्ये निःसत्त्व थाय छे, तेम भोगथी ते कर्म दूर थाय छे (८५)

ते ते भोग्य विशेषना, स्थानक द्रव्य स्वभाव,
गहन वात छे शिष्य आ, कही सक्षेपे साव ८६

जीव पोताना स्वरूपना अज्ञानथी कर्मनो कर्ता छे ते अज्ञान ते चेतनरूप छे, अर्थात् जीवनी पोतानी कल्पना छे, अने ते कल्पनाने अनुसरीने तेना वीर्यस्वभावनी स्फूर्ति थाय छे, अथवा तेनु सामर्थ्य तदनुयायीपणे परिणमे छे, अने तेथी जडनी धूप एटले द्रव्यकर्मरूप पुद्गलनी वर्गणाने ते ग्रहण करे छे (८२)

झेर सुधा समजे नही, जीव खाय फळ थाय,
एम शुभाशुभ कर्मनु, भोक्तापणु जणाय ८३

झेर अने अमृत पोते जाणता नथी के अमारे आ जीवने फळ आपवु छे, तोपण जे जीव खाय छे, तेने ते फळ थाय छे, एम शुभाशुभ कर्म, आ जीवने आ फळ आपवु छे एम जाणता नथी, तोपण ग्रहण करनार जीव, झेर अमृतना परिणामनी रीते फळ पामे छे ८३

झेर अने अमृत पोते एम समजता नथी के अमने खानारने मृत्यु, दीर्घायुषता थाय छे, पण स्वभावे तेने ग्रहण करनार प्रत्ये जेम तेनु परिणमवु थाय छे, तेम जीवमा शुभाशुभ कर्म पण परिणमे छे, अने फळ सन्मुख थाय छे, एम जीवने कर्मनु भोक्तापणु समजाय छे (८३)

एक राक ने एक नृप, ए आदि जे भेद,
कारण विना न कार्य ते, ते ज शुभाशुभ वेद्य ८४

एक राक छे अने एक राजा छे, ए आदि शब्दथी नीचपणु, ऊचपणु, कुरूपपणु, सुरूपपणु एम घणु विचित्रपणु छे, अने एवो जे भेद रहे छे ते, सर्वने समानता नथी, ते ज

शुभाशुभ कर्मनु भोक्तापणु छे, एम सिद्ध करे छे, केमके कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी ८४

ते शुभाशुभ कर्मनु फळ न थतु होय, तो एक राक अने एक राजा ए आदि जे भेद छे, ते न थवा जोईए, केमके जीवपणु समान छे, तथा मनुष्यपणु समान छे, तो सर्वने सुख अथवा दुःख पण समान जोईए, जेने बदले आवु विचित्रपणु जणाय छे, ते ज शुभाशुभ कर्मथी उत्पन्न थयेलो भेद छे, केमके कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी एम शुभ अने अशुभ कर्म भोगवाय छे (८४)

फळदाता ईश्वरतणी, एमा नथी जरूर,
कर्म स्वभावे परिणमे, थाय भोगथी दूर ८५

फळदाता ईश्वरनी एमा कई जरूर नथी झेर अने अमृतनी रीते शुभाशुभ कर्म स्वभावे परिणमे छे, अने निःसत्त्व थयेथी झेर अने अमृत फळ देता जेम निवृत्त थाय छे, तेम शुभाशुभ कर्मने भोगववाथी ते निःसत्त्व थये निवृत्त थाय छे ८५

झेर झेरपणे परिणमे छे, अने अमृत अमृतपणे परिणमे छे, तेम अशुभ कर्म अशुभपणे परिणमे अने शुभ कर्म शुभपणे परिणमे छे, माटे जीव जेवा जेवा अध्यवसायथी कर्मने ग्रहण करे छे, तेवा तेवा विपाकरूपे कर्म परिणमे छे, अने जेम झेर अने अमृत परिणमी रह्ये निःसत्त्व थाय छे, तेम भोगथी ते कर्म दूर थाय छे (८५)

ते ते भोग्य विशेषना, स्थानक द्रव्य स्वभाव,
गहन वात छे शिष्य आ, कही सक्षेपे साव. ८६

जीव पोताना स्वरूपना अज्ञानथी कर्मनो कर्ता छे ते अज्ञान ते चेतनरूप छे, अर्थात् जीवनी पोतानी कल्पना छे, अने ते कल्पनाने अनुसरीने तेना वीर्यस्वभावनी स्फूर्ति थाय छे, अथवा तेनु सामर्थ्य तदनुयायीपणे परिणमे छे, अने तेथी जडनी धूप एटले द्रव्यकर्मरूप पुद्गलनी वर्गणाने ते ग्रहण करे छे (८२)

झेर सुधा समजे नही, जीव खाय फळ थाय,
एम शुभाशुभ कर्मनु, भोक्तापणु जणाय ८३

झेर अने अमृत पोते जाणता नथी के अमारे आ जीवने फळ आपवु छे, तोपण जे जीव खाय छे, तेने ते फळ थाय छे, एम शुभाशुभ कर्म, आ जीवने आ फळ आपवु छे एम जाणता नथी, तोपण ग्रहण करनार जीव, झेर अमृतना परिणामनी रीते फळ पामे छे ८३

झेर अने अमृत पोते एम समजता नथी के अमने खानारने मृत्यु, दीर्घायुषता थाय छे, पण स्वभावे तेने ग्रहण करनार प्रत्ये जेम तेनु परिणमवु थाय छे, तेम जीवमा शुभाशुभ कर्म पण परिणमे छे, अने फळ सन्मुख थाय छे, एम जीवने कर्मनु भोक्तापणु समजाय छे (८३)

एक राक ने एक नृप, ए आदि जे भेद,
कारण विना न कार्य ते, ते ज शुभाशुभ वेद्य ८४

एक राक छे अने एक राजा छे, ए आदि शब्दथी नीचपणु, ऊचपणु, कुरूपपणु, सुरूपपणु एम घणु विचित्रपणु छे, अने एवो जे भेद रहे छे ते, सर्वने समानता नथी, ते ज

शुभाशुभ कर्मनु भोक्तापणु छे, एम सिद्ध करे छे, केमके कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी. ८४

ते शुभाशुभ कर्मनु फळ न थतु होय, तो एक राक अने एक राजा ए आदि जे भेद छे, ते न थवा जोईए, केमके जीवपणु समान छे, तथा मनुष्यपणु समान छे, तो सर्वने सुख अथवा दुःख पण समान जोईए, जेने बदले आवु विचित्रपणु जणाय छे, ते ज शुभाशुभ कर्मथी उत्पन्न थयेलो भेद छे, केमके कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी एम शुभ अने अशुभ कर्म भोगवाय छे (८४)

फळदाता ईश्वरतणी, एमा नथी जरूर,
कर्म स्वभावे परिणमे, थाय भोगथी दूर ८५

फळदाता ईश्वरनी एमा कई जरूर नथी झेर अने अमृतनी रीते शुभाशुभ कर्म स्वभावे परिणमे छे, अने निःसत्त्व थयेथी झेर अने अमृत फळ देता जेम निवृत्त थाय छे, तेम शुभाशुभ कर्मने भोगववाथी ते निःसत्त्व थये निवृत्त थाय छे ८५

झेर झेरपणे परिणमे छे, अने अमृत अमृतपणे परिणमे छे, तेम अशुभ कर्म अशुभपणे परिणमे अने शुभ कर्म शुभपणे परिणमे छे, माटे जीव जेवा जेवा अध्यवसायथी कर्मने ग्रहण करे छे, तेवा तेवा विपाकरूपे कर्म परिणमे छे, अने जेम झेर अने अमृत परिणमी रह्ये निःसत्त्व थाय छे, तेम भोगथी ते कर्म दूर थाय छे (८५)

ते ते भोग्य विशेषना, स्थानक द्रव्य स्वभाव,
गहन वात छे शिष्य आ, कही संक्षेपे साव ८६

उत्कृष्ट शुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट शुभगति छे, अने उत्कृष्ट अशुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट अशुभगति छे, शुभाशुभ अध्यवसाय मिश्रगति छे, अने ते जीवपरिणाम ते ज मुख्यपणे तो गति छे, तथापि उत्कृष्ट शुभ द्रव्यनु ऊर्ध्वगमन, उत्कृष्ट अशुभ द्रव्यनु अधोगमन, शुभाशुभनी मध्यस्थिति, एम द्रव्यनो विशेष स्वभाव छे अने ते आदि हेतुथी ते ते भोग्यस्थानक होवा योग्य छे हे शिष्य! जडचेतनना स्वभाव सयोगादि सूक्ष्मस्वरूपनो अत्रे घणो विचार समाय छे, माटे आ वात गहन छे, तोपण तेने साव सक्षेपमा कही छे ८६

तेम ज, ईश्वर जो कर्मफळदाता न होय अथवा जगतकर्ता न गणीए तो कर्म भोगववाना विशेप स्थानको एटले नरकादि गति आदि स्थान क्याथी होय, केमके तेमा तो ईश्वरना कर्तृत्वनी जरूर छे, एवी आशका पण करवा योग्य नथी, केमके मुख्यपणे तो उत्कृष्ट शुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट देवलोक छे, अने उत्कृष्ट अशुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट नरक छे, शुभाशुभ अध्यवसाय ते मनुष्य तिर्यंचादि छे, अने स्थान विशेष एटले ऊर्ध्वलोके देवगति, ए आदि भेद छे जीवसमूहना कर्मद्रव्यना पण ते परिणामविशेष छे एटले ते ते गतिओ जीवना कर्म विशेप परिणामादि सभवे छे

आ वात घणी गहन छे केमके अचित्य एवु जीववीर्य, अचित्य एवु पुद्गलसामर्थ्य एना सयोग विशेषथी लोक परिणमे छे तेनो विचार करवा माटे घणो विस्तार कहेवो जोईए पण अत्र तो मुख्य करीने आत्मा कर्मनो भोक्ता छे एटलो लक्ष करावववानो होवाथी साव सक्षेपे आ प्रसग कह्यो छे (८६)

शका — शिष्य उवाच

[जीवनो ते कर्मथी मोक्ष नथी, एम शिष्य कहे छे –]

कर्ता भोक्ता जीव हो, पण तेनो नहि मोक्ष,
वीत्यो काळ अनत पण, वर्तमान छे दोष ८७

कर्ता भोक्ता जीव हो, पण तेथी तेनो मोक्ष थवा योग्य नथी, केमके अनतकाळ थयो तोपण कर्म करवारूपी दोष हजु तेने विषे वर्तमान ज छे (८७)

शुभ करे फळ भोगवे, देवादि गति माय,
अशुभ करे नरकादि फळ, कर्म रहित न क्याय ८८

शुभ कर्म करे तो तेथी देवादि गतिमा तेनु शुभ फळ भोगवे, अने अशुभ कर्म करे तो नरकादि गतिने विषे तेनु अशुभ फळ भोगवे, पण जीव कर्मरहित कोई स्थळे होय नही (८८)

समाधान — सद्गुरु उवाच

[ते कर्मथी जीवनो मोक्ष थई शके छे, एम सद्गुरु समाधान करे छे —]

जेम शुभाशुभ कर्मपद, जाण्या सफळ प्रमाण,
तेम निवृत्ति सफळता, माटे मोक्ष सुजाण ८९

जेम शुभाशुभ कर्मपद ते जीवना करवाथी ते थता जाण्या, अने तेथी तेनु भोक्तापणु जाण्यु, तेम नही करवाथी अथवा ते कर्मनिवृत्ति करवाथी ते निवृत्ति पण थवा योग्य छे, माटे ते निवृत्तिनु पण सफळपणु छे, अर्थात् जेम ते शुभाशुभ कर्म अफळ जता नथी, तेम तेनी निवृत्ति पण अफळ जवा योग्य नथी, माटे ते निवृत्तिरूप मोक्ष छे एम हे विचक्षण! तु विचार (८९)

वीत्यो काळ अनत ते, कर्म शुभाशुभ भाव,
तेह शुभाशुभ छेदता, ऊँपजे मोक्ष स्वभाव. ९०

कर्मसहित अनतकाळ वीत्यो, ते ते शुभाशुभ कर्म प्रत्येनी जोवनी आसक्तिने लीधे वीत्यो, पण तेना पर उदासीन थवाथी ते कर्मफळ छेदाय, अने तेथी मोक्षस्वभाव प्रगट थाय. (९०)

देहादिक सयोगनो, आत्यतिक वियोग,
सिद्ध मोक्ष शाश्वत पदे, निज अनत सुखभोग ९१

देहादि सयोगनो अनुक्रमे वियोग तो थया करे छे, पण ते पाछो ग्रहण न थाय ते रीते वियोग करवामा आवे तो सिद्धस्वरूप मोक्षस्वभाव प्रगटे, अने शाश्वतपदे अनत आत्मानद भोगवाय ९१

शका — शिष्य उवाच

[मोक्षनो उपाय नथी, एम शिष्य कहे छे –]

होय कदापि मोक्षपद, नहि अविरोध उपाय,
कर्मो काळ अनतना, शाथी छेद्या जाय? ९२

मोक्षपद कदापि होय तोपण ते प्राप्त थवानो कोई अविरोध एटले यथातथ्य प्रतीत थाय एवो उपाय जणातो नथी, केमके अनत काळना कर्मो छे, ते आवा अल्पायुष्यवाळा मनुष्यदेहथी केम छेद्या जाय? (९२)

अथवा मत दर्शन घणा, कहे उपाय अनेक,
तेमा मत साचो कयो, बने न एह विवेक ९३

अथवा कदापि मनुष्यदेहना अल्पायुष्य वगेरेनी शका छोडी दईए, तोपण मत अने दर्शन घणा छे, अने ते, मोक्षना

अनेक उपायो कहे छे, अर्थात् कोई कई कहे छे अने कोई कई कहे छे, तेमा कयो मत साचो ए विवेक बनी शके एवो नथी. (९३)

कई जातिमा मोक्ष छे, कया वेषमा मोक्ष,
एनो निश्चय ना बने, घणा भेद ए दोष ९४

ब्राह्मणादि कई जातिमा मोक्ष छे, अथवा कया वेशमा मोक्ष छे, एनो निश्चय पण न बनी शके एवो छे, केमके तेवा घणा भेदो छे, अने ए दोषे पण मोक्षनो उपाय प्राप्त थवा योग्य देखातो नथी (९४)

तेथी एम जणाय छे, मळे न मोक्ष उपाय,
जीवादि जाण्या तणो, शो उपकार ज थाय? ९५

तेथी एम जणाय छे के मोक्षनो उपाय प्राप्त थई शके एवु नथी माटे जीवादिनु स्वरूप जाणवाथी पण शु उपकार थाय? अर्थात् जे पदने अर्थे जाणवा जोईए ते पदनो उपाय प्राप्त थवो अशक्य देखाय छे (९५)

पाचे उत्तरथी थयु, समाधान सर्वांग,
समजु मोक्ष उपाय तो, उदय उदय सद्भाग्य ९६

आपे पाचे उत्तर कह्या तेथी सर्वांग एटले बधो रीते मारी शकानु समाधान थयु छे, पण जो मोक्षनो उपाय समजु तो सद्भाग्यनो उदय-उदय थाय अत्रे 'उदय' 'उदय' बे वार शब्द छे, ते पाच उत्तरना समाधानथी थयेली मोक्षपदनी जिज्ञासानु तीव्रपणु दर्शावे छे (९६)

समाधान—सद्गुरु उवाच

[मोक्षनो उपाय छे, एम सद्गुरु समाधान करे छे —]

पाचे उत्तरनी थई, आत्मा विषे प्रतीत,

थाशे मोक्षोपायनी, सहज प्रतीत ए रीत. ९७

पाचे उत्तरनी तारा आत्माने विषे प्रतीति थई छे तो मोक्षना उपायनी पण ए ज रीते तने सहजमा प्रतीति थशे. अत्रे 'थशे' अने 'सहज' ए बे शब्द सद्गुरुए कह्या छे ते जेने पाचे पदनी शका निवृत्त थई छे तेने मोक्षोपाय समजावो कई कठण ज नथी एम दर्शाववा, तथा शिष्यनु विशेष जिज्ञासुपणु जाणी अवश्य तेने मोक्षोपाय परिणमशे एम भासवाथी (ते वचन) कह्या छे, एम सद्गुरुना वचननो आशय छे (९७)

कर्मभाव अज्ञान छे, मोक्षभाव निजवास,

अंधकार अज्ञान सम, नाशे ज्ञानप्रकाश ९८

कर्मभाव छे ते जीवनु अज्ञान छे अने मोक्षभाव छे ते जीवना पोताना स्वरूपने विषे स्थिति थवी ते छे अज्ञाननो स्वभाव अधकार जेवो छे तेथी जेम प्रकाश थता घणा काळनो अधकार छता नाश पामे छे, तेम ज्ञान प्रकाश थता अज्ञान पण नाश पामे छे (९८)

जे जे कारण बधना, तेह बधनो पथ,

ते कारण छेदक दशा, मोक्षपथ भवअत ९९

जे जे कारणो कर्मबधना छे, ते ते कर्मबधनो मार्ग छे, अने ते ते कारणोने छेदे एवी जे दशा छे ते मोक्षनो मार्ग छे, भवनो अत छे (९९)

राग, द्वेष अज्ञान ए, मुख्य कर्मनी ग्रथ,

थाय निवृत्ति जेहथी, ते ज मोक्षनो पथ १००

राग, द्वेष अने अज्ञान एनु एकत्व ए कर्मनी मुख्य गाठ छे, अर्थात् ए विना कर्मनो बध न थाय, तेनी जेथी निवृत्ति थाय ते ज मोक्षनो मार्ग छे (१००)

आत्मा सत् चैतन्यमय, सर्वाभास रहित,
जेथी केवळ पामिये, मोक्षपथ ते रीत १०१

'सत्' एटले 'अविनाशी', अने 'चैतन्यमय' एटले 'सर्वभावने प्रकाशवारूप स्वभावमय' 'अन्य सर्व विभाव अने देहादि सयोगना आभासथी रहित एवो', 'केवळ' एटले 'शुद्ध आत्मा' पामीए तेम प्रवर्ताय ते मोक्षमार्ग छे (१०१)

कर्म अनत प्रकारना, तेमा मुख्ये आठ,
तेमा मुख्ये मोहनीय, हणाय ते कहुँ पाठ १०२

कर्म अनत प्रकारना छे, पण तेना मुख्य ज्ञानावरणादि आठ प्रकार थाय छे तेमा पण मुख्य मोहनीयकर्म छे ते मोहनीय कर्म हणाय तेनो पाठ कहु छु (१०२)

कर्म मोहनीय भेद बे, दर्शन चारित्र नाम,
हणे बोध वीतरागता, अचूक उपाय आम १०३

ते मोहनीय कर्म बे भेदे छे—एक 'दर्शनमोहनीय' एटले 'परमार्थने विषे अपरमार्थबुद्धि अने अपरमार्थने विषे परमार्थबुद्धिरूप', बीजी 'चारित्रमोहनीय', 'तथारूप परमार्थने परमार्थ जाणीने आत्मस्वभावमा जे स्थिरता थाय, ते स्थिरताने रोधक एवा पूर्वसस्काररूप कषाय अने नोकषाय' ते चारित्रमोहनीय

दर्शनमोहनीयने आत्मबोध, अने चारित्रमोहनीने वीतरागपणु नाश करे छे आम तेना अचूक उपाय छे, केमके

मिथ्याबोध ते दर्शनमोहनीय छे, तेनो प्रतिपक्ष सत्यात्मबोध छे. अने चारित्रमोहनीय रागादिक परिणामरूप छे, तेनो प्रतिपक्ष वीतरागभाव छे एटले अधकार जेम प्रकाश थवाथी नाश पामे छे–ते तेनो अचूक उपाय छे–तेम बोध अने वीतरागता दर्शनमोहनीय अने चारित्रमोहनीयरूप अंधकार टाळवामा प्रकाशस्वरूप छे, माटे ते तेनो अचूक उपाय छे (१०३)

कर्मबध क्रोधादिथी, हणे क्षमादिक तेह,
प्रत्यक्ष अनुभव सर्वने, एमा शो सदेह? १०४

क्रोधादि भावथी कर्मबंध थाय छे, अने क्षमादिक भावथी ते हणाय छे, अर्थात् क्षमा राखवाथी क्रोध रोकी शकाय छे, सरळताथी माया रोकी शकाय छे, सतोषथी लोभ रोकी शकाय छे, एम रति, अरति आदिना प्रतिपक्षथी ते ते दोषो रोकी शकाय छे, ते ज कर्मबधनो निरोध छे, अने ते ज तेनी निवृत्ति छे. वळी सर्वने आ वातनो प्रत्यक्ष अनुभव छे, अथवा सर्वने प्रत्यक्ष अनुभव थई शके एवु छे क्रोधादि रोक्या रोकाय छे, अने जे कर्मबधने रोके छे, ते अकर्मदशानो मार्ग छे ए मार्ग परलोके नही, पण अत्रे अनुभवमा आवे छे, तो एमा सदेह शो करवो? (१०४)

छोडी मत दर्शन तणो, आग्रह तमे विकल्प,
कह्यो मार्ग आ साधशे, जन्म तेह अल्प १०५

आ मारो मत छे, माटे मारे वळगी ज रहेवु, अथवा आ मारु दर्शन छे, माटे गमे तेम मारे ते सिद्ध करवु एवा आग्रह अथवा एवा विकल्पने छोडीने आ जे मार्ग कह्यो छे, ते साधशे, तेना अल्प जन्म जाणवा

अही 'जन्म' शब्द बहुवचनमा वापर्यो छे, ते एटलु ज दर्शाववाने के क्वचित् ते साधन अधूरा रह्या तेथी, अथवा जघन्य के मध्यम परिणामनी धाराथी आराधन थया होय, तेथी सर्व कर्म क्षय थई न शकवाथी बीजो जन्म थवानो सभव छे, पण ते बहु नही, बहु ज अल्प 'समकित आव्या पछी जो वमे नही, तो घणामा घणा पदर भव थाय,' एम जिने कह्यु छे, अने 'जे उत्कृष्टपणे आराधे तेनो ते भवे पण मोक्ष थाय,' अत्रे ते वातनो विरोध नथी. (१०५)

षट्पदना षट्प्रश्न ते, पूछ्या करी विचार,
ते पदनी सर्वागता, मोक्षमार्ग निरधार. १०६

हे शिष्य! ते छ पदना छ प्रश्नो विचार करीने पूछ्या छे, अने ते पदनी सर्वागतामा मोक्षमार्ग छे, एम निश्चय कर अर्थात् एमानु कोई पण पद एकाते के अविचारथी उत्थापता मोक्षमार्ग सिद्ध थतो नथी (१०६)

जाति, वेषनो भेद नहि, कह्यो मार्ग जो होय,
साधे ते मुक्ति लहे, एमा भेद न कोय. १०७

जे मोक्षनो मार्ग कह्यो ते होय तो गमे ते जाति के वेषथी मोक्ष थाय, एमा कंई भेद नथी जे साधे ते मुक्तिपद पामे, अने ते मोक्षमा पण बीजा कशा प्रकारनो ऊचनीचत्वादि भेद नथी, अथवा आ वचन कह्या तेमा बीजो कंई भेद एटले फेर नथी (१०७)

कषायनी उपशातता, मात्र मोक्षअभिलाष,
भवे खेद अतर दया, ते कहीए जिज्ञास १०८

क्रोधादि कषाय जेना पातळा पड्या छे, मात्र आत्माने विषे मोक्ष थवा सिवाय बीजी कोई इच्छा नथी, अने ससारना भोग प्रत्ये उदासीनता वर्ते छे, तेम ज प्राणी पर अंतरथी दया वर्ते छे, ते जीवने मोक्षमार्गनो जिज्ञासु कहीए, अर्थात् ते मार्ग पामवा योग्य कहीए (१०८)

ते जिज्ञासु जीवने, थाय सद्गुरुबोध,
तो पामे समकितने, वर्ते अतरशोध' १०९

ते जिज्ञासु जीवने जो सद्गुरुनो उपदेश प्राप्त थाय तो ते समकितने पामे, अने अतरनो शोधमा वर्ते (१०९)

मत दर्शन आग्रह तजी, वर्ते सद्गुरुलक्ष,
लहे शुद्ध समकित ते, जेमा भेद न पक्ष ११०

मत अने दर्शननो आग्रह छोडी दई जे सद्गुरुने लक्षे वर्ते, ते शुद्ध समकितने पामे के जेमा भेद तथा पक्ष नथी (११०)

वर्ते निजस्वभावनो, अनुभव लक्ष प्रतीत,
वृत्ति वहे निजभावमा, परमार्थे समकित. १११

आत्मस्वभावनो ज्या अनुभव, लक्ष, अने प्रतीत वर्ते छे, तथा वृत्ति आत्माना स्वभावमा वहे छे, त्या परमार्थे समकित छे (१११)

वर्धमान समकित थई, टाळे मिथ्याभास,
उदय थाय चारित्रनो, वीतरागपद वास ११२

ते समकित वधती जती धाराथी हास्य शोकादिथी जे कई आत्माने विषे मिथ्याभास भास्या छे तेने टाळे, अने स्वभाव समाधिरूप चारित्रनो उदय थाय, जेथी सर्व रागद्वेषना क्षयरूप वीतरागपदमा स्थिति थाय (११२)

केवळ निजस्वभावनु, अखड वर्ते ज्ञान,
कहीए केवळज्ञान ते, देह छता निर्वाण ११३

सर्व आभासरहित आत्मस्वभावनु ज्या अखड एटले क्यारे पण खडित न थाय, मद न थाय, नाश न पामे एवु ज्ञान वर्ते तेने केवळज्ञान कहीए छीए जे केवळज्ञान पाम्याथी उत्कृष्ट जीवन्मुक्तदशारूप निर्वाण, देह छता ज अत्रे अनुभवाय छे. (११३)

कोटि वर्षनु स्वप्न पण, जाग्रत थता शमाय,
तेम विभाव अनादिनो, ज्ञान थता दूर थाय. ११४

करोडो वर्षनु स्वप्न होय तोपण जाग्रत थता तरत शमाय छे, तेम अनादिनो विभाव छे ते आत्मज्ञान थता दूर थाय छे (११४)

छूटे देहाध्यास तो, नहि कर्ता तु कर्म,
नहि भोक्ता तु तेहनो, ए ज धर्मनो मर्म ११५

हे शिष्य। देहमा जे आत्मता मनाई छे, अने तेने लोधे स्त्रीपुत्रादि सर्वमा अहममत्वपणु वर्ते छे, ते आत्मता जो आत्मामा ज मनाय, अने ते देहाध्यास एटले देहमा आत्मबुद्धि तथा आत्मामा देहबुद्धि छे ते छूटे, तो तु कर्मनो कर्ता पण नथी, अने भोक्ता पण नथी, अने ए ज धर्मनो मर्म छे (११५)

ए ज धर्मथी मोक्ष छे, तु छो मोक्ष स्वरूप,
अनत दर्शन ज्ञान तु, अव्याबाध स्वरूप ११६

ए ज धर्मथी मोक्ष छे, अने तु ज मोक्षस्वरूप छो; अर्थात् शुद्ध आत्मपद ए ज मोक्ष छे. तु अनत ज्ञान दर्शन तथा अव्यावाध सुखस्वरूप छो (११६)

शुद्ध बुद्ध चैतन्यघन, स्वयज्योति सुखधाम,
बीजु कहीए केटलु? कर विचार तो पाम. ११७

तु देहादिक सर्व पदार्थथी जुदो छे. कोईमा आत्मद्रव्य भळतु नथी, कोई तेमा भळतु नथी, द्रव्ये द्रव्य परमार्थथी सदाय भिन्न छे, माटे तु शुद्ध छो, बोधस्वरूप छो, चैतन्य-प्रदेशात्मक छो, स्वयंज्योति एटले कोई पण तने प्रकाशतु नथी, स्वभावे ज तु प्रकाशस्वरूप छो, अने अव्याबाध सुखनु धाम छो बीजु केटलु कहीए? अथवा घणु शु कहेवु? टूकामा एटलु ज कहीए छीए, जो विचार कर तो ते पदने पामीश (११७)

निश्चय सर्वे ज्ञानीनो, आवी अत्र समाय,
धरी मौनता एम कही, सहजसमाधि माय. ११८

सर्वे ज्ञानीओनो निश्चय अत्र आवीने समाय छे, एम कहीने सद्‌गुरु मौनता धरीने सहज समाधिमा स्थित थया, अर्थात् वाणीयोगनी अप्रवृत्ति करी (११८)

शिष्यबोधबीज प्राप्तिकथन

सद्‌गुरुना उपदेशथी, आव्यु अपूर्व भान,
निजपद निजमाही लह्यु, दूर थयु अज्ञान ११९

शिष्यने सद्‌गुरुना उपदेशथी अपूर्व एटले पूर्वे कोई दिवस नही आवेलु एवु भान आव्यु, अने तेने पोतानु स्वरूप पोताने विषे यथातथ्य भास्यु, अने देहात्मबुद्धिरूप अज्ञान दूर थयु (११९)

भास्यु निजस्वरूप ते, शुद्ध चेतनारूप,
अजर, अमर, अविनाशी ने, देहातीत स्वरूप १२०

पोतानु स्वरूप शुद्ध चैतन्यस्वरूप, अजर, अमर, अवि-
नाशी अने देहथी स्पष्ट जुदु भास्यु (१२०)

कर्ता भोक्ता कर्मनो, विभाव वर्ते ज्याय,
वृत्ति वही निजभावमा, थयो अकर्ता त्याय १२१

ज्या विभाव एटले मिथ्यात्व वर्ते छे, त्या मुख्य नयथी
कर्मनु कर्तापणु अने भोक्तापणु छे, आत्मस्वभावमा वृत्ति वही
तेथी अकर्ता थयो (१२१)

अथवा निजपरिणाम जे, शुद्धचेतनारूप,
कर्ता भोक्ता तेहनो, निर्विकल्पस्वरूप १२२

अथवा आत्मपरिणाम जे शुद्ध चैतन्यस्वरूप छे, तेनो
निर्विकल्पस्वरूपे कर्ताभोक्ता थयो (१२२)

मोक्ष कह्यो निजशुद्धता, ते पामे ते पथ,
समजाव्यो सक्षेपमा, सकळ मार्ग निर्ग्रंथ १२३

आत्मानु शुद्धपद छे ते मोक्ष छे अने जेथी ते पमाय
ते तेनो मार्ग छे, श्री सद्गुरुए कृपा करीने निर्ग्रंथनो सर्व
मार्ग समजाव्यो (१२३)

अहो! अहो! श्री सद्गुरु, करुणासिंधु अपार,
आ पामर पर प्रभु कर्यो, अहो! अहो! उपकार १२४

अहो! अहो! करुणाना अपार समुद्रस्वरूप आत्मलक्ष्मीए
युक्त सद्गुरु, आप प्रभुए आ पामर जीव पर आश्चर्यकारक
एवो उपकार कर्यो (१२४)

शु प्रभुचरण कने धरु, आत्माथी सौ हीन,
ते तो प्रभुए आपियो, वर्तु चरणाधीन १२५

शुद्ध बुद्ध चैतन्यघन, स्वयज्योति सुखधाम,
बीजु कहीए केटलु? कर विचार तो पाम. ११७

तु देहादिक सर्व पदार्थथी जुदो छे कोईमा आत्मद्रव्य भळतु नथी, कोई तेमा भळतु नथी, द्रव्ये द्रव्य परमार्थथी सदाय भिन्न छे, माटे तु शुद्ध छो, बोधस्वरूप छो, चैतन्य-प्रदेशात्मक छो, स्वयंज्योति एटले कोई पण तने प्रकाशतु नथी, स्वभावे ज तु प्रकाशस्वरूप छो, अने अव्याबाध सुखनु धाम छो बीजु केटलु कहीए? अथवा घणु शु कहेवु? टूकामा एटलु ज कहीए छीए, जो विचार कर तो ते पदने पामीश (११७)

निश्चय सर्वे ज्ञानीनो, आवी अत्र समाय,
धरी मौनता एम कही, सहजसमाधि माय ११८

सर्वे ज्ञानीओनो निश्चय अत्र आवीने समाय छे, एम कहीने सद्‌गुरु मौनता धरीने सहज समाधिमा स्थित थया, अर्थात् वाणीयोगनी अप्रवृत्ति करी (११८)

शिष्यबोधबीज प्राप्तिकथन

सद्‌गुरुना उपदेशथी, आव्यु अपूर्व भान,
निजपद निजमाही लह्यु, दूर थयु अज्ञान. ११९

शिष्यने सद्‌गुरुना उपदेशथी अपूर्व एटले पूर्वे कोई दिवस नही आवेलु एवु भान आव्यु, अने तेने पोतानु स्वरूप पोताने विषे यथातथ्य भास्यु, अने देहात्मबुद्धिरूप अज्ञान दूर थयु (११९)

भास्यु निजस्वरूप ते, शुद्ध चेतनारूप,
अजर, अमर, अविनाशी ने, देहातीत स्वरूप १२०

पोतानु स्वरूप शुद्ध चैतन्यस्वरूप, अजर, अमर, अविनाशी अने देहथी स्पष्ट जुदु भास्यु (१२०)

कर्ता भोक्ता कर्मनो, विभाव वर्ते ज्याय,
वृत्ति वही निजभावमा, थयो अकर्ता त्याय. १२१

ज्या विभाव एटले मिथ्यात्व वर्ते छे, त्या मुख्य नयथी कर्मनु कर्तापणु अने भोक्तापणु छे, आत्मस्वभावमा वृत्ति वही तेथी अकर्ता थयो (१२१)

अथवा निजपरिणाम जे, शुद्धचेतनारूप,
कर्ता भोक्ता तेहनो, निर्विकल्पस्वरूप १२२

अथवा आत्मपरिणाम जे शुद्ध चैतन्यस्वरूप छे, तेनो निर्विकल्पस्वरूपे कर्ताभोक्ता थयो (१२२)

मोक्ष कह्यो निजशुद्धता, ते पामे ते पथ,
समजाव्यो सक्षेपमा, सकळ मार्ग निर्ग्रंथ १२३

आत्मानु शुद्धपद छे ते मोक्ष छे अने जेथी ते पमाय ते तेनो मार्ग छे, श्री सद्गुरुए कृपा करीने निर्ग्रंथनो सर्व मार्ग समजाव्यो (१२३)

अहो! अहो! श्री सद्गुरु, करुणासिंधु अपार,
आ पामर पर प्रभु कर्यो, अहो! अहो! उपकार १२४

अहो! अहो! करुणाना अपार समुद्रस्वरूप आत्मलक्ष्मीए युक्त सद्गुरु, आप प्रभुए आ पामर जीव पर आश्चर्यकारक एवो उपकार कर्यो (१२४)

शु प्रभुचरण कने धरु, आत्माथी सौ हीन,
ते तो प्रभुए आपियो, वर्तु चरणाधीन १२५

हु प्रभुना चरण आगळ शु धरुं? (सद्गुरु तो परम निष्काम छे, एक निष्काम करुणाथी मात्र उपदेशना दाता छे, पण शिष्यधर्मे शिष्ये आ वचन कह्यु छे) जे जे जगतमा पदार्थ छे, ते सौ आत्मानी अपेक्षाए निर्मूल्य जेवा छे, ते आत्मा तो जेणे आप्यो तेना चरणसमीपे हु बीजु शु धरु? एक प्रभुना चरणने आधीन वर्तु एटलु मात्र उपचारथी करवाने हु समर्थ छु (१२५)

आ देहादि आजथी, वर्तो प्रभु आधीन,
दास, दास हु दास छु, तेह प्रभुनो दीन. १२६

आ देह, 'आदि' शब्दथी जे कई मारु गणाय छे ते, आजथी करीने सद्गुरु प्रभुने आधीन वर्तो, हु तेह प्रभुनो दास छु, दीन दास छु (१२६)

षट् स्थानक समजावीने, भिन्न बताव्यो आप,
म्यान थकी तरवारवत्, ए उपकार अमाप १२७[1]

छए स्थानक समजावीने हे सद्गुरु देव! आपे देहादिथी आत्माने, जेम म्यानथी तरवार जुदी काढीने बतावीए तेम तेम स्पष्ट जुदो बताव्यो, आपे मपाई शके नही एवो उपकार कर्यो (१२७)

---

१ आ 'आत्मसिद्धिशास्त्र' श्री सोभागभाई आदि माटे रच्यु हतु ते आ वधारानी गाथाथी जणाशे

श्री सुभाग्य ने श्री अचळ, आदि मुमुक्षु काज,
तथा भव्यहित कारणे, कह्यो बोध सुखसाज

दर्शन षटे समाय छे, आ षट् स्थानक माही,
विचारता विस्तारथी, सशय रहे न काई १२८

छये दर्शन आ छ स्थानकमा समाय छे विशेप करीने विचारवाथी कोई पण प्रकारनो सशय रहे नही (१२८)

आत्मभ्राति सम रोग नहि, सद्गुरु वैद्य सुजाण,
गुरुआज्ञा सम पथ्य नहि, औषध विचार ध्यान १२९

आत्माने पोताना स्वरूपनु भान नही एवो बीजो कोई रोग नथी, सद्गुरु जेवा तेना कोई साचा अथवा निपुण वैद्य नथी, सद्गुरुआज्ञाए चालवा समान बीजु कोई पथ्य नथी, अने विचार तथा निदिध्यासन जेवु कोई तेनु औषध नथी (१२९)

जो इच्छो परमार्थ तो, करो सत्य पुरुषार्थ,
भवस्थिति आदि नाम लई, छेदो नहि आत्मार्थ. १३०

जो परमार्थने इच्छता हो, तो साचो पुरुषार्थ करो, अने भवस्थिति आदिनु नाम लईने आत्मार्थने छेदो नही (१३०)

निश्चयवाणी साभळी, साधन तजवा नो'य,
निश्चय राखी लक्षमा, साधन करवा सोय १३१

आत्मा अबध छे, असग छे, सिद्ध छे एवी निश्चयमुख्य वाणी साभळीने साधन तजवा योग्य नथी पण तथारूप निश्चय लक्षमा राखी साधन करीने ते निश्चस्वरूप प्राप्त करवु (१३१)

नय निश्चय एकातथी, आमा नथी कहेल,
एकाते व्यवहार नहि, बन्ने साथ रहेल १३२

अत्रे एकाते निश्चयनय कह्यो नथी, अथवा एकाते व्यवहारनय कह्यो नथी, बेय ज्या ज्या जेम घटे तेम साथे रह्या छे (१३२)

गच्छमतनी जे कल्पना, ते नहि सद्व्यवहार,
भान नही निजरूपनु, ते निश्चय नहि सार १३३

गच्छ मतनी कल्पना छे ते सद्व्यवहार नथी, पण आत्मार्थीना लक्षणमा कही ते दशा अने मोक्षोपायमा जिज्ञासुना लक्षण आदि कह्या ते सद्व्यवहार छे, जे अत्रे तो सक्षेपमा कहेल छे पोताना स्वरूपनु भान नथी, अर्थात् जेम देह अनुभवमा आवे छे, तेवो आत्मानो अनुभव थयो नथी, देहाध्यास वर्ते छे, अने जे वैराग्यादि साधन पाम्या विना निश्चय पोकार्या करे छे, ते निश्चय सारभूत नथी (१३३)

आगळ ज्ञानी थई गया, वर्तमानमा होय,
थाशे काळ भविष्यमा, मार्गभेद नहि कोय १३४

भूतकाळमा जे ज्ञानीपुरुषो थई गया छे, वर्तमानकाळमा जे छे, अने भविष्यकाळमा थशे, तेने कोईने मार्गनो भेद नथी, अर्थात् परमार्थे ते सौनो एक मार्ग छे, अने तेने प्राप्त करवा योग्य व्यवहार पण ते ज परमार्थसाधकरूपे देश काळादिने लीधे भेद कह्यो होय छता एक फळ उत्पन्न करनार होवाथी तेमा पण परमार्थे भेद नथी (१३४)

सर्व जीव छे सिद्ध सम, जे समजे ते थाय,
सद्गुरुआज्ञा जिनदशा, निमित्त कारण माय १३५

सर्व जीवने विषे सिद्ध समान सत्ता छे, पण ते तो जे समजे तेने प्रगट थाय ते प्रगट थवामा सद्गुरुनी आज्ञाथी प्रवर्तवु, तथा सद्गुरुए उपदेशेली एवी जिनदशानो विचार करवो, ते बेय निमित्त कारण छे (१३५)

उपादाननु नाम लई, ए जे तजे निमित्त,
पामे नहि सिद्धत्वने, रहे भ्रांतिमा स्थित १३६

सद्‌गुरुआज्ञा आदि ते आत्मसाधनना निमित्त कारण छे, अने आत्माना ज्ञान दर्शनादि उपादान कारण छे, एम शास्त्रमा कह्यु छे, तेथी उपादाननु नाम लई जे कोई ते निमित्तने तजशे ते सिद्धपणाने नही पामे, अने भ्रातिमा वर्त्या करशे, केमके साचा निमित्तना निषेधार्थे ते उपादाननी व्याख्या शास्त्रमा कही नथी, पण उपादान अजाग्रत राखवाथी तारु साचा निमित्त मळ्या छता काम नही थाय, माटे साचा निमित्त मळ्ये ते निमित्तने अवलबीने उपादान सन्मुख करवु, अने पुरुषार्थरहित न थवु, एवो शास्त्रकारे कहेली ते व्याख्यानो परमार्थ छे (१३६)

मुखथी ज्ञान कथे अने, अतरु छूट्यो न मोह,
ते पामर प्राणी करे, मात्र ज्ञानीनो द्रोह १३७

मुखथी निश्चयमुख्य वचनो कहे छे, पण अतरथी पोताने ज मोह छूट्यो नथी, एवा पामर प्राणी मात्र ज्ञानी कहेवरावनानी कामनाए साचा ज्ञानीपुरुषनो द्रोह करे छे (१३७)

दया, शाति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग, वैराग्य,
होय मुमुक्षु घट विषे, एह सदाय सुजाग्य १३८

दया, शाति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग अने वैराग्य ए गुणो मुमुक्षुना घटमा सदाय सुजाग्य एटले जाग्रत होय, अर्थात् ए गुणो विना मुमुक्षुपणु पण न होय (१३८)

मोहभाव क्षय होय ज्या, अथवा होय प्रशात,
ते कहीए ज्ञानीदशा, बाकी कहीए भ्रात. १३९

गच्छमतनी जे कल्पना, ते नहि सद्व्यवहार,
भान नही निजरूपनु, ते निश्चय नहि सार. १३३

गच्छ मतनी कल्पना छे ते सद्व्यवहार नथी, पण आत्मार्थीना लक्षणमा कही ते दशा अने मोक्षोपायमा जिज्ञासुना लक्षण आदि कह्या ते सद्व्यवहार छे, जे अत्रे तो सक्षेपमा कहेल छे पोताना स्वरूपनु भान नथी, अर्थात् जेम देह अनुभवमा आवे छे, तेवो आत्मानो अनुभव थयो नथी, देहाध्यास वर्ते छे, अने जे वैराग्यादि साधन पाम्या विना निश्चय पोकार्या करे छे, ते निश्चय सारभूत नथी (१३३)

आगळ ज्ञानी थई गया, वर्तमानमा होय,
थाशे काळ भविष्यमा, मार्गभेद नहि कोय १३४

भूतकाळमा जे ज्ञानीपुरुषो थई गया छे, वर्तमानकाळमा जे छे, अने भविष्यकाळमा थशे, तेने कोईने मार्गनो भेद नथी, अर्थात् परमार्थे ते सौनो एक मार्ग छे, अने तेने प्राप्त करवा योग्य व्यवहार पण ते ज परमार्थसाधकरूपे देश काळादिने लीधे भेद कह्यो होय छता एक फळ उत्पन्न करनार होवाथी तेमा पण परमार्थे भेद नथी (१३४)

सर्व जीव छे सिद्ध सम, जे समजे ते थाय,
सद्गुरुआज्ञा जिनदशा, निमित्त कारण माय १३५

सर्व जीवने विषे सिद्ध समान सत्ता छे, पण ते तो जे समजे तेने प्रगट थाय ते प्रगट थवामा सद्गुरुनी आज्ञाथी प्रवर्तवु, तथा सद्गुरुए उपदेशेली एवी जिनदशानो विचार करवो, ते बेय निमित्त कारण छे (१३५)

उपादाननु नाम लई, ए जे तजे निमित्त,
पामे नहि सिद्धत्वने, रहे भ्रांतिमा स्थित १३६

सद्‌गुरुआज्ञा आदि ते आत्मसाधनना निमित्त कारण छे, अने आत्माना ज्ञान दर्शनादि उपादान कारण छे, एम शास्त्रमा कह्यु छे, तेथी उपादाननु नाम लई जे कोई ते निमित्तने तजशे ते सिद्धपणाने नही पामे, अने भ्रांतिमा वर्त्या करशे, केमके साचा निमित्तना निषेधार्थे ते उपादाननी व्याख्या शास्त्रमा कही नथी, पण उपादान अजाग्रत राखवाथी तारु साचा निमित्त मळ्या छता काम नही थाय, माटे साचा निमित्त मळ्ये ते निमित्तने अवलबीने उपादान सन्मुख करवु, अने पुरुषार्थरहित न थवु, एवो शास्त्रकारे कहेली ते व्याख्यानो परमार्थ छे. (१३६)

मुखथी ज्ञान कथे अने, अंतरु छूट्यो न मोह,
ते पामर प्राणी करे, मात्र ज्ञानीनो द्रोह १३७

मुखथी निश्चयमुख्य वचनो कहे छे, पण अतरथी पोताने ज मोह छूट्यो नथी, एवा पामर प्राणी मात्र ज्ञानी कहेवरावबानी कामनाए साचा ज्ञानीपुरुषनो द्रोह करे छे (१३७)

दया, शांति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग, वैराग्य,
होय मुमुक्षु घट विषे, एह सदाय सुजाग्य १३८

दया, शाति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग अने वैराग्य ए गुणो मुमुक्षुना घटमा सदाय सुजाग्य एटले जाग्रत होय, अर्थात् ए गुणो विना मुमुक्षुपणु पण न होय (१३८)

मोहभाव क्षय होय ज्या, अथवा होय प्रशात,
ते कहीए ज्ञानीदशा, बाकी कहीए भ्रात. १३९

मोहभावनो ज्या क्षय थयो होय, अथवा ज्या मोहदशा बहु क्षीण थई होय, त्या ज्ञानीनी दशा कहीए, अने बाकी तो जेणे पोतामा ज्ञान मानो लीधु छे, तेने भ्राति कहीए. (१३९)

सकळ जगत ते एठवत्, अथवा स्वप्न समान,
ते कहीए ज्ञानीदशा, बाकी वाचाज्ञान १४०

समस्त जगत जेणे एठ जेवु जाण्यु छे, अथवा स्वप्न जेवु जगत जेने ज्ञानमा वर्ते छे ते ज्ञानीनो दशा छे, बाकी मात्र वाचाज्ञान एटले कहेवामात्र ज्ञान छे (१४०)

स्थानक पाच विचारीने, छट्ठे वर्ते जेह,
पामे स्थानक पाचमु, एमा नहि सदेह १४१

पाचे स्थानकने विचारीने जे छट्ठे स्थानके वर्ते, एटले ते मोक्षना जे उपाय कह्या छे तेमा प्रवर्ते ते पाचमु स्थानक एटले मोक्षपद, तेने पामे (१४१)

देह छता जेनी दशा, वर्ते देहातीत,
ते ज्ञानीना चरणमा, हो वदन अगणित १४२

पूर्वप्रारब्धयोगथी जेने देह वर्ते छे, पण ते देहथी अतीत एटले देहादिनी कल्पनारहित, आत्मामय जेनी दशा वर्ते छे, ते ज्ञानीपुरुषना चरणकमळमा अगणित वार वदन हो! (१४२)

साधन सिद्ध दशा अही, कही सर्व सक्षेप,
षट्दर्शन सक्षेपमा, भाख्या निर्विक्षेप

श्रीसद्गुरुचरणार्पणमस्तु

७

पारमार्थिक पत्रावलि

१

साधकीय जीवन

[१६४/२५]

१ प्रमादने लीधे आत्मा मळेलु स्वरूप भूलो जाय छे.

२ जे जे काळे जे जे करवानु छे तेने सदा उपयोगमा राख्या रहो

३ क्रमे करीने पछी तेनी सिद्धि करो

४ अल्पआहार, अल्पविहार, अल्पनिद्रा, नियमित वाचा, नियमित काया, अने अनुकूळ स्थान ए मनने वश करवाना उत्तम साधनो छे

५ श्रेष्ठ वस्तुनी जिज्ञासा करवी ए ज आत्मानी श्रेष्ठता छे कदापि ते जिज्ञासा पार न पडी तोपण जिज्ञासा ते पण ते ज अंशवत् छे

६ .नवा कर्म बाधवा नही अने जूना भोगवी लेवा, एवी जेनी अचळ जिज्ञासा छे ते, ते प्रमाणे वर्ती शके छे .

७ जे कृत्यनु परिणाम धर्म नथी, ते कृत्य मूळथी ज करवानी इच्छा रहेवा देवी जोईती नथी

८ मन जो शकाशील थई गयु होय तो 'द्रव्यानुयोग' विचारवो योग्य छे, प्रमादी थई गयु होय तो 'चरणकरणानुयोग'

विचारवो योग्य छे, अने कषायी थई गयु होय तो 'धर्मकथानुयोग' विचारवो योग्य छे, जड थई गयु होय तो 'गणितानुयोग' विचारवो योग्य छे

९. कोई पण कामनी निराशा इच्छवी, परिणामे पछी जेटली सिद्धि थई तेटलो लाभ, आम करवाथी सतोषी रहेवाशे

१० पृथ्वी सबधी क्लेश थाय तो एम समजी लेजे के ते साथे आववानी नथी, ऊलटो हु तेने देह आपी जवानो छु, वळी ते कई मूल्यवान नथी स्त्री सबधी क्लेश, शका भाव थाय तो आम समजी अन्य भोक्ता प्रत्ये हसजे के ते मळमूत्रनी खाणमा मोह्यो पड्यो, (जे वस्तुनो आपणे नित्य त्याग करीए छीए तेमा!) धन सबधी निराशा के क्लेश थाय तो ते ऊची जातना काकरा छे एम समजी सतोष राखजे, क्रमे करीने तो तु नि स्पृही-थई शकीश.

११ तेनो तु बोध पाम के जेनाथी समाधिमरणनो प्राप्ति थाय

१२ एक वार जो समाधिमरण थयु तो सर्व काळना असमाधिमरण टळशे

१३ सर्वोत्तम पद सर्वत्यागीनु छे.

२

धर्मसंथन—प्रतिमासिद्धि

[१७१/४०]

विशाळबुद्धि, मध्यस्थता, सरळता अने जितेन्द्रियपणु आटला गुणो जे आत्मामा होय, ते तत्त्व पामवानु उत्तम पात्र छे.

अनत जन्ममरण करी चूकेला आ आत्मानो करुणा तेवा अधिकारीने उत्पन्न थाय छे अने ते ज कर्ममुक्त थवानो जिज्ञासु कही शकाय छे ते ज पुरुष यथार्थ पदार्थने यथार्थ स्वरूपे समजी मुक्त थवाना पुरुषार्थमा योजाय छे

जे आत्मा मुक्त थया छे ते आत्मा कई स्वच्छदवर्तनाथी मुक्त थया नथी, पण आप्त पुरुषे बोधेला मार्गना प्रबळ अवलबनथी मुक्त थया छे

अनादिकाळना महाशत्रुरूप राग, द्वेष अने मोहना बधनमा ते पोतासबधी विचार करी शक्यो नथी मनुष्यत्व, आर्यदेश, उत्तम कुळ, शारीरिक संपत्ति ए अपेक्षित साधन छे, अने अंतरग साधन मात्र मुक्त थवानी साची जिज्ञासा ए छे

एम जो सुलभबोधिपणानी योग्यता आत्मामा आवी होय तो ते, जे पुरुषो मुक्त थया छे अथवा वर्तमानमा मुक्तपणे के आत्मज्ञानदशाए विचरे छे तेमणे उपदेशेला मार्गमा नि सदेहपणे श्रद्धाशील थाय

राग, द्वेष अने मोह ए जेनामा नथी ते पुरुष ते त्रण दोषथी रहित मार्ग उपदेशी शके, अने ते ज पद्धतिए नि सदेहपणे प्रवर्तनारा सत्पुरुषो का ते मार्ग उपदेशी शके.

सर्व दर्शननी शैलीनो विचार करता ए राग, द्वेष अने मोहरहित पुरुषनु बोधेलु निर्ग्रंथदर्शन विशेष मानवा योग्य छे.

ए त्रण दोषथी रहित, महाअतिशयथी प्रतापी एवा तीर्थंकर देव तेणे मोक्षना कारणरूपे जे धर्म बोध्यो छे, ते धर्म गमे ते मनुष्यो स्वीकारता होय पण ते एक पद्धतिए होवा जोईए, आ वात नि शक छे.

अनेक पद्धतिए अनेक मनुष्यो ते धर्मनु प्रतिपादन करता होय अने ते मनुष्योने परस्पर मतभेदनु कारण थतु होय तो तेमा तीर्थंकर देवनी एक पद्धतिनो दोष नथी पण ते मनुष्योनी समजण शक्तिनो दोष गणी शकाय.

ए रीते निर्ग्रंथधर्मप्रवर्तक अमे छीए, एम जुदा जुदा मनुष्यो कहेता होय, तो तेमाथी ते मनुष्य प्रमाणाबाधित गणी शकाय के जे वीतराग देवनी आज्ञाना सद्भावे प्ररूपक अने प्रवर्तक होय

आ काळ दु सम नामथी प्रख्यात छे दु समकाळ एटले जे काळमा मनुष्यो महादु ख वडे आयुष्य पूर्ण करता होय, तेम ज धर्माराधनारूप पदार्थो प्राप्त करवामा दु समता एटले महाविघ्नो आवता होय, तेने कहेवामा आवे छे.

अत्यारे वीतराग देवने नामे जैन दर्शनमा एटला बधा मत चाले छे के ते मत, ते मतरूप छे, पण सत्रूप ज्या सुधी वीतराग देवनी आज्ञानु अवलबन करी प्रवर्तता न होय त्या सुधी कही शकाय नही

ए मतप्रवर्तनमा मुख्य कारणो मने आटला सभवे छे (१) पोतानी शिथिलताने लीधे केटलाक पुरुषोए निर्ग्रंथदशानी प्राधान्यता घटाडी होय, (२) परस्पर बे आचार्योने वादविवाद, (३) मोहनीय कर्मनो उदय अने ते रूपे प्रवर्तन थई जवु, (४) ग्रहाया पछी ते वातनो मार्ग मळतो होय तोपण ते दुर्लभबोधिताने लीधे न ग्रहवो, (५) मतिनी न्यूनता, (६) जेना पर राग तेना छदमा प्रवर्तन करनारा घणा मनुष्यो, (७) दु सम काळ अने (८) शास्त्रज्ञाननु घटी जवु.

एटला बधा मतो सबधी समाधान थई नि शकपणे वीतरागनी आज्ञारूपे मार्ग प्रवर्ते एम थाय तो महाकल्याण, पण तेवो सभव ओछो छे, मोक्षनी जिज्ञासा जेने छे तेनी प्रवर्तना तो ते ज मार्गमा होय छे, पण लोक के ओघदृष्टिए प्रवर्तनारा पुरुषो तेम ज पूर्वना दुर्घट कर्मना उदयने लीधे मतनी श्रद्धामा पडेला मनुष्यो ते मार्गनो विचार करी शके, के बोध लई शके एम तेना केटलाक दुर्लभबोधी गुरुओ करवा दे, अने मतभेद टळी परमात्मानी आज्ञानु सम्यक्‌दशाथी आराधन करता ते मतवादीओने जोईए, ए बहु असभवित छे सर्वने सरखी बुद्धि आवी जई, सशोधन थई, वीतरागनी आज्ञारूप मार्गनु प्रतिपादन थाय ए सर्वथा जोके बने तेवु नथी, तोपण सुलभबोधी आत्माओ अवश्य ते माटे प्रयत्न कर्या रहे, तो परिणाम श्रेष्ठ आवे, ए वात मने सभवित लागे छे

दु सम काळना प्रतापे, जे लोको विद्यानो बोध लई शक्या छे तेमने धर्मतत्त्व पर मूळथी श्रद्धा जणाती नथी जेने कई सरळताने लीधे होय छे, तेने ते विषयनी कई गतागम जणाती नथी, गतागमवाळो कोई नीकळे तो तेने ते वस्तुनी वृद्धिमा विघ्न करनारा नीकळे, पण सहायक न थाय, एवी आजनी काळचर्या छे एम केळवणी पामेलाने धर्मनी दुर्लभता थई पडी छे.

केळवणी वगरना लोकोमा स्वाभाविक एक आ गुण रह्यो छे के आपणा बापदादा जे धर्मने स्वीकारता आव्या छे, ते धर्ममा ज आपणे प्रवर्तवु जोईए, अने ते ज मत सत्य

होवो जोईए; तेम ज आपणा गुरुना वचन पर ज आपणे विश्वास राखवो जोईए पछी ते गुरु गमे तो शास्त्रना नाम पण जाणता न होय, पण ते ज महाज्ञानी छे एम मानी प्रवर्तवु जोईए तेम ज आपणे जे मानीए छीए ते ज वीत-रागनो बोधेलो धर्म छे, बाकी जैन नामे प्रवर्ते छे ते मत सघळा असत् छे आम तेमनी समजण होवाथी तेओ बिचारा ते ज मतमा मच्या रहे छे एनो पण अपेक्षाथी जोता दोष नथी.

जे जे मत जैनमा पडेला छे तेमा जैन सबधी ज घणे भागे क्रियाओ होय ए मान्य वात छे ते प्रमाणे प्रवृत्ति जोई जे मतमा पोते दीक्षित थया होय, ते मतमा ज दीक्षित पुरुषोनु मच्या रहेवु थाय छे. दीक्षितमा पण भद्रिकताने लीधे का तो दीक्षा, का तो भिक्षा माग्या जेवी स्थितिथी मूझाईने प्राप्त थयेली दीक्षा, का तो स्मशानवैराग्यमा लेवाई गयेली दीक्षा होय छे शिक्षानी सापेक्ष स्फुरणाथी प्राप्त थयेली दीक्षावाळो पुरुष तमे विरल ज देखशो, अने देखशो तो ते मतथी कटाळी वीतराग देवनी आज्ञामा राचवा वधारे तत्पर हशे

शिक्षानी सापेक्ष स्फुरणा जेने थई छे, ते सिवायना बीजा जेटला मनुष्यो दीक्षित गृहस्थ रह्या तेटला बधा जे मतमा पोते पड्या होय तेमा ज रागी होय, तेओने विचारनी प्रेरणा करनार कोई न मळे पोताना मतसबधी नाना प्रकारना योजी राखेला विकल्पो (गमे तो पछी तेमा यथार्थ प्रमाण हो के न हो,) समजावी दई गुरुओ पोताना पजामा राखी तेमने प्रवर्तावी रह्या छे

तेम ज त्यागी गुरुओ सिवायना पराणे थई पडेला महावीर देवना मार्गरक्षक तरीके गणावता यतिओ, तेमनी तो मार्ग प्रवर्तावबानी शैली माटे कई बोलवु रहेतु नथी कारण गृहस्थने अणुव्रत पण होय छे, पण आ तो तीर्थंकर देवनी पेठे कल्पातीत पुरुष थई बेठा छे.

सशोधक पुरुषो बहु ओछा छे मुक्त थवानो अत करणे जिज्ञासा राखनारा अने पुरुषार्थ करनारा बहु ओछा छे तेमने साहित्यो जेवा के सद्गुरु, सत्सग के सत्शास्त्रो मळवा दुर्लभ थई पड्या छे, ज्या पूछवा जाओ त्या सर्व पोतपोतानी गाय छे पछी ते साची के जूठी तेनो कोई भाव पूछतुं नथी. भाव पूछनार आगळ मिथ्या विकल्पो करी पोतानो ससारस्थिति वधारे छे अने बीजाने तेवु निमित्त करे छे

ओछामा पूरु कोई सशोधक आत्मा हशे तो तेने अप्रयोजनभूत पृथ्वी इत्यादिक विषयोमा शकाए करी रोकावु थई गयु छे अनुभव धर्म पर आववु तेमने पण दुर्लभ थई पड्यु छे.

आ परथी मारु कहेवु एम नथी के कोई पण अत्यारे जैन दर्शनना आराधक नथी, छे खरा, पण बहु ज अल्प, बहु ज अल्प, अने जे छे ते मुक्त थवा सिवायनी बीजी जिज्ञासा जेने नथी तेवा अने वीतरागनी आज्ञामा जेणे पोतानो आत्मा समर्प्यो छे तेवा पण ते आगळीए गणी लईए तेटला हशे बाकी तो दर्शननी दशा जोई करुणा ऊपजे तेवु छे, स्थिर चित्तथी विचार करी जोशो तो आ मारु कहेवु तमने सप्रमाण लागशे

३

मोहग्रन्थी

[१७८/४७]

सत्पुरुषोने नमस्कार

अनतानुबधी क्रोध, अनतानुबधी मान, अनतानुबधी माया अने अनतानुबधी लोभ ए चार तथा मिथ्यात्वमोहिनी, मिश्रमोहिनी, सम्यक्त्वमोहिनी ए त्रण एम ए सात प्रकृति ज्या सुधी क्षयोपशम, उपशम के क्षय थती नथी त्या सुधी सम्यक्दृष्टि थवु सभवतु नथी ए सात प्रकृति जेम जेम मदताने पामे तेम तेम सम्यक्त्वनो उदय थाय छे ते प्रकृतिओनी ग्रथि छेदवी परम दुर्लभ छे जेनी ते ग्रथि छेदाई तेने आत्मा हस्तगत थवो सुलभ छे तत्त्वज्ञानीओए ए ज ग्रथिने भेदवानो फरी फरीने बोघ कर्यो छे जे आत्मा अप्रमादपणे ते भेदवा भणी दृष्टि आपशे ते आत्मा आत्मत्वने पामशे ए नि सदेह छे

ए [1]वस्तुथी आत्मा अनत काळथी भरपूर रह्यो छे एमा दृष्टि होवाथी निज गृह पर तेनी यथार्थ दृष्टि थई नथी खरी तो पात्रता, पण हु ए, कषायादिक उपशम पामवामा तमने निमित्तभूत थयो एम तमे गणो छो, माटे मने ए ज आनद मानवानु कारण छे के निर्ग्रंथ शासननी कृपाप्रसादीनो लाभ लेवानो सुदर वखत मने मळशे एम सभवे छे ज्ञानीदृष्ट ते खरु

जगतमा सत्परमात्मानी भक्ति–सत्गुरु–सत्सग–सत्-शास्त्राध्ययन–सम्यक् दृष्टिपणु अने सत्योग ए कोई काळे

---

१ ग्रथि

प्राप्त थया नथी थया होत तो आवी दशा होत नही पण जाग्या त्याथी प्रभात एम रूडा पुरुषोनो बोध ध्यानमा विनय-पूर्वक आग्रही ते वस्तु माटे प्रयत्न करवु ए ज अनत भवनी निष्फळतानु एक भवे सफळ थवु मने समजाय छे

सद्गुरुना उपदेश विना अने जीवनी सत्पात्रता विना एम थवु अटक्यु छे तेनी प्राप्ति करीने ससारतापथी अत्यत तपायमान आत्माने शीतळ करवो ए ज कृतकृत्यता छे

ए प्रयोजनमा तमारु चित्त आकर्षायु ए सर्वोत्तम भाग्यनो अश छे आशीर्वचन छे के तेमा तमे फळीभूत थाओ

भिक्षा सबधी प्रयत्नता हमणा मुलतवो ज्या सुधी ससार जेम भोगववो निमित्त हशे तेम भोगववो पडशे ते विना छूटको पण नथी अनायासे योग्य जगा सापडी जाय तो तेम, नही तो प्रयत्न करशो अने भिक्षाटन संबधी योग्य वेळाए पुन पूछशो विद्यमानता हशे तो उत्तर आपीश.

"धर्म" ए वस्तु बहु गुप्त रही छे. ते बाह्य सशोधनथी मळवानी नथी अपूर्व अतर्सशोधनथी ते प्राप्त थाय छे, ते अंतर्सशोधन कोईक महाभाग्य सद्गुरु अनुग्रहे पामे छे

तमारा विचारो सुदर श्रेणीमा आवेला जोई मारा अत करणे जे लागणी उत्पन्न करी छे ते अही दर्शावता सकारण अटकी जउ छु.

लखवा सबधमा हमणा कईक मने कटाळो वर्ते छे तेथी धार्यो हतो तेना आठमा भागनो पण उत्तर लखी शकतो नथी

छेवटनी आ विनयपूर्वक मारी शिक्षा ध्यानमा राखशो के --

एक भवना थोडा सुख माटे अनत भवनु अनंत दुख नही वधारवानो प्रयत्न सत्पुरुषो करे छे

स्यात्पद आ वात पण मान्य छे के बननार छे ते फरनार नथी अने फरनार छे ते बननार नथी. तो पछी धर्मप्रयत्नमा, आत्मिकहितमा अन्य उपाधिने आधीन थई प्रमाद शु धारण करवो? आम छे छता देश, काळ, पात्र, भाव जोवा जोईए.

सत्पुरुषोनु योगबळ जगतनु कल्याण करो

४

व्यवहारशुद्धि

[१७९/४८]

जिज्ञासु,

आपना प्रश्ननो उत्तर, मारी योग्यता प्रमाणे, आपनो प्रश्न टाकीने लखु छु

प्रश्न — व्यवहारशुद्धि केम थई शके?

उत्तर — व्यवहारशुद्धिनी आवश्यकता आपना लक्षमा हशे, छता विषयनी प्रारभता माटे अवश्य गणी दर्शाववु योग्य छे के आ लोकमा सुखनु कारण अने परलोकमा सुखनु कारण जे ससारप्रवृत्तिथी थाय तेनु नाम व्यवहारशुद्धि सुखना सर्व जिज्ञासु छे, व्यवहारशुद्धिथी ज्यारे सुख छे त्यारे तेनी आवश्यकता पण नि शक छे

१ जेने धर्म सवधी कई पण बोध थयो छे, अने रळवानी जेने जरूर नथी, तेणे उपाधि करी रळवा प्रयत्न न करवो जोईए.

२ जेने धर्म सबधी बोध थयो छे, छता स्थितिनु दु ख होय तो बनती उपाधि करीने रळवा तेणे प्रयत्न करवो जोईए.

(सर्वसगपरित्यागी थवानी जेनी जिज्ञासा छे तेने आ नियमोथी सबध नथी)

३ उपजीवन सुखे चाली शके तेवु छता जेनु मन लक्ष्मीने माटे बहु झावा नाखतु होय तेणे प्रथम तेनी वृद्धि करवानु कारण पोताने पूछवु तो उत्तरमा जो परोपकार सिवाय कई पण प्रतिकूळ भाग आवतो होय, किंवा पारिणामिक लाभने हानि पहोच्या सिवाय कई पण आवतु होय तो मनने संतोषी लेवु, तेम छता न वळी शके तेम होय तो अमुक मर्यादामा आववु ते मर्यादा सुखनु कारण थाय तेवी थवी जोईए

४ परिणामे आर्तध्यान ध्याववानी जरूर पडे, तेम करीने बेसवाथी रळवु सारु छे

५. जेनु सारी रीते उपजीवन चाले छे, तेणे कोई पण प्रकारना अनाचारथी लक्ष्मी मेळववी न जोईए मनने जेथी सुख होतु नथी तेथी कायाने के वचनने न होय अनाचारथी मन सुखी थतु नथी, आ स्वत अनुभव थाय तेवु कहेवु छे

६ न चालता उपजीवन माटे कई पण अल्प अनाचार (असत्य अने सहज माया) सेववो पडे तो महाशोचथी सेववो; प्रायश्चित्त ध्यानमा राखवु सेववामा नीचेना दोष न आववा जोईए

१ कोईथी महा विश्वासघात

२ मित्रथी विश्वासघात

३ कोईनी थापण ओळववी

४. व्यसननु सेववु
५ मिथ्या आळनु मूकवु
६. खोटा लेख करवा
७ हिसाबमा चूकववु
८ जुलमी भाव कहेवो
९ निर्दोषने अल्प मायाथी पण छेतरवो
१० न्यूनाधिक तोळी आपवु
११. एकने बदले बीजु अथवा मिश्र करीने आपवु
१२. कर्मादानी धधो
१३ लाच के अदत्तादान
— ए वाटेथी कई रळवु नही
ए जाणे सामान्य व्यवहारशुद्धि उपजीवन अर्थे कही गयो.

[अपूर्ण]

५
मोक्षमार्ग

[१८२/५४]

निर्ग्रंथ महात्माओने नमस्कार

मोक्षना मार्ग बे नथी. जे जे पुरुषो मोक्षरूप परमशातिने भूतकाळे पाम्या, ते ते सघळा सत्पुरुषो एक ज मार्गथी पाम्या छे, वर्तमानकाळे पण तेथी ज पामे छे, भविष्यकाळे पण तेथी ज पामशे ते मार्गमा मतभेद नथी, असरळता नथी, उन्मत्तता नथी, भेदाभेद नथी, मान्यामान्य नथी ते सरळ मार्ग छे, ते

समाधिमार्ग छे, तथा ते स्थिर मार्ग छे, अने स्वाभाविक शातिस्वरूप छे सर्वकाळे ते मार्गनु होवापणु छे, जे मार्गना मर्मने पाम्या विना कोई भूतकाळे मोक्ष पाम्या नथी, वर्तमानकाळे पामता नथी, अने भविष्यकाळे पामशे नही

श्री जिने सहस्रगमे क्रियाओ अने सहस्रगमे उपदेशो ए एक ज मार्ग आपवा माटे कह्या छे अने ते मार्गने अर्थे ते क्रियाओ अने उपदेशो ग्रहण थाय तो सफळ छे अने ए मार्गने भूली जई ते क्रियाओ अने उपदेशो ग्रहण थाय तो सौ निष्फळ छे

श्री महावीर जे वाटेथी तर्या ते वाटेथो श्रीकृष्ण तरशे जे वाटेथी श्रीकृष्ण तरशे ते वाटेथी श्रीमहावीर तर्या छे ए वाट गमे त्या बेठा, गमे ते काळे, गमे ते श्रेणीमा, गमे ते योगमा ज्यारे पमाशे, त्यारे ते पवित्र, शाश्वत, सत्पदना अनत अतीद्रिय सुखनो अनुभव थशे ते वाट सर्व स्थळे सभवित छे योग्य सामग्री नही मेळववाथी भव्य पण ए मार्ग पामता अटक्या छे, तथा अटकशे अने अटक्या हता.

कोई पण धर्म सबधी मतभेद राखवो छोडी दई एकाग्र भावथी सम्यक्‌योगे जे मार्ग सशोधन करवानो छे, ते ए ज छे मान्यामान्य, भेदाभेद के सत्यासत्य माटे विचार करनारा के बोध देनाराने, मोक्षने माटे जेटला भवनो विलंब हशे, तेटला समयनो (गौणताए) सशोधक ने ते मार्गना द्वार पर आवी पहोचेलाने विलव नही हशे

विशेष शु कहेवु ? ते मार्ग आत्मामा रह्यो छे आत्म-त्वप्राप्य पुरुष—निर्ग्रंथ आत्मा—ज्यारे योग्यता गणी ते आत्मत्व

अर्पशे—उदय आपशे—त्यारे ज ते प्राप्त थशे, त्यारे ज ते वाट मळशे, त्यारे ज ते मतभेदादिक जशे

मतभेद राखी कोई मोक्ष पाम्या नथी विचारीने जेणे मतभेदने टाळ्यो, ते अंतर्वृत्तिने पामी क्रमे करी शाश्वत मोक्षने पाम्या छे, पामे छे अने पामशे

कोई पण अव्यवस्थित भावे अक्षरलेख थयो होय तो ते क्षम थाओ.

६

सत्पुरुषनी विनयोपासना

[१८८/६२]

सत्पुरुषोने नमस्कार

परमात्माने ध्याववाथी परमात्मा थवाय छे पण ते ध्यावन आत्मा सत्पुरुषना चरणकमळनी विनयोपासना प्राप्त करी शकतो नथी, ए निर्ग्रंथ भगवाननु सर्वोत्कृष्ट वचनामृत छे

तमने में चार भावना माटे आगळ कईक सूचवन कर्युं हतु, ते सूचवन अही विशेषताथी कईक लखु छु

आत्माने अनंत भ्रमणाथी स्वरूपमय पवित्र श्रेणीमा आणवो ए केवु निरुपम सुख छे ते कह्यु कहेवातु नथी, लख्यु लखातु नथी अने मने विचार्युं विचारातु नथी

आ काळमा शुक्लध्याननी मुख्यतानो अनुभव भारतमा असंभवित छे ते ध्याननी परोक्ष कथारूप अमृततानो रस

केटलाक पुरुषो प्राप्त करी शके छे, पण मोक्षना मार्गनी अनुकूळता घोरी वाटे प्रथम धर्मध्यानथी छे

आ काळमा रूपातीत सुधी धर्मध्याननी प्राप्ति केटलाक सत्पुरुषोने स्वभावे, केटलाकने सद्‌गुरु रूप निरूपम निमित्तथी अने केटलाकने सत्सगआदि लई अनेक साधनोथी थई शके छे, पण तेवा पुरुषो — निर्ग्रंथमतना — लाखोमा पण कोईक ज नीकळी शके छे घणे भागे ते सत्पुरुषो त्यागी थई, एकात भूमिकामा वास करे छे, केटलाक बाह्य अत्यागने लीधे ससारमा रह्या छता ससारीपणु ज दर्शावे छे पहेला पुरुषनु मुख्योत्कृष्ट अने बीजानु गौणोत्कृष्ट ज्ञान प्राये करीने गणी शकाय.

चोथे गुणस्थानके आवेलो पुरुष पात्रता पाम्यो गणी शकाय, त्या धर्मध्याननी गौणता छे पाचमे मध्यम गौणता छे. छट्ठे मुख्यता पण मध्यम छे सातमे मुख्यता छे आपणे गृहवासमा सामान्य विधिए पाचमे उत्कृष्टे तो आवी शकीए, आ सिवाय भावनी अपेक्षा तो ओर ज छे।

ए धर्मध्यानमा चार भावनाथी भूषित थवु सभवे छे

१ मैत्री — सर्व जगतना जीव भणी निर्वैरबुद्धि

२. प्रमोद — अशमात्र पण कोईनो गुण नीरखीने रोमाचित उल्लसवा

३ करुणा — जगतजीवना दु ख देखीने अनुकपित थवु.

४ माध्यस्थ के उपेक्षा — शुद्ध समदृष्टिना बळवीर्यंने योग्य थवु

चार तेना आलंबन छे चार तेनी रूचि छे. चार तेना पाया छे एम अनेक भेदे वहेचायेलु धर्मध्यान छे

जे पवन (श्वास)नो जय करे छे, ते मननो जय करे छे. जे मननो जय करे छे ते आत्म-लीनता पामे छे आ कह्यु ते व्यवहार मात्र छे निश्चयमा निश्चअर्थनी अपूर्वयोजना सत्पुरुषना अतरमा रही छे

श्वासनो जय करता छता सत्पुरुषनी आज्ञाथी पराङ्-मुखता छे, तो ते श्वासजय परिणामे ससार ज वधारे छे. श्वासनो जय त्या छे के ज्या वासनानो जय छे तेना बे साधन छे, सद्गुरु अने सत्सग. तेनी बे श्रेणि छे, पर्युपासना अने पात्रता तेनी बे वर्धमानता छे, परिचय अने पुण्यानुबधी पुण्यता सघळानु मूळ आत्मानी सत्पात्रता छे

७

पुनर्जन्म संबधी मारा विचार

[१९०/६४]

पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेष कपिलादिषु ।
युक्तिमद्वचन यस्य, तस्य कार्यं परिग्रह ॥

—श्रीहरिभद्राचार्य

आपनु धर्मपत्र वैशाख वद ६नु मळ्यु आपना विशेष अवकाश माटे विचार करी उत्तर लखवामा आटलो में विलब कर्यो छे, जे विलब क्षमापात्र छे

ते पत्रमा आप दर्शावो छो के कोई पण मार्गथी आध्यात्मिक ज्ञान सपादन करवु, ए ज्ञानीओनो उपदेश छे,

आ वचन मने पण सम्मत छे प्रत्येक दर्शनमा आत्मानो ज बोध छे, अने मोक्ष माटे सर्वनो प्रयत्न छे, तोपण आटलु तो आप पण मान्य करो शकशो के जे मार्गथी आत्मा आत्मत्व— सम्यक्ज्ञान — यथार्थदृष्टि — पामे ते मार्ग सत्पुरुषनी आज्ञानुसार सम्मत करवो जोईए अही कोई पण दर्शन माटे बोलवानी उचितता नथी, छता आम तो कही शकाय के जे पुरुषनु वचन पूर्वापर अखडित छे, तेनु बोधेलु दर्शन ते पूर्वापर हितस्वी छे आत्मा ज्याथी 'यथार्थदृष्टि' किवा 'वस्तुधर्म' पामे त्याथी सम्यक्ज्ञान सप्राप्त थाय ए सर्वमान्य छे

आत्मत्व पामवा माटे शु होय, शु उपादेय अने शु ज्ञेय छे ते विषे प्रसगोपात्त सत्पुरुषनी आज्ञानुसार आपनी समीप कई कई मूकतो रहीश ज्ञेय, हेय, अने उपादेयरूपे कोइ पदार्थ, एक पण परमाणु नथी जाण्यु तो त्या आत्मा पण जाण्यो नथी महावीरना बोधेला 'आचाराग' नामना एक सिद्धातिक शास्त्रमा आम कह्यु छे के 'एग जाणई से सव्व जाणई, जे सव्व जाणई ए एग जाणई'— एकने जाण्यो तेणे सर्व जाण्यु, जेणे सर्वने जाण्यु तेणे एकने जाण्यो आ वचनामृत एम उपदेशे छे के एक आत्मा, ज्यारे जाणवा माटे प्रयत्न करशे, त्यारे सर्व जाण्यानो प्रयत्न थशे, अने सर्व जाण्यानो प्रयत्न एक आत्मा जाणवाने माटे छे, तोपण विचित्र जगतनु स्वरूप जेणे जाण्यु नथी ते आत्माने जाणतो नथी आ बोध अयथार्थ ठरतो नथी

आत्मा शाथी, केम, अने केवा प्रकारे बधायो छे आ ज्ञान जेने थयु नथी, तेने ते शाथी, केम अने केवा प्रकारे

मुक्त थाय तेनु ज्ञान पण थयु नथी, अने न थाय तो वचनामृत पण प्रमाणभूत छे महावीरना बोधनो मुख्य पायो उपरना वचनामृतथी शरू थाय छे, अने एनु स्वरूप एणे सर्वोत्तम दर्शाव्यु छे ते माटे आपनी अनुकूळता हशे, तो आगळ उपर जणावीश.

अही एक आ पण विज्ञापना आपने करवी योग्य छे के, महावीर के कोई पण वीजा उपदेशकना पक्षपात माटे मारु कंई पण कथन अथवा मानवु नथी, पण आत्मत्व पामवा माटे जेनो बोध अनुकूळ छे तेने माटे पक्षपात (!) दृष्टिराग, प्रशस्त राग, के मान्यता छे, अने तेने आधारे वर्तना छे, तो आत्मत्वने बाधा करतु एवु कोई पण मारु कथन होय, तो दर्शावी उपकार करता रहेशो प्रत्यक्ष सत्सगनो तो बलिहारी छे, अने ते पुण्यानुबधी पुण्यनु फळ छे, छता ज्या सुधी परोक्ष सत्सग ज्ञानीदृष्टानुसार मळ्या करशे त्या सुधी पण मारा भाग्यनो उदय ज छे

२ निर्ग्रंथशासन ज्ञानवृद्धने सर्वोत्तम वृद्ध गणे छे जातिवृद्धता, पर्यायवृद्धता एवा वृद्धताना अनेक भेद छे, पण ज्ञानवृद्धता विना ए सघळी वृद्धता ते नामवृद्धता छे, किंवा शून्यवृद्धता छे.

३ पुनर्जन्मसबधी मारा विचार दर्शाववा आपे सूचव्यु ते माटे अही प्रसगपूरतु सक्षेपमात्र दर्शावु छु ---

(अ) मारु केटलाक निर्णय परथी आम मानवु थयु छे के, आ काळमा पण कोई कोई महात्माओ गत भवने जातिस्मरणज्ञान वडे जाणी शके छे, जे जाणवु कल्पित नही पण सम्यक् होय छे उत्कृष्ट समवेग — ज्ञानयोग — अने

सत्सगथी पण ए ज्ञान प्राप्त थाय छे एटले शु के भूतभव प्रत्यक्षानुभवरूप थाय छे.

ज्या सुधी भूतभव अनुभवगम्य न थाय त्या सुधी भविष्यकाळनो धर्मप्रयत्न शकासह आत्मा कर्या करे छे, अने शकासह प्रयत्न ते योग्य सिद्धि आपतो नथी

(आ) 'पुनर्जन्म छे,' आटलु परोक्षे–प्रत्यक्षे नि शकत्व जे पुरुषने प्राप्त थयु नथी, ते पुरुषने आत्मज्ञान प्राप्त थयु होय एम शास्त्रशैली कहेती नथी पुनर्जन्मने माटे श्रुतज्ञानथी मेळवेलो आशय मने जे अनुभवगम्य थयो छे ते कंईक अही दर्शावी जउ छु

(१) 'चैतन्य' अने 'जड' ए बे ओळखवाने माटे ते बन्ने वच्चे जे भिन्न धर्म छे ते प्रथम ओळखावो जोईए, अने ते भिन्न धर्ममा पण मुख्यभिन्न धर्म जे ओळखवानो छे ते आ छे के, 'चैतन्य'मा 'उपयोग' (कोई पण वस्तुनो जे वडे बोध थाय ते वस्तु) रह्यो छे अने 'जड'मा ते नथी अही कदापि आम कोई निर्णय करवा इच्छे के, 'जड'मा 'शब्द,' 'स्पर्श', 'रूप', 'रस' अने 'गंध' ए शक्तिओ रही छे, अने चैतन्यमा ते नथी, पण ए भिन्नता आकाशनी अपेक्षा लेता न समजाय तेवी छे, कारण तेवा केटलाक गुणो आकाशमा पण रह्या छे, जेवा के, निरजन, निराकार, अरूपी इ०, ते ते आत्मानी सदृश गणी शकाय, कारण भिन्न धर्म न रह्या, परतु भिन्न धर्म 'उपयोग' नामनो आगळ कहेलो गुण ते दर्शावि छे, अने पछीथी जड चैतन्यनु स्वरूप समजवु सुगम पडे छे

(२) जीवनो मुख्य गुण वा लक्षण छे ते 'उपयोग' (कोई पण वस्तुसबधी लागणी, बोध, ज्ञान) अशुद्ध अने अपूर्ण उपयोग जेने रह्यो छे ते जीव—'व्यवहारनी अपेक्षाए—' आत्मा स्वस्वरूपे परमात्मा ज छे, पण ज्या सुधी स्वस्वरूप यथार्थ समज्यो नथी त्या सुधी (आत्मा) छद्मस्थ जीव छे—परमात्मदशामा आव्यो नथी शुद्ध अने सपूर्ण यथार्थ उपयोग जेने रह्यो छे ते परमात्मदशाने प्राप्त थयेलो आत्मा गणाय अशुद्ध उपयोगी होवाथी ज आत्मा कल्पितज्ञान (अज्ञान) ने सम्यक्ज्ञान मानी रह्यो छे, अने सम्यक्ज्ञान विना पुनर्जन्मनो निश्चय कोई अशे पण यथार्थ थतो नथी अशुद्ध उपयोग थवानु कई पण निमित्त होवु जोईए ते निमित्त अनुपूर्वीए चाल्या आवता बाह्यभावे ग्रहेला कर्मपुद्गल छे (ते कर्मनु यथार्थ स्वरूप सूक्ष्मताथी समजवा जेवु छे, कारण आत्माने आवी दशा काई पण निमित्तथी ज होवी जोईए, अने ते निमित्त ज्या सुधी जे प्रकारे छे ते प्रकारे न समजाय त्या सुधी जे वाटे जवु छे ते वाटनी निकटता न थाय) जेनु परिणाम विपर्यय होय तेनो प्रारभ अशुद्ध उपयोग विना न थाय, अने अशुद्ध उपयोग भूतकाळना कई पण संलग्न विना न थाय वर्तमानकाळमाथी आपणे एकेकी पळ बाद करता जईए, अने तपासता जईए, तो प्रत्येक पळ भिन्न भिन्न स्वरूपे गई जणाशे (ते भिन्न भिन्न थवानु कारण कई होय ज) एक माणसे एवो दृढ सकल्प कर्यो के, यावत्-जीवनकाळ स्त्रीनु चिंतवन पण मारे न करवु, छता पाच पळ न जाय, अने चिंतवन थयु तो पछी तेनु कारण जोईए

मने जे शास्त्रसबधो अल्प बोध थयो छे तेथी एम कहो शकु छु के, ते पूर्वकर्मनो कोई पण अशे उदय जोईए केवा कर्मनो? ते कही शकीश के, मोहनीय कर्मनो, कई तेनी प्रकृतिनो? तो कही शकीश के, पुरुषवेदनो (पुरुषवेदनी पदर प्रकृति छे) पुरुषवेदनो उदय दृढ सकल्पे रोक्यो छता थयो तेनुं कारण हवे कही शकाशे के, कई भूतकाळनु होवु जोईए, अने अनुपूर्वीए तेनु स्वरूप विचारता पुनर्जन्म सिद्ध थशे

८

स्त्रीना संबंधमां मारा विचार

[१९५/७८]

(१)

अति अति स्वस्थ विचारणाथी एम सिद्ध थयु के शुद्ध ज्ञानने आश्रये निराबाध सुख रह्यु छे, तथा त्या ज परम समाधि रही छे

स्त्री ए ससारनु सर्वोत्तम सुख मात्र आवरणिकदृष्टिथो कल्पायु छे, पण ते तेम नथी ज स्त्रीथी जे सयोगसुख भोगववानु चिह्न ते विवेकथी दृष्टिगोचर करता वमन करवाने योग्य भूमिकाने पण योग्य रहेतु नथी जे जे पदार्थो पर जुगुप्सा रही छे, ते ते पदार्थो तो तेना शरीरमा रह्या छे, अने तेनी ते जन्मभूमिका छे वळी ए सुख क्षणिक, खेद अने खसना दरदरूप ज छे ते वेळानो देखाव हृदयमा चीतराई रही हसावे छे, के शी आ भुलवणी? टूकामा कहेवानु के तेमा

कई पण सुख नथी, अने सुख होय तो तेने अपरिच्छेदरूपे वर्णवी जुओ, एटले मात्र मोहदशाने लीधे तेम मान्यता थई छे, एम ज जणाशे. अहो हु स्त्रीना अवयवादि भागनो विवेक करवा बेठो नथी, पण त्या फरी आत्मा न ज खेचाय ए विवेक थयो छे, तेनु सहज सूचवन कर्युं स्त्रीमा दोष नथी, पण आत्मामा दोष छे, अने ए दोप जवाथी आत्मा जे जुए छे ते अद्‌भुत आनदमय ज छे, माटे ए दोषथी रहित थवु, ए ज परम जिज्ञासा छे.

शुद्ध उपयोगनी जो प्राप्ति थई तो पछी ते समये पूर्वोपार्जित मोहनीयने भस्मीभूत करी शकशे आ अनुभवगम्य प्रवचन छे.

पण पूर्वोपार्जित हजु सुधी मने प्रवर्ते छे, त्या सुधी मारी शी दशाथी शाति थाय? ए विचारता मने नीचे प्रमाणे समाधान थयु

स्त्रीने सदाचारी ज्ञान आपवु एक सत्सगी तेने गणवी. तेनाथी धर्मबहेननो सबध राखवो. अत करणथी कोई पण प्रकारे मा बहेन अने तेमा अतर न राखवो. तेना शारीरिक भागनो कोई पण रीते मोहकर्मने विशे उपभोग लेवाय छे, त्या योगनी ज स्मृति राखी, 'आ छे तो हु केवु सुख अनुभवु छु?' ए भूली जवु (तात्पर्य — ते मानवु असत् छे) मित्रे मित्रनी जेम साधारण चीजनो परस्पर उपभोग लईए छीए तेम ते वस्तु लेवा (वि०)नो सखेद उपभोग लई पूर्वबधनथी छूटो जवु तेनाथी जेम बने तेम निर्विकारी वात करवी

विकारचेष्टानो कायाए अनुभव करता पण उपयोग निशान पर ज राखवो

तेनाथी कई सतानोत्पत्ति थाय तो ते एक साधारण वस्तु छे, एम समजी ममत्व न करवु पण एम चितववु के जे द्वारथी लघुशकानु वहेवु छे ते द्वारथी उत्पन्न थयेलो पदार्थ (आ) पाछो तेमा का भूली जाय छे — महा अधारी केदथी कटाळी आव्या छता पाछो त्या ज मित्रता करवा जाय छे ए शी विचित्रता छे। इच्छवु एम के बन्नेना ते सयोगथी कई हर्षशोक के बाळबच्चारूप फळनी उत्पत्ति न थाओ ए चित्र मने सभारवा न दो नही तो एक मात्र सुदर चहेरो अने सुदर वर्ण (जड पदार्थनो) ते आत्माने केटलु बधन करी सपत्तिहीन करे छे, ते आत्मा कोई पण प्रकारे विसारीश नही

(२)

स्त्री सबधमा कोई पण प्रकारे रागद्वेष राखवा मारी अशमात्र इच्छा नथी पण पूर्वोपार्जनथी इच्छाना प्रवर्तनमा अटक्यो छु

९

प्रतापी पुरुष

[१९७/८०]

निराबाधपणे जेनी मनोवृत्ति वह्या करे छे, सकल्प–विकल्पनी मदता जेने थई छे, पच विषयथी विरक्त बुद्धिना अकुरो जेने फूटचा छे, क्लेशना कारण जेणे निर्मूळ कर्या छे,

अनेकात–दृष्टियुक्त एकातदृष्टिने जे सेव्या करे छे, जेनी मात्र एक शुद्ध वृत्ति ज छे, ते प्रतापी पुरुष जयवान वर्तो

आपणे तेवा थवानो प्रयत्न करवो जोईए

१०

मनोजयी-अनुमोदना

[१९७/८१]

अहोहो! कर्मनी केवी विचित्र बध्रस्थिति छे? जेने स्वप्ने पण इच्छतो नथी, जे माटे परम शोक थाय छे, ए ज अगाभीर्य दशाथी प्रवर्तवु पडे छे

ते जिन–वर्द्धमानादि सत्पुरुषो केवा महान मनोजयी हता! तेने मौन रहेवु–अमौन रहेवु बन्ने सुलभ हतु, तेने सर्व अनुकूळ–प्रतिकूळ दिवस सरखा हता, तेने लाभ–हानि सरखी हती, तेनो क्रम मात्र आत्मसमतार्थे हतो केवु आश्चर्यकारक के, एक कल्पनानो जय एक कल्पे थवो दुर्लभ, तेवी तेमणे अनत कल्पनाओ कल्पना अनतमा भागे शमावी दीधी!

११

पश्चात्ताप

[२०१/८५]

समजीने अल्पभाषी थनारने पश्चात्ताप करवानो थोडो ज अवसर सभवे छे

हे नाथ! सातमी तमतमप्रभा नरकनी वेदना मळी होत तो वखते सम्मत करत, पण जगतनी मोहिनी सम्मत थती नथी

पूर्वना अशुभ कर्म उदय आव्ये वेदता जो शोच करो छो तो हवे ए पण ध्यान राखो के नवा बाधता परिणामे तेवा तो बधाता नथी ?

आत्माने ओळखवो होय तो आत्माना परिचयी थवु, परवस्तुना त्यागी थवु

जेटला पोतानी पुद्‌गलिक मोटाई इच्छे छे तेटला हलका सभवे

प्रशस्त पुरुषनी भक्ति करो, तेनु स्मरण करो, गुण-चिंतन करो

१२

महावीरना बोधने पात्र कोण ?

[२१०/१०५]

१ सत्पुरुषना चरणनो इच्छक,
२ सदैव सूक्ष्म बोधनो अभिलाषी,
३ गुणपर प्रशस्त भाव राखनार,
४ ब्रह्मव्रतमा प्रीतिमान,
५ ज्यारे स्वदोष देखे त्यारे तेने छेदवानो उपयोग राखनार,
६ उपयोगथी एक पळ पण भरनार,
७ एकातवासने वखाणनार,
८ तीर्थादि प्रवासनो उछरगी,
९ आहार, विहार, निहारनो नियमी,
१० पोतानी गुरुता दबावनार,

एवो कोई पण पुरुष ते महावीरना बोधने पात्र छे, सम्यक्‌दशाने पात्र छे पहेला जेवु एक्के नथी

१३
सुखनो समय कयो ?

[२३२/१५७ (१–२)]

(१)

नाना प्रकारनो मोह पातळो थवाथी आत्मानी दृष्टि पोताना गुणथी उत्पन्न थता सुखमा जाय छे, अने पछी ते मेळववा प्रयत्न करे छे ए ज दृष्टि तेने तेनी सिद्धि आपे छे.

---

(२)

आयुष्यनु प्रमाण आपणे जाण्यु नथी बाल्यावस्था असमजमा व्यतीत थई, मानो के ४६ वर्षनु आयुष्य हशे, अथवा वृद्धता देखी शकीशु एटलु आयुष्य हशे. पण तेमा शिथिलदशा सिवाय बीजु कई जोई शकीशु नही हवे मात्र एक युवावस्था रही तेमा जो मोहनीय बळवत्तरता न घटी तो सुखथी निद्रा आवशे नही, नीरोगी रहेवाशे नही, माठा सकल्प – विकल्प टळशे नही अने ठाम ठाम आथडवु पडशे, अने ते पण रिद्धि हशे तो थशे, नही तो प्रथम तेनु प्रयत्न करवु पडशे ते इच्छा प्रमाणे मळी न मळी तो एक बाजु रही, परतु वखते पेट पूरती मळवी दुर्लभ छे तेनी ज चितामा, तेना ज विकल्पमा अने ते मेळवीने सुख भोगवीशु ए ज सकल्पमा, मात्र दुख सिवाय बीजु कई देखी शकीशु नही ए वयमा कोई कार्यमा प्रवृत्ति करता फाव्या तो एकदम आख तीरछी थई जशे न फाव्या तो लोकनो भेद अने पोतानो निष्फळ खेद बहु दुख आपशे प्रत्येक वखत मृत्युना

भयवाळो, रोगना भयवाळो, आजीविकाना भयवाळो, यश हशे तो तेनी रक्षाना भयवाळो, अपयश हशे तो तेने टाळवाना भयवाळो, लेणु हशे तो तेने लेवाना भयवाळो, देणु हशे तो तेनी हायवोयना भयवाळो, स्त्री हशे तो तेनी....ना भयवाळो, नही होय तो तेने प्राप्त करवाना ख्यालवाळो, पुत्रपुत्रादिक हशे तो ते तेनी कडाकूटना भयवाळो, नही होय तो तेने मेळववाना ख्यालवाळो, ओछी रिद्धि हशे तो वधारेना ख्यालवाळो, वधारे हशे तो तेने बाथ भरवाना ख्यालनो, एम ज प्रत्येक साधनो माटे अनुभव थशे क्रमे के विक्रमे टूकामा कहेवानु के, सुखनो समय हवे कयो कहेवो ? बाल्यावस्था ? युवावस्था ? जरावस्था ? नीरोगावस्था ? रोगावस्था ? धनावस्था ? निर्धनावस्था ? गृहस्थावस्था ? अगृहस्थावस्था ?

ए सर्व प्रकारनी बाह्य महेनत विना अनुत्तर अतरग विचारणाथी जे विवेक थयो ते ज आपणने बीजी दृष्टि करावी, सर्व काळने माटे सुखी करे छे एटले कह्यु शु ? तो के वधारे जिवायु तोपण सुखी, ओछु जिवायु तोपण सुखी, पाछळ जन्मवु होय तोपण सुखी, न जन्मवु होय तोपण सुखी

१४

परमतत्त्वनो विभिन्न संज्ञा

[२६७/२०९]

महात्माओए गमे ते नामे अने गमे ते आकारे एक 'सत्'ने ज प्रकाश्यु छे तेनु ज ज्ञान करवा योग्य छे ते

१३

सुखनो समय कयो ?

[२३२/१५७ (१–२)]

(१)

नाना प्रकारनो मोह पातळो थवाथी आत्मानी दृष्टि पोताना गुणथी उत्पन्न थता सुखमा जाय छे, अने पछी ते मेळववा प्रयत्न करे छे ए ज दृष्टि तेने तेनी सिद्धि आपे छे

---

(२)

आयुष्यनु प्रमाण आपणे जाण्यु नथी बाल्यावस्था असमजमा व्यतीत थई, मानो के ४६ वर्षनु आयुष्य हशे, अथवा वृद्धता देखी शकीशु एटलु आयुष्य हशे. पण तेमा शिथिलदशा सिवाय बीजु कई जोई शकीशु नही हवे मात्र एक युवावस्था रही तेमा जो मोहनीय बळवत्तरता न घटी तो सुखथी निद्रा आवशे नही, नीरोगी रहेवाशे नही, माठा सकल्प – विकल्प टळशे नही अने ठाम ठाम आथडवु पडशे, अने ते पण रिद्धि हशे तो थशे, नही तो प्रथम तेनु प्रयत्न करवु पडशे ते इच्छा प्रमाणे मळी न मळी तो एक बाजु रही, परतु वखते पेट पूरती मळवी दुर्लभ छे तेनी ज चितामा, तेना ज विकल्पमा अने ते मेळवीने सुख भोगवीशु ए ज सकल्पमा, मात्र दु ख सिवाय बीजु कई देखी शकीशु नही ए वयमा कोई कार्यमा प्रवृत्ति करता फाव्या तो एकदम आख तीरछी थई जशे न फाव्या तो लोकनो भेद अने पोतानो निष्फळ खेद बहु दु ख आपशे प्रत्येक वखत मृत्युना

भयवाळो, रोगना भयवाळो, आजीविकाना भयवाळो, यश हशे तो तेनी रक्षाना भयवाळो, अपयश हशे तो तेने टाळवाना भयवाळो, लेणु हशे तो तेने लेवाना भयवाळो, देणु हशे तो तेनी हायवोयना भयवाळो, स्त्री हशे तो तेनी....ना भयवाळो, नही होय तो तेने प्राप्त करवाना ख्यालवाळो, पुत्रपुत्रादिक हशे तो ते तेनी कडाकूटना भयवाळो, नही होय तो तेने मेळववाना ख्यालवाळो, ओछी रिद्धि हशे तो वधारेना ख्यालवाळो, वधारे हशे तो तेने बाथ भरवाना ख्यालनो, एम ज प्रत्येक साधनो माटे अनुभव थशे क्रमे के विक्रमे टूकामा कहेवानु के, सुखनो समय हवे कयो कहेवो? बाल्यावस्था? युवावस्था? जरावस्था? नीरोगावस्था? रोगावस्था? धनावस्था? निर्धनावस्था? गृहस्थावस्था? अगृहस्थावस्था?

ए सर्व प्रकारनी बाह्य महेनत विना अनुत्तर अतरग विचारणाथी जे विवेक थयो ते ज आपणने बीजी दृष्टि करावी, सर्व काळने माटे सुखी करे छे एटले कह्यु शु? तो के वधारे जिवायु तोपण सुखी, ओछु जिवायु तोपण सुखी, पाछळ जन्मवु होय तोपण सुखी, न जन्मवु होय तोपण सुखी

१४
परमतत्त्वनी विभिन्न संज्ञा

[२६७/२०९]

महात्माओए गमे ते नामे अने गमे ते आकारे एक 'सत्'ने ज प्रकाश्यु छे. तेनु ज ज्ञान करवा योग्य छे ते

ज प्रतीत करवा योग्य छे, ते ज अनुभवरूप छे अने ते ज परम प्रेमे भजवा योग्य छे

ते 'परमसत्'नी ज अमो अनन्य प्रेमे अविच्छिन भक्ति इच्छीए छीए.

ते 'परमसत्'ने 'परमज्ञान' कहो, गमे तो 'परमप्रेम' कहो, अने गमे तो 'सत्–चित्–आनद स्वरूप' कहो, गमे तो 'आत्मा' कहो, गमे तो 'सर्वात्मा' कहो, गमे तो एक कहो, गमे तो अनेक कहो, गमे तो एकरूप कहो, गमे तो सर्वरूप कहो, पण सत् ते सत् ज छे अने ते ज ए बधा प्रकारे कहेवा योग्य छे, कहेवाय छे सर्व ए ज छे, अन्य नही.

एवु ते परमतत्त्व, पुरुषोत्तम, हरि, सिद्ध, ईश्वर, निरंजन, अलख, परब्रह्म, परमात्मा, परमेश्वर अने भगवत आदि अनत नामोए कहेवायु छे

अमे ज्यारे परमतत्त्व कहेवा इच्छी तेवा कोई पण शब्दोमा बोलीए तो ते ए ज छे, बीजु नही

१५

सजीवन मूर्ति प्रति अपूर्व स्नेह

[२६८/२१२]

जेना वचनबळे जीव निर्वाणमार्गने पामे छे, एवी सजीवन मूर्तिनो पूर्वकाळमा जीवने जोग घणी वार थई गयो छे, पण तेनु ओळखाण थयु नथी, जीवे ओळखाण करवा प्रयत्न क्वचित् कर्यु पण हशे, तथापि जीवने विषे ग्रही राखेली सिद्धियोगादि, रिद्धियोगादि अने बीजी तेवी कामनाओथी पोतानी दृष्टि मलिन हती, दृष्टि जो मलिन होय तो तेवी

सत्मूर्ति प्रत्य पण बाह्य लक्ष रहे छे, जेथी ओळखाण पडतु नथी, अने ज्यारे ओळखाण पडे छे, त्यारे जीवने कोई अपूर्व स्नेह आवे छे, ते एवो के ते मूर्तिना वियोगे घडी एक आयुष्य भोगववु ते पण तेने विटबना लागे छे, अर्थात् तेना वियोगे ते उदासीनभावे तेमा ज वृत्ति राखीने जीवे छे, बीजा पदार्थोना सयोग अने मृत्यु ए बन्ने एने समान थई गया होय छे आवी दशा ज्यारे आवे छे, त्यारे जीवने मार्ग बहु निकट होय छे एम जाणवु एवी दशा आववामा मायानी सगति बहु विटबनामय छे, पण ए ज दशा आणवी एवो जेनो निश्चय दृढ छे तेने घणु करीने थोडा वखतमा ते दशा प्राप्त थाय छे.

तमे बधाए हाल तो एक प्रकारनु बधन करवा माड्यु छे, ते माटे अमारे शु करवु ते काई सूझतु नथी 'सजीवन मूर्ति'थी मार्ग मळे एवो उपदेश करता पोते पोताने बधन कर्युं छे, के जे उपदेशनो लक्ष तमे अमारा उपर ज माड्यो अमे तो सजीवन मूर्तिना दास छीए, चरणरज छीए अमारी एवी अलौकिक दशा पण क्या छे? के जे दशामा केवळ असगता ज वर्ते छे अमारो उपाधियोग तो तमे प्रत्यक्ष देखो तेवो छे.

१६
कल्पद्रुमनी छाया

[२७९/२३२]

मायानो प्रपच क्षणे क्षणे बाधकर्ता छे, ते प्रपचना तापनी निवृत्ति कोई कल्पद्रुमनी छाया छे, अने का केवळदशा छे, तथापि कल्पद्रुमनी छाया प्रशस्त छे, ते सिवाय ए

तापनी निवृत्ति नथी, अने ए कल्पद्रुमने वास्तविक ओळखवा जीवे जोग्य थवु प्रशस्त छे. ते जोग्य थवामा बाधकर्ता एवो आ मायाप्रपच छे जेनो परिचय जेम ओछो होय तेम वर्त्या विना जोग्यतानु आवरण भंग थतु नथी, पगले पगले भयवाळी अज्ञान भूमिकामा जीव वगर विचार्ये कोटचवधि योजनो चाल्या करे छे, त्या जोग्यतानो अवकाश क्याथी होय? आम न थाय तेटला माटे थयेला कार्यना उपद्रवने जेम शमावाय तेम शमावी, सर्वप्रकारे निवृत्ति (ए विषेनी) करी योग्य व्यवहारमा आववानु प्रयत्न करवु उचित छे 'न चालता' करवो जोईए, अने ते पण प्रारब्धवशात् निस्पृह बुद्धिथी, एवो जे व्यवहार तेने योग्य व्यवहार मानजो अत्र ईश्वरानुग्रह छे

१७
दोषी जीवोना त्रण प्रकार

[२९४/२६२]

उपाधिना उदयने लीधे पहोच आपवानु बनी शक्यु नथो, ते क्षमा करशो अत्र अमने उपाधिना उदयने लीधे स्थिति छे एटले तमने समागम रहेवो दुर्लभ छे

आ जगतने विषे सत्सगनी प्राप्ति चतुर्थकाळने विषे पण प्राप्त थवी घणी दुर्लभ छे, तो आ दुषमकाळने विषे प्राप्ति परम दुर्लभ होवी सभाव्य छे एम जाणो, जे जे प्रकारे सत्सगना वियोगमा पण आत्मामा गुणोत्पत्ति थाय ते ते प्रकारे प्रवर्तवानो पुरुषार्थ वारवार, वखतोवखत अने प्रसगे

प्रसगे कर्त्तव्य छे, अने निरतर सत्सगनी इच्छा, असत्सगमा उदासीनता रहेवामा मुख्य करण तेवो पुरुषार्थ छे, एम जाणो जे कई निवृत्तिना कारणो होय, ते ते कारणोनो वारंवार विचार करवो योग्य छे

अमने आ लखता एम स्मरण थाय छे के "शु करवु ?" अथवा "कोई प्रकारे थतु नथी ?" एवु तमारा चित्तमा वारवार थई आवतु हशे, तथापि एम घटे छे के जे पुरूष वीजा बधा प्रकारनो विचार अकर्तव्यरूप जाणी आत्मकल्याणने विषे उजमाळ थाय छे, तेने कई नही जाणता छता, ते ज विचारना परिणाममा जे करवु घटे छे, अने कोई प्रकारे थतु नथी एम भास्यमान थयेलु ते प्रगट थवानु ते जीवने विषे कारण उत्पन्न थाय छे, अथवा कृतकृत्यतानु साक्षात् स्वरूप उत्पन्न थाय छे

दोष करे छे एवी स्थितिमा आ जगतना जीवोना त्रण प्रकार ज्ञानी पुरुषे दीठा छे (१) कोई पण प्रकारे जीव दोष के कल्याणनो विचार नथी करी शकचो, अथवा करवानी जे स्थिति तेमा बेभान छे, एवा जीवोनो एक प्रकार छे (२) अज्ञानपणाथी, असत्सगना अभ्यासे भास्यमान थयेला बोधथी दोष करे छे ते क्रियाने कल्याणस्वरूप मानता एवा जीवोनो वीजो प्रकार छे (३) उदयाधीनपणे मात्र जेनी स्थिति छे, सर्व परस्वरूपनो साक्षी छे एवो बोधस्वरूप जीव, मात्र उदासीनपणे कर्त्ता देखाय छे, एवा जीवोनो त्रीजो प्रकार छे.

एम त्रण प्रकारना जीव-समूह ज्ञानी पुरुषे दीठा छे घणु करी प्रथम प्रकारने विषे स्त्री, पुत्र, मित्र, धनादि

प्राप्ति अप्राप्तिना प्रकारने विषे तदाकार-परिणामी जेवा भासता एवा जीवो समावेश पामे छे जुदा जुदा धर्मनी नामक्रिया करता एवा जीवो, अथवा स्वच्छद-परिणामी एवा परमार्थमार्गे चालीए छीए एवी बुद्धिए गृहीत जीवो ते बीजा प्रकारने विषे समावेश पामे छे स्त्री, पुत्र, मित्र, धनादि प्राप्ति–अप्राप्ति ए आदिभावने विषे जेने वैराग्य उत्पन्न थयो छे, अथवा थया करे छे, स्वच्छद-परिणाम जेनु गळित थयु छे, अने तेवा भावना विचारमा निरतर जेनु रहेवु छे, एवा जीवना दोष ते त्रीजा प्रकारमा समावेश थाय छे. जे प्रकारे त्रीजो समूह साध्य थाय ते प्रकार विचार छे विचारवान छे तेने यथाबुद्धिए, सद्‌ग्रथे, सत्सगे ते विचार प्राप्त थाय छे, अने अनुक्रमे दोषरहित एवु स्वरूप तेने विशे उत्पन्न होय छे आ वात फरी फरी सूता तथा जागता अने बीजे बीजे प्रकारे विचारवा, सभारवा योग्य छे

१८

जगतनुं विस्मरण अने आत्मस्मरण

[३०६/२९९]

गमे ते क्रिया, जप, तप के शास्त्रवाचन करीने पण एक ज कार्य सिद्ध करवानु छे, ते ए के जगतनी विस्मृति करवी अने सत्‌ना चरणमा रहेवु

अने ए एक ज लक्ष उपर प्रवृत्ति करवाथी जीवने पोताने शु करवु योग्य छे, अने शु करवु अयोग्य छे ते समजाय छे, समजातु जाय छे

ए लक्ष आगळ थया विना जप, तप, ध्यान के दान कोईनी यथायोग्य सिद्धि नथी, अने त्या सुधी ध्यानादिक नही जेवा कामना छे

माटे एमाथी जे जे साधनो थई शकता होय ते बधा एक लक्ष थवाने अर्थे करवा के जे लक्ष अमे उपर जणाव्यो छे जपतपादिक कई निषेधवा योग्य नथी, तथापि ते बधा एक लक्षने अर्थे छे, अने ए लक्ष विना जीवने सम्यक्त्वसिद्धि थती नथी.

वधारे शु कहीए ? उपर जणाव्यु छे तेटलु ज समजवाने माटे सघळा शास्त्रो प्रतिपादित थया छे

१९

संसारमा केम रहेवुं ?

[३०७/३०१]

जगत आत्मरूप मानवामा आवे, जे थाय ते योग्य ज मानवामा आवे, परना दोष जोवामा न आवे, पोताना गुणनु उत्कृष्टपणु सहन करवामा आवे तो ज आ ससारमा रहेवु योग्य छे, बीजी रीते नही

२०

कर्ता – कर्म – रहस्य

[३११/३१७]

'एक परिनामके न करता दरव दोई'

वस्तु पोताना स्वरूपमा ज परिणमे एवो नियम छे जोव जीवरूपे परिणम्या करे छे, अने जड जडरूपे परिणम्या

करे छे जीवनु मुख्य परिणमवु ते चेतन (ज्ञान) स्वरूप छे, अने जडनु मुख्य परिणमवु ते जडत्वस्वरूप छे जीवनु जे चेतन परिणाम ते कोई प्रकारे जड थईने परिणमे नही, अने जडनु जडत्वपरिणाम ते कोई दिवसे चेतनपरिणामे परि-णामे नही, एवी वस्तुनी मर्यादा छे, अने चेतन, अचेतन ए बे प्रकारना परिणाम तो अनुभवसिद्ध छे तेमानु एक परिणाम बे द्रव्य मळीने करी शके नही, अर्थात् जीव अने जड मळी केवळ चेतनपरिणामे परिणमी शके नही अथवा केवळ अचेतन परिणामे परिणमी शके नही, जीव चेतनपरिणामे परिणमे अने जड अचेतन परिणामे परिणमे, एम वस्तुस्थिति छे, माटे जिन कहे छे के, एक परिणाम बे द्रव्य करी शके नही जे जे द्रव्य छे ते ते पोतानी स्थितिमा ज होय, अने पोताना स्वभावमा परिणमे

'दोई परिनाम एक द्रव्य न धरतु है,'

तेम ज एक द्रव्य बे परिणामे पण परिणमी शके नही, एवी वस्तुस्थिति छे एक जीवद्रव्य ते चेतन अने अचेतन ए बे परिणामे परिणमी शके नही, अथवा एक पुद्गलद्रव्य अचेतन अने चेतन ए बे परिणामे परिणमी शके नही मात्र पोते पोताना ज परिणाममा परिणमे चेतनपरिणाम ते अचेतन पदार्थने विषे होय नही, अने अचेतनपरिणाम ते चेतनपदार्थने विषे होय नही, माटे बे प्रकारना परिणामे एक द्रव्य परिणमे नही, – बे परिणामने धारण करी शके नही

'एक करतूति दोई दर्व कवहू न करे,'

माटे एक क्रिया ते बे द्रव्य क्यारे पण करे नही बे द्रव्यनु मळवु एकाते होवु योग्य नथी जो बे द्रव्य मळीने

एक द्रव्य ऊपजतु होय, तो वस्तु पोताना स्वरूपनो त्याग करे, अने एम तो कोई काळे बने नही के वस्तु पोताना स्वरूपनो केवळ त्याग करे

ज्यारे एम बनतु नथी, त्यारे बे द्रव्य केवळ एक परिणामने पाम्या विना एक क्रिया पण क्याथी करे? अर्थात् न ज करे

'दोई करतूति एक दर्वं न करतु है,'

तेम ज बे क्रिया एक द्रव्य धारण पण करे नही, एक समयने विषे बे उपयोग होई शके नही माटे

'जीव पुद्गल एक खेत अवगाही दोउ,'

जीव अने पुद्गल कदापि एक क्षेत्रने रोकी रह्या होय तोपण

'अपने अपने रूप, कोउ न टरतु है,'

पोतपोताना स्वरूपथी कोई अन्य परिणाम पामतु नथी, अने तेथी करीने ज एम कहीए छीए के —

'जड परिनामनिको, करता है पुद्गल,'

देहादिके करीने जे परिणाम थाय छे तेनो पुद्गल कर्त्ता छे कारण के ते देहादि जड छे, अने जडपरिणाम तो पुद्गलने विषे छे ज्यारे एम ज छे तो पछी जीव, पण जीव स्वरूपे ज वर्ते छे, एमा कई बीजु प्रमाण पण हवे जोईतु नथी, एम गणी कहे छे के —

'चिदानद चेतन सुभाव आचरतु है'

काव्यकर्त्तानो कहेवानो हेतु एम छे के, जो आम तमे वस्तुस्थिति समजो तो तो जडने विषेनो जे स्वस्वरूपभाव छे

ते मटे, अने स्वस्वरूपनु जे तिरोभावपणु छे ते प्रगट थाय. विचार करो, स्थिति पण एम ज छे घणी गहन वातने अही टूकामा लखी छे (जोके) जेने यथार्थ वोघ छे तेने तो सुगम छे.

ए वातने घणो वार मनन करवाथो केटलोक बोघ थई शकशे

आपनु पत्तु १ गई परमे मळ्यु छे चित्त तो आपने पत्र लखवानु रहे छे, पण जे लखवानु सूझे छे ते एवु सूझे छे के आपने ते वातनो घणा वखत सुधी परिचय थवो जोईए, अने ते विशेष गहन होय छे सिवाय लखवानु सूझतु नथी. अथवा लखवामा मन रहेतु नथी बाकी तो नित्य समागमने इच्छीए छीए.

प्रसगोपात्त कई ज्ञानवार्ता लखशो आजीविकाना दु खने माटे आप लखो छो ते सत्य छे

चित्त घणु करोने वनमा रहे छे, आत्मा तो प्राये मुक्तस्वरूप लागे छे वीतरागपणु विशेष छे वेठनी पेठे प्रवृत्ति करीए छीए बीजाने अनुसरवानु पण राखीए छीए जगतथी बहु उदास थई गया छीए वस्तीथो कटाळी गया छीए दशा कोईने जणावी शकता नथी जणावीए तेवो सत्सग नथी, मनने जेम धारीए तेम वाळी शकीए छीए एटले प्रवृत्तिमा रही शक्या छीए कोई प्रकारथो रागपूर्वक प्रवृत्ति थनी नहो होय एवो दशा छे, एम रहे छे लोक-परिचय गमतो नथी जगतमा सातु नथी

वधारे शु लखीए? जाणो छो अत्रे समागम हो एम तो इच्छीए छीए, तथापि करेला कर्म निर्जरवानु छे एटले उपाय नथी।

२१

महात्माओना अवलबननुं माहात्म्य

[३१३/३२१]

अत्यत उदास परिणामे रहेलु एवु जे चैतन्य, तेने ज्ञानी प्रवृत्तिमा छता तेवु ज राखे छे, तोपण कहीए छीए, माया दुस्तर छे, दुरत छे, क्षणवार पण, समय एक पण, एने आत्माने विषे स्थापन करवा योग्य नथी एवी तीव्र दशा आव्ये अत्यत उदास परिणाम उत्पन्न थाय छे, अने तेवा उदास परिणामनी जे प्रवर्तना–(गृहस्थपणा सहितनी)–ते अबध-परिणामी कहेवा योग्य छे जे बोधस्वरूपे स्थित छे ते एम कठिनताथी वर्ती शके छे, कारण के तेनी विकटता परम छे

विदेहीपणे जनकराजानी प्रवृत्ति ते अत्यत उदास परिणामने लीधे रहेती, घणु करीने तेमने ते सहज स्वरूपमा हती, तथापि कोई मायाना दुरत प्रसगमा समुद्रने विषे जेम नाव यत्किचित् डोलायमान थाय तेम ते परिणामनु डोलायमान थवापणु सभवित होवाथी प्रत्येक मायाना प्रसगमा केवळ जेनी उदास अवस्था छे एवा निजगुरु अष्टावक्रनी शरणता स्वीकारी होवाथी मायाने सुखे तरी शकाय एम थतु हतु, कारण के महात्माना आलबननी एवी ज बळवत्तरता छे

२२
अर्पणतानुं रहस्य

[३१८/३३२]

आरभ अने परिग्रहनो जेम जेम मोह मटे छे, जेम जेम तेने विषेथी पोतापणानु अभिमान मदपरिणामने पामे छे, तेम तेम मुमुक्षुता वर्धमान थया करे छे. अनत काळना परिचयवाळु ए अभिमान प्राये एकदम निवृत्त थतु नथी तेटला माटे, तन, मन, धनादि जे कई पोतापणे वर्तता होय छे, ते ज्ञानो प्रत्ये अर्पण करवामा आवे छे, प्राये ज्ञानी कई तेने ग्रहण करता नथी, पण तेमाथी पोतापणु मटाडवानु ज उपदेशे छे, अने करवा योग्य पण तेम ज छे के, आरभ-परिग्रहने वारवारना प्रसगे विचारी विचारी पोताना थता अटकाववा, त्यारे मुमुक्षुता निर्मळ होय छे

२३
आत्मधर्म

[३५१/४०३]

जे जे प्रकारे आत्मा आत्मभाव पामे ते ते प्रकार धर्मना छे आत्मा जे प्रकारे अन्यभाव पामे, ते प्रकार अन्यरूप छे, धर्मरूप नथी तमे हाल जे निष्ठा, वचनना श्रवण पछी, अगीकृत करी छे ते निष्ठा श्रेयजोग छे दृढ मुमुक्षुने सत्सगे ते निष्ठादि अनुक्रमे वर्धमानपणाने प्राप्त थई आत्मस्थितिरूप थाय छे

जीवे धर्म पोतानी कल्पना वडे अथवा कल्पनाप्राप्त अन्य पुरुष वडे श्रवण करवा जोग, मनन करवा जोग के आराधवा जोग नथी मात्र आत्मस्थिति छे जेनी एवा सत्पुरुषथी ज आत्मा के आत्मधर्म श्रवण करवा जोग छे, यावत् आराधवा जोग छे

२४

कल्याणनी वाटना बे कारणो

[३६३/४३०]

कल्याण जे वाटे थाय छे ते वाटना मुख्य बे कारण जोवामा आवे छे एक तो जे सप्रदायमा आत्मार्थे बधी असगपणावाळी क्रिया होय, अन्य कोई पण अर्थनी इच्छाए न होय, अने निरतर ज्ञानदशा उपर जीवोनु चित्त होय, तेमा अवश्य कल्याण जन्मवानो जोग जाणीए छीए. एम न होय तो ते जोगनो सभव थतो नथी अत्र तो लोकसज्ञाए, ओघ-सज्ञाए, मानार्थे, पूजार्थे, पदना महत्त्वार्थे, श्रावकादिना पोतापणार्थे के एवा बीजा कारणथी जपतपादि, व्याख्यानादि करवानु प्रवर्तन थई गयु छे, ते आत्मार्थ कोई रीते नथी, आत्मार्थना प्रतिबधरूप छे, माटे जो तमे कई इच्छा करता हो तो तेनो उपाय करवा माटे बीजु जे कारण कहीए छीए ते असगपणाथी साध्य थये कोई दिवसे पण कल्याण थवा सभव छे.

असंगपणु एटले आत्मार्थ सिवायना सगप्रसगमा पडवु नही, ससारना सगीना सगमा वातचीतादि प्रसग शिष्यादि करवाना कारणे राखवो नही, शिष्यादि करवा साथे गृहवासी

वेषवाळाने फेरववा नही दीक्षा ले तो तारु कल्याण थशे एवा वाक्य तीर्थंकरदेव कहेता नहोता तेनो हेतु एक ए पण हतो के एम कहेवु ए पण तेनो अभिप्राय उत्पन्न थवा पहेला तेने दीक्षा आपवी छे, ते कल्याण नथी जेमा तीर्थंकरदेव आवा विचारथी वर्त्या छे, तेमा आपणे छ छ मास दीक्षा लेवानो उपदेश जारी राखी तेने शिष्य करीए छीए ते मात्र शिष्यार्थ छे, आत्मार्थ नथी पुस्तक छे ते ज्ञानना आराधनने अर्थे सर्व प्रकारना पोताना ममत्वभाव रहित रखाय तो ज आत्मार्थ छे, नही तो महान प्रतिवध छे, ते पण विचारवा योग्य छे

आ क्षेत्र आपणु छे, अने ते क्षेत्र जाळववा चातुर्मास त्या रहेवा माटे जे विचार करवामा आवे छे ते क्षेत्रप्रतिबध छे तीर्थंकरदेव तो एम कहे छे के द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी, अने भावथो ए चारे प्रतिवधथी जो आत्मार्थ थतो होय अथवा निर्ग्रंथ थवातु होय तो ते तीर्थंकरदेवना मार्गमा नही, पण ससारना मार्गमा छे ए आदि वात यथाशक्ति विचारी आप जणावशो लखवाथी घणु लखी शकाय एम सूझे छे, पण अत्यारे अत्र स्थिति करे छे.

२५

परमार्थसम्यक्त्व

[२६४/४३१]

आत्मापणे केवळ उजागर अवस्था वर्ते, अर्थात् आत्मा पोताना स्वरूपने विषे केवळ जाग्रत होय त्यारे तेने केवळज्ञान वर्ते छे एम कहेवु योग्य छे, एवो श्री तीर्थंकरनो आशय छे

'आत्मा' जे पदार्थने तीर्थंकरे कह्यो छे, ते ज पदार्थनी ते ज स्वरूपे प्रतीति थाय, ते ज परिणामे आत्मा साक्षात् भासे त्यारे तेने परमार्थसम्यक्त्व छे, एवो श्री तीर्थंकरनो अभिप्राय छे एवु स्वरूप जेने भास्यु छे तेवा पुरुषने विषे निष्काम श्रद्धा छे जेने, ते पुरुषने बीजरुचिसम्यक् छे तेवा पुरुषनो निष्काम भक्ति अबाधाए प्राप्त थाय, एवा गुणो जे जीवमा होय ते जीव मार्गानुसारी होय, एम जिन कहे छे

अमारो अभिप्राय कई पण देह प्रत्ये होय तो ते मात्र एक आत्मार्थे ज छे, अन्य अर्थे नही बीजा कोई पण पदार्थ प्रत्ये अभिप्राय होय तो ते पदार्थअर्थे नही, पण आत्मार्थे छे ते आत्मार्थ ते पदार्थनी प्राप्ति-अप्राप्तिने विषे होय एम अमने लागतु नथी. 'आत्मापणु' ए ध्वनि सिवाय बीजो कोई ध्वनि कोई पण पदार्थना ग्रहणत्यागमा स्मरणजोग नथी. अनवकाश आत्मापणु जाण्या विना, ते स्थिति विना अन्य सर्व क्लेशरूप छे.

२६
आवरणनां मुख्य कारणो

[३७२/४४९]

शुद्ध चित्तथी विदित करेली तमारी विज्ञप्ति पहोचेल छे.

सर्व परमार्थना साधनमा परमसाधन ते सत्सग छे, सत्पुरुषना चरण समीपनो निवास छे बधा काळमा तेनु दुर्लभपणु छे, अने आवा विषम काळमा तेनु अत्यत दुर्लभपणु ज्ञानी पुरुषोए जाण्यु छे

ज्ञानी पुरुषोनी प्रवृत्ति, प्रवृत्ति जेवी होती नथी ऊना पाणीने विषे जेम अग्निपणानो मुख्य गुण कही शकातो नथी तेम ज्ञानीनी प्रवृत्ति छे, तथापि ज्ञानी पुरुष पण निवृत्तिने कोई प्रकारे पण इच्छे छे. पूर्वे आराधन करेला एवा निवृत्तिना क्षेत्रो, वन, उपवन, जोग, समाधि अने सत्सगादि ज्ञानी पुरुषने प्रवृत्तिमा बेठा वारवार साभरी आवे छे तथापि उदयप्राप्त प्रारब्धने ज्ञानी अनुसरे छे सत्सगनी रुचि रहे छे, तेनो लक्ष रहे छे, पण ते वखत अत्र वखत नियमित नथी

कल्याणने विषे प्रतिवधरूप जे जे कारणो छे, ते जीवे वारवार विचारवा घटे छे, ते ते कारणोने वारवार विचारी मटाडवा घटे छे, अने ए मार्गने अनुसर्या विना कल्याणनी प्राप्ति घटती नथी मळ, विक्षेप अने अज्ञान ए अनादिना जीवना त्रण दोष छे ज्ञानी पुरुषोना वचननी प्राप्ति थये, तेनो यथायोग्य विचार थवाथी, अज्ञाननी निवृत्ति होय छे ते अज्ञाननी सतति बळवान होवाथी तेनो रोध थवाने अर्थे अने ज्ञानी पुरुषना वचनोनो यथायोग्य विचार थवाने अर्थे, मळ अने विक्षेप मटाडवा घटे छे सरळपणु, क्षमा, पोताना दोषनु जोवु, अल्पारभ, अल्पपरिग्रह ए आदि मळ मटवाना साधन छे ज्ञानी पुरुषनी अत्यत भक्ति ते विक्षेप मटवानु साधन छे

ज्ञानी पुरुषना समागमनो अतराय रहेतो होय, ते ते प्रसगमा वारवार ते ज्ञानी पुरुषनी दशा, चेष्टा अने वचनो निरखवा, सभारवा अने विचारवा योग्य छे वळी ते समागमना अतरायमा, प्रवृत्तिना प्रसगोमा, अत्यत सावधानपणु राखवु घटे छे, कारण के एक तो समागमनु बळ नथी, अने वीजो अनादि

अभ्यास छे जेनो, एवी सहजाकार प्रवृत्ति छे, जेथी जीव आवरणप्राप्त होय छे घरनु, ज्ञातिनु, के बीजा तेवा कामोनु कारण पडये उदासीनभावे प्रतिबधरूप जाणी प्रवर्तन घटे छे ते कारणोने मुख्य करी कोई प्रवर्तन करवु घटतु नथी, अने एम थया विना प्रवृत्तिनो अवकाश प्राप्त थाय नही.

आत्माने भिन्न भिन्न प्रकारनी कल्पना वडे विचारवामा लोकसज्ञा, ओघसज्ञा अने असत्सग ए कारणो छे, जे कारणोमा उदासीन थया विना, नि सत्त्व एवी ,लोकसबधी जपतपादि क्रियामा साक्षात् मोक्ष नथी, परपरा मोक्ष नथी, एम मान्या विना, नि सत्त्व एवा असत्शास्त्र अने असद्‌गुरु जे आत्मस्वरूपने आवरणना मुख्य कारणो छे, तेने साक्षात् आत्मघाती जाण्या विना जीवने जीवना स्वरूपनो निश्चय थवो बहु दुर्लभ छे, अत्यंत दुर्लभ छे ज्ञानी पुरुषना प्रगट आत्मस्वरूपने कहेता एवा वचनो पण ते कारणोने लीधे जीवने स्वरूपनो विचार करवाने बळवान थता नथी.

हवे एवो निश्चय करवो घटे छे, के जेने आत्मस्वरूप प्राप्त छे, प्रगट छे, ते पुरुष विना बीजो कोई ते आत्मस्वरूप यथार्थ कहेवा योग्य नथी, अने ते पुरुषथी आत्मा जाण्या विना बीजो कोई कल्याणनो उपाय नथी ते पुरुषथी आत्मा जाण्या विना आत्मा जाण्यो छे, एवी कल्पना मुमुक्षु जीवे सर्वथा त्याग करवी घटे छे ते आत्मारूप पुरुषना सत्सगनी निरतर कामना राखी उदासीनपणे लोकधर्मसबधी अने कर्मसबधी परिणामे छूटी शकाय एवी रीते व्यवहार करवो, जे

व्यवहार कर्यामा जीवने पोतानी महत्तादिनी इच्छा होय ते व्यवहार करवो यथायोग्य नथी

अमारा समागमनो हाल अतराय जाणी निराशताने प्राप्त थवु घटे छे, तथापि तेम करवा विषे 'ईश्वरेच्छा' जाणी समागमनी कामना राखी जेटलो परस्पर मुमुक्षुभाईओनो समागम बने तेटलो करवो, जेटलु बने तेटलु प्रवृत्तिमाथी विरक्तपणु राखवु, सत्पुरुषना चरित्रो अने मार्गानुसारी (सुदरदास, प्रीतम, अखा, कबीर आदि) जीवोना वचनो अने जेनो उद्देश आत्माने मुख्य कहेवा विषे छे, एवा (विचारसागर, सुदरदासना ग्रथ, आनदघनजी, बनारसीदास, कबीर, अखा वगेरेना पद) ग्रथनो परिचय राखवो, अने ए सौ साधनमा मुख्य साधन एवो श्री सत्पुरुषनो समागम गणवो

अमारा समागमनो अतराय जाणी चित्तने प्रमादनो अवकाश आपवो योग्य नही, परस्पर मुमुक्षुभाईओनो समागम अव्यवस्थित थवा देवो योग्य नही, निवृत्तिना क्षेत्रनो प्रसग न्यून थवा देवो योग्य नही, कामनापूर्वक प्रवृत्ति योग्य नही, एम विचारी जेम बने तेम अप्रमत्तताने, परस्परना समागमने, निवृत्तिना क्षेत्रने अने प्रवृत्तिना उदासीनपणाने आराधवा

'जे प्रवृत्ति अत्र उदयमा छे, ते बीजे द्वारेथी चाल्या जता पण न छोडी शकाय एवी छे, वेदवायोग्य छे माटे तेने अनुसरीए छीए, तथापि अव्याबाध स्थितिने विषे जेवु ने तेवु स्वास्थ्य छे

आजे आ आठमु पत्तु लखीए छीए ते सौ तम सर्वे जिज्ञासु भाईओने वारंवार विचारवाने अर्थे लखाया छे चित्त एवा उदयवाळु क्यारेक वर्ते छे आजे तेवो अनुक्रमे उदय थवाथी ते उदय प्रमाणे लख्यु छे अमे सत्सगनी तथा निवृत्तिनी कामना राखीए छीए, तो पछी तम सर्वेने ए राखवी घटे एमा कई आश्चर्य नथी अमे अल्पारभने, अल्पपरिग्रहने व्यवहारमा वेठा प्रारब्ध निवृत्तिरूपे इच्छीए छीए, महत् आरभ, अने महत् परिग्रहमा पडता नथी तो पछी तमारे तेम वर्तवु घटे एमा कई सशय कर्त्तव्य नथी अत्यारे समागम थवाना जोगनो नियमित वखत लखी शकाय एम सूझतु नथी ए ज विनती

२७
व्यवहारमां अखंड नीति

[३९८/४९६]

जे मुमुक्षु जीव गृहस्थ व्यवहारमा वर्तता होय, तेणे तो अखंड नीतिनु मूळ प्रथम आत्मामा स्थापवु जोईए नही तो उपदेशादिनु निष्फळपणु थाय छे

द्रव्यादि उत्पन्न करवा आदिमा सागोपाग न्यायसपन्न रहेवु तेनु नाम नीति छे. ए नीति मूकता प्राण जाय एवी दशा आव्ये त्याग वैराग्य खरा स्वरूपमा प्रगटे छे, अने ते जीवने सत्पुरुषना वचननु तथा आज्ञाधर्मनु अद्भुत सामर्थ्य, माहात्म्य अने रहस्य समजाय छे, अने सर्व वृत्तिओ निजपणे वर्तवानो मार्ग स्पष्ट सिद्ध थाय छे

देश, काळ, सग आदिनो विपरीत योग घणु करीने तमने वर्ते छे. माटे वारवार, पळे पळे तथा कार्ये कार्ये सावचेतीथी नीति आदि धर्मोमा वर्तवु घटे छे तमारी पेठे जे जीव कल्याणनी आकाक्षा राखे छे, अने प्रत्यक्ष सत्पुरुषनो निश्चय छे, तेने प्रथम भूमिकामा ए नीति मुख्य आधार छे, जे जीव सत्पुरुषनो निश्चय थयो छे एम माने छे, तेने विषे उपर कही ते नीतिनु जो बळवानपणु न होय अने कल्याणनी याचना करे तथा वार्त्ता करे, तो ए निश्चय मात्र सत्पुरुषने वचवा बरोबर छे जोके सत्पुरुष तो निराकाक्षी छे एटले, तेने छेतरावापणु कई छे नही, पण एवा प्रकारे प्रवर्तता जीव ते अपराधयोग्य थाय छे आ वात पर वारवार तमारे तथा तमारा समागमने इच्छता होय ते मुमुक्षुओए लक्ष कर्त्तव्य छे कठण वात छे माटे न बने, ए कल्पना मुमुक्षुने अहितकारी छे अने छोडी देवा योग्य छे.

२८

सर्वज्ञनी सम्यगदृष्टिपणे पण ओळखाण

[४०६/५०४]

कोई प्रगट कारणने अवलबी, विचारी, परोक्ष चाल्या आवता सर्वज्ञ पुरुषने मात्र सम्यगदृष्टिपणे पण ओळखाय तो तेनु महत् फळ छे, अने तेम न होय तो सर्वज्ञने सर्वज्ञ कहेवानु कई आत्मासबधी फळ नथी एम अनुभवमा आवे छे

प्रत्यक्ष सर्वज्ञ पुरुषने पण कोई कारणे, विचारे, अवलवने सम्यगदृष्टिस्वरूपपणे न जाण्या होय तो तेनु आत्मप्रत्ययी

फळ नथी, परमार्थथी तेनो सेवा असेवाथी जीवने कई जाति-(नथी)-भेद थतो नथी माटे ते कई सफळ कारणरूपे ज्ञानीपुरुषे स्वीकारी नथी, एम जणाय छे

घणा प्रत्यक्ष वर्तमानो परथी एम प्रगट जणाय छे के आ काळ ते विषम के दुषम अथवा कलियुग छे काळचक्रना परावर्तनमा अनत वार दुषमकाळ पूर्वे आवी गया छे, तथापि आवो दुषमकाळ कोईक ज वखत आवे छे श्वेताबर सप्रदायमा एवी परपरागत वात चाली आवे छे, के असयतिपूजा नामे आश्चर्यवाळो हुड — धीट — एवो आ पचमकाळ अनतकाळे आश्चर्यस्वरूपे तीर्थंकरादिके गण्यो छे, ए वात अमने बहु करी अनुभवमा आवे छे, साक्षात् एम जाणे भासे छे

(काळ एवो छे. क्षेत्र घणु करी अनार्य जेवु छे, त्या स्थिति छे, प्रसग, द्रव्यकाळादि कारणथी सरळ छता लोकसज्ञापणे गणवा घटे छे द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावना आलबन विना निराधारपणे जेम आत्मापणु भजाय तेम भजे छे बीजो शो उपाय?)

२९

सिद्ध पदनो सर्वश्रेष्ठ उपाय

[४११/५११]

जे जे साधन आ जीवे पूर्वकाळे कर्या छे, ते ते साधन ज्ञानी पुरुषनी आज्ञाथी थया जणाता नथी, ए वात अदेशा रहित लागे छे जो एम थयु होत तो जीवने ससारपरिभ्रमण होय नही ज्ञानी पुरुषनी आज्ञा छे ते, भवमा जवाने आडा प्रतिबध जेवी छे, कारण जेने आत्मार्थ सिवाय बीजो कोई अर्थ नथी,

अने आत्मार्थ पण साधी प्रारब्धवशात् जेनो देह छे, एवा ज्ञानी पुरुषनी आज्ञा ते फक्त आत्मार्थमा ज सामा जीवने प्रेरे छे, अने आ जीवे तो पूर्वकाळे कई आत्मार्थ जाण्यो नथी, ऊलटो आत्मार्थ विस्मरणपणे चाल्यो आव्यो छे ते पोतानी कल्पना करी साधन करे तेथी आत्मार्थ न थाय, अने ऊलटु आत्मार्थ साधु छु एवु दुष्ट अभिमान उत्पन्न थाय, के जे जीवने ससारनो मुख्य हेतु छे जे वात स्वप्ने पण आवती नथी, ते जीव मात्र अमस्ती कल्पनाथी साक्षात्कार जेवी गणे तो तेथी कल्याण न थई शके तेम आ जीव पूर्वकाळथी अध चाल्यो आवता छता पोतानी कल्पनाए आत्मार्थ माने तो तेमा सफळपणु न होय ए साव समजी शकाय एवो प्रकार छे एटले एम तो जणाय छे के, जीवना पूर्वकाळना बधा माठा साधन, कल्पित साधन मटवा अपूर्व ज्ञान सिवाय बीजो कोई उपाय नथी, अने ते अपूर्व विचार विना उत्पन्न थवा सभव नथी, अने ते अपूर्व विचार, अपूर्व पुरुषना आराधन विना बीजा कया प्रकारे जीवने प्राप्त थाय ए विचारता एम ज सिद्धात थाय छे के, ज्ञानी पुरुषनी आज्ञानु आराधन ए सिद्धपदनो सर्वश्रेष्ठ उपाय छे, अने ए वात ज्यारे जीवथी मनाय छे, त्यारथी ज बीजा दोषनु उपशमवु, निवर्तवु शरू थाय छे

* * *

सत्संग छे ते काम बाळवानो बळवान उपाय छे सर्व ज्ञानी पुरुषे कामनु जीतवु ते अत्यत दुष्कर कह्यु छे, ते साव सिद्ध छे, अने जेम जेम ज्ञानीना वचननु अवगाहन थाय छे, तेम तेम कईक कईक करी पाछो हठता अनुक्रमे जीवनु वीर्य

बळवान थई कामनु सामर्थ्य जीवथी नाश कराय छे, कामनु स्वरूप ज ज्ञानी पुरुषना वचन साभळी जीवे जाण्यु नथी, अने जो जाण्यु होत तो तेने विषे साव नीरसता थई होत ए ज विनति

३०

महात्मा गांधीजी प्रति

[४५२/५७०]

सुज्ञ भाईश्री मोहनलाल प्रत्ये, श्री डरबन,

पत्र १ मळ्यु छे जेम जेम उपाधिनो त्याग थाय तेम तेम समाधिसुख प्रगटे छे जेम जेम उपाधिनु ग्रहण थाय तेम तेम समाधिसुख हानि पामे छे विचार करीए तो आ वात प्रत्यक्ष अनुभवरूप थाय छे जो कई पण आ ससारना पदार्थोनो विचार करवामा आवे, तो ते प्रत्ये वैराग्य आव्या विना रहे नही, केमके मात्र अविचारे करीने तेमा मोहबुद्धि रहे छे

'आत्मा छे', 'आत्मा नित्य छे', 'आत्मा कर्मनो कर्त्ता छे', 'आत्मा कर्मनो भोक्ता छे', 'तेथी ते निवृत्त थई शके छे', अने 'निवृत्त थई शकवाना साधन छे', ए छ कारणो जेने विचारे करीने सिद्ध थाय, तेने विवेकज्ञान अथवा सम्यक्-दर्शननी प्राप्ति गणवी एम श्री जिने निरूपण कर्यु छे, जे निरूपण मुमुक्षु जीवे विशेष करी अभ्यास करवायोग्य छे

पूर्वना कोई विशेष अभ्यासबळथी ए छ कारणोनो विचार उत्पन्न थाय छे, अथवा सत्सगना आश्रयथी ते विचार उत्पन्न थवानो योग बने छे

अनित्य पदार्थ प्रत्ये मोहबुद्धि होवाने लीधे आत्मानु अस्तित्व, नित्यत्व, अने अव्याबाध समाधिसुख भानमा आवतु नथी तेनी मोहबुद्धिमा जीवने अनादिथी एवु एकाग्रपणु चाल्यु आवे छे, के तेनो विवेक करता करता जीवने मुझाईने पाछु वळवु पडे छे, अने ते मोहग्रथि छेदवानो वखत आववा पहेला ते विवेक छोडी देवानो योग पूर्वकाळे घणी वार बन्यो छे, केमके जेनो अनादिकाळथी अभ्यास छे ते, अत्यत पुरुषार्थ विना, अल्पकाळमा छोडी शकाय नही माटे फरी फरी सत्सग, सत्शास्त्र अने पोतामा सरळ विचारदशा करी ते विषयमा विशेष श्रम लेवो योग्य छे, के जेना परिणाममा नित्य शाश्वत सुखस्वरूप एवु आत्मज्ञान थई स्वरूप आविर्भाव थाय छे एमा प्रथमथी उत्पन्न थता सशय धीरजथी अने विचारथी शात थाय छे अधीरजथी अथवा आडी कल्पना करवाथी मात्र जीवने पोताना हितनो त्याग करवानो वखत आवे छे, अने अनित्य पदार्थनो राग रहेवाथी तेना कारणे फरी फरी ससारपरिभ्रमणनो योग रह्या करे छे

कई पण आत्मविचार करवानी इच्छा तमने वर्ते छे, एम जाणी घणो सतोष थयो छे ते सतोषमा मारो कई स्वार्थ नथी मात्र तमे समाधिने रस्ते चडवा इच्छो छो तेथी ससारक्लेशथी निवर्तवानो तमने प्रसग प्राप्त थशे एवा प्रकारनो सभव देखी स्वभावे सतोष थाय छे ए ज विनति.

आ० स्व० प्रणाम

३१
सद्‌गुरुनुं माहात्म्य

[४५५/५७५]

जेम छे तेम निज स्वरूप सपूर्ण प्रकाशे त्या सुधी निज स्वरूपना निदिध्यासनमा स्थिर रहेवाने ज्ञानीपुरुपना वचनो आधारभूत छे, एम परम पुरुष श्री तीर्थंकरे कह्यु छे, ते सत्य छे बारमे गुणस्थानके वर्तता आत्माने निदिध्यासनरूप ध्यानमा श्रुतज्ञान एटले मुख्य एवा ज्ञानीना वचनोनो आशय त्या आधारभूत छे, एवु प्रमाण जिनमार्गने विपे वारवार कह्यु छे वोधवीजनी प्राप्ति थये, निवार्णमार्गनी यथार्थ प्रतीति थये पण ते मार्गमा यथास्थित स्थिति थवाने अर्थे ज्ञानी पुरुषनो आश्रय मुख्य साधन छे, अने ते ठेठ पूर्ण दशा थता सुधी छे, नही तो जीवने पतित थवानो भय छे, एम मान्यु छे, तो पछी पोतानी मेळे अनादिथी भ्रात एवा जीवने सद्‌गुरुना योग विना निज स्वरूपनु भान थवु अशक्य छे, एमा सशय केम होय? निज स्वरूपनो दृढ निश्चय वर्ते छे तेवा पुरुषने प्रत्यक्ष जगद्‌व्यवहार वारवार चूकवी दे एवा प्रसग प्राप्त करावे छे, तो पछी तेथी न्यूनदशामा चूकी जवाय एमा आश्चर्य शु छे? पोताना विचारना वळे करी, सत्सग-सत्शास्त्रनो आधार न होय तेवा प्रसगमा आ जगद्‌व्यवहार विशेष बळ करे छे, अने त्यारे वारवार श्री सद्‌गुरुनु माहात्म्य अने आश्रयनु स्वरूप तथा सार्थकपणु अत्यत अपरोक्ष सत्य देखाय छे

३२

तत्त्वनुं तत्त्व

[४८२/६३१]

प्रथम पदमा एम कह्यु छे के, हे मुमुक्षु! एक आत्माने जाणता समस्त लोकालोकने जाणीश, अने सर्व जाणवानु फळ पण एक आत्मप्राप्ति छे, माटे आत्माथी जुदा एवा वीजा भावो जाणवानो वारवारनी इच्छाथी तु निवर्त अने एक निज स्वरूपने विषे दृष्टि दे, के जे दृष्टिथी समस्त सृष्टि ज्ञेयपणे तारे विषे देखाशे तत्त्वस्वरूप एवा सत्शास्त्रमा कहेला मार्गनु पण आ तत्त्व छे, एम तत्त्वज्ञानीओए कह्यु छे, तथापि उपयोगपूर्वक ते समजावु दुर्लभ छे ए मार्ग जुदो छे, अने तेनु स्वरूप पण जुदु छे, जेम मात्र कथनज्ञानीओ कहे छे तेम नथी, माटे ठेकाणे ठेकाणे जईने का पूछे छे? केमके ते अपूर्वभावनो अर्थ ठेकाणे ठेकाणेथी प्राप्त थवा योग्य नथी.

बीजा पदनो सक्षेप अर्थ 'हे मुमुक्षु! यमनियमादि जे साधनो सर्व शास्त्रमा कह्या छे, ते उपर कहेला अर्थथी निष्फळ ठरशे एम पण नथी, केमके ते पण कारणने अर्थे छे, ते कारण आ प्रमाणे छे आत्मज्ञान रही शके एवी पात्रता प्राप्त थवा, तथा तेमा स्थिति थाय तेवी योग्यता आववा ए कारणो उपदेश्या छे तत्त्वज्ञानीओए एथी, एवा हेतुथी ए साधनो कह्या छे, पण जीवनी समजणमा सामटो फेर होवाथी ते साधनोमा ज अटको रह्यो अथवा ते साधन पण अभिनिवेश परिणामे ग्रह्या आगळीथी जेम बाळकने चद्र देखाडवामा आवे, तेम तत्त्वज्ञानीओए ए तत्त्वनु तत्त्व कह्यु छे'

३३

स्वदशा प्रत्ये उपयोग

[४८३/६३६]

निमित्ते करीने जेने हर्ष थाय छे, निमित्ते करोने जेने शोक थाय छे, निमित्ते करीने जेने इन्द्रियजन्य विषय प्रत्ये आकर्षण थाय छे, निमित्ते करीने जेने इन्द्रियने प्रतिकूळ एवा प्रकारोने विषे द्वेष थाय छे, निमित्ते करोने जेने उत्कर्ष आवे छे, निमित्ते करीने जेने कषाय उद्‌भवे छे, एवा जीवने जेटलो बने तेटलो ते ते निमित्तवासी जीवोनो सग त्यागवो घटे छे, अने नित्य प्रत्ये सत्सग करवो घटे छे

सत्सगना अयोगे तथाप्रकारना निमित्तथी दूर रहेवु घटे छे क्षणे क्षणे, प्रसगे प्रसगे अने निमित्ते निमित्ते स्वदशा प्रत्ये उपयोग देवो घटे छे

तमारु पत्र मळ्यु छे आज पर्यंत सर्वभावे करीने खमावु छु

३४

देखतभूली

[४८४/६४१]

'देखतभूली टळे तो सर्व दुखनो क्षय थाय' एवो स्पष्ट अनुभव थाय छे, तेम छता ते ज देखतभूलीना प्रवाहमा ज जीव वह्यो जाय छे, एवा जोवोने आ जगतने विषे कोई एवो आधार छे के जे आधारथी, आश्रयथी ते प्रवाहमा न वहे ?

३५ .

आत्मप्राप्तिनी सुलभता

[४८४/६४२]

समस्त विश्व घणु करीने परकथा तथा परवृत्तिमा वह्यु जाय छे, तेमा रही स्थिरता क्याथी प्राप्त थाय ?

आवा अमूल्य मनुष्यपणानो एक समय पण परवृत्तिए जवा देवा योग्य नथी, अने कई पण तेम थया करे छे तेनो उपाय कई विशेषे करी गवेषवा योग्य छे

ज्ञानी पुरुषनो निश्चय थई अतर्भेद न रहे तो आत्मप्राप्ति साव सुलभ छे, एवु ज्ञानी पोकारी गया छता केम लोको भूले छे ? श्री डुगरने प्रणाम

३६

आत्मदशा केम आवे ?

[४८५/६४३]

करवा योग्य कई कह्यु होय ते विस्मरण योग्य न होय एटलो उपयोग करी क्रमे करीने पण तेमा अवश्य परिणति करवी घटे. त्याग, वैराग्य, उपशम अने भक्ति मुमुक्षु जीवे सहज स्वभावरूप करी मूक्या विना आत्मदशा केम आवे ? पण शिथिलपणाथी, प्रमादथी ए वात विस्मृत थई जाय छे

३७

समजीने शमाई जवुं

[४८७/६५१]

जेम छे तेम आत्मस्वरूप जाण्यु तेनु नाम समजवु छे. तेथी उपयोग अन्य विकल्परहित थयो तेनु नाम शमावु छे वस्तुताए बन्ने एक ज छे

जेम छे तेम समजावाथी उपयोग स्वरूपमा शमायो, अने आत्मा स्वभावमय थई रह्यो ए प्रथम वाक्य 'समजीने शमाई रह्या' तेनो अर्थ छे

अन्य पदार्थना सयोगमा जे अध्यास हतो, अने ते अध्यासमा आत्मापणु मान्यु हतु, ते अध्यासरूप आत्मापणु शमाई गयु ए बीजु वाक्य 'समजीने शमाई गया' तेनो अर्थ छे.

पर्यायातरथी अर्थांतर थई शके छे. वास्तव्यमा बन्ने वाक्यनो परमार्थ एक ज विचारवा योग्य छे

जे जे समज्या तेणे तेणे मारुं तारुं ए आदि अहत्व, ममत्व शमावी दीधु, केमके कोई पण निज स्वभाव तेवो दीठो नही, अने निज स्वभाव तो अचित्य अव्याबाधस्वरूप, केवळ न्यारो जोयो एटले तेमा ज समावेश पामी गया

आत्म सिवाय अन्यमा स्वमान्यता हती ते टाळी परमार्थे मौन थया, वाणीए करी आ आनु छे ए आदि कहेवानु बनवारूप व्यवहार, वचनादि योग सुधी कवचित् रह्यो, तथापि आत्माथी आ मारु छे ए विकल्प केवळ शमाई गयो, जेम छे तेम अचित्य स्वानुभवगोचरपदमा लीनता थई

ए बन्ने वाक्य लोकभाषामा प्रवर्त्या छे, ते 'आत्मभाषामाथी' आव्या छे जे उपर कह्या ते प्रकारे न शमाया ते समज्या नथी एम ए वाक्यनो सारभूत अर्थ थयो, अथवा जेटले अंशे शमाया तेटले अंशे समज्या, अने जे प्रकारे शमाया ते प्रकारे समज्या, एटलो विभागार्थ थई शकवा योग्य छे, तथापि मुख्यार्थमा उपयोग वर्तावबो घटे छे

अनतकाळथी यम, नियम, शास्त्रावलोकनादि कार्य कर्या छता समजावु अने शमावु ए प्रकार आत्मामा आव्यो नही, अने तेथी परिभ्रमणनिवृत्ति न थई

समजावा अने शमावानु जे जे कोई ऐक्य करे, ते स्वानुभवपदमा वर्ते, तेनु परिभ्रमण निवृत्त थाय सद्‌गुरुनी आज्ञा विचार्या विना जीवे ते परमार्थ जाण्यो नही, जाणवाने प्रतिबधक असत्सग, स्वच्छंद अने अविचार तेनो रोध कर्यो नही जेथी समजावु अने शमावु तथा बेयनु ऐक्य न बन्यु एवो निश्चय प्रसिद्ध छे.

अत्रेथी आरभी उपर उपरनी भूमिका उपासे तो जीव समजीने शमाय, ए नि सदेह छे

अनत ज्ञानीपुरुषे अनुभव करेलो एवो आ शाश्वत सुगम मोक्षमार्ग जीवने लक्षमा नथी आवतो, एथी उत्पन्न थयेलु खेद सहित आश्चर्य ते पण अत्रे शमावीए छीए. सत्सग, सद्विचारथी शमावा सुधीना सर्व पद अत्यत साचा छे, सुगम छे, सुगोचर छे, सहज छे, अने नि.सदेह छे

ॐ ॐ ॐ ॐ

३८

ॐ सद्‌गुरुप्रसाद

[४९२/६-०]

ज्ञानीना सर्व व्यवहार परमार्थमूळ होय छे, तोपण जे दिवसे उदय पण आत्माकार वर्तशे ते दिवसने धन्य छे.

सर्व दु खथी मुक्त थवानो सर्वोत्कृष्ट उपाय आत्मज्ञानने कह्यो छे, ते ज्ञानीपुरुषोना वचन साचा छे, अत्यत साचा छे.

ज्या सुधी जीवने तथारूप आत्मज्ञान न थाय त्या सुधी आत्यतिक बधननी निवृत्ति न होय एमा सशय नथी

ते आत्मज्ञान थता सुधी जीवे मूर्तिमान आत्मज्ञानस्वरूप एवा सद्‌गुरुदेवनो निरंतर आश्रय अवश्य करवा योग्य छे, एमा सशय नथी. ते आश्रयनो वियोग होय त्यारे आश्रयभावना नित्य कर्तव्य छे.

उदयने योगे तथारूप आत्मज्ञान थया प्रथम उपदेशकार्य करवु पडतु होय तो विचारवान मुमुक्षु परमार्थना मार्गने अनुसरवाने हेतुभूत एवा सत्पुरुषनी भक्ति, सत्पुषना गुणग्राम, सत्पुरुष प्रत्ये प्रमोदभावना अने सत्पुरुष प्रत्ये अविरोधभावना लोकोने उपदेशे छे, जे प्रकारे मत मतातरनो अभिनिवेश टळे, अने सत्पुरुषना वचन ग्रहण करवानी आत्मवृत्ति थाय तेम करे छे वर्तमानकाळमा ते प्रकारनी विशेष हानि थशे एम जाणी ज्ञानीपुरुषोए आ काळने दुषमकाळ कह्यो छे, अने तेम प्रत्यक्ष देखाय छे.

सर्व कार्यमा कर्तव्यमात्र आत्मार्थ छे; ए संभावना नित्य मुमुक्षु जीवे करवी योग्य छे

३९
ज्ञानीनी ओळखाण

[४९३/६७४]

ॐ सद्‌गुरुप्रसाद

देहधारी छतां निरावरणज्ञानसहित वर्ते छे अेवा महापुरुषोने त्रिकाळ नमस्कार

सर्व कषायनो अभाव, देहधारी छता परमज्ञानी पुरुषने विषे वने, ए प्रकारे अमे लख्यु ते प्रसंगमा 'अभाव' शब्दनो अर्थ 'क्षय' गणीने लख्यो छे.

जगतवासी जीवने रागद्वेष गयानी खबर पडे नही, बाकी जे मोटा पुरुष छे ते जाणे छे के आ महात्मापुरुषने विषे रागद्वेषनो अभाव के उपशम वर्ते छे, एम लखी आपे शका करी के जेम महात्मापुरुषने ज्ञानी पुरुषो अथवा दृढ मुमुक्षु जीवो जाणे छे, तेम जगतना जीवो शा माटे न जाणे? मनुष्यादि प्राणीने जेम जोईने जगतवासी जीवो जाणे छे के आ मनुष्यादि छे, अने महात्मापुरुषो पण जाणे छे के आ मनुष्यादि छे, ए पदार्थो जोवाथी बेयनु जाणवु सरखु वर्ते छे, अने आमा भेद वर्ते छे, तेवो भेद थवाना कया कारणो मुख्यपणे विचारवा योग्य छे? ए प्रकारे लख्यु तेनु समाधान

मनुष्यादिने जगतवासी जीवो जाणे छे, ते दैहिक स्वरूपथी तथा दैहिक चेष्टाथी जाणे छे. एकबीजानी मुद्रामा तथा आकारमा, इन्द्रियोमा जे भेद छे, ते चक्षुआदि इन्द्रियोथी जगतवासी जीव जाणी शके छे, अने केटलाक ते जीवोना

अभिप्राय पण अनुमान परथी जगतवासी जीव जाणी शके छे, केमके ते तेना अनुभवनो विषय छे, पण ज्ञानदशा अथवा वीतरागदशा छे ते मुख्यपणे दैहिक स्वरूप तथा दैहिक चेष्टानो विषय नथी, अतरात्मगुण छे, अने अतरात्मपणु बाह्य जीवोना अनुभवनो विषय न होवाथी, तेम ज तथारूप अनुमान पण प्रवर्ते एवा जगतवासी जीवोने घणु करीने सस्कार नही होवाथी ज्ञानी के वीतरागने ते ओळखी शकता नथी कोईक जीव सत्समागमना योगथी, सहज शुभ कर्मना उदयथी, तथारूप कई सस्कार पामीने ज्ञानी के वीतरागने यथाशक्ति ओळखी शके, तथापि खरेखरु ओळखाण तो दृढ मुमुक्षुता प्रगटचे, तथारूप सत्समागमथी प्राप्त थयेल उपदेशने अवधारण कर्ये, अंतरात्मवृत्ति परिणम्ये, जीव ज्ञानी के वीतरागने ओळखी शके जगतवासी एटले जगतदृष्टि जीवो छे, तेनी दृष्टिए खरेखरु ज्ञानी के वीतरागनु ओळखाण क्याथी थाय? अध-कारने विषे पडेला पदार्थने मनुष्यचक्षु देखी शके नही, तेम देहने विषे रह्या एवा ज्ञानी के वीतरागने जगतदृष्टि जीव ओळखी शके नही. जेम अधकारने विषे पडेलो पदार्थ मनुष्यचक्षुथी जोवाने बीजा कोई प्रकाशनी अपेक्षा रहे छे, तेम जगतदृष्टि जीवोने ज्ञानी के वीतरागना ओळखाण माटे विशेष शुभसंस्कार अने सत्समागमनी अपेक्षा योग्य छे जो ते योग प्राप्त न होय तो जेम अधकारमा पडेलो पदार्थ अने अधकार ए बेय एकाकार भासे छे, भेद भासतो नथी, तेम तथारूप योग विना ज्ञानी के वीतराग अने अन्य ससारी जीवोनु एक आकारपणु भासे छे, देहादि चेष्टाथी घणु करीने भेद भासतो नथी.

३९

ज्ञानीनी ओळखाण

[४९३/६७४]

ॐ सद्‌गुरुप्रसाद

देहधारी छतां निरावरणज्ञानसहित वर्ते छे एवा महापुरुषोने त्रिकाळ नमस्कार

सर्वं कषायनो अभाव, देहधारी छता परमज्ञानी पुरुषने विषे बने, ए प्रकारे अमे लख्यु ते प्रसंगमा 'अभाव' शब्दनो अर्थ 'क्षय' गणीने लख्यो छे.

जगतवासी जीवने रागद्वेष गयानी खबर पडे नही, बाकी जे मोटा पुरुष छे ते जाणे छे के आ महात्मापुरुषने विषे रागद्वेषनो अभाव के उपशम वर्ते छे, एम लखी आपे शका करी के जेम महात्मापुरुषने ज्ञानी पुरुषो अथवा दृढ मुमुक्षु जीवो जाणे छे, तेम जगतना जीवो शा माटे न जाणे? मनुष्यादि प्राणीने जेम जोईने जगतवासी जीवो जाणे छे के आ मनुष्यादि छे, अने महात्मापुरुषो पण जाणे छे के आ मनुष्यादि छे, ए पदार्थो जोवाथी बेयनु जाणवु सरखु वर्ते छे, अने आमा भेद वर्ते छे, तेवो भेद थवाना कया कारणो मुख्यपणे विचारवा योग्य छे? ए प्रकारे लख्यु तेनु समाधान:

मनुष्यादिने जगतवासी जीवो जाणे छे, ते दैहिक स्वरूपथी तथा दैहिक चेष्टाथी जाणे छे एकबीजानी मुद्रामा तथा आकारमा, इन्द्रियोमा जे भेद छे, ते चक्षुआदि इन्द्रियोथी जगतवासी जीव जाणी शके छे, अने केटलाक ते जीवोना

अभिप्राय पण अनुमान परथी जगतवासी जीव जाणी शके छे, केमके ते तेना अनुभवनो विषय छे, पण ज्ञानदशा अथवा वीतरागदशा छे ते मुख्यपणे दैहिक स्वरूप तथा दैहिक चेष्टानो विषय नथी, अतरात्मगुण छे, अने अतरात्मपणु वाह्य जीवोना अनुभवनो विषय न होवाथी, तेम ज तथारूप अनुमान पण प्रवर्ते एवा जगतवासी जीवोने घणु करीने सस्कार नही होवाथी ज्ञानी के वीतरागने ते ओळखी शकता नथी कोईक जीव सत्समागमना योगथी, सहज शुभ कर्मना उदयथी, तथारूप कई सस्कार पामीने ज्ञानी के वीतरागने यथाशक्ति ओळखी शके, तथापि खरेखरु ओळखाण तो दृढ मुमुक्षुता प्रगटये, तथारूप सत्समागमथी प्राप्त थयेल उपदेशने अवधारण कर्ये, अंतरात्मवृत्ति परिणम्ये, जीव ज्ञानी के वीतरागने ओळखी शके जगतवासी एटले जगतदृष्टि जीवो छे, तेनी दृष्टिए खरेखरुं ज्ञानी के वीतरागनु ओळखाण क्याथी थाय? अध-कारने विषे पडेला पदार्थने मनुष्यचक्षु देखी शके नही, तेम देहने विषे रह्या एवा ज्ञानी के वीतरागने जगतदृष्टि जीव ओळखी शके नही. जेम अंधकारने विषे पडेलो पदार्थ मनुष्यचक्षुथी जोवाने बीजा कोई प्रकाशनी अपेक्षा रहे छे, तेम जगतदृष्टि जीवोने ज्ञानी के वीतरागना ओळखाण माटे विशेष शुभसंस्कार अने सत्समागमनी अपेक्षा योग्य छे जो ते योग प्राप्त न होय तो जेम अधकारमा पडेलो पदार्थ अने अधकार ए बेय एकाकार भासे छे, भेद भासतो नथी, तेम तथारूप योग विना ज्ञानी के वीतराग अने अन्य ससारी जीवोनु एक आकारपणु भासे छे, देहादि चेष्टाथी घणु करीने भेद भासतो नथी.

जे देहधारी सर्व अज्ञान अने सर्व कषायरहित थया छे, ते देहधारी महात्माने त्रिकाळ परमभक्तिथी नमस्कार हो! नमस्कार हो!! ते महात्मा वर्ते छे ते देहने, भूमिने, घरने, मार्गने, आसनादि सर्वने नमस्कार हो! नमस्कार हो!!

४०
अंतर परिणति पर दृष्टि

[४९५/६७७]

कागळ पहोच्यो छे सामान्यपणे वर्तती चित्तवृत्तिओ लखी ते वाची छे विस्तारथी हितवचन लखवानी जिज्ञासा जणावी ते विषे सक्षेपमा नीचे लख्याथी विचारशो

प्रारब्धोदयथी जे प्रकारनो व्यवहार प्रसगमा वर्ते छे, ते प्रत्ये दृष्टि देता जेम पत्रादि लखवामा सक्षेपताथी वर्तवानु थाय छे, तेम वधारे योग्य छे, एवो अभिप्राय घणु करीने रहे छे.

आत्माने वास्तव्यपणे उपकारभूत एवो उपदेश करवामा ज्ञानी पुरुषो सक्षेपताथी वर्ते नही, एम घणु करीते बनवा योग्य छे, तथापि बे कारणे करीने ते प्रकारे पण ज्ञानी पुरुषो वर्ते छे (१) ते उपदेश जिज्ञासु जीवने विषे परिणामी थाय एवा सयोगोने विषे ते जिज्ञासु जीव वर्ततो न होय, अथवा ते उपदेश विस्तारथी कर्ये पण ग्रहण करवानु तेने विषे तथारूप योग्यपणु न होय, तो ज्ञानीपुरुष ते जीवोने उपदेश करवामा सक्षेपपणे पण वर्ते छे, (२) अथवा पोताने बाह्य व्यवहार एवा उदयरूपे होय के ते उपदेश जिज्ञासु जीवने

परिणमता प्रतिबधरूप थाय, अथवा तथारूप कारण विना तेम वर्ती मुख्य मार्गने विरोधरूप के सशयना हेतुरूप थवानु कारण बनतु होय तोपण ज्ञानीपुरुषो सक्षेपपणे उपदेशमा प्रवर्ते अथवा मौन रहे

सर्वसगपरित्याग करीने चाली नीकळ्याथी पण जीव उपाधि रहित थतो नथी केमके ज्या सुधी अतरपरिणतिपर दृष्टि न थाय अने तथारूप मार्गे न प्रवर्ताय त्या सुधी सर्वसगपरित्याग पण नाम मात्र थाय छे, अने तेवा अवसरमा पण अतरपरिणति पर दृष्टि देवानु भान जीवने आववु कठण छे, तो पछी आवा गृहव्यवहारने विषे लौकिक अभिनिवेशपूर्वक रही अंतरपरिणति पर दृष्टि देवानु बनवु केटलु दुसाध्य होवु जोईए ते विचारवा योग्य छे वळी तेवा व्यवहारमा रही जीवे अतरपरिणति पर केटलु बळ राखवु जोईए ते पण विचारवा योग्य छे, अने अवश्य तेम करवा योग्य छे

वधारे शु लखीए? जेटली पोतानी शक्ति होय ते सर्व शक्तिथी एक लक्ष राखीने, लौकिक अभिनिवेशने सक्षेप करीने, कई पण अपूर्व निरावरणपणु देखातु नथी माटे समजणनु मात्र अभिमान छे एम जीवने समजावीने, जे प्रकारे जीव ज्ञान, दर्शन, चारित्रने विषे सतत जाग्रत थाय ते ज करवामा वृत्ति जोडवी, अने रात्रिदिवस ते ज चितामा प्रवर्तवु ए ज विचारवान जीवनु कर्तव्य छे, अने तेने माटे सत्सग, सत्शास्त्र अने सरळतादि निजगुणो उपकारभूत छे, एम विचारीने तेनो आश्रय करवो योग्य छे

ज्या सुधी लौकिक अभिनिवेश एटले द्रव्यादि लोभ, तृष्णा, दैहिक मान, कुळ, जाति आदि सबधी मोह के विशेषत्व मानवु होय, ते वात न छोडवी होय, पोतानी बुद्धिए स्वेच्छाए अमुक गच्छादिनो आग्रह राखवो होय, त्या सुधी जीवने अपूर्व गुण केम उत्पन्न थाय? तेनो विचार सुगम छे

वधारे लखी शकाय एवो उदय हाल अत्रे नथी, तेम वधारे लखवु के कहेवु ते पण कोईक प्रसगमा थवा देवु योग्य छे, एम छे तमारी विशेष जिज्ञासाथी प्रारब्धोदय वेदता जे कई लखी शकात ते करता कंईक उदीरणा करीने विशेष लख्यु छे ए ज विनति

४१

सन्मति रहस्य

[५९६/७६७]

परमभक्तिथी स्तुति करनार प्रत्ये पण जेने राग नथी अने परमद्वेषथी परिषह उपसर्ग करनार प्रत्ये पण जेने द्वेष नथी, ते पुरुषरूप भगवानने वारवार नमस्कार.

अद्वेषवृत्तिथी वर्तवु योग्य छे, धीरज कर्तव्य छे

मुनि देवकीर्णजीने 'आचाराग' वाचता साधुनो दीर्घ-शकादि कारणोमा पण घणो साकडो मार्ग जोवामा आव्यो, ते परथी एम आशका थई के एटली बधी सकडाश एवी अल्प क्रियामा पण राखवानु कारण शु हशे? ते आशकानु समाधान

सतत अंतर्मुख उपयोगे स्थिति ए ज निर्ग्रंथनो परम धर्म छे एक समय पण उपयोग वहिर्मुख करवो नही ए

निर्ग्रंथनो मुख्य मार्ग छे, पण ते सयमार्थे देहादि साधन छे तेना निर्वाहने अर्थे सहज पण प्रवृत्ति थवा योग्य छे कई पण तेवी प्रवृत्ति करता उपयोग बहिर्मुख थवानु निमित्त छे, तेथी ते प्रवृत्ति अंतर्मुख उपयोग प्रत्ये रह्या करे एवा प्रकारमा ग्रहण करावी छे, केवळ अने सहज अतर्मुख उपयोग तो मुख्यताए केवळ भूमिका नामे तेरमे गुणस्थानके होय छे अने निर्मळ विचारधाराना बळवानपणा सहित अतर्मुख उपयोग सातमे गुणस्थानके होय छे. प्रमादथी ते उपयोग स्खलित थाय छे, अने कईक विशेष अंशमा स्खलित थाय तो विशेष बहिर्मुख उपयोग थई भावअसयमपणे उपयोगनी प्रवृत्ति थाय छे. ते न थवा देवाने अने देहादि साधनना निर्वाहनी प्रवृत्ति पण न छोडी शकाय एवी होवाथी ते प्रवृत्ति अतर्मुख उपयोगे थई शके एवी अद्‌भुत सकळनाथी उपदेशी छे, जेने पाच समिति कहेवाय छे.

जेम आज्ञा आपी छे तेम आज्ञाना उपयोगपूर्वक चालवु पडे तो चालवु, जेम आज्ञा आपी छे तेम आज्ञाना उपयोगपूर्वक बोलवु पडे तो बोलवु, जेम आज्ञा आपी छे तेम आज्ञाना उपयोगपूर्वक आहारादि ग्रहण करवु, जेम आज्ञा आपी छे तेम आज्ञाना उपयोगपूर्वक वस्त्रादिनु लेवु मूकवु, जेम आज्ञा आपी छे तेम आज्ञाना उपयोगपूर्वक दीर्घशकादि शरीरमळनो त्याग करवा योग्य त्याग करवो ए प्रकारे प्रवृत्तिरूप पाच समिति कही छे जे जे सयममा प्रवर्तवाना बीजा प्रकारो उपदेश्या छे, ते ते सर्व आ पाच समितिमा समाय छे, अर्थात् जे कई निर्ग्रंथने प्रवृत्ति करवानी आज्ञा आपी छे, ते प्रवृत्तिमाथी

जे प्रवृत्ति त्याग करवी अशक्य छे, तेनी ज आज्ञा आपी छे, अने ते एवा प्रकारमा आपी छे के मुख्य हेतु जे अतर्मुख उपयोग तेने जेम अस्खलितता रहे तेम आपी छे ते ज प्रमाणे वर्तवामा आवे तो उपयोग सतत जाग्रत रह्या करे, अने जे जे समये जीवनी जेटली जेटली ज्ञानशक्ति तथा वीर्यशक्ति छे ते ते अप्रमत्त रह्या करे

दीर्घशकादि क्रियाए प्रवर्तता पण अप्रमत्त सयमदृष्टि विस्मरण न थई जाय ते हेतुए तेवी तेवी सकडाशवाळी क्रिया उपदेशी छे, पण सत्पुरुषनी दृष्टि विना ते समजाती नथी. आ रहस्यदृष्टि सक्षेपमा लखी छे, ते पर घणो घणो विचार कर्तव्य छे. सर्व क्रियामा प्रवर्तता आ दृष्टि स्मरणमा आणवानो लक्ष राखवा योग्य छे

श्री देवकीर्णजी आदि सर्व मुनिओए आ पत्र वारवार अनुप्रेक्षा करवा योग्य छे श्री लल्लुजी आदि मुनिओने नमस्कार प्राप्त थाय. कर्मग्रथनो वाचना पूरी थये फरी आवर्तन करी अनुप्रेक्षा कर्तव्य छे.

४२
ज्ञान अज्ञाननुं स्वरूप

[५९७/७७०]

ज्ञान जीवनु रूप छे माटे ते अरूपी छे, ने ज्ञान विपरीतपणे जाणवानु कार्य करे छे, त्या सुघी तेने अज्ञान

कहेवु एवी निर्ग्रंथ परिभापा करी छे, पण ए स्थळे ज्ञाननु बीजु नाम ज अज्ञान छे एम जाणवु

ज्ञाननु बीजु नाम अज्ञान होय तो जेम ज्ञानथी मोक्ष थाय एम कह्यु छे, तेम अज्ञानथी पण मोक्ष थवो जोईए, तेम ज मुक्त जीवमा पण ज्ञान कह्यु छे, तेम अज्ञान पण कहेवु जोईए, एम आशका करी छे, तेनु आ प्रमाणे समाधान छे:

आटी पडवाथी गूचायेलु सूत्र अने आटी नीकळी जवाथी वगर गूचायेलु सूत्र ए वन्ने सूत्र ज छे, छता आटीनी अपेक्षाथी गूचायेलु सूत्र, अने वगर गूचायेलु सूत्र एम कहेवाय छे, तेम मिथ्यात्वज्ञान ते 'अज्ञान' अने सम्यग्ज्ञान ते 'ज्ञान' एम परिभाषा करी छे, पण मिथ्यात्वज्ञान ते जड अने सम्यग्ज्ञान ते चेतन एम नथी जेम आटीवाळु सूत्र अने आटी वगरनु सूत्र बन्ने सूत्र ज छे, तेम मिथ्यात्वज्ञानथी ससारपरिभ्रमण थाय अने सम्यग्ज्ञानथी मोक्ष थाय जेम अत्रेथी पूर्व दिशा तरफ दश गाउ उपर एक गाम छे, त्या जवाने अर्थे नीकळेलो माणस दिशाभ्रमथी पूर्वने बदले पश्चिम तरफ चाल्यो जाय, तो ते पूर्व दिशावाळु गाम प्राप्त न थाय, पण तेथी तेणे चालवारूप क्रिया करी नथी एम कही न शकाय, तेम ज देह अने आत्मा जुदा छता देह अने आत्मा एक जाण्या छे ते जीव देहबुद्धिए करी ससारपरिभ्रमण करे छे, पण तेथी तेणे जाणवारूप कार्य कर्यु नथी एम कही न शकाय पूर्वथी पश्चिममा चाल्यो छे, ए पूर्वने पश्चिम मानवारूप जेम भ्रम छे, तेम देह अने आत्मा जुदा छता बेयने एक

मानवारूप भ्रम छे, पण पश्चिममा जता, चालता जेम चालवारूप स्वभाव छे, तेम देह अने आत्माने एक मानवामा पण जाणवारूप स्वभाव छे. जेम पूर्वने वदले पश्चिमने पूर्व मानेल छे ते भ्रम तथारूप हेतुसामग्री मळ्ये समजावाथी पूर्व पूर्व ज समजाय छे, अने पश्चिम पश्चिम ज समजाय छे, त्यारे ते भ्रम टळी जाय छे, अने पूर्व तरफ चालवा लागे छे, तेम देह अने आत्माने एक मानेल छे, ते सद्‌गुरु उपदेशादि सामग्री मळ्ये बन्ने जुदा छे, एम यथार्थ समजाय छे, त्यारे भ्रम टळी जई आत्मा प्रत्ये ज्ञानोपयोग परिणमे छे भ्रममा पूर्वने पश्चिम अने पश्चिमने पूर्व मान्या छता पूर्व ते पूर्व अने पश्चिम ते पश्चिम दिशा ज हती, मात्र भ्रमथी विपरीत भासतु हतु, तेम अज्ञानमा पण देह ते देह अने आत्मा ते आत्मा ज छता तेम भासता नथी ए विपरीत भासवु छे ते यथार्थ समजाये, भ्रम निवृत्त थवाथी देह देह ज भासे छे, अने आत्मा आत्मा ज भासे छे, अने जाणवारूप स्वभाव विपरीतपणाने भजतो हतो ते सम्यक्‌पणाने भजे छे. दिशाभ्रम वस्तुताए कई नथी अने चालवारूप क्रियाथी इच्छित गाम प्राप्त थतु नथी, तेम मिथ्यात्व पण वस्तुताए कई नथी, अने ते साथे जाणवारूप स्वभाव पण छे, पण साथे मिथ्यात्वरूप भ्रम होवाथी स्वस्वरूपतामा परमस्थिति थती नथी. दिशाभ्रम टळ्येथी इच्छित गाम तरफ वळता पछी मिथ्यात्व पण नाश पामे छे, अने स्वस्वरूप शुद्ध ज्ञानात्मपदमा स्थिति थई शके एमा कई संदेहनु ठेकाणु नथी.

૪૩
लोकदृष्टि अने ज्ञानीनी दृष्टि

[६१३/८१०]

ॐ

पारमार्थिक हेतुविशेषथी पत्रादि लखवानु बनी शकतु नथी.

जे अनित्य छे, जे असार छे अने जे अशरणरूप छे ते आ जीवने प्रीतिनु कारण केम थाय छे ते वात रात्रिदिवस विचारवा योग्य छे

लोकदृष्टि अने ज्ञानीनी दृष्टिने पश्चिम पूर्व जेटलो तफावत छे ज्ञानीनी दृष्टि प्रथम निरालबन छे, रुचि उत्पन्न करती नथी, जीवनी प्रकृतिने मळती आवती नथी, तेथी जीव ते दृष्टिमा रुचिवान थतो नथी, पण जे जीवोए परिषह वेठीने थोडा काळ सुधी ते दृष्टिनु आराधन कर्यु छे, ते सर्व दु खना क्षयरूप निर्वाणने पाम्या छे, तेना उपायने पाम्या छे

जीवने प्रमादमा अनादिथी रति छे, पण तेमा रति करवा योग्य काई देखातु नथी ॐ

૪૪
सत्श्रुत अने सत्समागम

[६१८/८२५]

आत्मस्वभावनी निर्मळता थवाने माटे मुमुक्षु जीवे बे साधन अवश्य करीने सेववा योग्य छे, सत्श्रुत अने सत्समागम. प्रत्यक्ष सत्पुरुषोनो समागम कवचित् क्वचित् जीवने प्राप्त थाय छे, पण जो जीव सद्दृष्टिवान होय तो सत्श्रुतना घणा काळना

सेवनथी थतो लाभ प्रत्यक्ष सत्पुरुषना समागमथी बहु अल्प-कालमा प्राप्त करी शके छे, केमके प्रत्यक्ष गुणातिशयवान निर्मळ चेतनना प्रभाववाळा वचन अने वृत्ति क्रियाचेष्टितपणु छे. जीवने तेवो समागमयोग प्राप्त थाय एवु विशेष प्रयत्न कर्त्तव्य छे. तेवा योगना अभावे सत्श्रुतनो परिचय अवश्य करीने करवा योग्य छे शातरसनु जेमा मुख्यपणु छे, शातरसना हेतुए जेनो समस्त उपदेश छे, सर्वे रस शातरसगर्भित जेमा वर्णव्या छे, एवा शास्त्रनो परिचय ते सत्श्रुतनो परिचय छे

४५
चित्तस्थैर्यनु औषध

[६२९/८५६]

ॐ नम

जिज्ञासाबळ, विचारबळ, वैराग्यबळ, ध्यानबळ अने ज्ञानबळ वर्धमान थवाने अर्थे आत्मार्थी जीवने तथारूप ज्ञानीपुरुषनो समागम विशेष करी उपासवा योग्य छे तेमा पण वर्तमानकाळना जीवोने ते बळनी दृढ छाप पडी जवाने अर्थे घणा अतरायो जोवामा आवे छे, जेथी तथारूप शुद्ध जिज्ञासुवृत्तिए दीर्घकाळ पर्यंत सत्समागम उपासवानी आवश्यकता रहे छे सत्समागमना अभावे वीतरागश्रुत, परम-शातरसप्रतिपादक वीतरागवचनोनी अनुप्रेक्षा वारवार कर्त्तव्य छे. चित्तस्थैर्य माटे ते परम औषध छे.

४६

द्रव्यानुयोग-रहस्य

[६३२/८६६]

ॐ

द्रव्यानुयोग परम गभीर अने सूक्ष्म छे, निर्ग्रंथप्रवचननु रहस्य छे, शुक्ल ध्याननु अनन्य कारण छे शुक्ल ध्यानथी केवळज्ञान समुत्पन्न थाय छे. महाभाग्य वडे ते द्रव्यानुयोगनी प्राप्ति थाय छे

दर्शनमोहनो अनुभाग घटवाथी अथवा नाश पामवाथो, विषय प्रत्ये उदासीनताथी अने महत्पुरुषना चरणकमळनी उपासनाना बळथी द्रव्यानुयोग परिणमे छे

जेम जेम सयम वर्धमान थाय छे, तेम तेम द्रव्यानुयोग यथार्थ परिणमे छे सयमनी वृद्धिनु कारण सम्यक्दर्शननु निर्मलत्व छे, तेनु कारण पण 'द्रव्यानुयोग' थाय छे.

सामान्यपणे द्रव्यानुयोगनी योग्यता पामवी दुर्लभ छे. आत्मारामपरिणामी, परमवीतरागदृष्टिवत्त, परमअसग एवा महात्मापुरुषो तेना मुख्य पात्र छे

कोई महत् पुरुषना मनन्ने अर्थे पचास्तिकायनं सक्षिप्त स्वरूप लख्यु हतु, ते मनन अर्थे आ साथे मोकल्यु छे ।

हे आर्य ! द्रव्यानुयोगनु फळ सर्व भावथो विराम पामवारूप सयम छे ते आ पुरुषना वचन तारा अंतःकरणमा तुं कोई दिवस शिथिल करीश नही वधारे शु ? समाधिनु रहस्य ए ज छे सर्व दुःखथो मुक्त थवानो अनन्य उपाय ए ज छे.

दानादि लब्धि-रहस्य

[६४५/९१५]

ॐ नम

तमे लखेलो कागळ मुबई मळ्यो हतो. अत्र वीश दिवस थया स्थिति छे. कागळमा तमे बे प्रश्नोनु समाधान जाणवानी जिज्ञासा दर्शावी हती ते बे प्रश्नोनु समाधान अत्रे सक्षेपमा लख्यु छे.

१ उपशमश्रेणिमा मुख्यपणे 'उपशमसम्यक्त्व' संभवे छे

२ चार घनघाति कर्मनो क्षय थता अतराय कर्मनी प्रकृतिनो पण क्षय थाय छे, अने तेथी दानातराय, लाभातराय, वीर्यातराय, भोगातराय अने उपभोगातराय ए पाच प्रकारनो अतराय क्षय थई अनतदानलब्धि, अनतलाभलब्धि, अनतवीर्यलब्धि अने अनत भोगउपभोगलब्धि सप्राप्त थाय छे. जेथी ते अतरायकर्म क्षय थयु छे एवा परमपुरुष अनत दानादि आपवाने सपूर्ण समर्थ छे, तथापि पुद्गल द्रव्यरूपे ए दानादि लब्धिनी परमपुरुष प्रवृत्ति करता नथी मुख्यपणे तो ते लब्धिनी संप्राप्ति पण आत्मानी स्वरूपभूत छे, केमके क्षायिकभावे ते सप्राप्ति छे, उदयिकभावे नथी, तेथी आत्मस्वभाव स्वरूपभूत छे, अने जे अनत सामर्थ्य आत्मामा अनादिथी शक्ति रूपे हतु ते व्यक्त थई आत्मा निजस्वरूपमा आवी शके छे, तद्रूप शुद्ध स्वच्छ भावे एक स्वभावे परिणमावी शके छे, ते अनतदानलब्धि कहेवा योग्य छे तेम ज अनत आत्मसामर्थ्यनी सप्राप्तिमा किंचित्मात्र वियोगनु कारण रह्यु नथी तेथी अनंतलाभलब्धि

कहेवा योग्य छे. वळी, अनतआत्मसामर्थ्यनी संप्राप्ति सपूर्णपणे परमानंदस्वरूपे अनुभवाय छे, तेमा पण किंचित्मात्र पण वियोगनुं कारण रह्यु नथी, तेथी अनत भोगउपलब्धि कहेवा-योग्य छे, तेम ज अनत आत्मसामर्थ्यनी सप्राप्ति सपूर्णपणे थया छता ते सामर्थ्यना अनुभवथी आत्मशक्ति थाके के तेनु सामर्थ्य झोली न शके, वहन न करी शके अथवा ते सामर्थ्यने कोई पण प्रकारना देशकाळनी असर थई किंचित्मात्र पण न्यूनाधिकपणु करावे एवु कशु रह्यु ज नहीं, ते स्वभावमा रहेवानु सपूर्ण सामर्थ्य त्रिकाळ सपूर्ण बळसहित रहेवानु छे, ते अनतवीर्यलब्धि कहेवा योग्य छे.

क्षायिकभावनी दृष्टिथी जोता उपर कह्या प्रमाणे ते लब्धिनो परम पुरुषने उपयोग छे वळी ए पाच लब्धि हेतुविशेषथी समजावा अर्थे जुदी पाडी छे, नही तो अनतवीर्य-लब्धिमा पण ते पाचेनो समावेश थई शके छे आत्मा सपूर्ण वीर्यने संप्राप्त थवाथी ए पाचे लब्धिनो उपयोग पुद्गल द्रव्यरूपे करे तो तेवु सामर्थ्य तेमा वर्ते छे, तथापि कृतकृत्य एवा परम पुरुषमा सपूर्ण वीतरागस्वभाव होवाथी ते उपयोगनो तेथी सभव नथी, अने उपदेशादिना दानरूपे जे ते कृतकृत्य परम पुरुषनी प्रवृत्ति छे ते योगाश्रित पूर्वबधना उदयमानपणाथी छे, आत्माना स्वभावना किंचित् पण विकृतभावथी नथी.

ए प्रमाणे सक्षेपमा उत्तर जाणशो. निवृत्तिवाळो अवसर सप्राप्त करी अधिक अधिक मनन करवाथी विशेष समाधान अने निर्जरा सप्राप्त थशे सउल्लास चित्तथी ज्ञाननी अनुप्रेक्षा करता अनत कर्मनो क्षय थाय छे

ॐ शाति शाति शाति

४८
मोक्ष एटले शुं ?

[७१२/९]

प्र० '— मोक्ष एटले शु ?

उ० —— आत्मानु अत्यत शुद्धपणु ते, अज्ञानथी छूटी जवु ते, सर्व कर्मथी मुक्त थवु ते 'मोक्ष' यथातथ्य ज्ञान प्रगटचे मोक्ष. भ्रान्ति रहे त्या सुधी आत्मा जगतमा छे. अनादिकाळनु एवु जे चेतन तेनो स्वभाव जाणपणु, ज्ञान छे, छता भूली जाय छे ते शु ? जाणपणामा न्यूनता छे, यथातथ्य जाणपणु नथी ते न्यूनता केम मटे ? ते जाणपणारूपी स्वभावने भूली न जाय, तेने वारवार दृढ करे तो न्यूनता मटे. ज्ञानी पुरुषना वचनोनु अवलबन लेवाथी जाणपणु थाय साधन छे ते उपकारना हेतुओ छे. जेवा जेवा अधिकारो तेवु तेवु तेनु फळ सत्पुरुषना आश्रये ले तो साधनो उपकारना हेतुओ छे सत्पुरुषनी दृष्टिए चालवाथी ज्ञान थाय छे सत्पुरुषोना वचनो आत्मामा परिणाम पाम्ये मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, अशुभयोग वगेरे बधा दोषो अनुक्रमे मोळा पडे. आत्मज्ञान विचारवाथी दोषो नाश थाय छे सत्पुरुषो पोकारी पोकारीने कही गया छे, पण जीवने लोकमार्गमा पडी रहेवु छे, अने लोकोत्तर कहेवरावदु छे, ने दोष केम जता नथी एम मात्र कह्या करवु छे लोकनो भय मूकी सत्पुरुषोना वचनो आत्मामा परिणमावे तो सर्व दोष जाय जीवे मारापणु लाववु नही मोटाई ने महत्ता मूक्या वगर सम्यक्त्वनो मार्ग आत्मामा परिणाम पामवो कठण छे

८

विचार-रत्नावलि

[पुष्पमाळामाथी — ३/२]

१ रात्रि व्यतिक्रमी गई प्रभात थयु, निद्राथी मुक्त थया. भावनिद्रा टाळवानो प्रयत्न करजो.

२ व्यतीत रात्रि अने गई जिंदगी पर दृष्टि फेरवी जाओ

३ सफळ थयेला वखतने माटे आनद मानो, अने आजनो दिवस पण सफळ करो. निष्फळ थयेला दिवसने माटे पश्चात्ताप करी निष्फळता विस्मृत करो.

जो तु त्यागी होय तो त्वचा वगरनी वनितानु स्वरूप विचारीने ससार भणी दृष्टि करजे.

१४ मूळतत्त्वमा क्याय भेद नथी, मात्र दृष्टिमा भेद छे एम गणी आशय समजी पवित्र धर्ममा प्रवर्त्तन करजे.

१५ तु गमे ते धर्म मानतो होय तेनो मने पक्षपात नथी, मात्र कहेवानु तात्पर्य के जे राहथी ससारमळ नाश थाय ते भक्ति, ते धर्म अने ते सदाचारने तु सेवजे.

१७ आजे जो तु दुष्कृतमा दोरातो हो तो मरणने स्मर.

१९ राजा हो के रक हो — गमे ते हो, परंतु आ विचार विचारी सदाचार भणी आवजो के आ कायाना पुद्गल थोडा वखतने माटे मात्र साडात्रण हाथ भूमि मागनार छे.

३५ पग मूकता पाप छे, जोता झेर छे, अने माथे मरण रह्यु छे, ए विचारी आजना दिवसमा प्रवेश कर आजना दिवसमा प्रवेश करजे.

३८ धर्माचार्य हो तो तारा अनाचार भणी कटाक्ष दृष्टि करी आजना दिवसमा प्रवेश करजे

४० दुराचारी हो तो तारी आरोग्यता, भय, परतन्त्रता, स्थिति अने सुख एने विचारी आजना दिवसमा प्रवेश करजे.

४४ आहार, विहार, निहार ए सबघीनी तारी प्रक्रिया तपासी आजना दिवसमा प्रवेश करजे

४६ तु गमे ते धधार्थी हो, परंतु आजीविकार्थे अन्याय्-संपन्न द्रव्य उपार्जन करीश नही.

४७ ए स्मृति ग्रहण कर्या पछी शौचक्रियायुक्त थई भगवद्भक्तिमा लीन थई क्षमापना याच

४९ जुलमीने, कामीने, अनाडीने उत्तेजन आपतो हो तो अटकजे.

५० ओछामा ओछो पण अर्ध प्रहर धर्मकर्त्तव्य अने विद्यासपत्तिमा ग्राह्य करजे.

५१ जिदगी टूकी छे, अने जजाळ लाबी छे, माटे जजाळ टूकी कर तो सुखरूपे जिदगी लाबी लागशे

५२ स्त्री, पुत्र, कुटुब, लक्ष्मी इत्यादि बधा सुख तारे घेर होय तोपण ए सुखमा गौणताए दुख रह्यु छे एम गणी आजना दिवसमा प्रवेश कर

५३ पवित्रतानु मूळ सदाचार छे

५५ वचन शात, मधुर, कोमळ, सत्य अने शौच बोलवानी सामान्य प्रतिज्ञा लई आजना दिवसमा प्रवेश करजे.

५६ काया मळमूत्रनु अस्तित्व छे, ते माटे 'हु आ शु अयोग्य प्रयोजन करी आनद मानु छु' एम आजे विचारजे.

५९ जो आजे दिवसे तने सूवानु मन थाय, तो ते वखते ईश्वरभक्तिपरायण थजे, के सत् शास्त्रनो लाभ लई लेजे.

६० हु समजु छु के एम थवु दुर्घट छे, तोपण अभ्यास सर्वनो उपाय छे

६१ चाल्यु आवतु वैर आजे निर्मूळ कराय तो उत्तम, नही तो तेनो सावचेती राखजे.

६२ तेम नवु वैर वधारीश नही, कारण वैर करी केटला काळनु सुख भोगववु छे ए विचार तत्त्वज्ञानीओ करे छे.

६५ वखत अमूल्य छे, ए वात विचारी आजना दिवसनी २,१६,००० विपळनो उपयोग करजे

६६ वास्तविक सुख मात्र विरागमा छे माटे जजाळ मोहिनीथी आजे अभ्यतर मोहिनी वधारीश नही

६९ सुयोजक कृत्य करवामा दोरावु होय तो विलब करवानो आजनो दिवस नथी, कारण आज जेवो मगळदायक दिवस बीजो नथी

७३ आजना दिवसमा आटली वस्तुने बाध न अणाय तो ज वास्तविक विचक्षणता गणाय

(१) आरोग्यता (२) महत्ता (३) पवित्रता अने (४) फरज

७४ जो आजे ताराथी कोई महान काम थतु होय तो तारा सर्व सुखनो पण भोग आपी देजे

८३ सत्पुरुष विदुरना कह्या प्रमाणे आजे एवु कृत्य करजे के रात्रे सुखे सुवाय

८५ जेम बने तेम आजना सबंधी, स्वपत्नी संबंधी पण विषयासक्त ओछो रहेजे ।

८६ आत्मिक अने शारीरिक शक्तिनी दिव्यतानु ते मूळ छे, ए ज्ञानीओनु अनुभवसिद्ध वचन छे.

८७ तमाकु सूघवा जेवु नानु व्यसन पण होय तो आजे पूर्ण कर.——नवीन व्यसन करता अटक.

९० आजे तु गमे तेवा भयकर पण उत्तम कृत्यमा तत्पर हो तो नाहिम्मत थईश नही.

९१ शुद्ध सच्चिदानंद, करुणामय परमेश्वरनी भक्ति ए आजना तारा सत्कृत्यनु जीवन छे.

९२ तारु, तारा कुटुबनु, मित्रनु, पुत्रनु, पत्नीनु, माता-पितानु, गुरुनु, विद्वाननु, सत्पुरुषनु यथाशक्ति हित, सन्मान, विनय, लाभनु कर्तव्य थयु होय तो आजना दिवसनी ते सुगधी छे

९३ जेने घेर आ दिवस क्लेश वगरनो, स्वच्छताथी, शौचताथी, सपथी, सतोषथी, सौम्यताथी, स्नेहथी, सभ्यताथी, सुखथी जशे तेने घेर पवित्रतानो वास छे.

१०२ सरळता ए धर्मनु बीजस्वरूप छे. प्रज्ञाए करी सरळता सेवाई होय तो आजनो दिवस सर्वोत्तम छे.

१०५ बहुमान, नम्रभाव, विशुद्ध अत करणथी परमात्माना गुणसबधी चितवन, श्रवण, मनन, कीर्तन, पूजा, अर्चा ए ज्ञानी पुरुषोए वखाण्या छे, माटे आजनो दिवस शोभावजो.

१०६ सत्‌शीलवान सुखी छे दुराचारी दु खी छे. ए वात जो मान्य न होय तो अत्यारथी तमे लक्ष राखो ते वात विचारी जुओ

१०७ आ सघळानो सहेलो उपाय आजे कही दउ छु के दोषने ओळखी दोषने टाळवा

[बोध-वचनमाथी — १०/५]

२ आहार करवो तो पुद्गलना समूहने एकरूप मानी करवो, पण लुब्ध थवु नही

३ आत्मश्लाघा चिंतववो नही.

६ स्त्रीनु रूप जोवाई जवाय तो रागयुक्त थवु नही, पण अनित्यभाव विचारवो

१४ वेदनीयउदय उदय थाय तो 'अवेद' पद निश्चयनु चिंतववु.

१५ पुरुष वेद उदय थाय तो स्त्रीनु शरीर भिन्न भिन्न करी निहाळवु, ज्ञानदशाथी.

२२ आत्मउपयोग ए कर्म मूकवानो उपाय

३५ ध्यान एकचित्तथी रागद्वेष मूकीने करवु

३६ ध्यान कर्या पछी गमे ते प्रकारनो भय उत्पन्न थाय तोपण बीवु नही अभय आत्मस्वरूप विचारवु 'अमर दशा जाणी चळविचळ न थवु.'

३८ एकाकी विचार हमेश अंतरग लाववो

४६ अहकार करशो नही

४७ कोई द्वेष करे पण तमे तेम करशो नही

४८ क्षणे क्षणे मोहनो सग मूको.

४९ आत्माथी कर्मादिक अन्य छे, तो ममत्वरूप परि-ग्रहनो त्याग करो

५० सिद्धना सुख स्मृतिमा लावो

५१ एकचित्ते आत्मा ध्यावो प्रत्यक्ष अनुभव थशे.

६२ जेम बने तेम त्वराथी प्रमाद तजो.

६६ स्व अने परना नाथ थाओ

६९ चेतनरहित काष्ठ छेदता काष्ठ दुःख मानतु नथी. तेम तमे पण समदृष्टि राखजो

७२ सत्पुरुषनो समागम चिंतवजो. मळेथी दर्शन लाभ चूकशो नही

७६ व्यावहारिक कामथी जे वखत मुक्त थाओ ते वखते एकातमा जई आत्मदशा विचारजो

८१ शरीर उपर ममत्व राखशो नही

८२ आत्मदशा नित्य अचळ छे तेनो सशय लावशो नही.

८३ कोईनी गुप्त वात कोईने करशो नही.

८५ कोईने काई द्वेषथी कहेवाई जवाय तो पश्चात्ताप घणो करजो, अने क्षमापना मागजो पछीथी तेम करशो नही.

८९ अन्यने उपदेश आपवानो लक्ष छे, ते करता निजधर्ममां वधारे लक्ष करवो

९० कथन करता मथन उपर वधारे लक्ष आपवु

९३ बाह्य करणी करता अभ्यतर करणी उपर वधारे लक्ष आपवु

९४ 'हु क्याथी आव्यो?' 'हु क्या जईश?' 'शु मने बधन छे?' 'शु करवाथी बधन जाय?' 'केम छूटवु थाय?' आ वाक्यो स्मृतिमा राखवा

९५ स्त्रीओना रूप उपर लक्ष राखो छो ते करता आत्मस्वरूप उपर लक्ष दो तो हित थाय

९६ ध्यानदशा उपर लक्ष राखो छो ते करता आत्म-स्वरूप उपर लक्ष आपशो तो उपशमभाव सहजथी थशे अने समस्त आत्माओने एक दृष्टिए जोशे एकचित्तथी अनुभव थशे तो तमने ए इच्छा अदरथी अमर थशे ए अनुभवसिद्ध वचन छे

१०७ रहेणी उपर ध्यान देवु

११८ ध्याननी स्मृति थाय त्यारे स्थिरता करी ते पछी टाढ, ताप, छेदन, भेदन इत्यादिक इत्यादिक देहना ममत्वना विचार लावशो नही

११९ ध्याननी स्मृति थाय त्यारे स्थिरता करी ते पछी देव, मनुष्य, तिर्यंचना परिसह पडे तो आत्मा अविनाशी छे एवो एक उपयोगथी विचार लावशो, तो तमोने भय थशे नही अने त्वराथी कर्मबधथी छूटशो. आत्मदशा अवश्य निहाळशो अनत ज्ञान, अनत दर्शन, इत्यादिक इत्यादिक ऋद्धि पामशो.

१२४ द्रव्यदेवु आपवानो फिकर राखो छो ते करता भावदेवु आपवा वधारे त्वरा राखो

[वचनामृतमाथी — १५५/२१]

४ जे कृत्यमा परिणामे दुख छे तेने सन्मान आपता प्रथम विचार करो

६ एक भोग भोगवे छे छता कर्मनी वृद्धि नथी करतो, अने एक भोग नथी भोगवतो छता कर्मनी वृद्धि करे छे, ए आश्चर्यकारक पण समजवा योग्य कथन छे.

८ आपणे जेनाथी पटतर पाम्या तेने सर्वस्व अर्पण करता अटकशो नही

९ तो ज लोकापवाद सहन करवा के जेथी ते ज लोको पोते करेला अपवादनो पुन· पश्चात्ताप करे

१५ महापुरुषना आचरण जोवा करता तेनु अत करण जोवु ए वधारे परीक्षा छे

१९ वर्तनमा बालक थाओ, सत्यमा युवान थाओ, ज्ञानमा वृद्ध थाओ

२१ अनत ज्ञान, अनल दर्शन, अनत चारित्र अने अनत वीर्यथी अभेद एवा आत्मानो एक पळ पण विचार करो

२२ मनने वश कर्युं तेणे जगतने वश कर्युं

३६ सत्ज्ञान अने सत्शीलने साथे दोरजे.

३७ एकथी मैत्री करीश नही, कर तो आखा जगतथी करजे

३८ महा सौंदर्यथी भरेली देवागनाना क्रीडा विलास निरीक्षण करता छता जेना अत करणमा कामथी विशेष विशेष विराग छूटे छे तेने घन्य छे, तेने त्रिकाळ नमस्कार छे

३९ भोगना वखतमा योग साभरे ए हळुकर्मीनुं लक्षण छे.

५४ देवदेवीनी तुषमानताने शु करीशु? जगतनी तुषमानताने शु करीशु? तुषमानता सत्पुरुषनी इच्छो

६० नियम पाळवानु दृढ करता छता नथी पळतो ए पूर्वकर्मनो ज दोष छे एम ज्ञानीओनु कहेवु छे

६८ सत्पुरुषना अत करणे आचर्यो किवा कह्यो ते धर्म.

६९ अतरग मोहग्रन्थी जेनी गई ते परमात्मा छे

७१ एकनिष्ठाए ज्ञानोनी आज्ञा आराधता तत्त्वज्ञान प्राप्त थाय छे.

७२ क्रिया ए कर्म, उपयोग ए धर्म, परिणाम ए बध, भ्रम ए मिथ्यात्व, ब्रह्म ते आत्मा अने शका ए ज शल्य छे. शोकने संभारवो नही, आ उत्तम वस्तु ज्ञानीओए मने आपी.

७७ सम्यक्नेत्र पामीने तमे गमे ते धर्मशास्त्र विचारो तोपण आत्महित प्राप्त थशे

८१ जीवता मराय तो फरी न मरवु पडे एवु मरण इच्छवा योग्य छे

८३ जगतमा मान न होत तो अही ज मोक्ष होत।

९१ अभिनिवेशना उदयमा उत्सूत्रप्ररूपणा न थाय तेने हु महाभाग्य, ज्ञानीओना कहेवाथी कहु छु

९३ स्वादनो त्याग ए आहारनो खरो त्याग ज्ञानीओ कहे छे

९४ अभिनिवेश जेवु एक्के पाखड नथी.

९५ आ काळमा आटलु वध्यु — झाझा मत, झाझा तत्त्वज्ञानीओ, झाझी माया अने झाझो परिग्रह विशेष.

९६ तत्त्वाभिलाषाथी मने पूछो तो हु तमने निरागो धर्म बोधी शकु खरो.

९७ आखा जगतना शिष्य थवारूप दृष्टि जेणे वेदी नथी ते सद्गुरु थवाने योग्य नथी

१०५ पार्श्वनाथ स्वामीनु ध्यान योगीओए अवश्य स्मरवु जोईए छे नि० —— ए नागनी छत्र छाया वेळानो पार्श्वनाथ ओर हतो।

१०६ गजसुकुमारनी क्षमा अने राजेमती रहनेमीने बोधे छे ते बोध मने प्राप्त थाओ

१०७ भोग भोगवता सुधी (ज्या सुधी ते कर्म छे त्या सुधी) मने योग ज प्राप्त रहो।

११० पवित्र पुरुषोनी कृपादृष्टि ए ज सम्यक् दर्शन छे.

१२२ सत्पुरुषो कहेता नथी, करता नथी, छता तेनो सत्पुरुषता निर्विकार मुखमुद्रामा रही छे

१२४ आत्मा जेवो कोई देव नथी.

अवशेष पत्रावलिमाथी—

१ सावचेती शूरानु भूषण छे. [१६५/२६]

२ क्षणभगुर दुनियामा सत्पुरुषनो समागम ए ज अमूल्य अने अनुपम लाभ छे [१६८/३१]

३ निर्ग्रंथ भगवाने प्रणीतेला पवित्र धर्म माटे जे जे उपमा आपीए ते ते न्यून ज छे. आत्मा अनत काळ रखडयो, ते मात्र एना निरुपम धर्मना अभावे जेना एक रोममा किंचित् पण अज्ञान, मोह के असमाधि रही नथी ते सत्पुरुषना वचन अने बोध माटे कई पण नही कही शकता, तेना ज वचनमा प्रशस्त भावे पुन पुन प्रसक्त थवु ए पण आपणु सर्वोत्तम श्रेय छे.

शी एनी शैली। ज्या आत्माने विकारमय थवानो अनताश पण रह्यो नथी शुद्ध, स्फटिक, फीण अने चद्रथी उज्जवळ शुक्ल ध्यानना श्रेणिथी प्रवाहरूपे नीकळेला ते निर्ग्रंथना पवित्र वचनोनी मने—तमने त्रिकाळ श्रद्धा रहो।
[१८१/५२]

४ शास्त्रमा मार्ग कह्यो छे, मर्म कह्यो नथी. मर्म तो सत्पुरुषना अतरात्मामा रह्यो छे. [१८४/५८]

५ (१) सर्व करता आत्मज्ञान श्रेष्ठ छे (२) धर्म विषय, गति, आगति निश्चय छे. (३) जेम उपयोगनी शुद्धता तेम आत्मज्ञान पमाय छे (४) ए माटे निर्विकार दृष्टिनी अगत्य छे (५) 'पुनर्जन्म छे' ते योगथी, शास्त्रथी अने सहजरूपे अनेक सत्पुरुषोने सिद्ध थयेल छे [१९१/६४]

६ सत्पुरुषना चरित्र ए दर्पणरूप छे. [,,]

७ बाह्याभावे गृहस्थश्रेणि छता अतरग निर्ग्रंथश्रेणि जोईए, अने ज्या तेम थयु छे त्या सर्व सिद्धि छे. [१९३/७१]

८ गमे ते वाटे अने गमे ते दर्शनथी कल्याण थतु होय, तो त्या पछी मतातरनी कई अपेक्षा शोधवी योग्य नथी. आत्मत्व जे अनुप्रेक्षाथी, जे दर्शनथी के जे ज्ञानथी प्राप्त थाय ते अनुप्रेक्षा, ते दर्शन के ते ज्ञान सर्वोपरी छे, अने जेटला आत्मा तर्या, वर्तमाने तरे छे, भविष्ये तरशे ते सर्व ए एक ज भावने पामीने आपणे ए सर्व भावे पामीए ए मळेला अनुत्तर जन्मनु साफल्य छे [१९३/७१]

९ बाह्यभावे जगतमा वर्तो अने अतरगमा एकात शीतलीभूत—निर्लेप रहो ए ज मान्यता अने बोधना छे. [१९४/७२]

१० लोभी गुरु, ए गुरु-शिष्य बन्नेने अधोगतिनु कारण छे. [१९४/७५]

११ सर्व सत्पुरुषो मात्र एक ज वाटेथी तर्या छे अने ते वाट वास्तविक आत्मज्ञान अने तेनी अनुचारिणी देहस्थिति-

पर्यंत सत्क्रिया के रागद्वेष अने मोह वगरनी दशा थवाथी ते तत्त्व तेमने प्राप्त थयु होय एम मारु आधीन मत छे [२०२/८७]

१२ धर्मध्यान लक्ष्यार्थथी थाय ए ज आत्महितनो रस्तो छे. चित्तना सकल्प विकल्पथी रहित थवु ए महावीरनो मार्ग छे. अलिप्तभावमा रहेवु ए विवेकीनु कर्त्तव्य छे [२१९/१२३]

१३ पौद्गलिक रचनाए आत्माने स्तभित करवो उचित नथी [२१९/१२४]

१४ ज्या सुधी आत्मा आत्मभावथी अन्यथा एटले देहभावे वर्तशे, हु करु छु एवी बुद्धि करशे, हु रिद्धि इत्यादिके अधिक छु एम मानशे, शास्त्रने जाळरूपे समजशे, मर्मने माटे मिथ्या मोह करशे, त्या सुधी तेनो शाति थवी दुर्लभ छे. [२२६/१३६]

१५ लक्ष वगरनु फेंकेलु तीर लक्ष्यार्थनु कारण नथी [२२७/१३९]

१६ शास्त्रो (लखेलाना पाना) उपाडवा अने भणवा एमा कई अतर नथी जो तत्त्व न मळ्यु तो, कारण बेये बोजो ज उपाड्यो पाना उपाड्या तेणे कायाए बोजो उपाड्यो, भणी गया तेणे मने बोजो उपाड्यो जेने घेर आखो लवण समुद्र छे ते तृषातुरनी तृषा मटाडवा समर्थ नथी, पण जेने घेर एक मीठा पाणीनी वीरडी छे, ते पोतानी अने बीजा केटलाकनी तृषा मटाडवा समर्थ छे, अने ज्ञानदृष्टिए जोता महत्त्व तेनु ज छे [२२७/१३९]

१७ आज्ञामा ज एकतान थया विना परमार्थना मार्गनी प्राप्ति बहु ज असुलभ छे एकतान थवु पण बहु ज असुलभ छे. [२३०/१४७]

१८ हे कर्म! तने निश्चय आज्ञा करु छु के नीति अने नेकी उपर मने पग मुकावीश नही. [२३०/१५०]

१९ उदासीनता ए अध्यात्मनी जननी छे [२३१/१५३]

२० इच्छा वगरनु कोई प्राणो नथी विविध आशाथी तेमा पण मनुष्य प्राणी रोकायेलु छे इच्छा, आशा ज्या सुधी अतृप्त छे, त्या सुधी ते प्राणी अधोवृत्तिवत् छे इच्छाजयवाळु प्राणी उर्ध्वगामीवत् छे [२३४/१५७/६]

२१ जेनु हृदय शुद्ध, सतनी बतावेली वाटे चाले छे तेने धन्य छे. [२३४/१५७/१२]

२२ सत्सगना अभावथी चढेली आत्मश्रेणि घणु करीने पतित थाय छे [२३४/१५७/१२]

२३ विश्वासथी वर्ती अन्यथा वर्तनारा आजे पस्तावो करे छे. [२३६/१५७/१४]

२४ दृष्टि एवी स्वच्छ करो के जेमा सूक्ष्ममा सूक्ष्म दोष पण देखाई शके, अने देखायाथी क्षय थई शके [२३६/१५७/१६]

२५ जेनाथी, जे, केवळ मुक्त थई शके ते ते नहोतो एम जाणीए छीए [२४१/१६०/३१]

२६ सत्य एक छे, बे प्रकारनु नथी अने ते ज्ञानीना अनुग्रह विना प्राप्त थतु नथी माटे मतमतातरनो त्याग करी ज्ञानीनी आज्ञामा अथवा सत्सगमां प्रवर्तवु [२४७/१६७]

२७ सत् श्रद्धा पामीने जे कोई तमने धर्म निमित्ते इच्छे तेनो सग राखो. [२५०/१७१]

२८ पोते शकामा गळका खातो होय, एवो जीव नि शक मार्ग बोधवानो दभ राखी आखु जीवन गाळे ए तेने माटे परम शोचनीय छे [२५२/१७६]

२९ जे छूटवा माटे ज जीवे छे ते बधनमा आवतो नथी आ वाक्य नि शक अनुभवनु छे [२५२/१७६]

३० महावीर देवे आ काळने पचमकाळ कही दुषम कह्यो, व्यासे कळियुग कह्यो, एम घणा महापुरुषोए आ काळने कठिन कह्यो छे, ए वात नि शक सत्य छे कारण, भक्ति अने सत्सग ए विदेश गया छे, अर्थात् सप्रदायोमा रह्या नथी अने ए मळ्या विना जीवनो छूटको नथी [२५३/१७६]

३१ कोई पण जिज्ञासु हो ते धर्म पामेलाथी धर्म पामो. [२५४/१७८]

३२ व्यवहार चितानु वेदन अतरथी ओछु करवु ए एक मार्ग पामवानु साधन छे [२५८/१९२]

३३ कोई पण प्रकारे जीव पोतानी कल्पनाए करी सत प्राप्त करी 'शकतो नथी सजीवनमूर्ति प्राप्त थये ज सत् प्राप्त थाय छे, सत् समजाय छे, सत्नो मार्ग मळे छे, सत् पर लक्ष आवे छे सजीवनमूर्तिना लक्ष वगर जे कई पण करवामा आवे छे, ते जीवने बंधन छे. आ अमारु हृदय छे [२६१/१९८]

३४ वास्तविक सुख जो जगतनी दृष्टिमा आव्यु होत तो ज्ञानी पुरुषोए नियत करेलु एवु मोक्षस्थान ऊर्ध्व लोकमा होत नही, पण आ जगत ज मोक्ष होत ज्ञानीने सर्वत्र मोक्ष छे [२६५/२०५]

३५ अनादि काळथी जेटलु जाण्यु छे, तेटलु बधुय अज्ञान ज छे, तेनु विस्मरण करवु [२६६/२०७]

३६ अभेद दशा आव्या विना जे प्राणी आ जगतनी रचना जोवा ईच्छे छे ते बधाय छे [२७०/२१८]

३७ अहपणु आडु आवतु होय तो तेनो जेटलो वने तेटलो रोध करवो, अने तेम छता पण ते न टळतु होय तो तेने ईश्वरार्पण करी देवु, तथापि दोनपणु न आववा देवु उपाधि माटे भविष्यनी एक पळनी पण चिंता करवी नही, कर्यानो जे अभ्यास थई गयो छे, ते विस्मरण कर्या रहेवु, तो ज ईश्वर प्रसन्न थशे [२७२/२१७]

३८ स्वर्ग नरकादिनो प्रतीतिनो उपाय योगमार्ग छे तेमा पण जेमने दूरदेशी सिद्धि प्राप्त थाय छे, ते तेनी प्रतीति माटे योग्य छे. सर्वकाळ ए प्रतीति प्राणीने दुर्लभ थई पडी छे ज्ञान मार्गमा ए विशेष वात वर्णवी नथी, पण ते बधा छे, ए जरूर [२७४/२१८]

३९ जेम मलिन दर्पणने विषे यथायोग्य प्रतिबिब दर्शन थई शकतु नथी, तेम असत् वासनावाळा चित्तने विषे पण सत् सबधी सस्कार यथायोग्य प्रतिबिबित थता नथी [२७८/२२९]

४० अतिशय विरहाग्नि हरिप्रत्येनी जलवाथी साक्षात् तेनी प्राप्ति होय छे. तेम ज सतना विरहानुभवनु फळ पण ते ज छे [२८४/२४६]

४१ तृषातुरने पायानी महेनत करजो अतृषातुरने तृषातुर थवानी जिज्ञासा पेदा करजो जेने ते पेदा न थाय तेवु होय, तेने माटे उदासीन रहेजो [२९२/२५८]

४२ चमत्कार वतावी योगने सिद्ध करवो, ए योगीनु लक्षण नथी सर्वोत्तम योगी तो ए छे के सर्व प्रकारनी स्पृहाथी रहितपणे सत्यमा केवळ अनन्य निष्ठाए जे सर्व प्रकारे 'सत्' ज आचरे छे, जगत जेने विस्मृत थयु छे. [२९३/२६०]

४३ भक्ति, प्रेमरूप विना ज्ञान शून्य ज छे, ज्ञानी पासे ज्ञान इच्छवु ते करता बोध स्वरूप समजी भक्ति इच्छवी ए परम फळ छे [२९५/२६३]

४४ अपूर्व पोताथी पोताने प्राप्त थवु दुर्लभ छे, जेनाथी प्राप्त थाय छे, तेनु स्वरूप ओळखावु दुर्लभ छे, अने जीवने भुलवणी पण ए ज छे. [३०२/२८५]

४५ जे वास्तव्य ज्ञानीने ओळखे छे, ते ध्यानादिने इच्छे नही, एवो अमारो अतरग अभिप्राय वर्ते छे मात्र ज्ञानीने इच्छे छे, ओळखे छे अने भजे छे, ते ज तेवो थाय छे, अने ते उत्तम मुमुक्षु जाणवो योग्य छे [३२०/३३५]

४६ जगतना अभिप्राय प्रत्ये जोईने जीव पदार्थनो बोध पाम्यो छे ज्ञानीना अभिप्राय प्रत्ये जोईने पाम्यो नथी जे जीव ज्ञानीना अभिप्रायथी बोध पाम्यो छे ते जीवने सम्यक् दर्शन थाय छे. [३२५/३५८]

४७ ज्या पूर्ण कामपणु छे, त्या सर्वज्ञता छे.

जेने बोधबीजनी उत्पत्ति होय छे, तेने स्वरूप सुखथी करीने परितृप्तपणु वर्ते छे, अने विषय प्रत्ये अप्रयत्न दशा वर्ते छे

जे जीवितव्यमा क्षणिकपणु छे, ते जीवितव्यमा ज्ञानीओए नित्यपणु प्राप्त कर्यु छे, ए अचरजनी वात छे

जो जीवने परितृप्तपणु वर्त्या करतु न होय तो अखड एवो आत्मबोध तेने समजवो नही [३२६/३६०]

४८ लोकभावनाना आवरणने लीधे परमार्थभावना प्रत्ये जीवने उल्लासपरिणति थाय नही [३२९/३७१]

४९ अनतकाळे जे प्राप्त थयु नथी, ते प्राप्तपणाने विषे अमुक काळ व्यतीत थाय तो हानि नथी मात्र अनतकाळे जे प्राप्त थयु नथी, तेने विषे भ्राति थाय, भूल थाय ते हानि छे [३३०/३७१]

५० महात्मानो देह बे कारणने लईने विद्यमान पणे वर्ते छे, प्रारब्ध कर्म भोगववाने अर्थे, जीवोना कल्याणने अर्थे, तथापि ए बन्नेमा ते उदासपणे उदय आवेली वर्तनाए वर्ते छे, एम जाणीए छीए [३३०/३७३]

५१ गमे तेटली विपत्तिओ पडे, तथापि ज्ञानीद्वारा सासारिक फळनी इच्छा करवी योग्य नथी [३३१/३७४]

५२ जीवे सर्व प्रकारना मतमतातरनो, कुळधर्मनो, लोकसज्ञारूप धर्मनो, ओघसज्ञारूप धर्मनो उदासभाव भजी एक आत्मविचार कर्तव्यरूप धर्म भजवो योग्य छे [३३२/३७५]

५३ जेने विषे सत्स्वरूप वर्ते छे, एवा जे ज्ञानी तेने विषे लोक-स्पृहादिनो त्याग करी, भावे पण जे आश्रितपणे वर्ते छे, ते निकटपणे कल्याणने पामे छे, एम जाणीए छीए. [३३३/३७६]

५४ जे काळे ज्ञानथी अज्ञान निवृत्त थयु ते ज काळे ज्ञानी मुक्त छे देहादिने विषे अप्रतिबद्ध छे सुखदु ख हर्ष शोकादिने विषे अप्रतिबद्ध छे [३३३/३७७]

४२ चमत्कार बतावी योगने सिद्ध करवो, ए योगीनु लक्षण नथी सर्वोत्तम योगी तो ए छे के सर्व प्रकारनी स्पृहाथी रहितपणे सत्यमा केवळ अनन्य निष्ठाए जे सर्व प्रकारे 'सत्' ज आचरे छे, जगत जेने विस्मृत थयु छे. [२९३/२६०]

४३ भक्ति, प्रेमरूप विना ज्ञान शून्य ज छे, ज्ञानी पासे ज्ञान इच्छवु ते करता बोध स्वरूप समजी भक्ति इच्छवी ए परम फळ छे [२९५/२६३]

४४ अपूर्व पोताथी पोताने प्राप्त थवु दुर्लभ छे, जेनाथी प्राप्त थाय छे, तेनु स्वरूप ओळखावु दुर्लभ छे, अने जीवने भुलवणी पण ए ज छे. [३०२/२८५]

४५ जे वास्तव्य ज्ञानीने ओळखे छे, ते ध्यानादिने इच्छे नही, एवो अमारो अतरग अभिप्राय वर्ते छे मात्र ज्ञानीने इच्छे छे, ओळखे छे अने भजे छे, ते ज तेवो थाय छे, अने ते उत्तम मुमुक्षु जाणवो योग्य छे [३२०/३३५]

४६ जगतना अभिप्राय प्रत्ये जोईने जीव पदार्थनो बोध पाम्यो छे ज्ञानीना अभिप्राय प्रत्ये जोईने पाम्यो नथी जे जीव ज्ञानीना अभिप्रायथी बोध पाम्यो छे ते जीवने सम्यक् दर्शन थाय छे. [३२५/३५८]

४७ ज्या पूर्ण कामपणु छे, त्या सर्वज्ञता छे.

जेने बोधबीजनी उत्पत्ति होय छे, तेने स्वरूप सुखथी करीने परितृप्तपणु वर्ते छे, अने विषय प्रत्ये अप्रयत्न दशा वर्ते छे

जे जीवितव्यमा क्षणिकपणु छे, ते जीवितव्यमा ज्ञानीओए नित्यपणु प्राप्त कर्यु छे, ए अचरजनी वात छे

जो जीवने परितृप्तपणु वर्त्या करतु न होय तो अखड एवो आत्मबोध तेने समजवो नही [३२६/३६०]

४८ लोकभावनाना आवरणने लीधे परमार्थभावना प्रत्ये जीवने उल्लासपरिणति थाय नही [३२९/३७१]

४९ अनतकाळे जे प्राप्त थयु नथी, ते प्राप्तपणाने विषे अमुक काळ व्यतीत थाय तो हानि नथी मात्र अनंतकाळे जे प्राप्त थयु नथी, तेने विषे भ्राति थाय, भूल थाय ते हानि छे. [३३०/३७१]

५० महात्मानो देह बे कारणने लईने विद्यमान पणे वर्ते छे, प्रारब्ध कर्म भोगववाने अर्थे, जीवोना कल्याणने अर्थे, तथापि ए बन्नेमा ते उदासपणे उदय आवेली वर्तनाए वर्ते छे, एम जाणीए छीए [३३०/३७३]

५१ गमे तेटली विपत्तिओ पडे, तथापि ज्ञानीद्वारा सासारिक फळनी इच्छा करवी योग्य नथी [३३१/३७४]

५२ जीवे सर्व प्रकारना मतमतातरनो, कुळधर्मनो, लोकसज्ञारूप धर्मनो, ओघसज्ञारूप धर्मनो उदासभाव भजी एक आत्मविचार कर्तव्यरूप धर्म भजवो योग्य छे [३३२/३७५]

५३ जेने विषे सत्स्वरूप वर्ते छे, एवा जे ज्ञानी तेने विषे लोक-स्पृहादिनो त्याग करी, भावे पण जे आश्रितपणे वर्ते छे, ते निकटपणे कल्याणने पामे छे, एम जाणीए छीए. [३३३/३७६]

५४ जे काळे ज्ञानथी अज्ञान निवृत्त थयु ते ज काळे ज्ञानी मुक्त छे देहादिने विषे अप्रतिबद्ध छे. सुखदु ख हर्ष शोकादिने विषे अप्रतिबद्ध छे [३३३/३७७]

५५ ज्ञानी इच्छा रहित के इच्छा रहित एम कहेवु पण बनतु नथी, ते सहजस्वरूप छे. [३३४/३७७]

५६ जेनी प्राप्ति पछी अनत काळनु याचक पणु मटी, सर्वकाळने माटे अयाचकपणु प्राप्त होय छे एवो जो कोई होय तो ते तरणतारण जाणीए छीए, तेने भजो

मोक्ष तो आ काळने विषे पण प्राप्त होय, अथवा प्राप्त थाय छे पण मुक्तपणानु दान आपनार एवा पुरुषनी प्राप्ति परम दुर्लभ छे, अर्थात् मोक्ष दुर्लभ नथी, दाता दुर्लभ छे. [३३४/३७९]

५७ प्रभुभक्तिमा जेम बने तेम तत्पर रहेवु. मोक्षनो ए धुरधर मार्ग मने लाग्यो छे [३३५/३८०]

५८ उपाधिने विषे विक्षेप रहितपणे वर्तवु ए वात अत्यत विकट छे, जे वर्ते छे ते थोडा काळने विषे परिपक्व समाधिरूप होय छे [३३७/३८६]

५९ जीवने स्वस्वरूप जाण्या सिवाय छूटको नथी, त्या सुधी यथा योग्य समाधि नथी ते जाणवा माटे उत्पन्न थवा योग्य मुमुक्षुता अने ज्ञानीनु ओळखाण ए छे ज्ञानीने जे यथा योग्यपणे ओळखे छे ते ज्ञनी थाय छे—क्रमे करी ज्ञानी थाय छे. [३३७/३८७]

६० एक अक्षर बोलता अतिशय–अतिशय एवी प्रेरणाए पण वाणी मौनपणाने प्राप्त थशे, अने ते मौनपणु प्राप्त थया पहेला जीवने एक अक्षर सत्य बोलाय एम बनवु अशक्य छे. [३४५/३९७]

६१ जे जे काळे जे जे प्रारब्ध उदय आवे ते ते वेदन करवु ए ज्ञानी पुरुषनु सनातन आचरण छे जे ससारने विषे साक्षी कर्त्ता तरीके मनाय छे, ते ससारमा ते साक्षीए साक्षीरूपे रहेवु, अने कर्त्ता तरीके भास्यमान थवु ते बेधारी तरवार उपर चालवा बराबर छे [३५२/४०८]

६२ एक वार एक तणखलाना बे भाग करवानी क्रिया करी शकवानी शक्ति पण उपशम थाय त्यारे जे ईश्वरेच्छा हशे ते थशे [३५३/४०८]

६३ लोकव्यापक एवा अधकारने विषे स्वए करी प्रकाशित एवा ज्ञानी पुरुष ज यथातथ्य देखे छे लोकनी शब्दादि कामना प्रत्ये देखता छता उदासीन रही जे मात्र स्पष्ट पणे पोताने देखे छे, एवा ज्ञानीने नमस्कार करीए छीए [३५५/४१३]

६४ ज्ञानी पुरुषने मळीने जे आत्मभावे, स्वच्छदपणे, कामनाए करी, रसे करी, ज्ञानीना वचननी उपेक्षा करी, 'अनुपयोगपरिणामी' थई ससारने भजे छे, ते पुरुष तीर्थंकरना मार्गथी बहार छे. [३५५/४१४]

६५ 'पुनर्जन्म छे—जरूर छे ए माटे 'हु' अनुभवथी हा कहेवामा अचळ छु ए वाक्य पूर्वभवना कोई जोगनु स्मरण थतो वखते सिद्ध थयेलु लख्यु छे, जेने, पुनर्जन्मादि भाव कर्या छे, ते 'पदार्थने' कोई प्रकारे जाणीने ते वाक्य लखायु छे. [३६१/४२४]

६६ आत्माने विभावथी अवकाशित करवाने अर्थे अने स्वभावमा अनवकाशपणे रहेवाने अर्थे कोई पण मुख्य उपाय होय तो आत्माराम एवा ज्ञानी पुरुषनी निष्काम बुद्धिथी भक्ति-

योगरूप संग छे... आत्मापणे केवळ आत्मा वर्ते एम जे चिंतवन राखवु ते लक्ष छे, शास्त्रना परमार्थरूप छे [३६५/४३२]

६७ प्रदेशे प्रदेशथी जीवना उपयोगने आकर्षक एवा आ ससारने विषे एक समयमात्र पण अवकाश लेवानी ज्ञानी पुरुषोए हा कही नथी, केवळ ते विषे नकार कह्यो छे

ते आकर्षणथी उपयोग जो अवकाश पामे तो ते ज समये ते आत्मापणे थाय छे ते ज समये आत्माने विषे ते उपयोग अनन्य थाय छे [३७०-७१/४४६]

६८ जे सम्यक्ज्ञानी पुरुषोथी सिद्धिजोगना चमत्कारो लोकोए जाण्या छे, ते ते ज्ञानी पुरुषना करेला सभवता नथी, स्वभावे करी ते सिद्धयोग परिणाम पाम्या होय छे [३७४/४५०]

६९ राख्यु कई रहेतु नथी, अने मूक्यु कई जतु नथी एवो परमार्थ विचारी कोई प्रत्ये दीनता भजवी के विशेषता दाखववी ए योग्य नथी [३७७/४५७]

७० ससारनी झाळ जोई चिंता भजशो नही चितामा समता रहे तो ते आत्मचिंतन जेवी छे [३८०/४६१]

७१ साची ज्ञानदशा होय तो तेने देहने दु:खप्राप्तिना कारणो विषे विषमता थती नथी, अने ते दु खने टाळवा एटली बधी चीवट पण होती नथी [३८३/४६८]

७२ जे विद्याथी उपशमगुण प्रगटचो नही, विवेक आव्यो नही, के समाधि थई नही ते विद्याने विषे रूडा जीवे आग्रह करवा योग्य नथी [३९०/४८३]

७३ आत्माने वारवार ससारनु स्वरूप कारागृह जेवुं क्षणे क्षणे भास्या करे ए मुमुक्षुतानु मुख्य लक्षण छे [३९८/४९८]

७४ जो उपदेशबोध जीवने अत करणमां स्थितिमान थयो न होय तो सिद्धातबोधनु मात्र तेने श्रवण थाय ते भले, पण परिणाम थई शके नहो विपर्यासबुद्धिनु वळ घटवा, यथावत् वस्तुस्वरूप जाणवाने विषे प्रवेश थवा, जीवने वैराग्य अने उपशम साधन कह्या छे, अने एवा जे जे साधनो जीवने ससारभय दृढ करावे छे ते ते साधनो सवधी जे उपदेश कह्यो छे ते 'उपदेशबोध' छे गृहकुटुव परिग्रहादि भावने विषे जे अहता ममता छे अने तेनी प्राप्ति अप्राप्ति प्रसगमा जे रागद्वेष कषाय छे, ते ज 'विपर्यासवुद्धि' छे, अने अहता ममता तथा कषाय ज्या वैराग्य उपशम उद्भवे छे त्या मद पडे छे, अनुक्रमे नाश पामवा योग्य थाय छे गृहकुटुबादि-भावने विषे अनासक्त बुद्धि थवी ते 'वैराग्य' छे, अने तेनी प्राप्ति अप्राप्ति निमित्ते उत्पन्न थतो एवो जे कषाय क्लेश तेनु मद थवु ते 'उपशम' छे ज्या वैराग्य अने उपशम बळवान छे, त्या विवेक बळवानपणे होय छे आरभ, परिग्रह ते अवैराग्य अने अनुपशमना मूळ छे, वैराग्य अने उपशमना काळ छे [४०७/५०६]

७५ वेदना वेदता जीवने कई पण विषयभाव थवो ते अज्ञाननु लक्षण छे, पण वेदना छे ते अज्ञाननु लक्षण नथी, पूर्वोपार्जित अज्ञाननु फळ छे [४१०/५०९]

७६ सिद्धस्वरूप जेवु आत्मस्वरूप छे एवु विचारीने अने आ आत्माने विषे तेनु वर्तमानमा अप्रगटपणु छे तेनो

अभाव करवा ते सिद्धस्वरूपनो विचार, ध्यान तथा स्तुति घटे छे [४१०/५०९]

७७ आत्मदर्शनादि प्रसग तीव्र मुमुक्षुपणु उत्पन्न थया पहेला घणु करीने कल्पितपणे समजाय छे [४१६/५१८]

७८ ज्ञानी पुरुषोने समये समये अनता सयमपरिणाम वर्धमान थाय छे, एम सर्वज्ञे कह्यु छे, ते सत्य छे ते सयम, विचारनी तीक्ष्ण परिणतिथी, ब्रह्मरस प्रत्ये स्थिरपणाथी उत्पन्न थाय छे [४३८/५४१]

७९ मुझावाथी कई कर्मनी निवृत्ति, इच्छीए छीए ते, थती नथी, अने आर्त्तध्यान थई ज्ञानीना मार्ग पर पग मुकाय छे [४३९/५४४]

८० ज्ञानी पुरुषनो सत्सग थये, निश्चय थये, अने तेना मार्गने आराध्ये जीवने दर्शनमोहनीय कर्म उपशमे छे के क्षय थाय छे, अने अनुक्रमे सर्वज्ञाननी प्राप्ति थई जीव कृतकृत्य थाय छे, ए वात प्रगट सत्य छे ज्ञानीना सत्सगे अज्ञानीना प्रसगनी रुचि आळसे, सत्यासत्य विवेक थाय, अनतानुबधी क्रोधादि खपे, अनुक्रमे सर्व रागद्वेष क्षय थाय, ए बनवा योग्य छे, अने ज्ञानीना निश्चये ते अल्पकाळमा अथवा सुगमपणे बने ए सिद्धात छे, तथापि जे दुख अवश्य भोगव्ये नाश पामे एवु उपार्जित छे ते तो भोगववु ज पडे एमा कांई सशय थतो नथी [४४१/५४८]

८१ जे प्रकारे असगताए, आत्मभाव साध्य थाय ते प्रकारे प्रवर्तवु ए ज जिननी आज्ञा छे [४४५/५५३]

८२ ज्या सुधी सर्व प्रकारना विषम स्थानकोमा सम-वृत्ति न थाय त्या सुधी यथार्थ आत्मज्ञान कह्यु जतु नथी,

अने ज्या सुधी तेम होय त्या सुधी तो निज अभ्यासनी रक्षा करवी घटे छे [४४७/५५८]

८३ आत्मवीर्य प्रवर्तावितामा अने सकोचवामा वहु विचार करी प्रवर्तवु घटे छे [४५७/५८२]

८४ अपारवत् ससार समुद्रथी तारनार एवा सद्धर्मनो निष्कारण करुणाथी जेणे उपदेश कर्यो छे, ते ज्ञानीपुरुषना उपकारने नमस्कार हो। नमस्कार हो। [४६५/६००]

८५ ज्ञानीपुरुषने नव वाड विशुद्ध ब्रह्मचर्यदशा वर्ते त्यारथी जे सयमसुख प्रगटे छे ते अवर्णनीय छे उपदेशमार्ग पण ते सुख प्रगटचे प्ररूपवा योग्य छे [४६६/६००]

८६ अष्ट महासिद्धि आदि जे जे सिद्धिओ कही छे, 'ॐ' आदि मत्रयोग कह्या छे, ते सर्व साचा छे आत्मैश्वर्य पासे ए सर्व अल्प छे ज्या आत्मस्थिरता छे, त्या सर्व प्रकारना सिद्धियोग वसे छे जेने आत्मप्रतीति उत्पन्न थाय तेने सहेजे ए वातनु नि शकपणु थाय, केमके आत्मामा जे समर्थपणु छे, ते समर्थपणा पासे ए सिद्धिलब्धिनु काई पण विशेषपणु नथी [४६७/६०१]

८७ ज्ञानी पुरुषने जे सुख वर्ते छे, ते निजस्वभावमा स्थितिनु वर्ते छे बाह्य पदार्थमा तेने सुखबुद्धि नथी, माटे ते ते पदार्थथी ज्ञानीने सुखदु खादिनु विशेषपणु के ओछापणु कही शकातु नथी वायुफेर होवाथी वहाणनु बीजी तरफ खेंचावु थाय छे, तथापि वहाण चलावनार जेम पहोचवा योग्य मार्ग भणी ते वहाणने राखवाना प्रयत्नमा ज वर्ते छे, तेम ज्ञानी-पुरुष मन, वचनादि योगने निजभावमा स्थिति थवा भणी ज

प्रवर्तावे छे, तथापि उदय वायुयोगे यत्किंचित् दशाफेर थाय छे, तोपण परिणाम, प्रयत्न स्वधर्मने विषे छे [४६७/६०३]

८८ जेम आत्माने स्थूळ देहनो वियोग थाय छे, तेने मरण कहेवामा आवे छे, तेम स्थूळ देहना आयुष्यादि सूक्ष्म-पर्यायनो पण समये समये हानिपरिणाम थवाथी वियोग थई रह्यो छे, तेथी ते समये समये मरण कहेवा योग्य छे आ मरण ते व्यवहार नयथी कहेवाय छे, निश्चयथी तो आत्माने स्वाभाविक एवा ज्ञानदर्शनादि गुणपर्यायनी विभाव परिणामना योगने लीधे हानि थया करे छे, अने ते हानि आत्माना नित्यपणादि स्वरूपने पण ग्रही रहे छे, ते समये समये मरण छे [४८०/६२९]

८९ जगतना ज्ञाननो लक्ष मूकी शुद्ध आत्मज्ञान ते 'केवळज्ञान' छे, एम विचारता आत्मदशा विशेषपणु भजे 'आत्माने विषेथी सर्व प्रकारनो अन्य अध्यास टळी स्फटिकनी पेठे आत्मा अत्यत शुद्धता भजे ते 'केवळज्ञान' छे, अने जगत-ज्ञानपणे तेने वारवार जिनागममा कह्यु छे, ते महात्म्यथी करी बाह्यदृष्टि जीवो पुरुषार्थमा प्रवर्ते ते हेतु छे [४९८/६७९]

९० सूक्ष्म सगरूप अने बाह्यसगरूप दुस्तर स्वयभूरमण समुद्र भुजाए करी जे वर्धमानादि पुरुषो तरी गया छे, तेमने परम-भक्तिथी नमस्कार हो। पडवाना भयकर स्थानके सावचेत रही, तथारूप सामर्थ्य विस्तारी सिद्धि सिद्ध करी छे, ते पुरुषार्थने सभारी रोमाचित, अनत अने मौन एवु आश्चर्य ऊपजे छे [५०७/६९६]

९१ अहो! ज्ञानी पुरुषनी आशय गभीरता, धीरज अने उपशम! अहो! अहो! वारवार अहो! [५०७/६९७]

९२ शरीर कोनु छे? मोहनु छे. माटे असगभावना राखवी योग्य छे [५०९/७००]

९३ ज्ञानीओए मनुष्यपणु चिंतामणिरत्न तुल्य कह्यु छे, ते विचारो तो प्रत्यक्ष जणाय तेवु छे विशेष विचारता तो ते मनुष्यपणानो एक समय पण चिंतामणिरत्नथी परम महात्म्यवान अने मूल्यवान देखाय छे अने जो देहार्थमा ज ते मनुष्यपणु व्यतात थयु तो तो एक फूटी बदामनी किमतनु नथी, एम नि सदेह देखाय छे [५६१/७२५]

९४ लोकदृष्टिमा जे जे वातो के वस्तुओ मोटाईवाळी मनाय छे, ते ते वातो अने वस्तुओ, शोभायमान गृहादि आरभ, अलकारादि परिग्रह, लोकदृष्टिनु विचक्षणपणु, लोकमान्यधर्म-श्रद्धावानपणु प्रत्यक्ष झेरनु ग्रहण छे, एम यथार्थ जणाया विना धारो छो ते वृत्तिनो लक्ष न थाय प्रथम ते वातो अने वस्तुओ प्रत्ये झेरदृष्टि आववी कठण देखी कायर न थता पुरुषार्थ करवो योग्य छे [५६२/७२९]

९५ रागद्वेषना प्रत्यक्ष बळवान निमित्तो प्राप्त थये पण जेनो आत्मभाव किंचित्मात्र पण क्षोभ पामतो नथी, ते ज्ञानीना ज्ञाननो विचार करता पण महा निर्जरा थाय, एमा सशय नथी [५६३/७३६]

९६ 'मोहनोय'नु स्वरूप आ जीवे वारवार अत्यत विचारवा जेवु छे मोहिनीए महा मुनीश्वरोने पण पळमा तेना पाशमा फसावी अत्यत रिद्धिसिद्धिथी विमुक्त करी दीधा छे, शाश्वत सुख छीनवी क्षणभगुरतामा ललचावी रखडाव्या छे.

निर्विकल्प स्थिति लाववी, आत्मस्वभावमा रमणता करवी, मात्र द्रष्टा भावे रहेवु एवो ज्ञानीनो ठाम ठाम बोध छे, ते बोध यथार्थ प्राप्त थये आ जीवनु कल्याण थाय. [५६८/७४६]

९७ 'ज्ञाननु फळ विरति छे' वीतरागनु आ वचन सर्व मुमुक्षुओए नित्य स्मरणमा राखवा योग्य छे. जे वाचवाथी, समजवाथी तथा विचारवाथी आत्मा विभावथी, विभावना कार्योथी अने विभावना परिणामथी उदास न थयो, विभावनो त्यागी न थयो, विभावना कार्योनो अने विभावना फळनो त्यागी न थयो, ते वाचवु, ते विचारवु अने ते समजवु अज्ञान छे विचारवृत्ति साथे त्यागवृत्ति उत्पन्न करवी ते ज विचार सफळ छे, एम कहेवानो ज्ञानीनो परमार्थ छे [५६८-६९/७४९]

९८ सर्वज्ञे कहेलु गुरुउपदेशथी आत्मानु स्वरूप जाणीने, सुप्रतीत करीने तेनु ध्यान करो

जेम जेम ध्यानविशुद्धि तेम तेम ज्ञानावरणीयनो क्षय थशे

पोतानी कल्पनाथी ते ध्यान सिद्ध थतु नथी

ज्ञानमय आत्मा जेमने परमोत्कृष्ट भावे प्राप्त थयो, अने जेमणे परद्रव्यमात्र त्याग कर्यु छे, ते देवने नमन हो! नमन हो!

जेम जेम उपशमनी वृद्धि थाय तेम तेम तप करवाथी कर्मनी घणी निर्जरा थाय [५८५/७६३]

९९ सर्वज्ञे अनुभवेलो एवो शुद्धआत्म प्राप्तिनो उपाय श्री गुरु वडे जाणीने, तेनु रहस्य ध्यानमा लईने आत्मप्राप्ति करो [५८६/७६४]

१०० यथार्थ उपकारी पुरुष प्रत्यक्षमा एकत्वभावना आत्मशुद्धिनी उत्कृष्टता करे छे [६०९/७९०]

१०१ दिगम्बर अने श्वेतांबरपणु देश, काळ, अधिकारीयोगे उपकारनो हेतु छे एटले ज्या ज्ञानीए जेम उपदेश्यु तेम प्रवर्तता आत्मार्थ ज छे [६१२/८०७]

१०२ दुषमकाळनु प्रबळ राज्य वर्ते छे, तोपण अडग निश्चयथी, सत्पुरुषनी आज्ञामा वृत्तिनु अनुसधान करी जे पुरुषो अगुप्तवीर्यथी सम्यक्ज्ञान, दर्शन, चारित्रने उपासवा इच्छे छे, तेने परमशान्तिनो मार्ग हजी पण प्राप्त थवा योग्य छे [६२०/८३१]

१०३ अपार महामोहजळने अनत अतराय छता धीर रही जे पुरुष तर्या ते श्री पुरुष भगवानने नमस्कार

अनत काळथी जे ज्ञान भवहेतु थतु हतु ते ज्ञानने एक समयमात्रमा जात्यातर करी जेणे भवनिवृत्तिरूप कर्यु ते कल्याणमूर्ति सम्यग्दर्शनने नमस्कार [६२५/८३९]

१०४ प्रमाद अने लोकपद्धतिमा काळ सर्वथा वृथा करवो ते मुमुक्षु जीवनु लक्षण नथी [६२५/८४२]

१०५ रूपावलोकन दृष्टिथी स्थिरता प्राप्त थये स्वरूपावलोकन दृष्टिमां पण सुगमता प्राप्त थाय छे. दर्शनमोहनो अनुभाग घटवाथी स्वरूपावलोकन दृष्टि परिणमे छे.

महत्पुरुषनो निरतर अथवा विशेष समागम, वीतरागश्रुत चिंतवना, अने गुणजिज्ञासा दर्शनमोहनो अनुभाग घटवाना मुख्य हेतु छे तेथी स्वरूपदृष्टि सहजमा परिणमे छे [६३१/८६०]

१०६ बाह्याभ्यतर असगपणु पाम्या छे एवा महात्माओने ससारनो अत समीप छे, एवो नि सदेह ज्ञानीनो निश्चय छे. [६३४/८७३]

निर्विकल्प स्थिति लाववी, आत्मस्वभावमा रमणता करवी, मात्र द्रष्टा भावे रहेवु एवो ज्ञानीनो ठाम ठाम बोध छे, ते बोध यथार्थ प्राप्त थये आ जीवनु कल्याण थाय [५६८/७४६]

९७ 'ज्ञाननु फळ विरति छे' वीतरागनु आ वचन सर्व मुमुक्षुओए नित्य स्मरणमा राखवा योग्य छे जे वाचवाथी, समजवाथी तथा विचारवाथी आत्मा विभावथी, विभावना कार्योथी अने विभावना परिणामथी उदास न थयो, विभावनो त्यागी न थयो, विभावना कार्योनो अने विभावना फळनो त्यागी न थयो, ते वाचवु, ते विचारवु अने ते समजवु अज्ञान छे विचारवृत्ति साथे त्यागवृत्ति उत्पन्न करवी ते ज विचार सफळ छे, एम कहेवानो ज्ञानीनो परमार्थ छे [५६८-६९/७४९]

९८ सर्वज्ञे कहेलु गुरुउपदेशथी आत्मानु स्वरूप जाणीने, सुप्रतीत करीने तेनु ध्यान करो

जेम जेम ध्यानविशुद्धि तेम तेम ज्ञानावरणीयनो क्षय थशे

पोतानी कल्पनाथी ते ध्यान सिद्ध थतु नथी

ज्ञानमय आत्मा जेमने परमोत्कृष्ट भावे प्राप्त थयो, अने जेमणे परद्रव्यमात्र त्याग कर्यु छे, ते देवने नमन हो! नमन हो!

जेम जेम उपशमनी वृद्धि थाय तेम तेम तप करवाथी कर्मनी घणी निर्जरा थाय [५८५/७६३]

९९ सर्वज्ञे अनुभवेलो एवो शुद्धआत्म प्राप्तिनो उपाय श्री गुरु वडे जाणीने, तेनु रहस्य ध्यानमा लईने आत्मप्राप्ति करो [५८६/७६४]

१०० यथार्थ उपकारी पुरुष प्रत्यक्षमा एकत्वभावना आत्मशुद्धिनी उत्कृष्टता करे छे [६०९/७९०]

१०१ दिगम्बर अने श्वेतावरपणु देश, काळ, अधिकारीयोगे उपकारनो हेतु छे एटले ज्या ज्ञानीए जेम उपदेश्यु तेम प्रवर्तता आत्मार्थ ज छे [६१२/८०७]

१०२ दुषमकाळनु प्रवळ राज्य वर्ते छे, तोपण अडग निश्चयथी, सत्पुरुषनी आज्ञामा वृत्तिनु अनुसधान करी जे पुरुषो अगुप्तवीर्यथी सम्यक्ज्ञान, दर्शन, चारित्रने उपासवा इच्छे छे, तेने परमशान्तिनो मार्ग हजी पण प्राप्त थवा योग्य छे [६२०/८३१]

१०३ अपार महामोहजळने अनत अतराय छता धीर रही जे पुरुष तर्या ते श्री पुरुष भगवानने नमस्कार

अनत काळथी जे ज्ञान भवहेतु थतु हतु ते ज्ञानने एक समयमात्रमा जात्यातर करी जेणे भवनिवृत्तिरूप कर्यु ते कल्याणमूर्ति सम्यग्दर्शनने नमस्कार [६२५/८३९]

१०४ प्रमाद अने लोकपद्धतिमा काळ सर्वथा वृथा करवो ते मुमुक्षु जीवनु लक्षण नथी [६२५/८४२]

१०५ रूपावलोकन दृष्टिथी स्थिरता प्राप्त थये स्वरूपावलोकन दृष्टिमा पण सुगमता प्राप्त थाय छे दर्शनमोहनो अनुभाग घटवाथी स्वरूपावलोकन दृष्टि परिणमे छे

महत्पुरुषनो निरतर अथवा विशेष समागम, वीतरागश्रुत चितवना, अने गुणजिज्ञासा दर्शनमोहनो अनुभाग घटवाना मुख्य हेतु छे तेथी स्वरूपदृष्टि सहजमा परिणमे छे [६३१/८६०]

१०६ बाह्याभ्यतर असगपणु पाम्या छे एवा महात्माओने ससारनो अंत समीप छे, एवो नि सदेह ज्ञानीनो निश्चय छे. [६३४/८७३]

१०७ परम पुरुषनी मुख्य भक्ति, उत्तरोत्तर गुणनी वृद्धि थाय एवा सद्वर्तनथी प्राप्त थाय छे चरम प्रतिपत्ति (शुद्ध आचरणनी उपासना) रूप सद्वर्तन ज्ञानीनी मुख्य आज्ञा छे, जे आज्ञा परमपुरुषनी मुख्य भक्ति छे घणा शास्त्रो अने वाक्योना अभ्यास करता पण जो ज्ञानी पुरुषनी एकेक आज्ञा जीव उपासे तो घणा शास्त्रथी थतु फळ सहजमा प्राप्त थाय छे [६३७/८८५]

१०८ जे ज्ञानीपुरुषोने देहाभिमान टळ्यु छे तेने कई करवु रह्यु नथी एम छे, तोपण तेमने सर्वसगपरित्यागादि सत्पुरुषार्थता परमपुरुषे उपकारभूत कही छे [६३९/८९५]

१०९ आ ससाररणभूमिकामा दुषमकाळरूप ग्रीष्मना उदयनो योग न वेदे एवी स्थितिनो विरल जीवो अभ्यास करे छे [६४१/८९८]

११० प्राणीमात्रनो रक्षक, बधव अने हितकारी एवो कोई उपाय होय तो ते वीतरागनो धर्म ज छे [६४२/९०३]

१११ सतजनो! जिनवरेन्द्रोए लोकादि जे स्वरूप निरूपण कर्या छे, ते आलकारिक भाषामा निरूपण छे, जे पूर्ण योगाभ्यास विना ज्ञानगोचर थवा योग्य नथी माटे तमे तमारा अपूर्ण ज्ञानने आधारे वीतरागना वाक्योनो विरोध करता नही पण योगनो अभ्यास करी पूर्णताए ते स्वरूपना ज्ञाता थवानु राखजो [६४२/९०४]

११२ निजकल्पनाए ज्ञान, दर्शन चारित्रादिनु स्वरूप गमे तेम समजी लईने अथवा निश्चयनयात्मक बोलो शीखी लईने सद्व्यवहार लोपवामा जे प्रवर्ते तेथी आत्मानु कल्याण थवु

संभवतु नथी, अथवा कल्पित व्यवहारना दुराग्रहमा रोकाई रहीने प्रवर्तता पण जीवने कल्याण थवु सभवतु नथी

[६४८/९१८]

११३ अनादिथी चपळ एवु मन स्थिर करवु प्रथम अत्यतपणे सामु थाय एमा काई आश्चर्य नथी क्रमे करीने ते मनने महात्माओए स्थिर कर्यु छे, शमाव्यु-क्षय कर्यु ए खरेखर आश्चर्यकारक छे. [६४९/९२५]

११४ चक्रवर्तीनी समस्त सपत्ति करता पण जेनो एक समयमात्र पण विशेष मूल्यवान छे एवो आ मनुष्यदेह अने परमार्थने अनुकूळ एवा सप्राप्त छता जो जन्ममरणथी रहित एवा परमपदनु ध्यान रह्यु नही तो आ मनुष्यत्वने अधिष्ठित एवा आत्माने अनंतवार धिक्कार हो। [६५२/९३५]

११५ चितन जेनाथी प्राप्त थाय ते मणिने चिंतामणि कह्यो छे, ए ज आ मनुष्यदेह छे, के ;जे देहना योगमा आत्यतिक एवा सर्व दु खना क्षयनी चिंतिता धारी तो पार पडे छे.

अचित्य जेनु माहात्म्य छे एवु सत्सगरूपी कल्पवृक्ष प्राप्त थये जीव दरिद्र रहे—एम बने तो आ जगतने विषे ते अगियारमु आश्चर्य ज छे [६५२/९३६]

११६ लोकसंज्ञा जेनी जिंदगीनो ध्रुवकाटो छे, ते जिदगी गमे तेवी श्रीमतता, सत्ता के कुटुब परिवारादि योगवाळी होय तोपण ते दु:खनो ज हेतु छे. आत्मशाति जे जिंदगीनो ध्रुवकाटो छे, ते जिंदगी गमे तो एकाकी, निर्धन अने निर्वस्त्र होय तो पण परमसमाधिनु स्थान छे. [६५८/९४९]

ज्ञानीओनो सनातन सन्मार्ग जयवत वर्तो।

१

आत्मचर्या

(१) पत्रोमाथी

१

सरस्वतीनो अवतार

[१३३/१८]

ववाणिया, मि २ ६–१–८–१९४२

मुगटमणि रवजीभाई देवराजनी पवित्र जनाबे,

ववाणिया बदरथी वि रायचद वि रवजीभाई महेताना प्रेमपूर्वक प्रणाम मान्य करशोजी अत्रे हु धर्म-प्रभाव वृत्तिथी कुशळ छु आपनी कुशळता चाहु छु आपनो दिव्य प्रेमभावभूषित पत्र मने मळ्यो, वाचीने अत्यानदार्णवतरग रेलाया छे, दिव्य प्रेम अवलोकन करीने परम स्मरण आपनु ऊपज्यु छे आवा प्रेमी पत्रो निरतर मळवा विज्ञापना छे अने ते स्वीकृत करवी आपने हस्तगत छे एटले चिता जेवु नथी आपे मागेला प्रश्नोनो उत्तर अही आगळ आपो जवानी रजा लउ छु

प्रवेशक '— आपनु लखवु उचित छे स्वस्वरूप चीतरता मनुष्य खचकाई जाय खरो परतु स्वस्वरूपमा ज्यारे आत्म-स्तुतिनो किंचित् भाग भळे त्यारे, नही तो नही ज, आम मारु मत छे आत्मस्तुतिनो सामान्य अर्थ पण आम थाय छे के पोतानी जूठी आपवडाई चीतरवी अन्यथा आत्मस्तुतिनु

उपनाम पामे छे, परतु खरु लखाण तेम पामतु नथी, अने ज्यारे खरुं स्वरूप आत्मस्तुति गणाय तो पछी महात्माओ प्रख्यातिमा आवे ज केम ? माटे स्वस्वरूपनो सत्यता किंचित् आपनी मागणी उपरथी जणावता अही आगळ में आचको खाधो नथी, अने ते प्रमाणे करता न्यायपूर्वक हु दोषित पण थयेलो नथी.

(अ) पडित लालाजी मुबई निवासीना अवधानो सबधी आपे बहुये वाच्यु हशे. एओ पडितराज अष्टावधान करे छे, ते हिदप्रसिद्ध छे

आ लखनार बावन अवधान जाहेरमा एक वखते करी चूक्यो छे, अने तेमा ते विजयवत ऊतरी शक्यो छे ते बावन अवधान ·

१ त्रण जण साथे चोपाटे रम्या जवु १

२ त्रण जण साथे गजीफे रम्या जवु १

३ एक जण साथे शेतरजे रम्या जवु १

४ झालरना पडता टकोरा गणता जवु १

५ सरवाळा, बादबाकी, गुणाकार अने भागाकार मनमा गण्या जवु ४

६ माळाना पारामा लक्ष आपी गणतरी करवी १

७. आठेक नवी समस्याओ पूर्ण करवी ८

८ सोळ नवा विषयो विवादकोए मागेला वृत्तमा अने विषयो पण मागेला — रचता जवु १६

९ ग्रीक, अग्रेजी, सस्कृत, आरबी, लॅटिन, उर्दू, गुर्जर, मरेठी, बगाळी, मरु, जाडेजी आदि सोळ भाषाना चारसें

शब्दो अनुक्रम विहीनना कर्ता कर्म सहित पाछा अनुक्रम सहित कही आपवा वच्चे बीजा काम पण कर्ये जवा १६

१० विद्यार्थीने समजाववो १

११ केटलाक अलकारना विचार २

५२

आम करेला बावन अवधाननी लखाण सबधे अही आगळ पूर्णाहुति थाय छे

आ बावन कामो एक वखते मन शक्तिमा साथे धारण करवा पडे छे वगर भणेली भाषाना विकृत अक्षरो सुकृत करवा पडे छे टूकामा आपने कही दउ छु के आ सघळु याद ज रही जाय छे (हजु सुधी कोई वार गयु नथी) आमा केटलुक मार्मिक समजवु रही जाय छे परतु दिलगीर छु के ते समजाववु प्रत्यक्षने माटे छे एटले अही आगळ चीतरवु वृथा छे आप निश्चय करो के आ एक कलाकनु केटलु कौशल्य छे? टूको हिसाब गणीए तोपण बावन श्लोक तो एक कलाकमा याद रह्या के नही? सोळ नवा, आठ समस्या, सोळ जुदी जुदी भाषाना अनुक्रम विहीनना अने वार बीजा काम मळी एक विद्वाने गणती करता मान्यु हतु के ५०० श्लोकनु स्मरण एक कलाकमा रही शके छे आ वात हवे अहीं आगळ एटलेथी ज पतावी दईए छीए

(आ) तेर महिना थया देहोपाधि अने मानसिक व्याधिना परिचयथी केटलीक शक्ति दाटी मूक्या जेवी ज थई गई छे

(बावन जेवा सो अवधान तो हजु पण थई शके छे) नही तो आप गमे ते भाषाना सो श्लोको एक वखत बोली जाओ तो ते पाछा तेवी ज रीते यादीमा राखी बोली देखाडवानी समर्थता आ लखनारमा हती अने ते माटे तथा अवधानोने माटे 'सरस्वतीनो अवतार' एवु उपनाम आ मनुष्यने मळेलु छे अवधान ए आत्मशक्तिनु कर्तव्य मने स्वानुभवथी जणायु छे आपनो प्रश्न आवो छे के "एक कलाकमा सो श्लोक स्मरणभूत रही शके ?" त्यारे तेनो मार्मिक खुलासो उपरना विषयो करशे, एम जाणी अही आगळ जगा रोकी नथी आश्चर्य, आनद अने सदेहमाथी हवे जे आपने योग्य लागे ते ग्रहण करो

(इ) मारी शी शक्ति छे ? कई ज नथी आपनी शक्ति अद्‌भुत छे आप मारे माटे आश्चर्य पामो छो, तेम हु आपने माटे आनद पामु छु

आप काशीक्षेत्र तरफ सरस्वती साध्य करवा पधारनार छो आम वाचीने अत्यानदमा हु कुशळ थयो छु॰ वारु ! आप न्याय शास्त्र कयु कहो छो ? गौतम मुनिनु के मनुस्मृति, हिंदुधर्म शास्त्र, मिताक्षरा, व्यवहार, मयूख आदि प्राचीन न्यायग्रथो के हमणानु ब्रिटिश लॉ प्रकरण ? आनो खुलासो हु नथी समज्यो मुनिनु न्यायशास्त्र मुक्ति प्रकरणमा जाय तेम छे बीजा ग्रथो राज्य प्रकरणमा — "ब्रिटिशमा माठा" जाय छे, त्रीजा खास ब्रिटिशने ज माटे छे, परतु ते अग्रेजी त्यारे हवे एमाथी आपे कोने पसद कर्यु छे ? ते मर्म खुल्लो थवो जोईए मुनिशास्त्र अने प्राचीन शास्त्र सिवाय जो गण्यु होय

तो ए अभ्यास काशीनो नथी परंतु मॅट्रिक्युलेशन पसार थया पछी मुबई–पूनानो छे, बीजा शास्त्रो समयानुकूळ नथी. आ आपनो विचार जाण्या विना ज वेतर्युं छे परतु वेतरवामा पण एक कारण छे शु ? तो आपे साथे अग्रेजी विद्याभ्यासनु लख्यु छे ते, हु धारू छु के एमा कई आप भूलथाप खाता हशो मुबई करता काशी तरफ अग्रेजी अभ्यास कई उत्कृष्ट नथी, ज्यारे उत्कृष्ट न होय त्यारे आघु पगलु भरवानो हेतु बीजो हशे, आप चीतरो त्यारे दर्शित थाय त्या सुधी शकाग्रस्त छु

१ मने अभ्यास सबधी पूछ्यु छे, तेमा खुलासो जे देवानो छे, ते उपरनी कलमनी समजण फेर सुधी दई शकतो नथी, अने जे खुलासो हु आपवानो छु ते दलीलोथी आपीश.

ज्ञानवर्धक सभाना तत्रीनो उपकार मानु छु, एओ आ अनुचरने माटे तस्दी ले छे ते माटे

आ सघळा खुलासा टूकामा पताव्या छे विशेष जोईए तो मागो

२

मारो धर्म

[१६९/३७]

मुबई बंदर, आसो वद २, गुरु, १९४४

पार्श्वनाथ परमात्माने नमस्कार

प्रिय भाई सत्याभिलाषी उजमसी,

राजनगर

तमारु हस्तलिखित शुभपत्र मने काले सायकाले मल्यु तमारी तत्त्व जिज्ञासा माटे विशेष सतोष थयो.

जगतने रुडु देखाडवा अनतवार प्रयत्न कर्यु, तेथी रुडु थयु नथी केमके परिभ्रमण अने परिभ्रमणना हेतुओ हजु प्रत्यक्ष रह्या छे एक भव जो आत्मानु रुडु थाय तेम व्यतीत करवामा जशे, तो अनतभवनु साटु वळी रहेशे, एम हु लघुत्वभावे समज्यो छु, अने तेम करवामा ज मारी प्रवृत्ति छे आ महाबधनथी रहित थवामा जे जे साधन, पदार्थ श्रेष्ठ लागे, ते ग्रहवा ए ज मान्यता छे, तो पछी ते माटे जगतनी अनुकूळता-प्रतिकूळता शु जोवी ? ते गमे तेम बोले पण आत्मा जो बधनरहित थतो होय, समाधिमय दशा पामतो होय तो तेम करी लेवु एटले कीर्त्तिअपकीर्त्तिथी सर्वकाळने माटे रहित थई शकाशे

अत्यारे ए वगेरे एमना पक्षना लोकोना जे विचारो मारे माटे प्रवर्ते छे, ते मने ध्यानमा स्मृत छे, पण विस्मृत करवा ए ज श्रेयस्कर छे तमे निर्भय रहेजो मारे माटे कोई कई कहे ते साभळी मौन रहेजो, तेओने माटे कई शोक-हर्ष करशो नही जे पुरुष पर तमारो प्रशस्त राग छे, तेना ईष्टदेव परमात्मा जिन, महायोगीद्र पार्श्वनाथादिकनु स्मरण राखजो अने जेम बने तेम निर्मोही थई मुक्त दशाने इच्छजो. जीवितव्य के जीवनपूर्णता सबधी कंई सकल्प-विकल्प करशो नही उपयोग शुद्ध करवा आ जगतना सकल्प विकल्पने भूली जजो, पार्श्व-नाथादिक योगीश्वरनी दशानी स्मृति करजो, अने ते ज अभिलाषा राख्या रहेजो, ए ज तमने पुन पुन आशीर्वादपूर्वक मारी शिक्षा छे आ अल्पज्ञ आत्मा पण ते पदनो अभिलाषी अने ते पुरुषना चरणकमळमा तल्लीन थयेलो दीन शिष्य छे तमने तेवी श्रद्धानी ज शिक्षा दे छे वीरस्वामीनु बोधेलु द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने

भावथी सर्वस्वरूप यथातथ्य छे, ए भूलशो नही तेनी शिक्षानी कोई पण प्रकारे विराधना थई होय, ते माटे पश्चात्ताप करजो. आ काळनी अपेक्षाए मन, वचन, काया आत्मभावे तेना खोळामा अर्पण करो, ए ज मोक्षनो मार्ग छे जगतना सघळा दर्शननी —मतनी श्रद्धाने भूली जजो, जैन सवधी सर्व ख्याल भूली जजो, मात्र ते सत्पुरुषोना अद्‌भुत, योगस्फुरित चरित्रमा ज उपयोगने प्रेरशो

आ तमारा मानेला 'मुरब्बी' माटे कोई पण प्रकारे हर्ष-शोक करशो नही, तेनी इच्छा मात्र सकल्प–विकल्पथी रहित थवानी ज छे, तेने अने आ विचित्र जगतने कई लागतुवळगतु के लेवादेवा नथी एटले तेमाथी तेने माटे गमे ते विचारो वधाय के बोलाय, ते भणी हवे जवा इच्छा नथी जगतमाथी जे परमाणु पूर्वकाळे भेळा कर्या छे ते हळवे हळवे तेने आपी दई ऋणमुक्त थवु, ए ज तेनी सदा सउपयोगी, वहाली, श्रेष्ठ अने परम जिज्ञासा छे, बाकी तेने कई आवडतु नथी, ते बीजु कई इच्छतो नथी, पूर्वकर्मना आधारे तेनु सघळु विचरवु छे, एम समजी परम सतोष राखजो, आ वात गुप्त राखजो केम आपणे मानीए छीए, अथवा केम वर्तीए छीए ते जगतने देखाडवानी जरूर नथी, पण आत्माने आटलु ज पूछवानी जरूर छे, के जो मुक्तिने इच्छे छे तो सकल्प-विकल्प, राग-द्वेषने मूक अने ते मूकवामा तने कई बाधा होय तो ते कहे ते तेनी मेळे मानी जशे अने ते तेनी मेळे मूकी देशे

ज्या त्याथी राग-द्वेष रहित थवु ए ज मारो धर्म छे, अने ते तमने अत्यारे बोधी जउ छु परस्पर मळीशु त्यारे

हवे तमने कई पण आत्मत्व साधना वतावाशे तो वतावीश बाकी धर्ममें उपर कह्यो ते ज छे अने ते ज उपयोग राखजो. उपयोग ए ज साधना छे विशेप साधना ते मात्र सत्पुरुषना चरणकमळ छे, ते पण कही जउ छु.

आत्मभावमा सघळु राखजो, धर्मध्यानमा उपयोग राखजो, जगतना कोई पण पदार्थ, सगा, कुटुवी मित्रनो कई हर्प-शोक करवो योग्य ज नथी परमशातिपदने इच्छीए ए ज आपणो सर्वसम्मतधर्म छे अने ए ज इच्छामा ने इच्छामा ते मळी जशे, माटे निश्चित रहो हु कोई गच्छमा नथी, पण आत्मामा छु, ए भूलशो नही

देह जेनो धर्मोपयोग माटे छे, ते देह राखवा जे प्रयत्न करे छे, ते पण धर्मने माटे ज छे

वि० रायचद्र

३

लघुवये तत्त्वज्ञानी

[१९५/७७]

वि स १९४५

"सुखकी सहेली हे, अकेली उदासीनता"
अध्यात्मनी जननी ते उदासीनता

लघु वयथी अद्भुत थयो, तत्त्वज्ञाननो बोध,
ए ज सूचवे एम के, गति आगति का शोध? १
जे सस्कार थवो घटे, अति अभ्यासे काय,
विना परिश्रम ते थयो, भवशका शी त्याय? २

जेम जेम मति अल्पता, अने मोह उद्योत,
तेम तेम भवशकना, अपात्र अंतर ज्योत. ३
करी कल्पना दृढ करे, नाना नास्ति विचार,
पण अस्ति ते सूचवे, ए ज खरो निर्धार ४
आ भव वण भव छे नही, ए ज तर्क अनुकूळ,
विचारता पामी गया, आत्मधर्मनु मूळ. ५

४

दर्शन परिषह

[१९७/८२]

वि स १९४५

दुखिया मनुष्योनु प्रदर्शन करवामा आव्यु होय तो खचोत तेना शिरोभागमा हु आवी शकु, आ मारा वचनो वाचीने कोई विचारमा पडी जई, भिन्न भिन्न कल्पनाओ करशे अने का तो भ्रम गणी वाळशे, पण तेनु समाधान अही ज टपकावी दउ छु. तमे मने स्त्री सबधी कई दु ख लेखशो नही, लक्ष्मी सबधी दु ख लेखशो नही, पुत्र सबधी लेखशो नही, कीर्त्ति सबधी लेखशो नही, भय संबंधी लेखशो नही, काया सबधी लेखशो नही, अथवा सर्वथी लेखशो नही, मने दु ख बीजी रीतनु छे ते दरद वातनु नथी, कफनु नथी के पित्तनु नथी, ते शरीरनु नथी, वचननु नथी के मननु नथी गणो तो बधायनु छे अने न गणो तो एक्केनु नथी, परतु मारी विज्ञापना ते नही गणवा माटे छे, कारण एमा कोई ओर मर्म रह्यो छे तमे जरूर मानजो, के हु विना–दिवानापणे आ कलम चलावु छु. राजचद्र नामथी ओळखातो ववाणिया

नामना नाना गामनो, लक्ष्मीमा साधारण एवो पण आर्य तरीके ओळखाता दशाश्रीमाळी — वैश्यनो पुत्र गणाउ छु आ देहमा मुख्ये बे भव कर्या छे, अमुख्यनो हिसाव नथी नानपणनी नानी समजणमा कोण जाणे क्याथीये मोटी कल्पनाओ आवती सुखनो जिज्ञासा पण ओछी नहोती अने सुखमा पण महालय, बागबगीचा, लाडीवाडीना कईक मान्या हता, मोटी कल्पना ते आ बधु शु छे? तेनी हती ते कल्पनानु एक वार एवु रूप दीठु के, पुनर्जन्मे नथी, पापे नथी, पुण्ये नथी, सुखे रहेवु अने ससार भोगववो ए ज कृतकृत्यता छे एमाथी बीजी पचातमा नही पडता, धर्मनी वासनाओ काढी नाखी कोई धर्म माटे न्यूनाधिक के श्रद्धाभावपणु रह्यु नही थोडो वखत गया पछी एमाथी ओर ज थयु जे थवानु में कल्प्यु नहोतु, तेम ते माटे मारा ख्यालमा होय एवु कई मारु प्रयत्न पण नहोतु, छता अचानक फेरफार थयो, कोई ओर अनुभव थयो, अने जे अनुभव प्राये शास्त्रमा लेखित न होय, जडवादीओनी कल्पनामा पण नथी, तेवो हतो. ते क्रमे करीने वध्यो, वधीने अत्यारे एक 'तुहि तुहि' नो जाप करे छे हवे अही समाधान थई जशे आगळ जे मळ्या नही होय, अथवा भयादिक हशे, तेथी दुख हशे तेवु कई नथी, एम खचीत समजाशे स्त्री सिवाय बीजो कोई पदार्थ खास करीने मने रोकी शकतो नथी बीजा कोई पण ससारी साधने मारी प्रीति मेळवी नथी, तेम कोई भये मने बहुलताए घेर्यो नथी. स्त्रीना सबधमा जिज्ञासा ओर छे अने वर्तना ओर छे एक पक्षे तेनु केटलाक काळ सुधी सेवन करवु सम्मत कर्यु छे तथापि त्या सामान्य

प्रीति–अप्रीति छे पण दु ख ए छे के जिज्ञासा नथी छता पूर्व कर्म का घेरे छे? एटलेथी पततु नथी, पण तेने लीधे नही गमता पदार्थोने जोवा, सूघवा, स्पर्शवा पडे छे अने ए ज कारणथी प्राये उपाधिमा वेसवु पडे छे

महारभ, महापरिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ के एवु तेवु जगतमा कई ज नथी एम विस्मरणध्यान करवाथी परमानद रहे छे तेने उपरना कारणोथी परमानद रहे छे तेने उपरना कारणोथी जोवा पडे छे. ए महा खेद छे. अतरग-चर्या पण कोई स्थळे खोली शकाती नथी एवा पात्रोनी दुर्लभता मने थई पडी ए ज महा दु खमता कहो.

५

तत्त्वज्ञाननी ऊंडी गुफा

[१९८/८३]

वि स १९४५

अत्र कुशळता छे, आपना तरफनी इच्छु छु आजे आपनु जिज्ञासु पत्र मळ्यु. ते जिज्ञासु पत्रना उत्तर बदल जे पत्र मोकलवु जोईए ते पत्र आ छे —

आ पत्रमा गृहाश्रमसबधी मारा केटलाक विचारो आपनी समीप मूकु छु ए मूकवानो हेतु मात्र एटलो ज छे के, कोई पण प्रकारना उत्तम क्रममा आपनु जीवन–वलण थाय, अने ते क्रम ज्यारथी आरभवो जोईए ते काळ हमणा ज आपनी पासे आरभायो छे, एटले ते क्रम जणाववानो उचित समय छे, तेम जणावेला क्रमना विचारो घणा सस्कारिक

होईने पत्र वाटे नीकळ्या छे, आपने तेम ज कोई पण आत्मोन्नति वा प्रशस्त क्रमने इच्छनारने ते खचीत वधारे उपयोगी थई पडशे एम मान्यता छे

तत्त्वज्ञाननी ऊडी गुफानु दर्शन करवा जईए तो, त्या नेपथ्यमाथी एवो ज ध्वनि नीकळशे के, तमे कोण छो ? क्याथी आव्या छो ? केम आव्या छो ? तमारी समीप आ सघळु शु छे ? तमारी तमने प्रतीति छे ? तमे विनाशी, अविनाशी वा कोई त्रिराशी छो ? एवा अनेक प्रश्नो हृदयमा ते ध्वनि प्रवेश करशे, अने ए प्रश्नोथी ज्या आत्मा घेरायो त्या पछी बीजा विचारोने बहु ज थोडो अवकाश रहेशे, यदि ए विचारोथी ज छेवटे सिद्धि छे, ए ज विचारोना विवेकथी जे अव्याबाध सुखनी इच्छा छे, तेनी प्राप्ति थाय छे, ए ज विचारोना मननथी अनत काळनु मूझन टळवानु छे, तथापि ते सर्वने माटे नथी वास्तविक दृष्टिथी जोता तेने छेवट सुधी पामनारा पात्रोनी न्यूनता बहु छे, काळ फरी गयो छे, ए वस्तुनो अधीराई अथवा अशौचताथी अत लेवा जता झेर नीकळे छे, अने भाग्यहीन अपात्र बन्ने लोकथी भ्रष्ट थाय छे, एटला माटे अमुक सतोने अपवादरूप मानी बाकीनाओने ते क्रममा आववा, ते गुफानु दर्शन करवा घणा वखत सुधी अभ्यासनी जरूर छे, कदापि ते गुफादर्शननी तेनी इच्छा न होय तोपण पोताना आ भवना सुखने अर्थे पण जन्म्या तथा मूआनी वच्चेनो भाग कोई रीते गाळवा माटे पण ए अभ्यासनी खचीत जरूर छे ए कथन अनुभवगम्य छे, घणाने ते अनुभवमा आव्यु छे घणा आर्य सत्पुरुषो ते माटे विचार करी गया छे, तेओए ते पर अधिकाधिक मनन

कर्यु छे आत्माने शोधी, तेना अपार मार्गमाथी थयेली प्राप्तिना घणाने भाग्यशाळी थवाने माटे, अनेक क्रम बाध्या छे, ते महात्मा जयवान हो। अने तेने त्रिकाळ नमस्कार हो।

आपणे थोडी वार तत्त्वज्ञाननी गुफानी विस्मरणा करी, आर्योंए बोधेला अनेक क्रम पर आववा माटे परायण थीए, ते समयमा जणावी जवु योग्य ज छे के, पूर्णाह्लादकर जेने मान्यु छे, परम सुखकर, हितकर, अने हृदयमय जेने मानेल छे, तेम छे, अनुभवगम्य छे, ते तो ते ज गुफानो निवास छे, अने निरतर तेनी ज जिज्ञासा छे अत्यारे कई ते जिज्ञासा पूर्ण थवाना चिह्न नथी, तोपण क्रमे, एमा आ लेखनो पण जय थशे एवी तेनी खचीत शुभाकाक्षा छे, अने तेम अनुभवगम्य पण छे अत्यारथी ज जो योग्य रीते ते क्रमनी प्राप्ति होय तो, आ पत्र लखवा जेटली खोटी करवा इच्छा नथी, परतु काळनी कठिनता छे, भाग्यनी मदता छे, सतोनी कृपादृष्टि दृष्टिगोचर नथी, सत्सगनी खामी छे, त्या कई ज —

तोपण ते क्रमनु बीज हृदयमा अवश्य रोपायु छे, अने ए ज सुखकर थयु छे सृष्टिना राजथी जे सुख मळवा आशा नहोती, तेम ज कोई पण रीते गमे तेवा औषधथी, साधनथी, स्त्रीथी, पुत्रथी, मित्रथी के बीजा अनेक उपचारथी जे अतर्शाति थवानी नहोती ते थई छे निरतरनी — भविष्यकाळनी — भीति गई छे अने एक साधारण उपजीवनमा प्रवर्ततो एवो आ तमारो मित्र एने ज लईने जीवे छे, नही तो जीववानी खचीत शका ज हती, विशेष शु कहेवु ? आ भ्रमणा नथी, वहेम नथी, खचीत सत्य ज छे ए त्रिकाळमा

एक ज परमप्रिय अने जीवनवस्तुनी प्राप्ति, तेनु बीजारोपण केम वा केवा प्रकारथी थयु ए व्याख्यानो प्रसग अही नथी, परतु खचीत ए ज मने त्रिकाळ सम्मत हो। एटलु ज कहेवानो प्रसग छे, कारण लेखसमय बहु टूको छे

ए प्रियजीवन सर्व पामी जाय, सर्व एने योग्य होय, सर्वने ए प्रिय लागे, सर्वने एमा रुचि थाय, एवु भूतकाळे बन्यु नथी, वर्तमानकाळे बनतु नथी, अने भविष्यकाळे पण बनवु असंभवित छे, अने ए ज कारणथी आ जगतनी विचित्रता त्रिकाळ छे

मनुष्य सिवायनी प्राणीनी बीजी जाति जोईए छीए, तेमा तो ए वस्तुनो विवेक जणातो नथी, हवे जे मनुष्य रह्या, ते सर्व मनुष्यमा पण तेम देखी शकशो नही

[अपूर्ण]

६

समुच्चयवयचर्या

[२०३/८९]

मुबई, कारतक सुद १५, १९४६

सवत १९२४ना कार्तिक सुदि १५, रविए मारो जन्म होवाथी आजे मने सामान्य गणतरीथी बावीस वर्ष पूरा थया बावीस वर्षनी अल्प वयमा में अनेक रग आत्मा सबधमा, मन सबधमा, वचन सबधमा, तन सबधमा अने धन सबधमा दीठा छे नाना प्रकारनी सृष्टिरचना, नाना प्रकारना ससारी मोजा, अनतदु खनु मूळ, ए बधानो अनेक प्रकारे मने अनुभव थयो छे समर्थ तत्त्वज्ञानीओए अने समर्थ

नास्तिकोए जे जे विचारो कर्या छे ते जातिना अनेक विचारो ते अल्प वयमा मे करेला छे महान चक्रवर्तीए करेला तृष्णाना विचार अने एक नि स्पृही महात्माए करेला निस्पृहाना विचार मे कर्या छे अमरत्वनी सिद्धि अने क्षणिकत्वनी सिद्धि खूब विचारी छे अल्प वयमा महत विचारो करी नाख्या छे महत विचित्रतानी प्राप्ति थई छे ए सघळु बहु गभीरभावथी आजे हु दृष्टि दई जोउ छु तो प्रथमनी मारी ऊगती विचारश्रेणी, आत्मदशा अने आजने आकाशपाताळनु अतर छे, तेनो छेडो अने आनो छेडो कोई काळे जाणे मळ्यो मळे तेम नथी पण शोच करशो के एटली वधी विचित्रतानु कोई स्थळे लेखन-चित्रन कर्यु छे के कई नही? तो त्या एटलु ज कही शकीश के लेखन-चित्रन सघळु स्मृतिना चित्रपटमा छे बाकी पत्र-लेखिनीनो समागम करी जगतमा दर्शाववानु प्रयत्न कर्युं नथी यदि हु एम समजी शकु छु के ते वयचर्या जनसमूहने बहु उपयोगी, पुन पुन मनन करवा योग्य, अने परिणामे तेओ भणीथी मने श्रेयनी प्राप्ति थाय तेवी छे, पण मारी स्मृतिए ते परिश्रम लेवानी मने चोख्खी ना कही हती, एटले निरूपायताथी क्षमा इच्छी लउ छु पारिणामिक विचारथी ते स्मृतिनी इच्छाने दबावी ते ज स्मृतिने समजावी, ते वयचर्या धीरे धीरे बनशे तो, अवश्य धवळ-पत्र पर मूकीश, तोपण समुच्चयवयचर्या सभारी जउ छु —

सात वर्ष सुधी एकात बाळवयनी रमतगमत सेवी हती एटलु मने ते वेळा माटे स्मृतिमा छे के विचित्र कल्पना — कल्पनानु स्वरूप के हेतु समज्या वगर — मारा आत्मामा

थया करती हती रमतगमतमा पण विजय मेळववानी अने राजेश्वर जेवी ऊची पदवी मेळववानी परम जिज्ञासा हती. वस्त्र पहेरवानी, स्वच्छ राखवानी, खावापीवानी, सूवावेसवानी, बधी विदेही दशा हती, छता हाड गरीब हतु ए दशा हजु बहु साभरे छे अत्यारनु विवेकी ज्ञान ते वयमा होत तो मने मोक्ष माटे झाझी जिज्ञासा रहेत नही एवी निरपराधी दशा होवाथी पुन पुन ते साभरे छे

सात वर्षथी अगियार वर्ष सुधीनो काळ केळवणी लेवामा हतो आजे मारी स्मृति जेटली ख्याति भोगवे छे, तेटली ख्याति भोगववाथी ते कईक अपराधी थई छे, पण ते काळे निरपराधी स्मृति होवाथी एक ज वार पाठनु अवलोकन करवु पडतु हतु, छता ख्यातिनो हेतु नहोतो, एटले उपाधि बहु ओछी हती स्मृति एवी बळवत्तर हती के जेवी स्मृति बहु थोडा ज मनुष्योमा आ काळे, आ क्षेत्रे हशे अभ्यासमा प्रमादी बहु हतो वातडाह्यो, रमतियाळ अने आनंदी हतो पाठ मात्र शिक्षक वचावे ते ज वेळा वाची तेनो भावार्थ कही जतो ए भणीनी निश्चितता हती ते वेळा प्रीति — सरळ वात्सल्यता — मारामा बहु हती, सर्वथी एकत्व इच्छतो, सर्वमा भ्रातृभाव होय तो ज सुख, ए मने स्वाभाविक आवड्यु हतु लोकोमा कोई पण प्रकारथी जुदाईना अकुरो जोतो के मारु अत करण रडी पडतु ते वेळा कल्पित वातो करवानी मने बहु टेव हती आठमा वर्षमा मे कविता करी हती, जे पाछळथी तपासता समाप हती

अभ्यास एटली त्वराथी करी शक्यो हतो के जे माणसे मने प्रथम पुस्तकनो बोध देवो शरू कर्यो हतो, तेने ज गुजराती केळवणी ठीक पामीने ते ज चोपडीनो पाछो मे बोध कर्यो हतो त्यारे केटलाक काव्यग्रथो मे वाच्या हता तेम ज अनेक प्रकारना बोधग्रथो — नाना — आडाअवळा मे जोया हता, जे प्राये हजु स्मृतिमा रह्या छे त्या सुधी माराथी स्वाभाविक रीते भद्रिकपणु ज सेवायु हतु, हु माणस जातनो बहु विश्वासु हतो, स्वाभाविक सृष्टिरचना पर मने बहु प्रीति हती

मारा पितामह कृष्णनी भक्ति करता हता तेमनी पासे ते वयमा कृष्णकीर्तनना पदो मे साभळ्या हता, तेम ज जुदा जुदा अवतारो सबधी चमत्कारो साभळ्या हता, जेथी मने भक्तिनी साथे ते अवतारोमा प्रीति थई हती, अने रामदासजी नामना साधुनी समीपे मे बाळलीलामा कठी बधावी हती, नित्य कृष्णना दर्शन करवा जतो, वखतोवखत कथाओ साभळतो, वारवार अवतारो सबधी चमत्कारमा हु मोह पामतो अने तेने परमात्मा मानतो, जेथी तेनु रहेवानु स्थळ जोवानी परम जिज्ञासा हती तेना सप्रदायना महत होईए, स्थळे स्थळे चमत्कारथी हरिकथा करता होईए अने त्यागी होईए तो केटली मजा पडे? ए ज विकल्पना थया करती, तेम ज कोई वैभवी भूमिका जोतो के समर्थ वैभवी थवानी इच्छा थती, 'प्रवीणसागर' नामनो ग्रथ तेवामा मे वाच्यो हतो, ते वधारे समज्यो नहोतो, छता स्त्री सबधी नाना प्रकारना सुखमा लीन होईए अने निरुपाधिपणे कथाकथन श्रवण करता

होईए तो केवी आनददायक दशा, ए मारी तृष्णा हती, गुजराती भाषानी वाचनमाळामा जगतकर्ता सबधी केटलेक स्थळे बोध कर्यो छे ते मने दृढ थई गयो हतो, जेथी जैन लोको भणी मारी बहु जुगुप्सा हती, बनाव्या वगर कोई पदार्थ बने नही माटे जैन लोको मूर्ख छे, तेने खबर नथी तेम ज ते वेळा प्रतिमाना अश्रद्धाळु लोकोनी क्रिया मारा जोवामा आवती हती, जेथी ते क्रियाओ मलिन लागवाथी हु तेथी बीतो हतो, एटले के ते मने प्रिय नहोती

जन्मभूमिकामा जेटला वाणियाओ रहे छे, ते बधानी कुळश्रद्धा भिन्न भिन्न छता कईक प्रतिमाना अश्रद्धाळुने ज लगती हती, एथी मने ते लोकोनो ज पानारो हतो पहेलेथी समर्थ शक्तिवाळो अने गामनो नामाकित विद्यार्थी लोको मने गणता, तेथी मारी प्रशसाने लीधे चाहीने तेवा मंडळमा बेसी मारी चपळशक्ति दर्शाववा हु प्रयत्न करतो. कठीने माटे वारवार तेओ मारी हास्यपूर्वक टीका करता, छता हु तेओथी वाद करतो अने समजण पाडवा प्रयत्न करतो पण हळवे हळवे मने तेमना प्रतिक्रमणसूत्र इत्यादिक पुस्तको वाचवा मळ्या, तेमा बहु विनयपूर्वक सर्व जगतजीवथी मित्रता इच्छी छे तेथी मारी प्रीति तेमा पण थई अने पेलामा पण रही हळवे हळवे आ प्रसंग वध्यो छता स्वच्छ रहेवाना तेम ज बीजा आचारविचार मने वैष्णवना प्रिय हता अने जगतकर्तानी श्रद्धा हती तेवामा कठी तूटी गई, एटले फरीथी मे बाधो नही ते वेळा बाधवा न बाधवानु कई कारण मे शोध्यु नहोतु आ मारी तेर वर्षनी वयनी चर्या

छे पछी हु मारा पितानी दुकाने बेसतो अने मारा अक्षरनी छटाथी कच्छ दरबारने उतारे मने लखवा माटे बोलावता त्यारे हु त्या जतो दुकाने में नाना प्रकारनी लीलालहेर करी छे अनेक पुस्तको वाच्या छे, राम इत्यादिकना चरित्रो पर कविताओ रची छे, ससारी तृष्णाओ करी छे, छता कोईने में ओछोअधिको भाव कह्यो नथी, के कोईने मे ओछुअधिकु तोळी दीधु नथी, ए मने चोक्कस साभरे छे

७

पवित्र दर्शन

[२०६/९१]

मुबई, कारतक, १९४६

ते पवित्र दर्शन थया पछी गमे ते वर्तन हो, परतु तेने तीव्र बधन नथी, अनत ससार नथी, सोळ भव नथी, अभ्यतर दु:ख नथी, शकानु निमित्त नथी, अतरग मोहिनी नथी, सत् सत् निरुपम, सर्वोत्तम, शुक्ल, शीतळ, अमृतमय दर्शनज्ञान; सम्यक् ज्योतिर्मय, चिरकाळ आनदनी प्राप्ति, अद्‌भुत सत्स्वरूप-दर्शितानी बलिहारी छे।

ज्या मतभेद नथी, ज्या शका, कखा, वितिगिच्छा, मूढदृष्टि एमानु काई नथी. छे ते कलम लखी शकती नथी, कथन कही शकतु नथी, मन जेने मनन करी शकतु नथी

छे ते

८

सम्यक्त्व

[२०७/९५]

मुबई, पोष, १९४६

आवा प्रकारे तारो समागम मने शा माटे थयो? क्या तारु गुप्त रहेवु थयु हतु?

सर्वं गुणाश ते सम्यक्त्व

९

विवेक

[२१५/११२]

मुबई, चैत्र, १९४६

मोहाच्छादित दशाथी विवेक न थाय ए खरुं. नही तो वस्तुगते ए विवेक खरो छे

घणु ज सूक्ष्म अवलोकन राखो

१ सत्यने तो सत्य ज रहेवा देवु

२. करी शको तेटलु कहो. अशक्यता न छुपावो

३. एकनिष्ठित रहो.

गमे ते कोई प्रशस्त क्रममा एकनिष्ठित रहो.

वीतरागे खरु कह्यु छे

अरे आत्मा! स्थितिस्थापक दशा ले.

आ दुख क्या कहेवु? अने शाथी टाळवु?

पोते पोतानो वैरी, ते आ केवी खरी वात छे!

१०

समाधिचर्यानी भीष्म प्रतिज्ञा

[२१५/११३]

मुबई, वैशाख वद १२, १९४६

*   *   *   *

तत्त्वज्ञाननी गुप्त गुफाना दर्शन लेता गृहाश्रमथी विरक्त थवानु अधिकतर सूझे छे, अने खचीत ते तत्त्वज्ञाननो विवेक पण आने ऊग्यो हतो, काळना बळवत्तर अनिष्टपणाने लीधे तेने यथायोग्य समाधिसगनी अप्राप्तिने लीधे ते विवेकने महाखेदनी साथे गौण करवो पड्यो, अने खरे! जो तेम न थई शक्यु होत तो तेना (आ पत्रलेखकना) जीवननो अत आवत.

जे विवेकने महाखेदनी साथे गौण करवो पडयो छे, ते विवेकमा ज चित्तवृत्ति प्रसन्न रह्या जाय छे, वाह्य तेनी प्राधान्यता नथी राखी शकाती ए माटे अकथ्य खेद थाय छे तथापि ज्या निरुपायता छे, त्या सहनता सुखदायक छे, एम मान्यता होवाथी मौनता छे

कोई कोई वार सगीओ अने प्रसगीओ तुच्छ निमित्त थई पडे छे, ते वेळा ते विवेक पर कोई जातिनु आवरण आवे छे, त्यारे आत्मा बहु ज मूझाय छे जीवनरहित थवानी, देहत्याग करवानी दु खस्थिति करता ते वेळा भयंकर स्थिति थई पडे छे, पण एवु झाझो वखत रहेतु नथी, अने एम ज्यारे रहेशे त्यारे खचीत देहत्याग करीश पण असमाधिथी नही प्रवर्तु एवो अत्यार सुधीनी प्रतिज्ञा कायम चाली आवी छे

११

आनंदना आवरणमां

[२२०/१२६]

ववाणिया, प्र० भाद्र सुद ३, सोम, १९४६

* * * *

ज्ञानीओए कल्पेलो खरेखरो आ कळिकाळ ज छे जनसमुदायनी वृत्तिओ विषयकषायादिकथी विषमताने पामी छे एनु बळवत्तरपणु प्रत्यक्ष छे. राजसीवृत्तिनु अनुकरण तेमने प्रिय थयु छे तात्पर्य विवेकीओनी अने यथायोग्य उपशमपात्रनी छाया पण मळती नथी एवा विषमकाळमा जन्मेलो आ देहधारी आत्मा अनादिकाळना परिभ्रमणना थाकथी विश्राति लेवा आवता अविश्राति पामी सपडायो छे मानसिक चिता क्याय कही शकाती नथी कहेवाना पात्रोनी पण खामी छे, त्या हवे शु करवु? जो के यथायोग्य उपशमभावने पामेलो आत्मा ससार अने मोक्ष पर समवृत्तिवाळो होय छे एटले अप्रतिबद्धपणे विचरी शके छे, पण आ आत्माने तो हजु ते दशा प्राप्त थई नथी. तेनो अभ्यास छे त्या तेने पडखे आ प्रवृत्ति शा माटे ऊभी हशे?

जेनी निरुपायता छे तेनी सहनशीलता सुखदायक छे अने एम ज प्रवर्तन छे, परतु जीवन पूर्ण थता पहेला यथायोग्यपणे नीचेनी दशा आववी जोईए

१ मन, वचन अने कायाथी आत्मानो मुक्तभाव
२ मननु उदासीनपणे प्रवर्तन
३ वचननु स्याद्वादपणु (निराग्रहपणु)
४ कायानी वृक्षदशा (आहार–विहारनी नियमितता).

अथवा सर्व संदेहनो निवृत्ति, सर्व भयनु छूटवु, अने सर्व अज्ञाननो नाश

अनेक प्रकारे संतोए शास्त्र वाटे तेनो मार्ग कह्यो छे, साधनो बताव्या छे, योगादिकथी थयेलो पोतानो अनुभव कह्यो छे, तथापि तेथी यथायोग्य उपशमभाव आववो दुर्लभ छे ते मार्ग छे, परतु उपादाननी बळवान स्थिति जोईए उपादाननी बळवान स्थिति थवा निरतर सत्सग जोईए, ते नथी

शिशुवयमाथी ज ए वृत्ति ऊगवाथी कोई प्रकारनो परभाषाभ्यास न थई शक्यो अमुक सप्रदायथी शास्त्राभ्यास न थई शक्यो ससारना बधनथी ईहापोहाभ्यास पण न थई शक्यो, अने ते न थई शक्यो तेने माटे कई बीजी विचारणा नथी एथी आत्मा अधिक विकल्पी थात (सर्वने माटे विकल्पीपणु नही, पण एक हु पोतानी अपेक्षाए कहु छु) अने विकल्पादिक क्लेशनो तो नाश ज करवो इच्छयो हतो, एटले जे थयु ते कल्याणकारक ज, पण हवे श्रीरामने जेम महानुभाव वसिष्ठ भगवाने आ ज दोषनु विस्मरण कराव्यु हतु तेम कोण करावे? अर्थात् शास्त्रनो भाषाभ्यास विना पण घणो परिचय थयो छे, धर्मना व्यावहारिक ज्ञाताओनो पण परिचय थयो छे, तथापि आ आत्मानु आनदावरण एथी टळे एम नथी, मात्र सत्सग सिवाय, योगसमाधि सिवाय त्या केम करवु? आटलु पण दर्शाववानु कोई सत्पात्र स्थळ नहोतु. भाग्योदये आप मळ्या के जेने ए ज रोमे रोमे रुचिकर छे.

१२
अंतरंग चेष्टा

[२२४/१३३]

ववाणिया, बीजा भादरवा सुद २, भोम, १९४६

आत्मविवेक सपन्न भाईश्री सोभागभाई,

मोरबी

आजे आपनु एक पत्र मल्यु वाची परम सतोष थयो निरंतर तेवो ज संतोष आपता रहेवा विज्ञप्ति छे

अत्र जे उपाधि छे, ते एक अमुक कामथी उत्पन्न थई छे, अने ते उपाधि माटे शु थशे एवी कई कल्पना पण थती नथी, अर्थात् ते उपाधि सबधी कई चिता करवानी वृत्ति रहेती नथी ए उपाधि कलिकाळना प्रसगे एक आगळनी सगतिथी उत्पन्न थई छे अने जेम ते माटे थवु हशे तेम थोडा काळमा थई रहेशे एवी उपाधिओ आ ससारमा आववी, ए कई नवाईनी वात नथी.

ईश्व पर विश्वास राखवो ए एक सुखदायक मार्ग छे जेनो दृढ विश्वास होय छे, ते दु खी होतो नथी, अथवा दु खी होय तो दु ख वेदतो नथी उलटु सुखरूप थई पडे छे.

आत्मेच्छा एवी ज वर्ते छे के ससारमा प्रारब्धानुसार गमे तेवा शुभाशुभ उदय आवो, परतु तेमा प्रीति अप्रीति करवानो आपणे सकल्प पण न करवो.

रात्रि अने दिवस एक परमार्थ विषयनु ज मनन रहे छे आहार पण ए ज छे, निद्रा पण ए ज छे, शयन पण ए

ज छे, स्वप्न पण ए ज छे, भय पण ए ज छे, भोग पण ए ज छे परिग्रह पण ए ज छे, चलन पण ए ज छे, आसन पण ए ज छे अधिक शु कहेवु? हाड, मास, अने तेनी मज्जाने एक ज ए ज रगनु रगन छे. एक रोम पण एनो ज जाणे विचार करे छे, अने तेने लीधे नथी कंई जोवु गमतु, नथी कई सूघवु गमतु, नथी कई साभळवु गमतु, नथी कई चाखवु गमतु के नथी कई स्पर्शवु गमतु, नथी बोलवु गमतु के नथी मौन रहेवु गमतु, नथी बेसवु गमतुं के नथी ऊठवु गमतु, नथी सूवु गमतु नथी जागवु गमतु के नथी खावु गमतु के नथी भूख्यु रहेवु गमतु, नथी असग गमतो के नथी सग गमतो, नथी लक्ष्मी गमती के नथी अलक्ष्मी गमती एम छे, तथापि ते प्रत्ये आशा निराशा कंई ज ऊगतु जणातु नथी ते हो तोपण भले अने न हो तोपण भले ए कई दुखना कारण नथी दुखनु कारण मात्र विषमात्मा छे, अने ते जो सम छे तो सर्व सुख ज छे ए वृत्तिने लीधे समाधि रहे छे तथापि बहारथी गृहस्थपणानी प्रवृत्ति नथी थई शकती, देहभाव देखाडवो पालवतो नथी, आत्मभावथी प्रवृत्ति बाह्यथी करवाने केटलोक अतराय छे त्यारे हवे केम करवु? कया पर्वतनी गुफामा जवु अने अलोप थई जवु, ए ज रटाय छे. तथापि बहारनी अमुक ससारी प्रवृत्ति करवी पडे छे ते माटे शोक तो नथी, तथापि सहन करवा जीव इच्छतो नथी, परमानद त्यागी एने इच्छे पण केम? अने ए ज कारणथी ज्योतिषादिक तरफ हाल चित्त नथी गमे तेवा भविष्यज्ञान अथवा सिद्धिओनी इच्छा नथी तेम तेओनो उपयोग करवामा उदासीनता रहे

छे तेमा हाल तो अधिक ज रहे छे. माटे ए ज्ञान सबधे चित्तनी स्वस्थताए विचारी मागेला प्रश्नो सबधी लखीश अथवा समागमे जणावीश

जे प्राणीओ एवा प्रश्नना उत्तर पामवाथी आनद माने छे तेओ मोहाधीन छे, अने तेओ परमार्थना पात्र थवा दुर्लभ छे एम मान्यता छे, तो तेवा प्रसगमा आववु पण गमतु नथी पण परमार्थ हेतुए प्रवृत्ति करवी पडशे तो कई प्रसगे करीश इच्छा तो नथी थती

आपनो समागम अधिक करीने इच्छु छु उपाधिमा ए एक सारी विश्राति छे कुशळता छे, इच्छु छुं

वि रायचदना प्रणाम

१२
अंतरंग चेष्टा

[२२५/१३४]

ववाणिया, द्वि० भाद्र सुद ८, रवि, १९४६

बन्ने भाईओ,

देहधारीने विटबना ए तो एक धर्म छे त्या खेद करीने आत्मविस्मरण शु करवु ? धर्मभक्तियुक्त एवा जे तमे तेनी पासे एवो प्रयाचना करवानो योग मात्र पूर्वकर्मे आप्यो छे. आत्मेच्छा एथी कपित छे निरुपायता आगळ सहनशीलता ज सुखदायक छे

आ क्षेत्रमा आ काळे आ देहधारीनो जन्म थवो योग्य नहोतो जोके सर्व क्षेत्रे जन्मवानी तेणे इच्छा रूधी ज छे, तथापि थयेला जन्म माटे शोक दर्शाववा आम रुदनवाक्य लख्यु छे कोई पण प्रकारे विदेही दशा वगरनु, यथायोग्य जीवन्मुक्त दशा वगरनु, यथायोग्य निर्ग्रंथदशा वगरनु क्षण एकनु जीवन पण भाळवु जीवने सुलभ लागतु नथी तो पछी बाकी रहेलु अधिक आयुष्य केम जशे, ए विटबना आत्मेच्छानी छे

यथायोग्य दशानो हजु मुमुक्षु छु केटलीक प्राप्ति छे. तथापि सर्व पूर्णता प्राप्त थया विना आ जीव शातिने पामे एवी दशा जणाती नथी एक पर राग अने एक पर द्वेष एवी स्थिति एक रोममा पण तेने प्रिय नथी अधिक शु कहेवु ? परना परमार्थ सिवायनो देह ज गमतो नथी तो ? आत्मकल्याणमा प्रवृत्ति करशो

वि० रायचदना यथायोग्य

१४
चैतन्यनो निरंतर अनुभव

[२२९/१४४]

ववाणिया, बी भा वद ०)), सोम, १९४६

आपनु पत्तु मळ्यु, परमानद थयो

चैतन्यनो निरंतर अविच्छिन्न अनुभव प्रिय छे एज जोईए छे. बीजी कई स्पृहा रहेती नथी रहेती होय तोपण राखवा इच्छा

नथी. एक 'तुहि तुहि' ए ज यथार्थ वहेती प्रवाहना जोईए छे अधिक शु कहेवु? लख्यु लखाय तेम नथी, कथ्यु कथाय तेम नथी ज्ञाने मात्र गम्य छे. का तो श्रेणीए श्रेणीए समजाय तेवु छे. बाकी तो अव्यक्तता ज छे, माटे जे निस्पृह दशानु ज रटण छे, ते मळ्ये आ कल्पित भूली गये छूटको छे.

क्यारे आगमन थशे?

वि० आ० रा०

१५

अपूर्व आनद

[२३१/१५२]

ववाणिया, आसो सुद ११, शुक्र, १९४६

आजे आपनु कृपापत्र मळ्यु.

सर्वार्थसिद्धनी ज वात छे जैनमा एम कहे छे के सर्वार्थसिद्ध महाविमाननी ध्वजाथी बार योजन दूर मुक्तिशिला छे. कबीर पण ध्वजाथी आनद आनद पामी गया छे ते पद वाची परमानद थयो. प्रभातमा वहेलो ऊठ्यो त्यारथी कोई अपूर्व आनद वर्त्या ज करतो हतो तेवामा पद मळ्यु अने मूळपदनु अतिशय स्मरण थयु, एकतान थई गयु एकाकार वृत्तिनु वर्णन शब्दे केम करी शकाय? दिवसना बार बज्या सुधी रह्यु अपूर्व आनंद तो तेवो ने तेवो ज छे परतु बीजी वार्ता (ज्ञाननी) करवामा त्यार पछीनो काळक्षेप कर्यो

आ क्षेत्रमा आ काळे आ देहधारीनो जन्म थवो योग्य नहोतो जोके सर्व क्षेत्रे जन्मवानी तेणे इच्छा रूधी ज छे, तथापि थयेला जन्म माटे शोक दर्शाववा आम रुदनवाक्य लख्यु छे कोई पण प्रकारे विदेही दशा वगरनु, यथायोग्य जीवन्मुक्त दशा वगरनु, यथायोग्य निर्ग्रंथदशा वगरनु क्षण एकनु जीवन पण भाळवु जीवने सुलभ लागतु नथी तो पछी वाकी रहेलु अधिक आयुष्य केम जशे, ए विटबना आत्मेच्छानी छे

यथायोग्य दशानो हजु मुमुक्षु छु केटलीक प्राप्ति छे तथापि सर्व पूर्णता प्राप्त थया विना आ जीव शातिने पामे एवी दशा जणाती नथी एक पर राग अने एक पर द्वेष एवी स्थिति एक रोममा पण तेने प्रिय नथी अधिक शु कहेवु ? परना परमार्थ सिवायनो देह ज गमतो नथी तो ? आत्मकल्याणमा प्रवृत्ति करशो

वि० रायचदना यथायोग्य

१४

चैतन्यनो निरंतर अनुभव

[२२९/१४४]

ववाणिया, बी भा वद ०)), सोम, १९४६

आपनु पत्तु मळ्यु, परमानद थयों

चैतन्यनो निरंतर अविच्छिन्न अनुभव प्रिय छे एज जोईए छे. बीजी कई स्पृहा रहेती नथी रहेती होय तोपण राखवा इच्छा

नथी. एक ' तुहि तुहि ' ए ज यथार्थ वहेती प्रवाहना जोईए छे अधिक शु कहेवु ? लख्यु लखाय तेम नथी, कथ्यु कथाय तेम नथी ज्ञाने मात्र गम्य छे का तो श्रेणीए श्रेणीए समजाय तेवु छे. बाकी तो अव्यक्तता ज छे, माटे जे नि स्पृह दशानु ज रटण छे, ते मळ्ये आ कल्पित भूली गये छूटको छे.

क्यारे आगमन थशे ?

वि० आ० रा०

१५

अपूर्व आनंद

[२३१/१५२]

ववाणिया, आसो सुद ११, शुक्र, १९४६

आजे आपनु कृपापत्र मळ्यु

सर्वार्थसिद्धनी ज वात छे जैनमा एम कहे छे के सर्वार्थसिद्ध महाविमाननी ध्वजाथी बार योजन दूर मुक्तिशिला छे. कबीर पण ध्वजाथी आनद आनंद पामी गया छे ते पद वाची परमानद थयो प्रभातमा वहेलो ऊठ्यो त्यारथी कोई अपूर्व आनद वर्त्या ज करतो हतो तेवामा पद मळ्यु अने मूळपदनु अतिशय स्मरण थयु, एकतान थई गयु एकाकार वृत्तिनु वर्णन शब्दे केम करी शकाय ? दिवसना बार बज्या सुधी रह्यु अपूर्व आनंद तो तेवो ने तेवो ज छे परंतु बीजी वार्ता (ज्ञाननी) करवामा त्यार पछीनो काळक्षेप कर्यो

"केवळज्ञान हवे पामशु, पामशु पामशु, पामशु रे के०" एवु एक पद कर्युं हृदय बहु आनदमा छे

१६

हृदयस्थ भगवद्लीला

[२४५/१६५]

मुबई, कार्तिक सुद ५, सोम, १९४७

परम पूज्य — केवलबीज सपन्न,

सर्वोत्तम उपकारी श्री सौभाग्यभाई,

मोरबी

आपना प्रतापे अत्र आनदवृत्ति छे

प्रभु प्रतापे उपाधिजन्य वृत्ति छे

भगवान परिपूर्ण सर्वगुणसपन्न कहेवाय छे तथापि एमाय अपलक्षण कंई ओछा नथी! विचित्र करवु ए ज एनी लीला! त्या अधिक शु कहेवु!

सर्व समर्थ पुरुषो आपने प्राप्त थयेला ज्ञानने ज गाई गया छे ए ज्ञानना दिन प्रतिदिन आ आत्माने पण विशेषता थती जाय छे हु धारु छु के केवळज्ञान सुधीनी महेनत करी अलेखे ,तो नही जाय मोक्षनी आपणने काई जरूर नथी. नि शकपणानी, निर्भयपणानी, निर्मुंझनपणानी अने नि स्पृहपणानी जरूर हती, ते घणें अशें प्राप्त थई जणाय छे, अनें पूर्ण अशें प्राप्त कराववानी करुणासागर गुप्त रहेलानी कृपा थशें एम आशा रहे छे छता वळी एथीये अलौकिक दशानी इच्छा रहे छें, त्या विशेष शु कहेवु?

अनहद ध्वनिमा मणा नथी पण गाडीघोडानी उपाधि श्रवणनु सुख थोडु आपे छे निवृत्ति विना अही वीजु वधुय लागे छे

जगतने, जगतनो लीलाने बेठा बेठा मफतमा जोईए छीए

आपनी कृपा इच्छु छु

वि० आज्ञाकित रायचदना प्रणाम

१७

ग्रन्थीभेद

[२४९/१७०]

मुंबई, कारतक सुद १४, १९४७

परम पूज्य श्री,[१]

आजे आपनु पत्र १ भूधर आपी गया ए पत्रनो उत्तर लखता पहेला कईक प्रेमभक्ति समेत लखवा इच्छु छु.

आत्मा ज्ञान पाम्यो ए तो निसशय छे, ग्रथिभेद थयो ए त्रणे काळमा सत्य वात छे सर्वे ज्ञानीओए पण ए वात स्वीकारी छे हवे छेवटनी निर्विकल्प समाधि आपणने पामवी बाकी छे, जे सुलभ छे अने ते पामवानो हेतु पण ए ज छे के कोई पण प्रकारे अमृतसागरनु अवलोकन करता अल्प पण मायानु आवरण बाध करे नही, अवलोकनसुखनु अल्प पण विस्मरण थाय नही, 'तुहि तुहि' विना बीजी रटना रहे

---

१ श्री सोभागभाई उपर आ पत्र छे

नही, मायिक एक पण भयनो, मोहनो, सकल्पनो के विकल्पनो अश रहे नही. ए एक वार जो यथायोग्य आवी जाय तो पछी गमे तेम प्रवर्ताय, गमे तेम बोलाय, गमे तेम आहार-विहार कराय, तथापि तेने कोई पण जातनी बाधा नथी परमात्मा पण तेने पूछी शकनार नथी तेनु करेलु सर्व सवळु छे आवी दशा पामवाथी परमार्थ माटे करेलो प्रयत्न सफळ थाय छे अने एवी दशा थया विना प्रगट मार्ग प्रकाशवानी परमात्मानी आज्ञा नथी एम मने लागे छे. माटे दृढ निश्चय कर्यो छे के ए दशाने पामी पछी प्रगट मार्ग कहेवो — परमार्थ प्रकाशवो — त्या सुधी नही अने ए दशाने हवे कंई झाझो वखत पण नथी पदर अशे तो पहोची जवायु छे निर्विकल्पता तो छे ज, परतु निवृत्ति नथी, निवृत्ति होय तो बीजाना परमार्थ माटे शु करवु ते विचारी शकाय त्यार पछी त्याग जोईए, अने त्यार पछी त्याग करावबो जोईए

महान पुरुषोए केवी दशा पामी मार्ग प्रकाश्यो छे, शु शु करोने मार्ग प्रकाश्यो छे, ए वातनु आत्माने सारी रीते स्मरण रहे छे, अने ए ज प्रगट मार्ग कहेवा देवानी ईश्वरी इच्छानु लक्षण जणाय छे

आटला माटे हमणा तो केवळ गुप्त थई जवु ज योग्य छे एक अक्षरे ए विषये वात करवा इच्छा थती नथी. आपनी इच्छा जाळववा क्यारेक क्यारेक प्रवर्तन छे, अथवा घणा परिचयमा आवेला योगपुरुषनी इच्छा माटे कंईक अक्षर उच्चार अथवा लेख कराय छे बाकी सर्व प्रकारे गुप्तता करी

छे अज्ञानी थईने वास करवानी इच्छा बाधी राखी छे. ते एवी के अपूर्व काळे ज्ञान प्रकाशता बाध न आवे

आटला कारणथी दीपचंदजी महाराज के बीजा माटे कई लखतो नथी गुणठाणा इत्यादिकनो उत्तर लखतो नथी. सूत्रने अडतोय नथी व्यवहार साचववा थोडाएक पुस्तकोना पाना फेरवु छु बाकी बधुय पथ्थर पर पाणीना चित्र जेवु करी मूक्यु छे तन्मय आत्मयोगमा प्रवेश छे त्या ज उल्लास छे, त्या ज याचना छे, अने योग (मन, वचन अने काया) बहार पूर्वकर्म भोगवे छे वेदोदयनो नाश थता सुघी गृहवासमा रहेवु योग्य लागे छे परमेश्वर चाहीने वेदोदय राखे छे. कारण, पचम काळमा परमार्थनी वर्षाऋतु थवा देवानी तेनी थोडो ज इच्छा लागे छे

तीर्थंकर जे समज्या अने पाम्या ते . . आ काळमा न समजी शके अथवा न पामी शके तेवु कंई ज नथी आ निर्णय घणाय वखत थया करी राख्यो छे जोके तीर्थंकर थवा इच्छा नथी, परतु तीर्थंकरे कर्या प्रमाणे करवा इच्छा छे, एटलो बधी उन्मत्तता आवी गई छे तेने शमाववानी शक्ति पण आवी गई छे, पण चाहीने शमाववानी इच्छा राखी नथी

आपने विज्ञापन छे के वृद्धमाथी युवान थवु अने आ अलख वार्त्ताना अग्रेसर आगळ अग्रेसर थवु थोडु लख्यु घणु करी जाणशो

गुणठाणा ए समजवा माटे कहेला छे उपशम अने क्षपक ए बे जातनी श्रेणी छे उपशममा प्रत्यक्ष दर्शननो

सभव नथी, क्षपकमा छे प्रत्यक्ष दर्शनना संभवने अभावे अगियारमेथी जीव पाछो वळे छे उपशम श्रेणी बे प्रकारे छे. एक आज्ञारूप, एक मार्ग जाण्या विना स्वाभाविक उपशम थवारूप आज्ञारूप पण आज्ञा आराधन सुधी पतित थतो नथी. पाछळनो ठेठ गया पछी मार्गना अजाणपणाने लीधे पडे छे. आ नजरे जोयेली, आत्माए अनुभवेली वात छे कोई शास्त्रमाथी नीकळी आवशे न नीकळे तो कई बाध नथी. तीर्थंकरना हृदयमा आ वात हती, एम अमे जाण्यु छे

दशपूर्वधारी इत्यादिकनी आज्ञानु आराधन करवानी महावीरदेवनी शिक्षा विषे आपे जणाव्यु ते खरु छे एणे तो घणुय कह्यु हतु, पण रह्यु छे थोडु अने प्रकाशक पुरुष गृहस्थावासमा छे बाकीना गुफामा छे कोई कोई जाणे छे पण तेटलु योगबळ नथी.

कहेवाता आधुनिक मुनिओनो सूत्रार्थ श्रवणने पण अनुकूळ नथी सूत्र लई उपदेश करवानी आगळ जरूर पडशे नही सूत्र अने तेना पडखा बधाय जणाया छे

ए ज विनति

वि० आ० रायचंद

१८

परिपूर्ण स्वरूप ज्ञान

[२५७/१८७]

मुबई मागशर वद ०)) १९४७

प्राप्त थयेला सत्स्वरूपने अभेदभावे अपूर्व समाधिमा स्मरु छु

महाभाग्य, शातमूर्ति, जीवनमुक्त श्री सोभागभाई,

अत्र आपनी कृपाथी आनद छे, आपने निरतर वर्तो ए आशिष छे

छेवटनु स्वरूप समजायामा, अनुभवायामा अल्प पण न्यूनता रही नथी जेम छे तेम सर्व प्रकारे समजायु छे सर्व प्रकारनो एक देश बाद करता बाकी सर्व अनुभवायु छे एक देश समजाया विना रह्यो नथी, परतु योग (मन, वचन, काया)थी असग थवा वनवासनी आवश्यकता छे, अने एम थये ए देश अनुभवाशे, अर्थात् तेमा ज रहेवाशे, परिपूर्ण लोकालोकज्ञान उत्पन्न थशे, अने ए उत्पन्न करवानी (तेम) आकाक्षा रही नथी, छता उत्पन्न केम थशे? ए वळी आश्चर्यकारक छे। परिपूर्ण स्वरूपज्ञान तो उत्पन्न थयु ज छे, अने ए समाधिमाथी नीकळी लोकालोकदर्शन प्रत्ये जवु केम बनशे? ए पण एक मने नही पण पत्र लखनारने विकल्प थाय छे।

कणबी अने कोळी जेवी ज्ञातिमा पण मार्गने पामेला थोडा वर्षमा घणा पुरुषो थई गया छे, ते महात्माओनी

जनमडळने अपिश्चान होवाने लीधे कोईक ज तेनाथी सार्थक साधी शक्यु छे, जीवने महात्मा प्रत्ये मोह ज न आव्यो, ए केवी ईश्वरी अद्‌भुत नियति छे?

एओ सर्व कई छेवटना ज्ञानने प्राप्त थया नहोता, परतु ते मळवु तेमने बहु समीपमा हतु एवा घणा पुरुषोना पद वगेरे अही जोया एवा पुरुषो प्रत्ये रोमाच बहु उल्लसे छे, अने जाणे निरतर तेवानी चरणसेवा ज करीए, ए एक आकाक्षा रहे छे ज्ञानी करता एवा मुमुक्षु पर अतिशय उल्लास आवे छे, तेनु कारण ए ज के तेओ ज्ञानीना चरणने निरतर सेवे छे, अने ए ज एमनु दासत्व अमारु तेमना प्रत्ये दासत्व थाय छे, तेनु कारण छे भोजो भगत, निरात कोळी इत्यादिक, पुरुषो योगो (परम योग्यतावाळा) हता निरजनपदने बूझनारा निरजन केवी स्थितिमा राखे छे, ए विचारता अकळ गति पर गभीर, समाधियुक्त हास्य आवे छे। हवे अमे अमारी दशा कोई पण प्रकारे कही शकवाना नथी, तो लखी क्याथी शकीशु? आपना दर्शन थये जे कई वाणी कही शकशे ते कहेशे, बाकी निरुपायता छे (कई) मुक्तिये नथी जोईती, अने जैननु केवळज्ञानये जे पुरुषने नथी जोईतु, ते पुरुषने परमेश्वर हवे कयु पद आपशे? ए कई आपना विचारमा आवे छे? आवे तो आश्चर्य पामजो, नही तो अहीथी तो कोई रीते कईये बहार काढी शकाय तेम बने तेवु लागतु नथी

आप जे कई व्यवहार धर्मप्रश्नो बीडो छो ते उपर लक्ष अपातु नथी तेना अक्षर पण पूरा वाचवा लक्ष जतु नथी, तो पछी तेनो उत्तर न लखी शकायो होय तो आप शा माटे

राह् जुओ छो? अर्थात् ते ह्वे क्यारे बनशे, ते कई कल्पी शकातु नथी

वारवार जणावो छो, आतुरता दर्शन माटे वहु छे, परतु पंचमकाळ महावीरदेवे कह्यो छे, कळियुग व्यासभगवाने कह्यो छे, ते क्याथो साथे रहेवा दे? अने दे तो आपने उपाधियुक्त शा माटे न राखे?

आ भूमिका उपाधिनो शोभानु सग्रहस्थान छे

खीमजी वगेरेने एक वार आपनो सत्सग थाय तो ज्या एकलक्ष करवो जोईए छे त्या थाय, नही तो थवो दुर्लभ छे. कारण के अमारी हाल बाह्य वृत्ति ओछी छे

१९

आत्माना प्रत्यक्ष दर्शननी वाट

[२६१/१९७]

मुबई, माह सुद ९, मगळ, १९४७

आपनु आनदरूप पत्र मळ्यु तेवा पत्रना दर्शननी तृषा वधारे छे

ज्ञानना 'परोक्ष-अपरोक्ष' विषे पत्रथो लखी शकाय तेम नथी, पण सुधानी धारा पछीना केटलाक दर्शन थया छे, अने जो असगतानी साथे आपनो सत्सग होय तो छेवटनु परिपूर्ण प्रकाशे तेम छे, कारण के ते घणु करीने सर्व प्रकारे जाण्यु छे अने ते ज वाट तेना दर्शननी छे, आ उपाधियोगमां ए

दर्शन भगवत थवा देशे नही, एम ते मने प्रेरे छे, माटे एकातवासीपणे ज्यारे थवाशे त्यारे चाहीने भगवते राखेलो पडदो एक थोडा प्रयत्नमा टळी जशे आटला खुलासा सिवाय बीजो पत्र वाटे न करी शकाय

हालमा आपना समागम विना आनदनो रोध छे

वि० आज्ञाकित

२०

पराभक्तिनी महत्ता

[२६३/२०१]

मुबई, महावद ३, गुरु १९४७

केवळ निर्विकार छता परब्रह्म प्रेममय पराभक्तिने वश छे, ए हृदयमा जेणे अनुभव कर्यो छे एवा ज्ञानीओनी गुप्त शिक्षा छे

अत्र परमानद छे असगवृत्ति होवाथी समुदायमा रहेवु बहु विकट छे जेनो कोई पण प्रकारे यथार्थ आनद कही शकातो नथी, एवु जे सत्स्वरूप ते जेना हृदयमा प्रकाश्यु छे एवा महाभाग्य ज्ञानीओनी अने आपनी अमारा उपर कृपा वर्तो अमे तो तमारी चरणरज छीए, अने त्रणे काळ ए ज प्रेमनी निरजनदेव प्रत्ये याचना छे

आजना प्रभातथी निरजनदेवनी कोई अद्‌भुत अनुग्रहता प्रकाशी छे, आजे घणा दिवस थया इच्छेली पराभक्ति कोई

अनुपमरूपमा उदय पामो छे गोपीओ भगवान वासुदेव (कृष्णचद्र)ने महीनी मट्टुकीमा नाखो वेचवा नीकळी हती, एवी एक श्रीमद्भागवतमा कथा छे, ते प्रसग आजे बहु स्मरणमा रह्यो छे, अमृत प्रवहे छे त्या सहस्त्रदळ कमळ छे, ए महीनो मट्टुकी छे, अने आदिपुरुष तेमा विराजमान छे ते भगवत वासुदेव छे, तेनी प्राप्ति सत्पुरुषनी चित्तवृत्तिरूप गोपीने थता ते उल्लासमा आवो जई बीजा कोई मुमुक्षु आत्मा प्रत्ये "कोई माधव ल्यो, हारे कोई माधव ल्यो" एम कहे छे, अथात् ते वृत्ति कहे छे के आदिपुरुषनी अमने प्राप्ति थई, अने ए एक ज प्राप्त करवा योग्य छे, बीजु कशुय प्राप्त करवा योग्य नथी, माटे तमे प्राप्त करो उल्लासमा फरी फरी कहे छे के तमे ते पुराणपुरुषने प्राप्त करो, अने जो ते प्राप्तिने अचळ प्रेमथी इच्छो तो अमे तमने ते आदि-पुरुष आपी दईए, मट्टुकीमा नाखोने वेचवा नीकळ्या छीए, ग्राहक देखी आपी दईए छीए, कोई ग्राहक थाओ, अचळ प्रेमे कोई ग्राहक थाओ, वासुदेवनी प्राप्ति करावीए

मट्टुकीमा नाखीने वेचवा नीकळ्यानो अर्थ सहस्रदळ कमळमा अमने वासुदेव भगवान मळ्या छे, महीनु नाम मात्र छे, आखो सृष्टिने मथीने जो मही काढीए तो मात्र एक अमृतरूप वासुदेव भगवान ज मही नीकळे छे एवु सूक्ष्म स्वरूप ते स्थूळ करीने व्यासजीए अद्भुत भक्तिने गाई छे आ वात अने आखु भागवत ए एकजने प्राप्त करावबा माटे अक्षरे अक्षरे भरपूर छे, अने ते (अ)मने घणा काळ थया पहेला समजायु छे, आजे अति अति स्मरणमा छे, कारण

के साक्षात् अनुभवप्राप्ति छे, अने एने लीधे आजनी परम अद्भुत दशा छे एवी दशाथी जीव उन्मत्त पण थई गया विना रहेशे नही, अने वासुदेव हरि चाहीने केटलोक वखत वळी अतर्धान पण थई जाय एवा लक्षणना धारक छे, माटे अमे असगताने इच्छीए छीए, अने तमारो सहवास ते पण असगता ज छे, एथी पण विशेष अमने प्रिय छे

सत्सगनी अत्र खामी छे, अने विकट वासमा निवास छे हरिइच्छाए हर्याफर्यानी वृत्ति छे एटले कई खेद तो नथी, पण भेदनो प्रकाश करी शकातो नथी, ए चिंतना निरतर रह्या करे छे

भूधर एक आजे कागळ आपी गया तेम ज आपनु परभारु एक पत्तु मळ्यु

मणिने मोकलेली वचनावलीमा आपनी प्रसन्नताथी अमारी प्रसन्नताने उत्तेजननी प्राप्ति थई संतनो अद्भुत मार्ग एमा प्रकाश्यो छे जो मणि एक ज वृत्तिए ए वाक्योने आराधशे अने ते ज पुरुषनी आज्ञामा लीन रहेशे, तो अनतकाळथी प्राप्त थयेलु परिभ्रमण मटी जशे मायानो मोह मणि विशेष राखे छे, के जे मार्ग मळवामा मोटो प्रतिबध गणाय छे माटे एवी वृत्तिओ हळवे हळवे ओछी करवा मणिने मारी विनति छे.

आपने जे पूर्णपदोपदेशक कक्को के पद मोकलवा इच्छा छे, ते केवा ढाळमा अथवा रागमा, ते माटे आपने योग्य लागे ते जणावशो

घणा घणा प्रकारथी मनन करता अमारो दृढ निश्चय छे के भक्ति ए सर्वोपरी मार्ग छे, अने ते सत्पुरुषना चरण समीप रहीने थाय तो क्षणवारमा मोक्ष करी दे तेवो प्रदार्थ छे

विशेष कई लख्यु जतु नथी परमानद छे, पण असत्सग छे अर्थात् सत्सग नथी

विशेप आपनी कृपादृष्टि ए ज

वि० आज्ञाकितना दडवत्

२१

परम उदासीनता

[२७०/२१४]

मुबई, फागण सुद ५, रवि, १९४७

उदयकाळ प्रमाणे वर्तीए छीए क्वचित् मनोयोगने लीधे इच्छा उत्पन्न हो तो भिन्न वात, पण अमने तो एम लागे छे के आ जगत प्रत्ये अमारो परम उदासीन भाव वर्ते छे, ते साव सोनानु थाय तोपण अमने तृणवत् छे, अने परमात्मानी विभूतिरूपे अमारु भक्तिधाम छे

आज्ञाकित

२२

अनन्य प्रेमभक्ति

[२७१/२१७]

मुंबई, माह सुद, १९४७

परम पूज्य,

आपने सहज वाचनना उपयोगार्थे आपना प्रश्ननो उत्तरवाळो कागळ आ साथे बीडु छु.

परमात्मामा परम स्नेह गमे तेवी विकट वाटेथी थतो होय तोपण करवो योग्य ज छे सरळ वाट मळ्या छता उपाधिना कारणथी तन्मयभक्ति रहेती नथी, अने एकतार स्नेह ऊभरातो नथी आथी खेद रह्या करे छे अने वारवार वनवासनी इच्छा थया करे छे जोके वैराग्य तो एवो रहे छे के घर अने वनमा घणु करीने आत्माने भेद रह्यो नथी, परतु उपाधिना प्रसगने लीधे तेमा उपयोग राखवानी वारवार जरूर रह्या करे छे, के जेथी परम स्नेह पर ते वेळा आवरण आणवु पडे, अने एवी परम स्नेहता अने अनन्य प्रेमभक्ति आव्या विना देहत्याग करवानी इच्छा थती नथी कदापि सर्वात्मानी एवी ज इच्छा हशे तो गमे तेवी दीनताथी पण ते इच्छा फेरवशु पण प्रेमभक्तिनी पूर्ण लय आव्या विना देहत्याग नही करी शकाय एम रहे छे, अने वारवार ए ज रटना रहेवाथी 'वनमा जईए' 'वनमा जईए' एम थई आवे छे आपनो निरतर सत्सग होय तो अमने घर पण वनवास ज छे.

गोपागनानी जेवी श्रीमद् भागवतमा प्रेमभक्ति वर्णवी छे, एवी प्रेमभक्ति आ कळिकाळमा प्राप्त थवी दुर्लभ छे, एम जोके सामान्य लक्ष छे, तथापि कळिकाळमा निश्चळ मतिथी ए ज लय लागे तो परमात्मा अनुग्रह करी शीघ्र ए भक्ति आपे छे

जडभरतजीनी श्रीमद् भागवतमा सुदर आख्यायिका आपी छे, ए दशा वारवार साभरी आवे छे अने एवु उन्मत्तपणु परमात्माने पामवानु परम द्वार छे ए दशा विदेही हती भरतजीने हरणना सगथी जन्मनी वृद्धि थई हती अने तेथी जडभरतना भवमा असग रह्या हता. एवा कारणथी मने पण असगता बहु ज साभरी आवे छे, अने केटलीक वखत तो एवु थई जाय छे के ते असगता विना परमदु ख थाय छे यम अतकाळे प्राणीने दु.खदायक नही लागतो होय, पण अमने सग दु खदायक लागे छे एम अतर्वृत्तिओ घणी छे के जे एक ज प्रवाहनी छे लखी जती नथी, रह्यु जतु नथी, अने आपनो वियोग रह्या करे छे सुगम उपाय कोई जडतो नथी उदयकर्म भोगवता दीनपणु अनुकूळ नथी भविष्यनो एक क्षणनो घणु करीने विचार पण रहेतो नथी

'सत्-सत्' एनु रटण छे अने सत्नु साधन 'तमे' ते त्या छो अधिक शु कहीए? ईश्वरनी इच्छा एवी छे, अने तेने राजी राख्या रह्या विना छूटको नथी नही तो आवी उपाधियुक्त दशामा न रहीए, अने धार्यु करीए, परम पीयूष अने प्रेमभक्तिमय ज रहीए। पण प्रारब्धकर्म बळवत्तर छे।

लि० आज्ञाकित रायचद

२३
चैतन्यमय चित्तदशा

[२८५/२४७]

मुबई वैशाख वदि ८, रवि, १९४७

हरिने प्रतापे हरिनु स्वरूप मळशु त्यारे समजावशु (।)

उपाधिना जोगे अने चित्तना कारणथी केटलोक समय सविगत पत्र वगर व्यतीत कर्यो छे, तेमा पण चित्तनी दशा मुख्य कारणरूप छे, हालमा आप केवा प्रकारथी काळ व्यतीत करो छे, ते जणावशो, अने शु इच्छा रहे छे, ते पण जणावशो व्यवहारना कार्य विषे शु प्रवृत्ति छे, अने ते विषे शु इच्छा रहे छे, ते पण जणावशो एटले के ते प्रवृत्ति सुखरूप लागे छे के केम? ते जणावशो

चित्तनी दशा चैतन्यमय रह्या करे छे, जेथी व्यवहारना बधा कार्य घणु करीने अव्यवस्थाथी करीए छीए हरिइच्छा सुखदायक मानीए छीए एटले जे उपाधिजोग वर्ते छे, तेने पण समाधिजोग मानीए छीए चित्तनी अव्यवस्थाने लीधे मुहूर्त मात्रमा करी शकाय एवु कार्य विचारता पण पखवाडियु व्यतीत करी नखाय छे, अने वखते ते कर्या विना ज जवा देवानु थाय छे बधा प्रसगोमा तेम थाय तोपण हानि मानी नथी, तथापि आपने कई कई ज्ञानवार्त्ता दर्शावाय तो विशेष आनद रहे छे, अने ते प्रसगमा चित्तने कईक व्यवस्थित करवानी इच्छा राख्या कराय छे, छता ते स्थितिमा पण हमणा प्रवेश

नथी करी शकातो एवो चित्तनी दशा निरकुश थई रही छे, अने ते निरकुशता प्राप्त थवामा हरिनो परम अनुग्रह कारण छे एम मानीए छीए ए ज निरकुशताने पूर्णता आप्या सिवाय चित्त यथोचित समाधियुक्त नही थाय एम लागे छे, अत्यारे तो बधुय गमे छे, अने बधुय गमतु नथी, एवी स्थिति छे ज्यारे बधुय गमशे त्यारे निरकुशतानी पूर्णता थशे ए पूर्णकामता पण कहेवाय छे, ज्या हरि ज सर्वत्र स्पष्ट भासे छे अत्यारे कईक अस्पष्ट भासे छे, पण स्पष्ट छे एवो अनुभव छे

जे रस जगतनु जीवन छे, ते रसनो अनुभव थवा पछी हरिप्रत्ये अतिशय लय थई छे अने तेनु परिणाम एम आवशे के ज्या जेवे रूपे इच्छीए तेवे रूपे हरि आवशे, एवो भविष्यकाळ ईश्वरेच्छाने लीधे लख्यो छे

अमे अमारो अतरग विचार लखी शकवाने अतिशय अशक्त थई गया छीए, जेथी समागमने इच्छीए छीए, पण ईश्वरेच्छा हजु तेम करवामा असम्मत लागे छे, जेथी वियोगे ज वर्तीए छीए

ते पूर्णस्वरूप हरिमा परम जेनी भक्ति छे, एवो कोई पण पुरुष हाल नथी देखातो तेनु शु कारण हशे? तेम तेवी अति तीव्र अथवा तीव्र मुमुक्षुता कोईनी जोवामा आवी नथी तेनु शु कारण हशे? क्वचित् तीव्र मुमुक्षुता जोवामा आवी हशे तो त्या अनतगुणगभीर ज्ञानावतार पुरुषनो लक्ष केम जोवामा आव्यो नही होय? ए माटे आप जे लागे ते लखशो बीजु मोटु आश्चर्यकारक तो ए छे के आप जेवाने सम्यक्ज्ञानना बीजनी, पराभक्तिना मूळनी प्राप्ति छता त्यार पछीनो भेद केम प्राप्त नथी होतो? तेम हरि प्रत्ये अखड लयरूप वैराग्य

जेटलो जोईए तेटलो केम वर्धमान नथी थतो ? एनु जो कई कारण समजातु होय तो लखशो

अमारी चित्तनी अव्यवस्था एवी थई जवाने लीधे कोई काममा जेवो जोईए तेवो उपयोग रहेतो नथी, स्मृति रहेती नथी, अथवा खबर पण रहेती नथी, ते माटे शु करवु ? शु करवु एटले के व्यवहारमा बेठा छता एवी सर्वोत्तम दशा बीजा कोईने दु खरूप न थवी जोईए, अने अमारा आचार एवा छे के वखते तेम थई जाय बीजा कोईने पण आनदरूप लागवा विषे हरिने चिता रहे छे, माटे ते राखशे अमारु काम तो ते दशानी पूर्णता करवानु छे, एम मानीए छीए, तेम बीजा कोईने सतापरूप थवानो तो स्वप्ने पण विचार नथी बधाना दास छीए, त्या पछी दु खरूप कोण मानशे ? तथापि व्यवहार-प्रसगमा हरिनी माया अमने नही तो सामाने पण एकने बदले बीजु आरोपावी दे तो निरुपायता छे, अने एटलो पण शोक रहेशे अमे सर्व सत्ता हरिने अर्पण करीए छीए, करी छे वधारे शु लखवु ? परमानदरूप हरिने क्षण पण न वीसरवा ए अमारी सर्व कृति, वृत्ति अने लेखनो हेतु छे

२४

देहधारी छीए के केम ?

[२९०/२५५]

मुबई, असाड सुद १३, १९४७

ॐ

सुखना सिधु श्री सहजानदजी, जगजीवन के जगवदजी, शरणागतना सदा सुखकदजी, परमस्नेही छो (!) परमानदजी

अपूर्व स्नेहमूर्ति एवा आपने अमारा प्रणाम पहोचे हरिकृपाथी अमे परम प्रसन्न पदमा छीए तमारो सत्सग निरतर इच्छीए छीए.

अमारी दशा हालमा केवी वर्ते छे ते जाणवानी आपनी इच्छा रहे छे, पण जेवी विगतथी जोईए, तेवी विगतथी लखी शकाय नही एटले वारवार लखी नथी अत्रे टूकामा लखीए छीए

एक पुराणपुरुष अने पुराणपुरुषनी प्रेमसपत्ति विना अमने कई गमतु नथी, अमने कोई पदार्थमा रुचि मात्र रही नथी, कई प्राप्त करवानी इच्छा थती नथी, व्यवहार केम चाले छे एनु भान नथी, जगत शु स्थितिमा छे तेनी स्मृति रहेती नथी, कोई शत्रु–मित्रमा भेदभाव रह्यो नथी, कोण शत्रु छे अने कोण मित्र छे, एनी खबर रखाती नथी, अमे देहधारी छीए के केम ते सभारीए त्यारे माड जाणीए छीए, अमारे शु करवानु छे ते कोईथी कळाय तेवु नथी, अमे बधाय पदार्थथी उदास थई जवाथी गमे तेम वर्तीए छीए, व्रत, नियमनो कई नियम राख्यो नथी, जातभातनो कई प्रसग नथी, अमाराथी विमुख जगतमा कोई मान्यु नथी, अमाराथी सन्मुख एवा सत्सगी नही मळता खेद रहे छे, सपत्ति पूर्ण छे एटले सपत्तिनी इच्छा नथी, शब्दादिक विषयो अनुभव्या स्मृतिमा आववाथी,– अथवा ईश्वरेच्छाथी तेनी इच्छा रही नथी, पोतानी इच्छाए थोडी ज प्रवृत्ति करवामा आवे छे, जेम हरिए इच्छेलो क्रम दोरे तेम दोराईए छीए, हृदय प्राये शून्य जेवु थई गयु छे, पाचे इद्रियो शून्यपणे प्रवर्तवारूप ज रहे छे, नय, प्रमाण वगेरे शास्त्रभेद साभरता नथी, कई वाचता चित्त स्थिर रहेतु नथी,

खावानी, पोवानी, बेसवानी, सूवानी, चालवानी अने बोलवानी वृत्तिओ पोतानी इच्छा प्रमाणे वर्ते छे, मन पोताने स्वाधीन छे के केम एनु यथायोग्य भान रह्यु नथी आम सर्व प्रकारे विचित्र एवी उदासीनता आववाथी गमे तेम वर्ताय छे एक प्रकारे पूर्ण घेलछा छे, एक प्रकारे ते घेलछा कईक छूपी राखीए छीए, अने जेटली छूपी रखाय छे, तेटली हानि छे योग्य वर्तीए छीए के अयोग्य एनो कई हिसाब राख्यो नथी आदिपुरुषने विषे अखड प्रेम सिवाय बीजा मोक्षादिक पदार्थोमानी आकाक्षानो भग थई गयो छे, आटलु बधु छता मनमानती उदासीनता नथी, एम मानीए छीए, अखड प्रेमखुमारी जेवी प्रवहवी जोईए तेवी प्रवहती नथी, एम जाणीए छीए, आम करवाथी ते अखड खुमारी प्रवहे एम निश्चळपणे जाणीए छीए, पण ते करवामा काळ कारणभूत थई पड्यो छे, अने ए सर्वनो दोष अमने छे के हरिने छे, एवो चोक्कस निश्चय करी शकातो नथी एटली बधी उदासीनता छता वेपार करीए छीए, लईए छीए, दईए छीए, लखीए छीए, वाचीए छीए, जाळवीए छीए, अने खेद पामीए छीए वळी हसीए छीए—जेनु ठेकाणु नथी एवी अमारी दशा छे, अने तेनु कारण मात्र हरिनी सुखद इच्छा ज्या सुधी मानी नथी त्या सुधी खेद मटवो नथी

(अ) समजाय छे, समजीए छीए, समजशु पण हरि ज सर्वत्र कारणरूप छे

जे मुनिने आप समजाववा इच्छो छो, ते हाल जोग्य छे, एम अमे जाणता नथी

अमारी दशा मद जोग्यने हाल लाभ करे तेवी नथी, अमे एवो जजाळ हाल इच्छता नथी, राखी नथी, अने तेओ बधानो केम वहीवट चाले छे, एनु स्मरणे नथी तेम छता अमने ए बधानी अनुकपा आव्या करे छे, तेमनाथी अथवा प्राणीमात्रथी मनथी भिन्न भाव राख्यो नथी अने राख्यो रहे तेम नथी भक्तिवाळा पुस्तको क्वचित् क्वचित् वाचीए छीए, पण जे सघळु करीए छीए ते ठेकाणा वगरनी दशाथी करीए छीए

अमे हालमा घणु करीने आपना कागळोनो वखतसर उत्तर लखी शकता नथी, तेम ज पूरा खुलासाथी पण लखता नथो, ते जोके योग्य तो नथो, पण हरिनी एम इच्छा छे, जेथी तेम करीए छीए हवे ज्यारे समागम थशे, त्यारे अमारो ए दोष आपने क्षमा करवो पडशे एवी अमारी खातरी छे

अने ते त्यारे मनाशे के ज्यारे तमारो सग हवे फरी थशे ते सग इच्छीए छीए, पण जेवा जोगे थवो जोईए, तेवा जोगे थवो दुर्लभ छे भादरवामा जे आपे इच्छा राखी छे तेथी कई अमारी प्रतिकूळता छे, पण ते समागममा जे जोग इच्छीए छीए ते जो थवा देवा हरिनी इच्छा होय अने समागम थाय तो ज अमारो खेद मटे एम मानीए छीए

दशानु टूकु वर्णन वाचीने, आपने उत्तर लखाया न होय ते माटे क्षमा आपवानी विज्ञापना करु छु

प्रभुनी परम कृपा छे अमने कोईथी भिन्न भाव रह्यो नथी, कोई विषे दोषबुद्धि आवती नथी, मुनि विषे अमने कोई हलको विचार नथी, पण हरिनी प्राप्ति न थाय एवी प्रवृत्तिमा तेओ पडया छे एकलु बोजज्ञान ज तेमनु कल्याण करे एवी

एमनी अने बीजा घणा मुमुक्षुओनी दशा नथी 'सिद्धातज्ञान' साथे जोईए, ए 'सिद्धातज्ञान' अमारा हृदयने विषे आवरितरूपे पड्यु छे हरिइच्छा जो प्रगट थवा देवानी हशे तो थशे अमारो देश हरि छे, जात हरि छे, काळ हरि छे, देह हरि छे, रूप हरि छे, नाम हरि छे, दिशा हरि छे, सर्व हरि छे, अने तेम छता आम वहोवटमा छोए, ए एनी इच्छानु कारण छे

ॐ शाति शाति शाति

२५

मृत्यु अधिक वेदना

[३००/२७७]

ववाणिया, भाद्रपद वद ७, १९४७

चित्त उदास रहे छे, कई गमतु नथी, अने जे कई गमतु नथी ते ज बधु नजरे पडे छे, ते ज सभळाय छे त्या हवे शु करवु? मन कोई कार्यमा प्रवृत्ति करी शकतु नथी जेथी प्रत्येक कार्य मुलतवा पडे छे, काई वाचन, लेखन के जनपरिचयमा रुचि आवती नथी चालता मतना प्रकारनी वात काने पडे छे के हृदयने विषे मृत्युथी अधिक वेदना थाय छे स्थिति का तमे जाणो छो का स्थिति वीती गई छे ते जाणे छे, अने हरि जाणे छे

२६
मननी अखंड स्थिरता

[३००/२८०]

ववाणिया, भाद्रपद वद १२, भोम, १९४७

जणाव्या जेवु तो मन छे, के जे सत्स्वरूप भणी अखड स्थिर थयु छे (नाग जेम मोरली उपर), तथापि ते दशा वर्णववानी सत्ता सर्वाधार हरिए वाणीमा पूर्ण मूकी नथी, अने लेखमा तो ते वाणीनो अनंतमो भाग माड आवी शके, एवी ते दशा ते सर्वनु कारण एवु जे पुरुषोत्तमस्वरूप तेने विषे अमने तमने अनन्य प्रेमभक्ति अखड रहो, ते प्रेमभक्ति परिपूर्ण प्राप्त थाओ ए ज प्रयाचना इच्छी अत्यारे अधिक लखतो नथी

२७
हरिरस प्रत्ये परम प्रेम

[३००/२८२]

ववाणिया, भाद्रपद वद १४, गुरु, १९४७

परम विश्राम सुभाग्य,

पत्तु मळ्यु अत्रे भक्ति सबधी विह्वलता रह्या करे छे, अने तेम करवामा हरिइच्छा सुखदायक ज मानु छु

महात्मा व्यासजीने जेम थयु हतु, तेम अमने हमणा वर्ते छे आत्मदर्शन पाम्या छता पण व्यासजी आनदसपन्न थया नहोता, कारण के हरिरस अखडपणे गायो नहोतो अमने पण एम ज छे अखड एवो हरिरस परम प्रेमे अखडपणे अनुभवता हजु क्याथी आवडे ? अने ज्या सुधी तेम

नही थाय त्या सुधी अमने जगतमानी वस्तुनु एक अणु पण गमवु नथी

भगवान व्यासजो जे युगमा हता, ते युग बोजो हतो, आ कळियुग छे, एमा हरिस्वरूप, हरिनाम अने हरिजन दृष्टिए नथी आवता, श्रवणमा पण नथी आवता, अे त्रणेमाना कोईनी स्मृति थाय एवी कोई पण चीज पण दृष्टिए नथी आवती बधा साधन कळियुगथी घेराई गया छे घणु करीने वधाय जीव उन्मार्गे प्रवर्ते छे, अथवा सन्मार्गनी सन्मुख वर्तता नजरे नथी पडता क्वचित् मुमुक्षु छे, पण तेने हजी मार्गनो निकट सबध नथी

निष्कपटीपणु पण मनुष्योमाथी चाल्या गया जेवु थयु छे, सन्मार्गनो एक अश अने तेनो पण शताश ते कोई आगळ पण दृष्टिअे पडतो नथो, केवळज्ञाननो मार्ग ते तो केवळ विसर्जन थई गयो छे कोण जाणे हरिनी इच्छा शु य छे? आवो विकट काळ तो हमणा ज जोयो केवळ मद पुण्यवाळा प्राणी जोई परम अनुकपा आवे छे अमने सत्सगनी न्यूनताने लीधे कई गमतु नथी घणी वार थोडे थोडे कहेवाई गयु छे, तथापि चोख्खा शब्दोमा कहेवायाथी स्मृतिमा वधारे रहे एटला माटे कहीए छीए के कोईथी अर्थ सबध अने कामसबध तो घणा काळ थया गमता ज नथी हमणा धर्मसबध अने मोक्ष-सबध पण गमतो नथी धर्म सबध अने मोक्षसबध तो घणु करीने योगीओने पण गमे छे, अने अमे तो तेथी पण विरक्त रहेवा मागीए छीए हाल तो अमने कई गमतु नथी, अने जे कई गमे छे, तेनो अतिशय वियोग छे वधारे शु लखवु? सहन ज करवु ए सुगम छे

२८
पूर्णकाम चित्त

[३०४/२९१]

ववाणिया, आसो वद १२, गुरु, १९४७

ॐ

पूर्णकाम चित्तने नमोनम

आत्मा ब्रह्म समाधिमा छे मन वनमा छे एकबीजाना आभासे अनुक्रमे देह कंई क्रिया करे छे, त्या सविगत अने संतोषरूप एवा तमारा बनेना पत्रनो उत्तर शाथी लखवो ते तमे कहो

× × × ×

एक समय पण विरह नही, एवी रीते सत्सगमा ज रहेवानु इच्छीए छीए पण ते तो हरिइच्छावश छे

कळियुगमा सत्सगनी परम हानि थई गई छे अधकार व्याप्त छे अने सत्संगनु जे अपूर्वपणु तेनु जीवने यथार्थ भान थतु नथी

२९
अपूर्व वीतरागता

[३१०/३१३]

मुबई, पोष सुद ७, गुरु, १९४८

ज्ञानीना आत्माने अवलोकीए छीए

अने तेम थईए छीए

× × × ×

कोई एवा प्रकारनो उदय छे के, अपूर्व वीतरागता छता वेपार सबधी कंईक प्रवर्तन करी शकीए छीए, तेम ज

बीजा पण खावापीवा वगेरेना प्रवर्तन माड माड करी शकीए छीए मन क्याय विराम पामतु नथी, घणु करीने अत्र कोईनो समागम इच्छतु नथी कई लखी शकातु नथी वधारे परमार्थ-वाक्य वदवा इच्छा थती नथी, कोईए पूछेला प्रश्ननो उत्तर जाणता छता लखी शकता नथी, चित्तनो पण झाझो सग नथी, आत्मभावे वर्ते छे -

समये समये अनतगुणविशिष्ट आत्मभाव वधतो होय एवी दशा रहे छे, जे घणु करीने कळवा देवामा आवती नथी अथवा कळी शके तेवानो प्रसग नथी.

आत्माने विषे सहज स्मरणे प्राप्त थयेलु ज्ञान श्री वर्धमानने विषे हतु एम जणाय छे पूर्ण वीतराग जेवो बोध ते अमने सहजे साभरी आवे छे, एटले ज तमने अने गोसलियाने लख्यु हतु के तमे पदार्थने समजो बीजो कोई तेम लखवामा हेतु नहोतो

३०

वारंवार वनवास सांभरे छे

[३१६/३२९]

मुबई, माह वद, १९४८

न गमतु एवु क्षणवार करवाने कोई इच्छतु नथी तथापि ते करवु पडे छे ए एम सूचवे छे के पूर्वकर्मनु निबधन अवश्य छे

अविकल्प. समाधिनु ध्यान क्षणवार पण मटतु नथी तथापि अनेक वर्षो थया विकल्परूप उपाधिने आराध्या जईए छीए

ज्या सुधी ससार छे त्या सुधी कोई जातनी उपाधि होवी तो सभवे छे, तथापि अविकल्प-समाधिमा स्थित एवा ज्ञानीने तो ते उपाधि पण अवाध छ, अर्थात् समाधि ज छे

आ देह धारण करीने जोके कोई महान श्रीमतपणु भोगव्यु नथी, शब्दादि विषयोनो पूरो वैभव प्राप्त थयो नथी, कोई विशेष एवा राज्याधिकारे सहित दिवस गाळ्या नथी, पोताना गणाय छे एवा कोई धाम, आराम सेव्या नथी. अने हजु युवावस्थानो पहेलो भाग वर्ते छे, तथापि ए कोईनी आत्मभावे अमने कई इच्छा उत्पन्न थती नथी, ए एक मोटु आश्चर्य जाणी वर्तीए छीए, अने ए पदार्थोनी प्राप्ति-अप्राप्ति बन्ने समान थया जाणी घणा प्रकारे अविकल्प समाधिने ज अनुभवीए छीए एम छता वारवार वनवास साभरे छे, कोई प्रकारनो लोकपरिचय रुचिकर थतो नथी, सत्संगमा सुरती प्रवह्या करे छे, अने अव्यवस्थित दशाए उपाधियोगमा रहीए छीए एक अविकल्प समाधि सिवाय बीजु खरी रीते स्मरण रहेतु नथी, चिंतन रहेतु नथी, रुचि रहेती नथी, अथवा कई काम करातु नथी

ज्योतिषादि विद्या के अणिमादि सिद्धि ए मायिक पदार्थो जाणी आत्माने तेनु स्मरण पण क्वचित् ज थाय छे ते वाटे कोई वात जाणवानु अथवा सिद्ध करवानु क्यारेय योग्य लागतु नथी, अने ए वातमा कोई प्रकारे हाल तो चित्तप्रवेश पण रह्यो नथी

पूर्व निवधन जे जे प्रकारे उदय आवे, ते ते प्रकारे अनुक्रमे वेदन कर्या जवा एम करवु योग्य लाग्यु छे.

तमे पण तेवा अनुक्रममा गमे तेटला थोडा अंशे प्रवर्तायं तोपण तेम प्रवर्तवानो अभ्यास राखजो अने कोई पण कामना प्रसगमा वधारे शोचमा पडवानो अभ्यास ओछो करजो, एम करवु अथवा थवु ए ज्ञानीनी अवस्थामा प्रवेश करवानु द्वार छे

कोई पण प्रकारनो उपाधिप्रसग लखो छो ते, जोके वाच्यामा आवे छे, तथापि ते विषे चित्तमा कई आभास पडतो नही होवाथी घणु करीने उत्तर लखवानु पण बनतु नथी, ए दोष कहो के गुण कहो पण क्षमा करवा योग्य छे

सासारिक उपाधि अमने पण ओछी नथी तथापि तेमा स्वपणु रह्यु नही होवाथी तेथी गभराट उत्पन्न थतो नथी ते उपाधिना उदयकाळने लीधे हाल तो समाधि गौणभावे वर्ते छे, अने ते माटेनो शोच रह्या करे छे.

लि वीतरागभावना यथायोग्य

३१

वदेही चित्तस्थिति

[३१९/३३४]

मुबई, फागण सुद १०, बुध, १९४८

ॐ

हृदयरूप श्री सुभाग्य प्रत्ये,

भक्तिपूर्वक नमस्कार पहोचे

'हवे पछी लखीशु, हवे पछी लखीशु' एम लखीने घणी वार लखवानु बन्यु नथी, ते क्षमा करवा योग्य छे, कारण के चित्तस्थिति घणु करी विदेही जेवी वर्ते छे, एटले

कार्यने विषे अव्यवस्था थई जाय छे जेवो हाल चितस्थिति छे, तेवी अमुक समय सुधी वर्ताव्या विना छूटको नथी

घणा घणा ज्ञानी पुरुषो थई गया छे, तेमा अमारी जेवो उपाधिप्रसग अने चित्त-स्थिति उदासीन, अति उदासीन, तेवा घणु करीने प्रमाणमा थोडा थया छे उपाधिप्रसगने लीधे आत्मा-सबधी जे विचार ते अखडपणे थई शकतो नथी, अथवा गौणपणे थया करे छे, तेम थवाथी घणो काळ प्रपच विषे रहेवु पडे छे, अने तेमा तो अत्यत उदास परिणाम थई गयेल होवाथी क्षणवार पण चित्त टकी शकतु नथी, जेथी ज्ञानीओ सर्वसगपरि-त्याग करी अप्रतिबद्धपणे विचरे छे 'सर्वसग' शब्दनो लक्ष्यार्थ एवो छे के अखडपणे आत्मध्यान के बोध मुख्यपणे न रखावी शके एवो सग आ अमे टूकामा लख्यु छे, अने ते प्रकारने बाह्यथी, अतरथी भज्या करीए छीए

देह छता मनुष्य पूर्ण वीतराग थई शके एवो अमारो निश्चल अनुभव छे कारण के अमे पण निश्चय ते ज स्थिति पामवाना छीए, एम अमारो आत्मा अखडपणे कहे छे, अने एम ज छे, जरूर एम ज छे पूर्ण वीतरागनी चरणरज निरतर मस्तके हो, एम रह्या करे छे अत्यत विकट एवु वीतरागत्व अत्यत आश्चर्यकारक छे, तथापि ते स्थिति प्राप्त थाय छे, सदेहे प्राप्त थाय छे, ए निश्चय छे, प्राप्त करवाने पूर्ण योग्य छे, एम निश्चय छे सदेहे तेम थया विना अमने उदासीनता मटे एम जणातु नथी अने तेम थवु संभवित छे, जरूर एम ज छे प्रश्नोना उत्तर घणु करीने लखवानु बनी शकशे नही, कारण के चित्तस्थिति जणावी तेवी वर्त्या करे छे

हाल त्या कई वाचवा, विचारवानु चाले छे के शी रीते, ते कंई प्रसगोपात्त लखशो

त्यागने इच्छोए छीए, पण थतो नथी तें त्याग कदापि तमारी इच्छाने अनुसरतो करीए, तथापि तेटलु पण हाल तो बनवु सभवित नथी.

अभिन्न बोधमयना प्रणाम पहोचे

३२

अप्रतिबद्ध किवा मुक्त मन

[३२३/३४७]

मुबई, फागण वद ०)), सोम, १९४८

ॐ

आत्मस्वरूपे हृदयरूप विश्राममूर्ति श्री सुभाग्य प्रत्ये,

विनययुक्त एवा अमारा प्रणाम पहोचे.

अत्र घणु करीने आत्मदशाए सहजसमाधि वर्ते छे बाह्य उपाधिनो जोग विशेषपणे उदय प्राप्त थवाथी ते प्रकारे वर्तवामा पण स्वस्थ रहेवु पडे छे

जाणीए छीए के घणा काळे जे परिणाम प्राप्त थवानु छे ते तेथी थोडा काळे प्राप्त थवा माटे ते उपाधि जोग विशेषणपणे वर्ते छे

तमारा घणा पत्र–पत्ता अमने पहोच्या छे तेमा लखेल ज्ञानसंबधी वार्ता घणु करीने अमे वाची छे ते सर्व प्रश्नोनो

घणु करी उत्तर लखवामा आव्यो नथी, तेने माटे क्षमा आपवो योग्य छे

ते पत्रोमा कोई कोई व्यावहारिक वार्ता पण प्रसगे लखेली छे, जे अमे चित्तपूर्वक वाची शकीए तेम बनवु विकट छे तेम ते वार्ता सबधी प्रत्युत्तर लखवा जेवु सूझतु नथी एटले ते माटे पण क्षमा आपवा योग्य छे

हाल अत्र अमे व्यावहारिक काम तो प्रमाणमा घणु करीए छीए, तेमा मन पण पूरी रीते दईए छीए, तथापि ते मन व्यवहारमा चोटतु नथी, पोताने विषे ज रहे छे, एटले व्यवहार बहु बोजारूपे रहे छे

आखो लोक त्रणे काळने विषे दु खे करीने पीडातो मानवामा आव्यो छे, अने तेमा पण आ वर्ते छे, ते तो महा दुषमकाळ छे, अने सर्व प्रकारे विश्रातिनु कारण एवो जे 'कर्तव्यरूप श्री सत्सग' ते तो सर्वकाळने विषे प्राप्त थवो दुर्लभ छे ते आ काळमा प्राप्त थवो घणो घणो दुर्लभ होय एमा कई आश्चर्यकारक नथी

अमे के जेनु मन प्राये क्रोधथी, मानथी, मायाथी, लोभथी, हास्यथी, रतिथी, अरतिथी, भयथी, शोकथी, जुगुप्साथी के शब्दादिक विषयोथी अप्रतिबध जेवु छे, कुटुबथी, धनथी, पुत्रथी, 'वैभवथी,' स्त्रीथी के देहथी मुक्त जेवु छे, ते मनने पण सत्सगने विषे बधन राखवु बहु बहु रह्या करे छे, तेम छता अमे अने तमे हाल प्रत्यक्षपणे तो वियोगमा रह्या करीए छीए ए पण पूर्व निबधननो कोई मोटो प्रबध उदयमा होवानु सभाव्य कारण छे

ज्ञान सबधी प्रश्नोनो उत्तर लखाववा आपनी जिज्ञासा प्रमाणे करवामा प्रतिबध करनारी एक चित्तस्थिति थई छे, जेथी हाल तो ते विषे क्षमा आपवा योग्य छे

आपनी लखेली व्यावहारिक केटलीक वार्ताओ अमने जाणवामा छे, तेना जेवी हती तेमा कोई उत्तर लखवा जेवी पण हती तथापि मन तेम नही प्रवृत्ति करी शक्याथी क्षमा आपवा योग्य छे

३३
आत्माकार मन

[३२४/३५३]

मुबई चैत्र सुद १२, शुक्र १९४८

ॐ

मुमुक्षुतापूर्वक लखेलु तम वगेरेनु पत्र पहोच्यु छे

समय मात्र पण अप्रमत्तधाराने नही विस्मरण करतु एवु जे आत्माकार मन ते वर्तमान समये उदय प्रमाणे प्रवृत्ति करे छे, अने जे कोई पण प्रकारे वर्ताय छे, तेनु कारण पूर्वे निबधन करवामा आवेलो ए उदय छे ते उदयने विषे प्रीति पण नथी, अने अप्रीति पण नथी समता छे, करवा योग्य पण एम ज छे पत्र लक्षमा छे

यथायोग्य

३४
अखड आत्मध्यान

[३२०/३६६]

मुवई, वेशाख सुद १२, रवि, १९४८

हृदयरूप श्री सुभाग्य,

मनमा वारवर विचारथी निश्चय थई रह्यो छे के कोई पण प्रकारे उपयोग करी अन्यभावमा पोतापणु थतु नथी, अने अखड आत्मध्यान रह्या करे छे, एवी जे दशा तेने विषे विकट उपाधिजोगनो उदय ए आश्चर्यकारक छे, हालमा तो थोडी क्षणनी निवृत्ति माड रहे छे, अने प्रवृत्ति करी शके एवी योग्यतावाळु तो चित्त नथी, अने हाल तेवी प्रवृत्ति करवी ए कर्त्तव्य छे, तो उदासपणे तेम करीए छीए, मन क्याय वाझतु नथी, अने कई गमतु नथी, तथापि हाल हरिइच्छा आधीन छे

निरुपम एवु जे आत्मध्यान, तीर्थंकरादिके कर्यु छे, ते परम आश्चर्यकारण छे ते काळ पण आश्चर्यकारक हतो वधारे शु कहेवु ? 'वननी मारी कोयल'नी कहेवत प्रमाणे आ काळमा अने आ प्रवृत्तिमा अमे छीए

३५
अविच्छिन्न आत्मध्यान

[३२९/३७०]

मुबई, वैशाख वद ११, रवि, १९४८

हृदयरूप श्री सुभाग्य प्रत्ये,

अविच्छिन्नपणे जेने विषे आत्मध्यान वर्ते छे एवा जे श्री . ना प्रणाम पहोचे.

अने ए कल्पना ज्ञानीनु परम एवु जे आत्मपणु, परितोषपणु, मुक्तपणे ते जीवने जणावा देती नथी, एम जाणवा योग्य छे

जे प्रकारे प्रारब्धनो क्रम उदय होय ते प्रकारे हाल तो वर्तीए छीए, अने एम वर्तवु कोई प्रकारे तो सुगम भासे छे. ठाकोर साहेबने मळवा सवधी विगत आजना पत्रने विषे लखी, पण प्रारब्ध क्रम तेवो वर्ततो नथी उदीरणा करी शकीए एवी असुगम वृत्ति उत्पन्न थती नथी

जोके अमारु चित्त नेत्र जेवु छे, नेत्रने विषे बीजा अवयवनी पेठे एक रजकण पण सहन थई शके नही. बीजा अवयवोरूप अन्य चित्त छे अमने वर्ते छे एवु जे चित्त ते नेत्ररूप छे, तेने विषे वाणीनु ऊडवु समजाववु, आ करवु, अथवा आ न करवु, एवी विचारणा करवी ते माड माड बने छे घणी क्रिया तो शून्यपणानी पेठे वर्ते छे, आवी स्थिति छता उपाधिजोग तो बळवानपणे आराधीए छीए ए वेदवु विकट ओछु लागतु नथी, कारण के आखनी पासे जमीननी रेती उपडाववानु कार्य थवारूप थाय छे ते जेम दु खे—अत्यत दु खे—थवु विकट छे, तेम चित्तने उपाधि ते परिणामरूप थवा बराबर छे सुगमपणाए स्थित चित्त होवाथी वेदनाने सम्यक्-प्रकारे वेदे छे, अखडसमाधिपणे वेदे छे आ वात लखवानो आशय तो एम छे जे आवा उत्कृष्ट वैराग्यने विषे आवो उपाधिजोग वेदवानो जे प्रसग छे, तेने केवो गणवो? अने आ बधु शा अर्थे करवामा आवे छे? जाणता छता ते मूकी केम देवामा आवतो नथी? ए बधु विचारवा योग्य छे

मणि विषे लख्यु ते सत्य छे.

'ईश्वरेच्छा' जेम हशे तेम थशे विकल्प करवाथी खेद थाय, अने ते तो ज्या सुधी तेनी इच्छा होय त्या सुधी ते प्रकारे ज प्रवर्ते सम रहेवु योग्य छे

बीजी तो कई स्पृहा नथी, कोई प्रारब्धरूप स्पृहा पण नथी, सत्तारूप कोई पूर्वे उपार्जित करेली उपाधिरूप स्पृहा ते तो अनुक्रमे सवेदन करवी छे एक सत्सग—तमरूप सत्सगनी स्पृहा वर्ते छे रुचिमात्र समाधान पामी छे ए आश्चर्यरूप वात क्या कहेवी? आश्चर्य थाय छे आ जे देह मळ्यो ते पूर्वे कोई वार मळ्यो न हो तो, भविष्यकाळे प्राप्त थवो नथी धन्यरूप—कृतार्थरूप एवा जे अमे तेने विषे आ उपाधिजोग जोई लोकमात्र भूले एमा आश्चर्य नथी, अने पूर्वे जो सत्पुरुषनु ओळखाण पड्यु नथी, तो ते आवा योगना कारणथी छे वधारे लखवु सूझतु नथी

नमस्कार पहोचे गोशळियाने सम परिणामरूप थयायोग्य अने नमस्कार पहोचे

समस्वरूप श्री राजचंद्रना यथायोग्य.

३८

उदयाधीन जीवितव्य

[३४२/३९६]

मुबई, श्रावण वद, १९४८

ॐ

अन-अवकाश एवु आत्मस्वरूप वर्ते छे, जेमा प्रारब्धोदय सिवाय बीजो कोई अवकाश जोग नथी

आखो दिवस निवृत्तिना योगे काळ नही जाय त्या सुधी सुख रहे नही, एवी अमारी स्थिति छे "आत्मा आत्मा," तेनो विचार, ज्ञानी पुरुषनी स्मृति, तेना माहात्म्यनी कथावार्ता, ते प्रत्ये अत्यत भक्ति, तेमना अनवकाश आत्मचारित्र प्रत्ये मोह, ए अमने हजु आकर्ष्या करे छे, अने ते काळ भजीए छीए

पूर्वे काळमा जे जे ज्ञानी पुरुषना प्रसगो व्यतीत थया छे ते काळ धन्य छे, ते क्षेत्र अत्यत धन्य छे, ते श्रवणने, श्रवणना कर्त्ताने, अने तेमा भक्तिभाववाळा जीवोने त्रिकाळ दडवत् छे ते आत्मस्वरूपमा भक्ति, चिंतन, आत्मव्याख्यानी ज्ञानी पुरुषनी वाणी अथवा ज्ञानीना शास्त्रो के मार्गानुसारी ज्ञानी पुरुषना सिद्धात, तेनी अपूर्वताने प्रणाम अति भक्तिए करीए छीए अखड आत्मधूनना एकतार प्रवाहपूर्वक ते वात अमने हजी भजवानी अत्यत आतुरता रह्या करे छे, अने बीजी बाजुथी आवा क्षेत्र, आवा लोकप्रवाह, आवा उपाधिजोग अने बीजा बीजा तेवा तेवा प्रकार जोई विचार मूर्च्छावत् थाय छे ईश्वरेच्छा।

प्रणाम पहोचे

४०

सहजानद स्थिति

[३८४/४६९]

मुबई, भादरवा वद ०)) १९४९

जेवी दृष्टि आ आत्मा प्रत्ये छे, तेवी दृष्टि जगतना सर्व आत्माने विषे छे जेवो स्नेह आ आत्मा प्रत्ये छे तेवो स्नेह सर्व आत्मा प्रत्ये वर्ते छे जेवी आ आत्मानी सहजानद स्थिति

इच्छीए छीए, तेवी ज सर्व आत्मा प्रत्ये इच्छीए छीए जे जे आ आत्मा माटे इच्छीए छीए, ते ते सर्व आत्मा माटे इच्छीए छीए जेवो सर्व देह प्रत्ये वर्तवानो प्रकार राखीए छीए, तेवो ज आ देह प्रत्ये प्रकार वर्ते छे आ देहमा विशेष बुद्धि अने बीजा देह प्रत्ये विषम बुद्धि घणु करीने क्यारेय थई शकती नथी जे स्त्रीआदिनो स्वपणे सबध गणाय छे, ते स्त्रीआदि प्रत्ये जे कई स्नेहादिक छे, अथवा समता छे, तेवा ज प्राये सर्व प्रत्ये वर्ते छे आत्मारूपपणाना कार्ये मात्र प्रवर्तन होवाथी जगतना सर्व पदार्थ प्रत्ये जेम उदासीनता वर्ते छे तेम स्वपणे गणाता स्त्रीआदि पदार्थो प्रत्ये वर्ते छे.

प्रारब्ध प्रबधे स्त्रीआदि प्रत्ये जे कई उदय होय तेथी विशेष वर्तना घणु करीने आत्माथी थती नथी कदापि करुणाथी कई तेवो विशेष वर्तना थती होय तो तेवी ते ज क्षणे तेवा उदयप्रतिबद्ध आत्माओ प्रत्ये वर्ते छे, अथवा सर्व जगत प्रत्ये वर्ते छे कोई प्रत्ये कई विशेष करवु नही, के न्यून करवु नही, अने करवु तो तेवु एकधारानु वर्तन सर्व जगत प्रत्ये करवु एवु ज्ञान आत्माने घणा काळ थया दृढ छे, निश्चय-स्वरूप छे कोई स्थळे न्यूनपणु, विशेषपणु, के कई तेवी सम विषम चेष्टाए वर्तवु देखातु होय तो जरूर ते आत्मस्थितिए, आत्मबुद्धिए थतु नथी, एम लागे छे पूर्वप्रबधी प्रारब्धना योगे कई तेवु उदयभावपणे थतु होय तो तेने विषे पण समता छे कोई प्रत्ये ओछापणुं, अधिकपणु कई पण आत्माने रुचतु नथी, त्या पछी बीजी अवस्थानो विकल्प होवा योग्य नथी, एम तमने शु कहीए? सक्षेपमा लख्यु छे

सौथी अभिन्नभावना छे, जेटली योग्यता जेनी वर्ते छे, ते प्रत्ये तेटली अभिन्नभावनी स्फूर्ति थाय छे, क्वचित् करुणा-वुद्धिथी विशेष स्फूर्ति थाय छे, पण विषमपणाथी के विषय, परिग्रहादि कारणप्रत्ययथी ते प्रत्ये वर्तवानो कई आत्मामा सकल्प जणातो नथी अविकल्परूप स्थिति छे विशेष शु कहीए? अमारे कई अमारु नथी, के बीजानु नथी के बीजु नथी, जेम छे तेम छे जेम स्थिति आत्मानी छे, तेवी स्थिति छे सर्व प्रकारनी वर्तना निष्कपटपणाथी उदयनी छे, समविषमता नथी सहजानद स्थिति छे ज्या तेम होय त्या अन्य पदार्थमा आसक्त वुद्धि घटे नही, होय नही

(००००)

४१
केवळ अप्रमत्तता

[३९०/४८२]

मुबई, पोप वद १४, रवि, १९५०

हाल विशेषपणे करी लखवानु थतु नथी तेमा, उपाधि करता चित्तनु सक्षेपपणु विशेष कारणरूपे छे (चित्तनु इच्छा-रूपमा कई प्रवर्तन थवु सक्षेप पामे, न्यून थाय ते सक्षेपपणु अत्रे लख्यु छे.) अमे एम वेद्यु छे के, ज्या कई पण प्रमत्तदशा होय छे त्या जगतप्रत्ययी कामनो आत्माने विषे अवकाश घटे छे ज्या केवळ अप्रमत्तता वर्ते छे, त्या आत्मा सिवाय बीजा कोई पण भावनो अवकाश वर्ते नही, जोके तीर्थंकरादिक,

सपूर्ण एवु ज्ञान पाम्या पछी, कोई जातनी देहक्रियाए सहित देखावानु बन्यु छे, तथापि आत्मा, ए क्रियानो अवकाश पामे तो ज करी शके एवी क्रिया कोई ते ज्ञान पछी होई शके नही, अने तो ज त्या सपूर्णज्ञान टके, एवो असदेह ज्ञानी पुरुषोनो निर्धार छे, एम अमने लागे छे ज्वरादि रोगमा कई स्नेह जेम चित्तने नथी थतो तेम आ भावोने विषे पण वर्ते छे, लगभग स्पष्ट वर्ते छे, अने ते प्रतिबधना रहितपणानो विचार थया करे छे

४२

आत्मपरिणति

[४५८/५८३]

मुबई, चैत्र वद ११, शुक्र, १९५१

एक आत्मपरिणति सिवायना बीजा जे विषयो तेने विषे चित्त अव्यवस्थितपणे वर्ते छे, अने तेवु अव्यवस्थितपणु लोकव्यवहारथी प्रतिकूळ होवाथी लोकव्यवहार भजवो गमतो नथी, अने तजवो बनतो नथी, ए वेदना घणु करीने दिवसना आखा भागमा वेदवामा आव्या करे छे

खावाने विषे, पीवाने विषे, बोलवाने विषे, शयनने विषे, लखवाने विषे के बीजा व्यावहारिक कार्योने विषे जेवा जोईए तेवा भानथी प्रवर्ताातु नथी, अने ते प्रसगो रह्या होवाथी आत्मपरिणतिने स्वतत्र प्रगटपणे अनुसरवामा विपत्ति आव्या करे छे, अने ते विषेनु क्षणे क्षणे दुःख रह्या करे छे

अचलित आत्मरूपे रहेवानी स्थितिमा ज चित्तेच्छा रहे छे, अने उपर जणाव्या प्रसगोनी आपत्तिने लीधे केटलोक ते स्थितिनो वियोग रह्या करे छे, अने ते वियोग मात्र परेच्छाथी रह्यो छे, स्वेच्छाना कारणथी रह्यो नथी, ए एक गभीर वेदना क्षणे क्षणे थया करे छे.

आ ज भवने विषे अने थोडा ज वखत पहेला व्यवहारने विषे पण स्मृति तीव्र हती ते स्मृति हवे व्यवहारने विषे क्वचित ज, मदपणे प्रवर्ते छे थोडा ज वखत पहेला, एटले थोडा वर्षो पहेला वाणी घणु बोली शकती, वक्तापणे कुशळ-ताथी प्रवर्ती शकती, ते हवे मदपणे अव्यवस्थाथी प्रवर्ते छे थोडा वर्ष पहेला थोडा वखत पहेला लेखनशक्ति अति उग्र हती, आजे शु लखवु ते सूझता सूझता दिवसना दिवस व्यतीत थई जाय छे, अने पछी पण जे कई लखाय छे, ते इच्छेलु अथवा योग्य व्यवस्थावाळु लखातु नथी, अर्थात् एक आत्मपरिणाम सिवाय सर्व बीजा परिणामने विषे उदासीनपणु वर्ते छे, अने जे कई कराय छे ते जेवा जोईए तेवा भानना सोमा अशथी पण नथी थतु जेम तेम अने जे ते कराय छे लखवानी प्रवृत्ति करता वाणीनी प्रवृत्ति कईक ठीक छे, जेथी कई आपने पूछवानी इच्छा होय, जाणवानी इच्छा होय तेना विषे समागमे कही शकाशे

कुदकुदाचार्य अने आनदघनजीने सिद्धात सबधी ज्ञान तीव्र हतु कुदकुदाचार्यजी तो आत्मस्थितिमा बहु स्थित हता

नामनु जेने दर्शन होय ते बधा साम्यक्ज्ञानी कही शकाता नथी विशेष हवे पछी

४३

सहज प्रवृत्ति अने उदीरण प्रवृत्ति

[४७६/६२०]

मुंबई, अषाड वद ०)), सोम, १९५१

जन्मथी जेने मति, श्रुत अने अवधि ए त्रण ज्ञान हता, अने आत्मोपयोगी एवी वैराग्यदशा हती, अल्पकाळमा भोगकर्म क्षीण करी सयमने ग्रहण करता मनपर्यंव नामनु ज्ञान पाम्या हता, एवा श्रीमद् महावीरस्वामी, ते छता पण बार वर्ष अने साडा छ मास सुधी मौनपणे विचर्या आ प्रकारनु तेमनु प्रवर्तन ते उपदेशमार्ग प्रवर्तावता कोई पण जीवे अत्यंतपणे विचारी प्रवर्तवा योग्य छे एवी अखड शिक्षा प्रतिबोधे छे तेम ज जिन जेवाए जे प्रतिबधनी निवृत्ति माटे प्रयत्न कर्यु, ते प्रतिबंधमा अजागृत रहेवा योग्य कोई जीव न होय एम जणाव्यु छे, तथा अनत आत्मार्थनो ते प्रवर्तनथी प्रकाश कर्यो छे, जेवा प्रकार प्रत्ये विचारवानु विशेष स्थिरपणु वर्ते छे, वर्तावु घटे छे

जे प्रकारनु पूर्वप्रारब्ध भोगव्ये निवृत्त थवा योग्य छे, ते प्रकारनु प्रारब्ध उदासीनपणे वेदवु घटे, जेथी ते प्रकार प्रत्ये प्रवर्तता जे कई प्रसग प्राप्त थाय छे, ते ते प्रसगमा जागृत उपयोग न होय, तो जीवने समाधिविराधना थता वार न लागे ते माटे सर्व सगभावने मूळपणे परिणामी करी, भोगव्या विना न छूटी शके तेवा प्रसग प्रत्ये प्रवृत्ति थवा देवी घटे, तोपण ते प्रकार करता सर्वांश असगता जन्मे ते प्रकार भजवो घटे.

केटलाक वखत थया सहज प्रवृत्ति अने उदीरण प्रवृत्ति एम विभागे प्रवृत्ति वर्ते छे मुख्यपणे सहज प्रवृत्ति वर्ते छे सहजप्रवृत्ति एटले प्रारब्धोदये उद्‌भव थाय ते, पण जेमा कर्तव्य परिणाम नही बोजो उदीरण प्रवृत्ति जे परार्थादि योगे करवी पडे ते हाल बीजी प्रवृत्ति थवामा आत्मा सक्षेप थाय छे, केमके अपूर्व एवा समाधियोगने ते कारणथी पण प्रतिबध थाय छे, एम साभळ्यु हतु तथा जाण्यु हतु, अने हाल तेवु स्पष्टार्थे वेद्यु छे ते ते कारणोथी वधारे समागममा आववानु, पत्रादिथी कई पण प्रश्नोत्तरादि जणाववानु, तथा बीजा प्रकारे परमार्थादि लखवा करवानु पण सक्षेप थवाना पर्यायने आत्मा भजे छे एवा पर्यायने भज्या विना अपूर्व समाधिने हानि सभवती हती एम छता पण थवा योग्य एवी सक्षेप प्रवृत्ति थई नथी

अत्रेथी श्रावण सुद ५–६ना नीकळवानु थवा सभव छे, पण अहीथी जती वखते समागमनो योग थई शकवा योग्य नथी अने अमारा जवाना प्रसग विषे हाल तमारे बीजा कोई प्रत्ये पण जणाववानु विशेष कारण नथी, केमके जती वखते समागम नही करवा सबधमा कई तेमने सशय प्राप्त थवानो सभव थाय, जेम न थाय तो सारु ए ज विनति

४४

धर्मोन्नति

[५७९/७०९]

राळज, भादरवा, १९५२

१ हे नाथ! का धर्मोन्नति करवारूप इच्छा सहजपणे समावेश पामे तेम थाओ; का तो ते इच्छा अवश्य कार्यरूप

थाओ. अवश्य कार्यरूप थवो वहु दुष्कर देखाय छे केमके अल्प अल्प वातमा मतभेद वहु छे, अने तेना मूळ घणा ऊडा गयेला छे. मूळमार्गथी लोको लाखो गाउ दूर छे एटलु ज नहो पण मूळमार्गनो जिज्ञासा तेमने उत्पन्न करावबी होय, तोपण घणा काळनो परिचय थये पण थवी कठण पडे एवी तेमनी दुराग्रहादिथी जडप्रधान दशा वर्ते छे

२. उन्नतिना साधनोनी स्मृति करु छु —

बोधबीजनु स्वरूपनिरूपण मूळमार्ग प्रमाणे ठाम ठाम थाय

ठाम ठाम मतभेदथी कई ज कल्याण नथी ए वात फेलाय

प्रत्यक्ष सद्गुरुनी आज्ञाए धर्म छे एम वात लक्षमा आवे.

द्रव्यानुयोग,—आत्मविद्याप्रकाश थाय

त्याग वैराग्यना विशेषपणाथी साधुओ विचरे

नवतत्त्वप्रकाश

साधुधर्मप्रकाश

श्रावकधर्मप्रकाश

विचार

घणा जीवोने प्राप्ति

४५

शासनोद्धार वेदना

[५७५/७५४]

सवत १९५३

हे ज्ञातपुत्र भगवन् ! काळनी वलिहारी छे आ भारतना हीनपुण्यी मनुष्योने तारु सत्य, अखड अने पूर्वापर अविरोध

शासन क्याथी प्राप्त थाय? थवामा आवा विघ्नो उत्पन्न थया, तारा बाधेला शास्त्रो कल्पित अर्थथी विराध्या, केटलाक समूळगा खड्या. ध्याननु कार्य, स्वरूपनु कारण ए जे तारी प्रतिमा तेथी कटाक्षदृष्टिए लाखोगमे लोको वाळ्या, तारा पछी परपराए जे आचार्यपुरुषो थया तेना वचनमा अने तारा वचनमा पण शका नाखी दीधी एकात दई कूटी तारु शासन निंदाव्यु

शासन देवि! एवी सहायता कई आप के जे वडे कल्याणनो मार्ग हु बीजाने बोधी शकु, दर्शावी शकु,–खरा पुरुषो दर्शावी शके सर्वोत्तम निर्ग्रंथप्रवचनना बोध भणी वाळी आ आत्मविराधक पथोथी पाछा खेंचवामा सहायता आप!! तारो धर्म छे के समाधि अने बोधिमा सहायता आपवी

[अगत]

---

(२) हाथनोंधमांथी

१

सहज

[७९१/४]

[हाथनोंध १, पृ. ३]

जे पुरुष आ ग्रथमा सहज नोध करे छे, ते पुरुष माटे प्रथम सहज ते ज पुरुष लखे छे

तेनो हमणा एवी दशा अतरगमा रही छे के कईक विना सर्व ससारी इच्छानी पण तेणे विस्मृति करी नाखी छे

ते कंईक पाम्यो पण छें, अने पूर्णनो परम मुमुक्षु छे, छेल्ला मार्गनो नि शक जिज्ञासु छे

हमणा जे आवरणो तेने उदय आव्या छे, ते आवरणोथी एने खेद नथी. परतु वस्तुभावमा थती मदतानो खेद छे

ते धर्मनी विधि, अर्थनी विधि, कामनी विधि, अने तेने आधारे मोक्षनो विधिने प्रकाशी शके तेवो छे घणा ज थोडा पुरुषोने प्राप्त थयो हशे एवो ए काळनो क्षयोपशमी पुरुष छे.

तेने पोतानी स्मृति माटे गर्व नथी, तर्क माटे गर्व नथी, तेम ते माटे तेनो पक्षपात पण नथी, तेम छता कईक वहार राखवु पडे छे, तेने माटे खेद छे

तेनु अत्यारे एक विषय विना बीजा विषयप्रति ठेकाणु नथी ते पुरुष जोके तीक्ष्ण उपयोगवाळो छे, तथापि ते तीक्ष्ण उपयोग बीजा कोई पण विषयमा वापरवा ते प्रीति धरावतो नथी

२

[७९५/१०]

[हाथनोध १, पृ २५]

ए ज स्थिति–ए ज भाव अने ए स्वरूप

गमे तो कल्पना करो बीजी वाट ल्यो यथार्थ जोईतो होय तो आ लो

विभग ज्ञान—दर्शन अन्य दर्शनमा मानवामा आव्यु छे एमा मुख्य प्रवर्तकोए जे धर्ममार्ग बोध्यो छे, ते सम्यक् थवा स्यात् मुद्रा जोईए.

स्यात् मुद्रा ते स्वरूपस्थित आत्मा छे. श्रुतज्ञाननी अपेक्षाए स्वरूपस्थित आत्माए कहेलो शिक्षा छे

नाना प्रकारना नय, नाना प्रकारना प्रणाम, नाना प्रकारनी भगजाल, नाना प्रकारना अनुयोग ए सघळा लक्षणारूप छे लक्ष एक सच्चिदानंद छे

दृष्टिविष गया पछी गमे ते शास्त्र, गमे ते अक्षर, गमे ते कथन, गमे ते वचन, गमे ते स्थळ प्राये अहितनु कारण थतु नथी

पुनर्जन्म छे—जरूर छे—ए माटे हु अनुभवथी हा कहेवामा अचळ छु

आ काळमा मारुं जन्मवु मानु तो दु खदायक छे, अने मानु तो सुखदायक पण छे

[हाथनोध १, पृ २६]

एवु हवे कोई वाचन रह्यु नथी के जे वाची जोईए छीए ते पामीए ए जेना संगमा रह्यु छे ते सगनी आ काळमा न्यूनता थई पडी छे

विकराळ काळ ! . विकराळ कर्म ! . विकराळ आत्मा ! . जेम पण एम . .

हवे ध्यान राखो ए ज कल्याण

३

[७/९६/११]

[हाथनोध १, पृ २७]

एटलु ज शोधाय तो वधु पामशो, खचीत एमा ज छे मने चोक्कस अनुभव छे. सत्य कहु छु. यथार्थ कहु छु नि शक मानो.

ए स्वरूप माटे सहज सहज कोई स्थळे लखी वाळ्यु छे

४

[७९७/१६]

[हाथनोध १, पृ ३९]

ए त्यागी नथी, अत्यागी पण नथी. ए रागी पण नथी, वीतरागी पण नथी

पोतानो क्रम निश्चळ करो तेनी चोबाजु निवृत्त भूमिका राखो

आ दर्शन थाय छे ते का वृथा जाय छे? एनो विचार पुन. पुन विचारता मूर्छा आवे छे.

सतजनोए पोतानो क्रम मूक्यो नथी मूक्यो छे ते परम असमाधिने पाम्या छे

सतपणु अति अति दुर्लभ छे आव्या पछी सत मळवा दुर्लभ छे सतपणानी जिज्ञासावाळा अनेक छे परतु सतपणु दुर्लभ ते दुर्लभ ज छे।

५

प्रकाशभुवन

[७९९/१७]

[हाथनोध १, पृ. ४३]

खचीत ते सत्य छे एम ज स्थिति छे तमे आ भणी वळो —

तेओए रूपकथी कह्यु छे भिन्न भिन्न प्रकारे तेथी बोध थयो छे, अने थाय छे, परतु ते विभगरूप छे

आ बोध सम्यक् छे तथापि घणो ज सूक्ष्म अने मोह टळ्ये ग्राह्य थाय तेवो छे

सम्यक् बोध पण पूर्ण स्थितिमा रह्यो नथी तोपण जे छे ते योग्य छे

ए समजीने हवे घटतो मार्ग ल्यो

कारण शोधो मा, ना कहो मा, कल्पना करो मा एम ज छे

ए पुरुष यथार्थवक्ता हतो. अयथार्थ कहेवानु तेमने कोई निमित्त नहोतु

६

[७९८/१९]

[हाथनोध १, पृ. ४७]

ते दशा शाथी अवराई? अने ते दशा वर्धमान केम न थई?

लोकना प्रसगथी, मानेच्छाथी, अजागृतपणाथी, स्त्रीआदि परिषहनो जय न करवाथी.

जे क्रियाने विषे जीवने रग लागे छे, तेने त्या ज स्थिति होय छे, ऐवो जे जिननो अभिप्राय ते सत्य छे

त्रीस महा मोहनीयना स्थानक श्री तीर्थंकरे कह्या छे ते साचा छे

अनता ज्ञानी पुरुषोए जेनु प्रायश्चित्त कह्यु नथी, जेना त्यागनो एकात अभिप्राय आप्यो छे एवो जे काम तेथी जे मूझाया नथी, ते ज परमात्मा छे.

७

[८०१/३२]

[हाथनोंध १, पृ. ६३]

धन्य रे दिवस आ अहो,
जागी रे शाति अपूर्व रे,
दश वर्षे रे धारा उलसी,
मट्यो उदयकर्मनो गर्व रे धन्य०

ओगणससें ने एकत्रीसे,
आव्यो अपूर्व अनुसार रे,
ओगणीससे ने बेतालीसे,
अद्भुत वैराग्य धार रे. धन्य०

ओगणीससें ने सुडतालीसे,
समकित शुद्ध प्रकाश्यु रे,
श्रुत अनुभव वधती दशा,
निज स्वरूप अवभास्यु रे धन्य०

त्या आव्यो रे उदय कारमो,
परिग्रह कार्य प्रपच रे,
जेम जेम ते हडसेलीए,
तेम वधे न घटे रच रे धन्य०

[हाथनोध १, पृ ६४]

वधतु एम ज चालियु,
हवे दीसे क्षीण काई रे,
क्रमे करीने रे ते जशे,
एम भासे मनमाही रे धन्य०

यथा हेतु जे चित्तनो,
सत्य धर्मनो उद्धार रे,
थशे अवश्य आ देहथी,
एम थयो निरधार रे धन्य०

आवी अपूर्व वृत्ति अहो,
थशे अप्रमत्त योग रे,
केवळ लगभग भूमिका,
स्पर्शीने देह वियोग रे धन्य०

अवश्य कर्मनो भोग छे,
भोगववो अवशेष रे,
तेथी देह एक ज धारीने,
जाशु स्वरूप स्वदेश रे धन्य०

८

[८०३/३७]

[हाथनोध १, पृ ८७]

श्रीमान् महावीरस्वामी जेवाए अप्रसिद्ध पद राखी गृहवास वेद्यो–गृहवासथी निवृत्त थये पण साडाबार वर्ष जेवा दीर्घ काळ सुधी मौन आचर्यु. निद्रा तजी विषम परिषह सह्या एनो हेतु शो ?

अने आ जीव आम वर्ते छे, तथा आम कहे छे एनो हेतु शो ?

जे पुरुष सद्गुरुनी उपासना विना निज कल्पनाए आत्मस्वरूपनो निर्धार करे ते मात्र पोताना स्वच्छदना उदयने वेदे छे, एम विचारवु घटे छे.

जे जीव सत्पुरुषना गुणनो विचार न करे, अने पोतानी कल्पनाना आश्रये वर्ते ते जीव सहजमात्रमा भववृद्धि उत्पन्न करे छे केमके अमर थवाने माटे झेर पीए छे

९

[८०३/३८]

[हाथनोध १, पृ ८९]

सर्वसग महाश्रवरूप श्री तीर्थंकरे कह्यो छे, ते सत्य छे.

आवी मिश्रगुणस्थानक जेवी स्थिति क्या सुधी राखवी ? जे वात चित्तमा नही, ते करवी, अने जे चित्तमा छे तेमा उदास रहेवु एवो व्यवहार शी रीते थई शके ?

वैश्यवेषे अने निर्ग्रंथभावे वसता कोटी कोटी विचार थया करे छे

वेष अने ते वेष सबधी व्यवहार जोई लोकदृष्टि, तेवु माने ए खरु छे, अने निर्ग्रंथभावे वर्ततु चित्त ते व्यवहारमा यथार्थ न प्रवर्ती शके ए पण सत्य छे, जे माटे एवा बे प्रकारनी एक स्थिति करी वर्ती शकातु नथी, केमके प्रथम प्रकारे वर्तता निर्ग्रंथभावथी उदास रहेवु पडे तो ज यथार्थ व्यवहार साचवी शकाय एम छे, अने निर्ग्रंथभावे वसीए तो पछी ते व्यवहार गमे तेवो थाय तेनी उपेक्षा करवी घटे, जो उपेक्षा न करवामा आवे तो निर्ग्रंथभाव हानि पाम्या विना रहे नही

[हाथनोध १, पृ ९०]

ते व्यवहार त्याग्या विना अथवा अत्यंत अल्प कर्या विना निर्ग्रंथता यथार्थ रहे नही, अने उदयरूप होवाथी व्यवहार त्याग्यो जतो नथी

आ सर्व विभावयोग मटया विना अमारु चित्त बीजा कोई उपाये सतोष पामे एम लागतु नथी.

ते विभावयोग बे प्रकारे छे एक पूर्वे निष्पन्न करेलो एवो उदयस्वरूप, अने बीजो आत्मबुद्धिए करी रजनपणे करवामा आवतो भावस्वरूप.

आत्मभावे विभाव सबधी योग तेनी उपेक्षा ज श्रेयभूत लागे छे नित्य ते विचारवामा आवे छे, ते विभावपणे वर्ततो आत्मभाव घणो परिक्षीण कर्यो छे, अने हजी पण ते ज परिणति वर्ते छे

ते सपूर्ण विभावयोग निवृत्त कर्या विना चित्त विश्राति पामे एम जणातु नथी अने हाल तो ते कारणे करी विशेप क्लेश वेदन करवो पडे छे, केम के उदय विभावक्रियानो छे अने इच्छा आत्मभावमा स्थिति करवानी छे

[हाथनोध १, पृ ९१]

तथापि एम रहे छे के, उदयनु विशेप काळसुधी वर्तवु रहे तो आत्मभाव विशेष चचळ परिणामने पामशे, केमके आत्मभाव विशेष सधान करवानो अवकाश उदयनी प्रवृत्तिने लीधे प्राप्त न थई शके, अने तेथी ते आत्मभाव कई पण अजागृतपणाने पामे

जे आत्मभाव उत्पन्न थयो छे, ते आत्मभाव पर जो विशेष लक्ष करवामा आवे तो अल्पकाळमा तेनु विशेष वर्धमानपणु थाय, अने विशेष जागृतावस्था उत्पन्न थाय अने थोडा काळमा हितकारी एवी उग्र आत्मदशा प्रगटे, अने जो उदयनी स्थिति प्रमाणे उदयनो काळ रहेवा देवानो विचार करवामा आवे तो हवे आत्मशिथिलता थवानो प्रसग आवशे, एम लागे छे, केमके दीर्घकाळनो आत्मभाव होवाथी अत्यार सुधी उदयबळ गमे तेवु छता ते आत्मभाव हणायो नथी, तथापि कंईक कईक तेनी अजागृतावस्था थवा देवानो वखत आव्यो छे, एम छता पण हवे केवळ उदय पर ध्यान आपवामा आवशे तो शिथिलभाव उत्पन्न थशे

[हाथनोध १, पृ. ९२]

ज्ञानी पुरुषो उदयवश देहादि धर्म निवर्ते छे ए रीते प्रवृत्ति करी होय तो आत्मभाव हणावो न जोईए, ए माटे

ते वात लक्ष राखी उदय वेदवो घटे छे, एम विचार पण हमणा घटतो नथी, केमके ज्ञानना तारतम्य करता उदयबळ वधतु जोवामा आवे तो जरूर त्या ज्ञानीए पण जागृत दशा करवी घटे, एम श्री सर्वज्ञे कह्यु छे.

अत्यत दुषमकाळ छे तेने लीधे अने हतपुण्य लोकोए भरतक्षेत्र घेर्यु छे तेने लीधे परमसत्सग, सत्सग के सरळपरिणामी जीवोनो समागम पण दुर्लभ छे, एम जाणी जेम अल्पकाळमा सावधान थवाय तेम करवु घटे छे.

---

१० ।

[८०४/३९]

[हाथनोध १, पृ. ९३]

मौनदशा धारण करवी ?

व्यवहारनो उदय एवो छे के ते धारण करेली दशा लोकोने कषायनु निमित्त थाय, तेम व्यवहारनी प्रवृत्ति बने नही.

त्यारे ते व्यवहार निवृत्त करवो ?

ते पण विचारता बनवु कठण लागे छे, केमके तेवी कईक स्थिति वेदवानु चित्त रह्या करे छे पछी ते शिथिलताथी, उदयथी के परेच्छाथी के सर्वज्ञ द्रष्टथी, एम छता पण अल्पकाळमा आ व्यवहारने सक्षेप करवा चित्त छे

ते व्यवहार केवा प्रकारे सक्षेप थई शकशे ?

केमके तेनो विस्तार विशेषपणे जोवामा आवे छे व्यापारस्वरूपे, कुटुबप्रतिबधे, युवावस्थाप्रतिबधे, दयास्वरूपे, विकार-

स्वरूपे, उदयस्वरूपे –ए आदि कारणे ते व्यवहार विस्ताररूप जणाय छे

[हाथनोध १, पृ ९४]

हु एम जाणु छु के अनतकाळथी अप्राप्तवत् एवु आत्मस्वरूप केवळज्ञान–केवळदर्शनस्वरूपे अतर्मुहूर्तमा उत्पन्न कर्यु छे, तो पछी वर्ष छ मास काळमा आटलो आ व्यवहार केम निवृत्त नहो थई शके ? मात्र जागृतिना उपयोगातरथी तेनी स्थिति छे, अने ते उपयोगना वळने नित्य विचार्येथी अल्पकाळमा ते व्यवहार निवृत्त थई शकवा योग्य छे तोपण तेनी केवा प्रकारे निवृत्ति करवी, ए हजी विशेषपणे मारे विचारवु घटे छे एम मानु छु, केमके वीर्यने विशे कई पण मद दशा वर्ते छे ते मद दशानो हेतु शो ?

उदयवळे प्राप्त थयो एवो परिचय मात्र परिच्चय, एम कहेवामा कई बाध छे ? ते परिचयने विषे विशेष अरुचि रहे छे, ते छता ते परिचय करवो रह्यो छे ते परिचयनो दोष कही शकाय नही, पण निजदोष कही शकाय अरुचि होवाथी इच्छारूप दोष नही कहेता उदयरूप दोष कह्यो छे

११

[८०५/४०]

[हाथनोध १, पृ. ९६]

घणो विचार करी नोचेनु समाधान थाय छे.

एकात द्रव्य, एकात क्षेत्र, एकात काळ अने एकात भावरूप सयम आराध्या विना चित्तनी शाति नही थाय एम लागे छे एवो निश्चय रहे छे

ते योग हजी कई दूर सभवे छे, केमके उदयनु वळ जोता ते निवृत्त थता कईक विशेष काळ जशे

१२

[८०५/४१]

[हाथनोध १, पृ १०१]

हे जीव। असारभूत लागता एवा आ व्यवसायथी हवे निवृत्त था, निवृत्त।

ते व्यवसाय करवाने विषे गमे तेटलो बळवान प्रारब्धोदय देखातो होय तोपण तेथी निवृत्त था, निवृत्त।

जोके श्री सर्वज्ञे एम कह्यु छे के चौदमे गुणठाणे वर्ततो एवो जीव पण प्रारब्ध वेद्या विना मुक्त थई शके नही, तोपण तु ते उदयनो आश्रयरूप होवाथी निज दोष जाणी तेने अत्यत तीव्रपणे विचारी तेथी निवृत्त था, निवृत्त।

केवळ मात्र प्रारब्ध होय, अने अन्य कर्मदशा वर्तती न होय तो ते प्रारब्ध सहेजे निवृत्त थवा देवानु बने छे, एम परम पुरुषे स्वीकार्यु छे, पण ते केवळ प्रारब्ध त्यारे कही शकाय के ज्यारे प्राणातपर्यंत निष्ठाभेददृष्टि न थाय, अने तने सर्व प्रसगमा एम बने छे, एवु ज्या सुधी केवळ निश्चय न थाय त्या सुधी श्रेय ए छे के, तेने विषे त्यागबुद्धि भजवी, आ वात विचारी हे जीव। हवे तु अल्पकाळमा निवृत्त था, निवृत्त।

१३

[८०५/४५]

[हाथनोध १, पृ १०२]

हे जीव ! हवे तु सगनिवृत्तिरूप काळनी प्रतिज्ञा कर, प्रतिज्ञा कर !

केवळ सगनिवृत्तिरूप प्रतिज्ञानो विशेष अवकाश जोवामा न आवे तो अशसगनिवृत्तिरूप एवो आ व्यवसाय तेने त्याग !

जे ज्ञानदशामा त्यागात्याग कई सभवे नही ते ज्ञान-दशानी सिद्धि छे जेने विषे एवो तु सर्वसगत्यागदशा अल्पकाळ वेदीश तो सपूर्ण जगत प्रसगमा वर्ते तोपण तने बाधरूप न थाय ए प्रकारे वर्ते छते पण निवृत्ति ज प्रशस्त सर्वज्ञे कही छे, केमके ऋषभादि सर्व परम पुरुषे छेवट एम ज कर्यु छे

१४

[८१७/१]

[हाथनोध २. पृ ३]

राग, द्वेष अने अज्ञाननो आत्यतिक अभाव करी जे सहज शुद्ध आत्मस्वरूपमा स्थित थया ते स्वरूप अमारु स्मरण, ध्यान अने पामवा योग्य स्थान छे

१५

[८१८/३]

[हाथनोध २, पृ. ७]

शुद्ध चैतन्य

अनत आत्मद्रव्य

केवलज्ञानस्वरूप

शक्तिरूपे

ते

जेने सपूर्ण व्यक्त थयु छे, तथा व्यक्त थवानो
जे पुरुषो मार्ग पाम्या छे ते पुरुषोने
अत्यत भक्तिथी नमस्कार

१६

[८१८/४]

[हाथनोध २, पृ ९]

नमो जिणाण जिदभवाण

जिनतत्त्वसक्षेप

अनत अवकाश छे
तेमा जड चेतनात्मक विश्व रह्यु छे
विश्वमर्यादा बे अमूर्त्त द्रव्यथी छे,
जेने धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय एवी सज्ञा छे.
जीव अने परमाणुपुद्गल ए बे द्रव्य सक्रिय छे.
सर्व द्रव्य द्रव्यत्वे शाश्वत छे

अनत जीव छे

अनत अनत परमाणुपुद्गल छे

धर्मास्तिकाय एक छे

अधर्मास्तिकाय एक छे

आकाशास्तिकाय एक छे

काळ द्रव्य छे

विश्वप्रमाण क्षेत्रावगाह करी शके एवो एकेक जीव छे

१७

[८१८/५]

[हाथनोध २, पृ १३]

नमो जिणाण जिदभवाण

जेनी प्रत्यक्ष दशा ज बोधरूप छे, ते महत्पुरुषने धन्य छे

जे मतभेदे आ जीव ग्रह्यो छे, ते ज मतभेद ज तेना स्वरूपने मुख्य आवरण छे

वीतरागपुरुषना समागम विना, उपासना विना, आ जीवने मुमुक्षुता केम उत्पन्न थाय? सम्यक्ज्ञान क्याथी थाय? सम्यक्दर्शन क्याथी थाय? सम्यक्चारित्र क्याथी थाय? केम के ए त्रणे वस्तु अन्य स्थानके होती नथी

वीतरागपुरुषना अभाव जेवो वर्तमानकाळ वर्ते छे

हे मुमुक्षु! वीतरागपद वारवार विचार करवा योग्य छे, उपासना करवा योग्य छे, ध्यान करवा योग्य छे

[८१९/६]

[हाथनोंध २, पृ १५]

जीवने बंधनना मुख्य हेतु बे

राग अने द्वेष

रागने अभावे द्वेषनो अभाव थाय

रागनु मुख्यपणु छे

रागने लीधे ज संयोगमा आत्मा तन्मयवृत्तिमान छे

ते ज कर्म मुख्यपणे छे

जेम जेम रागद्वेष मंद, तेम तेम कर्मबंध मंद अने जेम जेम रागद्वेष तीव्र, तेम तेम कर्मबंध तीव्र रागद्वेषनो अभाव त्या कर्मबंधनो सांपरायिक अभाव.

रागद्वेष थवानु मुख्य कारण—

मिथ्यात्व एटले

असम्यक्‌दर्शन छे.

सम्यक्‌ज्ञानथी सम्यक्‌दर्शन थाय छे

तेथी असम्यक्‌दर्शन निवृत्ति पामे छे

ते जीवने सम्यक् चारित्र प्रगटे छे

जे वीतरागदशा छे

संपूर्ण वीतरागदशा जेने वर्ते छे ते चरमशरीरी जाणीए छीए.

[८१९/८]

[हाथनोंध २, पृ २१]

दु खनो अभाव करवाने सर्व जीव इच्छे छे

दु खनो आत्यतिक अभाव केम थाय? ते नही जणावाथी दु ख उत्पन्न थाय ते मार्गने दु खथी मुकावानो उपाय जीव समजे छे

जन्म, जरा, मरण मुख्यपणे दु ख छे तेनु बीज कर्म छे कर्मनु बीज रागद्वेष छे, अथवा आ प्रमाणे पाच कारण छे

मिथ्यात्व

अविरति

प्रमाद

कषाय

योग.

पहेला कारणनो अभाव थये बीजानो अभाव, पछी त्रीजानो, पछी चोथानो, अने छेवटे पाचमा कारणनो एम अभाव थवानो क्रम छे

मिथ्यात्व मुख्य मोह छे

अविरति गौण, मोह छे.

प्रमाद अने कषाय अविरतिमा अतर्भावी शके छे. योग सहचारीपणे उत्पन्न थाय छे चारे व्यतीत थया पछी पण पूर्वहेतुथी योग होई शके

[८१९/६]

[हाथनोंध २, पृ १५]

जीवने बंधनना मुख्य हेतु बे

राग अने द्वेष

रागने अभावे द्वेषनो अभाव थाय

रागनु मुख्यपणु छे.

रागने लीधे ज संयोगमा आत्मा तन्मयवृत्तिमान छे

ते ज कर्म मुख्यपणे छे

जेम जेम रागद्वेष मंद, तेम तेम कर्मबंध मंद अने जेम जेम रागद्वेष तीव्र, तेम तेम कर्मबंध तीव्र. रागद्वेषनो अभाव त्यां कर्मबंधनो सांपरायिक अभाव.

रागद्वेष थवानु मुख्य कारण—

मिथ्यात्व एटले

असम्यक्दर्शन छे.

सम्यक्ज्ञानथी सम्यक्दर्शन थाय छे

तेथी असम्यक्दर्शन निवृत्ति पामे छे

ते जीवने सम्यक् चारित्र प्रगटे छे

जे वीतरागदशा छे

संपूर्ण वीतरागदशा जेने वर्ते छे ते चरमशरीरी जाणीए छीए.

[८१९/८]

[हाथनोध २, पृ २१]

दु खनो अभाव करवाने सर्व जीव इच्छे छे

दु खनो आत्यतिक अभाव केम थाय ? ते नही जणावाथी दु·ख उत्पन्न थाय ते मार्गने दु खथी मुकावानो उपाय जीव समजे छे

जन्म, जरा, मरण मुख्यपणे दु ख छे तेनु बीज कर्म छे कर्मनु बीज रागद्वेष छे, अथवा आ प्रमाणे पाच कारण छे

मिथ्यात्व

अविरति

प्रमाद

कषाय

योग

पहेला कारणनो अभाव थये बीजानो अभाव, पछी त्रीजानो, पछी चोथानो, अने छेवटे पाचमा कारणनो एम अभाव थवानो क्रम छे

मिथ्यात्व मुख्य मोह छे

अविरति गौण मोह छे.

प्रमाद अने कषाय अविरतिमा अतर्भावी शके छे योग सहचारीपणे उत्पन्न थाय छे चारे व्यतीत थया पछी पण पूर्वहेतुथी योग होई शके

[८२२/१४]

[हाथनोध २, पृ ३२]

स्वपर परमोपकारक परमार्थमय सत्यधर्म जयवंत वर्ते छे.

आश्चर्यकारक भेद पडी गया छे

खडित छे

सपूर्ण करवानु साधन दुर्गम्य देखाय छे

ते प्रभावने विषे महत् अतराय छे

देशकाळादि घणा प्रतिकूळ छे

वीतरागोनो मत लोकप्रतिकूळ थई पड्यो छे

रुढिथी जे लोको तेने माने छे तेना लक्षमा पण ते सुप्रतीत जणातो नथी, अथवा अन्यमत ते वीतरागोनो मत समजी प्रवर्त्ये जाय छे.

यथार्थ वीतरागोनो मत समजवानी तेमनामा योग्यतानी घणी खामी छे

दृष्टिरागनु प्रबळ राज्य वर्ते छे

वेषादि व्यवहारमा मोटो विटबना करी मोक्षमार्गनो अतराय करी बेठा छे

तुच्छ पामर पुरुषो विराधक वृत्तिना घणी अग्रभागे वर्ते छे

किंचित् सत्य बहार आवता पण तेमने प्राणघाततुल्य दुःख लागतु होय एम देखाय छे

२१

[८२२/१५]

[हाथनोंध २, पृ. ३४]

त्यारे तमे शा माटे ते धर्मनो उद्धार इच्छो छो?

परम कारुण्यस्वभावथी

ते सद्धर्म प्रत्येनी परम भक्तिथी

२२

[८२३/१७]

[हाथनोंध २, पृ ३७]

हु असग शुद्धचेतन छु

वचनातीत निर्विकल्प

एकात शुद्ध

अनुभवस्वरूप छु

हु परम शुद्ध, अखड चिद्‌धातु छु.

अचिद्‌धातुना सयोगरसनो आ आभास तो जुओ।

आश्चर्यवत्, आश्चर्यरूप, घटना छे

कंई पण अन्य विकल्पनो अवकाश नथी

स्थिति पण एम ज छे

२३

[८२३/१८]

[हाथनोध २, पृ ३९]

परानुग्रह परम कारुण्यवृत्ति करता पण प्रथम चैतन्य जिनप्रतिमा था

चैतन्य जिनप्रतिमा था

तेनो काळ छे?
ते विषे निर्विकल्प था
तेवो क्षेत्रयोग छे?
गवेष
तेवु पराक्रम छे?
अप्रमत्त शूरवीर था
तेटलु आयुषबळ छे?
शु लखवु? शु कहेवु?
अतर्मुख उपयोग करीने जो

ॐ शाति शाति. शाति

२४

[८२४/२०]

[हाथनोध २, पृ ४५]

हे सर्वोत्कृष्ट सुखना हेतुभूत सम्यक्‌दर्शन! तने अत्यंत भक्तिथी नमस्कार हो

आ अनादि अनत संसारमा अनत अनत जीवो तारा आश्रय विना अनत अनत दु खने अनुभवे छे

तारा परमानुग्रहथी स्वस्वरूपमा रुचि थई परम वीतराग स्वभाव प्रत्ये परम निश्च आव्यो कृतकृत्य थवानो मार्ग ग्रहण थयो.

हे जिन वीतराग ! तमने अत्यत भक्तिथी नमस्कार करु छु तमे आ पामर प्रत्ये अनत अनत उपकार कर्यो छे

हे कुदकुदादि आचार्यो ! तमारा वचनो पण स्वरूपानुसधानने विषे आ पामरने परम उपकारभूत थया छे ते माटे हु तमने अतिशय भक्तिथी नमस्कार करु छु

हे श्री सोभाग ! तारा सतसमागमना अनुग्रहथी आत्मदशानु स्मरण थयु ते अर्थे तने नमस्कार हो

२५

[८२४/२१]

[हाथनोध २, पृ ४७]

जेम भगवान जिने निरूपण कर्युं छे तेम ज सर्व पदार्थनु स्वरूप छे

भगवान जिने उपदेशेलो आत्मानो समाधिमार्ग श्रीगुरुना अनुग्रहथी जाणी, परम प्रयत्नथी उपासना करो

[८२४/२३]

[हाथनोंध २, पृ ५१]

केवळ समवस्थित शुद्ध चेतन

मोक्ष

ते स्वभावनु अनुसधान ते

मोक्षमार्ग

प्रतीतिरूप ते मार्ग ज्या शरू थाय छे त्या सम्यक्दर्शन

देश आचरणरूपे ते .. पचम गुणस्थानक

सर्व आचरणरूपे ते . छट्ठु ,,

अप्रमत्तपणे ते आचरणमा स्थिति ते सप्तम ,,

अपूर्व आत्मजागृति ते . अष्टम ,,

सत्तागत स्थूळ कषाय बलपूर्वक स्वरूपस्थिति ते } . नवम ,,

सत्तागत सूक्ष्म कषाय बळपूर्वक स्वरूपस्थिति ते } दशम ,,

उपशात कषाय बळपूर्वक स्वरूपस्थिति ते } .. एकादशम ,,

क्षीण कषाय बळपूर्वक स्वरूपस्थिति ते } . द्वादशम ,,

[८२६/६]

[हाथनोध ३, पृ. १५]

ॐ नम

सर्व जीव सुखने इच्छे छे

दुख सर्वने अप्रिय छे

दुखथी मुक्त थवा सर्व जीव इच्छे छे

वास्तविक तेनु स्वरूप न समजावाथी ते दुख मटतु नथी

ते दुखना आत्यतिक अभावनु नाम मोक्ष कहीए छीए.

अत्यत वीतराग थया विना आत्यतिक मोक्ष होय नही.

सम्यग्ज्ञान विना वीतराग थई शकाय नही.

सम्यग्दर्शन विना ज्ञान असम्यक् कहेवाय छे

वस्तुनी जे स्वभावे स्थिति छे, ते स्वभावे ते वस्तुनी स्थिति समजावी तेने सम्यग्ज्ञान कहीए छीए

[हाथनोध ३, पृ १६]

सम्यग्ज्ञानदर्शनथी प्रतीत थयेला आत्मभावे वर्तवु ते चारित्र छे

ए त्रणेनी एकताथी मोक्ष थाय

जीव स्वाभाविक छे

परमाणु स्वाभाविक छे

जीव अनत छे

परमाणु अनत छे

जीव अने पुद्गलनो सयोग अनादि छे.

ज्या सुधी जीवने पुद्गलसबध छे, त्या सुधी सकर्म जीव कहेवाय.

भावकर्मनो कर्त्ता जीव छे.

भावकर्मनु बीजु नाम विभाव कहेवाय छे

भावकर्मना हेतुथी जीव पुद्गल ग्रहे छे

तेथी तैजसादि शरीर अने औदारिकादि शरीरनो योग थाय छे.

[हाथनोध ३, पृ. १७]

भावकर्मथी विमुख थाय तो निजभावपरिणामी थाय

सम्यग्दर्शन विना वास्तविकपणे जीव भावकर्मथी विमुख न थई शके.

सम्यग्दर्शन थवानो मुख्य हेतु जिनवचनथी तत्त्वार्थप्रतीति थवी ते छे

२८

[८२७/७]

[हाथनोध ३, पृ १९]

हु केवळ शुद्ध चैतन्यस्वरूप सहज निज अनुभवस्वरूप छु.

व्यवहारदृष्टिथी मात्र आ वचननो वक्ता छु.

परमार्थथी तो मात्र ते वचनथी व्यजित मूळ अर्थरूप छु

तमाराथी जगत भिन्न छे, अभिन्न छे, भिन्नाभिन्न छे?

भिन्न, अभिन्न, भिन्नाभिन्न एवो अवकाश स्वरूपमा नथी.

व्यवहारदृष्टिथी तेनु निरूपण करीए छीए

—जगत मारा विषे भास्यमान होवाथी अभिन्न छे, पण जगत जगतस्वरूपे छे, हु स्वस्वरूपे छु, ते जगतथी माराथी केवळ भिन्न छे ते बन्ने दृष्टिथी जगत माराथी भिन्नाभिन्न छे.

ॐ शुद्ध निर्विकल्प चैतन्य.

२९

[८२७/८]

[हाथनोध ३, पृ २३]

ॐ नम

केवळज्ञान.

एक ज्ञान.

सर्व अन्य भावना ससर्गरहित एकात शुद्ध ज्ञान

सर्व द्रव्य, क्षेत्र, काळ भावनु सर्व प्रकारथी एक समये ज्ञान.

ते केवळज्ञाननु अमे ध्यान करीए छीए

निजस्वभावरूप छे

स्वतत्त्वभूत छे.

निरावरण छे.

अभेद छे.

निर्विकल्प छे

सर्व भावनु उत्कृष्ट प्रकाशक छे

३०

[८२८/९]

[हाथनोंध ३, पृ. २४]

हु केवळ ज्ञानस्वरूप छु,

एम सम्यक् प्रतीत थाय छे.

तेम थवाना हेतुओ सप्रतीत छे

सर्व इन्द्रियोनो सयम करी, सर्व परद्रव्यथी निजस्वरूप व्यावृत्त करी, योगने अचल करी, उपयोगथी उपयोगनी एकता करवाथी केवळज्ञान थाय

३१

[८२८/१०]

[हाथनोंध ३, पृ २७]

आकाशवाणी

तप करो, तप करो, शुद्ध चैतन्यनु ध्यान करो, शुद्ध चैतन्यनु ध्यान करो

३२

[८२८/११]

[हाथनोंध ३, पृ २९]

हु एक छु, असग छु, सर्व परभावथी मुक्त छु

असख्यात प्रदेशात्मक निज अवगाहनाप्रमाण छु

अजन्म, अजर, अमर, शाश्वत छु स्वपर्यायपरिणामी समयात्मक छु

शुद्ध चैतन्यस्वरूप मात्र निर्विकल्प द्रष्टा छु

३३

[८२९/१४]

[हाथनोध ३, पृ ३७]
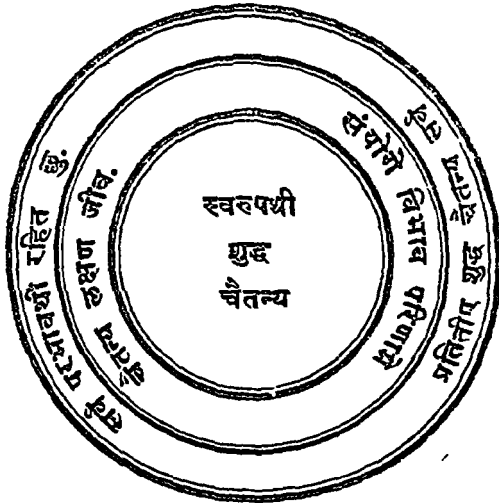
आभ्यतर भान अवधूत,

विदेहीवत्,

जिनकल्पीवत्,

सर्व परभाव अने विभावथी व्यावृत्त, निज स्वभावना भानसहित, अवधूतवत् विदेहीवत् जिनकल्पीवत् विचरता पुरुष भगवानना स्वरूपनु ध्यान करीए छीए

३४

[८३०/१८]

[हाथनोंध ३, पृ ४५]

प्रत्यक्ष निज अनुभवस्वरूप छु, तेमा सशय शो ?

ते अनुभवमा जे विशेष विषे न्यूनाधिकपणु थाय छे, ते जो मटे तो केवळ अखडाकार स्वानुभवस्थिति वर्ते.

अप्रमत्त उपयोगे तेम थई शके

अप्रमत्त उपयोग थवाना हेतुओ सुप्रतीत छे तेम वर्त्ये जवाय छे ते प्रत्यक्ष सुप्रतीत छे

अविच्छिन्न तेवी धारा वर्ते तो अद्‌भुत अनत ज्ञानस्वरूप अनुभव सुस्पष्ट समवस्थित वर्ते-

---

३५

[८३०/१९]

[हाथनोंध ३, पृ ४७]

सर्व चारित्र वशीभूत करवाने माटे, सर्व प्रमाद टाळवाने माटे, आत्मामा अखड वृत्ति रहेवाने माटे, मोक्षसबधी सर्व प्रकारना साधनना जयने अर्थे 'ब्रह्मचर्य' अद्‌भुत अनुपम सहायकारी छे, अथवा मूळभूत छे

३६

[८३०/२२]

[हाथनोंध ३, पृ. ५०]

सर्वज्ञोपदिष्ट आत्मा सद्‌गुरुकृपाए जाणीने निरतर तेना ध्यानना अर्थे विचरवु, सयम अने तप पूर्वक —

३७

[८३०/२३]

[हाथनोंध ३, पृ ५२]

अहो! सर्वोत्कृष्ट शांत रसमय सन्मार्ग—

अहो! ते सर्वोत्कृष्ट शांत रसप्रधान मार्गना मूळ सर्वज्ञदेव—

अहो! ते सर्वोत्कृष्ट शांत रस सुप्रतीत कराव्यो एवा परमकृपाळु सद्‌गुरुदेव—

आ विश्वमां सर्वकाळ तमे जयवंत वर्तो, जयवंत वर्तो

३८

[८३१/२६]

[हाथनोंध ३, पृ ५८]

स्वपर उपकारनुं महत्‌कार्य हवे करी ले! त्वराथी करी ले!

अप्रमत्त था—अप्रमत्त था

शुं काळनो क्षणवारनो पण भरुसो आर्य पुरुषोए कर्यो छे?

हे प्रमाद! हवे तुं जा, जा

हे ब्रह्मचर्य! हवे तुं प्रसन्न था, प्रसन्न था

हे व्यवहारोदय हवे प्रबळथी उदय आवीने पण तुं शांत था, शांत.

हे दीर्घसूत्रता! सुविचारनुं, धीरजनुं, गंभीरपणानुं परिणाम तुं शा माटे थवा इच्छे छे?

हे बोधबीज! तुं अत्यंत हस्तामलकवत् वर्त, वर्त

हे ज्ञान! तु दुर्गम्यने पण हवे सुगम स्वभावमा लावो मूक

[हाथनोध ३, पृ ५९]

हे चारित्र! परम अनुग्रह कर, परम अनुग्रह कर

हे योग! तमे स्थिर थाओ, स्थिर थाओ!

हे ध्यान! तु निजस्वभावाकार था, निजस्वभावाकार था.

हे व्यग्रता! तु जती रहे, जतो रहे.

हे अल्प के मध्य अल्प कपाय! हवे तमे उपशम थाओ, क्षोण थाओ अमारे काई तमारा प्रत्ये रुचि रहो नथी

हे सर्वज्ञपद! यथार्थ सुप्रतोतपणे तु हृदयावेश कर, हृदयावेश कर

हे असग निर्ग्रंथपद! तु स्वाभाविक व्यवहाररूप था!

हे परम करुणामय सर्व परमहितना मूळ वोतराग धर्म! प्रसन्न था, प्रसन्न

हे आत्मा! तु निजस्वभावाकार वृत्तिमा ज अभिमुख था! अभिमुख था ॐ

[हाथनोध ३, पृ ६१]

हे वचनसमिति! हे काय अचपळता! हे एकातवास अने असगता! तमे पण प्रसन्न थाओ, प्रसन्न थाओ!

खळभळी रहेलो एवी जे आभ्यतर वर्गणा ते का तो अभ्यतर ज वेदी लेवो, का तो तेने स्वच्छपुट दई उपशम करी देवी

जेम निस्पृहता बळवान तेम ध्यान बळवान थई शके, कार्य बळवान थई शके